गीना देवी शोध संस्थान
द्वारा श्रीगंगानगर, राजस्थान से प्रसारित
साहित्य, शिक्षा, संस्कृति एवं शोध का अंतर्राष्ट्रीय मासिक

ISSN : 2321-8037
जनवरी-फरवरी 2024
Vol. 12, Issue 1-2

Impact Factor : 6.632

Gina Shodh SANGAM

Peer Reviewed & Refereed Research Journal

International Journal of Literature, Arts, Culture, Humanities and Social Sciences
UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 2018)

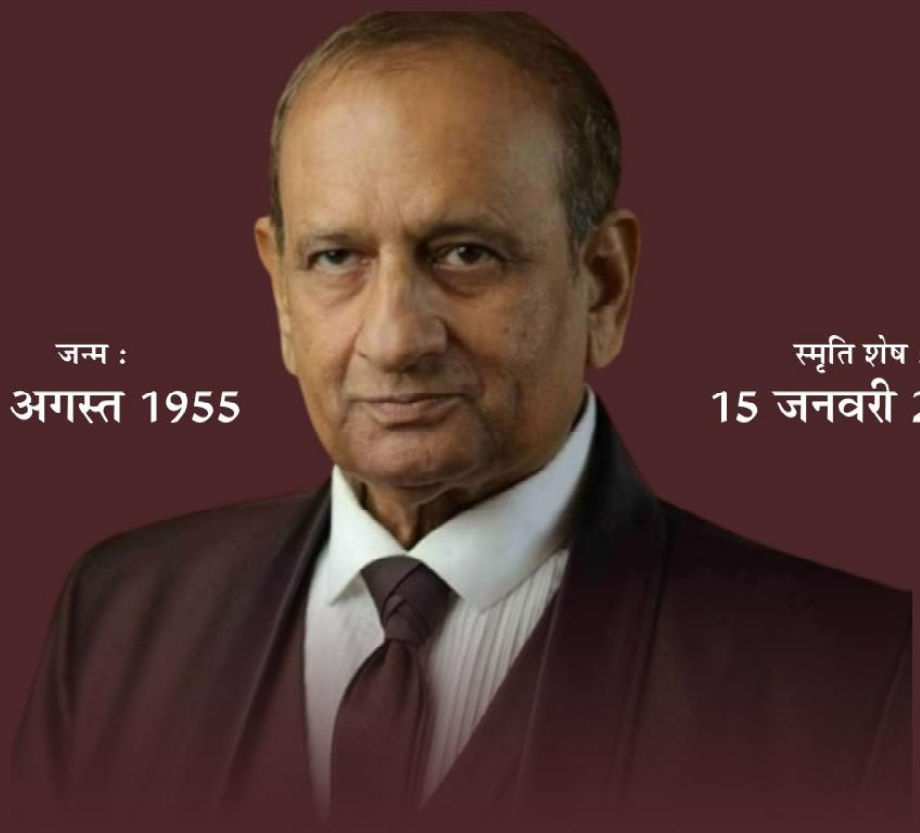

जन्म :
26 अगस्त 1955

स्मृति शेष :
15 जनवरी 2024

संपादक :
डॉ. रेखा सोनी

प्रधान सम्पादक :
डॉ. नरेश सिहाग एडवोकेट

संस्थापक सम्पादिका :
स्मृति शेष
डॉ. विश्वकीर्ति

संगम SANGAM

साहित्य, शिक्षा, संस्कृति एवं शोध को समर्पित अंतर्राष्ट्रीय मासिक

A Peer Reviewed International Refereed Journal

www.ginajournal.com

संस्थापक संरक्षक :
स्मृति शेष
श्री हरविन्द्र कमल चौधरी

वर्ष : 12 अंक : 1–2 जनवरी–फरवरी : 2024 आईएसएसएन : 2321–8037

सम्पादक :
डॉ. रेखा सोनी
शिक्षा विभाग, टांटिया वि.वि.,
श्रीगंगानगर–335001 (राज.)

प्रधान सम्पादक :
डॉ. नरेश सिहाग एडवोकेट
सचिव, गीनादेवी शोध संस्थान,
भिवानी (हरियाणा)

मार्गदर्शन :
डॉ. राजेन्द्र गोदारा
श्रीगंगानगर, राजस्थान।

इन्जीनियर सृष्टि चौधरी
लेक्चरर, इलेक्ट्रानिक्स
एंड कम्युनिकेशन,
सरकारी पॉलिटेक्निक कॉलेज फॉर
गर्ल्स, पटियाला, पंजाब।

श्री श्रेष्ठ चौधरी,
सीनियर मैनेजर,
स्टेट बैंक ऑफ इंडिया,
साहिबजादा अजित सिंह नगर,
मोहाली, पंजाब।

कानूनी सलाहकार :
डॉ. रामफल दलाल एडवोकेट,
भिवानी (हरियाणा)
श्रीमती रूपिन्द्र कौर, एडवोकेट,
पटियाला (पंजाब)

सलाहाकार समिति (Advisory Committee)

डॉ. सुलक्षणा अहलावत
अंग्रेजी प्रवक्ता, शिक्षा विभाग
नूंह (हरियाणा)

डॉ. अरूणा अंचल
बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय,
रोहतक (हरियाणा)

डॉ. सुशीला
चौधरी बंसीलाल विश्वविद्यालय,
भिवानी (हरियाणा)

डॉ. अल्पना शर्मा
आईएएसई विश्वविद्यालय सरदारशहर
(राजस्थान)

डॉ. विजय महादेव गाडे
बाबा साहेब चितले महाविद्यालय
भिलवडी (महाराष्ट्र)

डॉ. लता एस. पाटिल
राजीव गांधी बीएड कॉलेज
धारवाड़ (कर्नाटक)

डॉ. रीना कुमारी
दशमेश गर्ल्स कॉलेज,
अल्ला बक्श, मुकेरिया, पंजाब।

श्री राकेश शंकर भारती
यूक्रेन।

श्री हेमराज न्यौपाने
नेपाल।

डॉ. ममता तनेजा
अबोहर, पंजाब।

डॉ. प्रियंका खंडेलवाल
बराण, राजस्थान।

प्रो. मधुबाला
राजकीय महिला महाविद्यालय,
हिसार।

डॉ. पीयूष कुमार द्विवेदी
जगद्गुरू रामभद्राचार्य दिव्यांग
विश्वविद्यालय, चित्रकूट, उत्तरप्रदेश

डॉ. हवासिंह ढाका
राजकीय महाविद्यालय, हिन्दुमलकोट,
श्रीगंगानगर (राजस्थान)

डॉ. मानसिंह दहिया
संस्कृत प्रवक्ता, शिक्षा विभाग
तोशाम (हरियाणा)

डॉ. राजेश शर्मा
टांटिया विश्वविद्यालय,
श्रीगंगानगर (राजस्थान)

डॉ. मोहिनी दहिया
माती जीतोजी कन्या महाविद्यालय,
सूरतगढ़ (राजस्थान)

डॉ. मुकेश चंद
राजकीय महाविद्यालय, बाड़ी,
धौलपुर, राजस्थान।

डॉ. पवन ठाकुर
बरेली (उत्तर प्रदेश)

डॉ. मोरवे रोशन के.
यूनाईटिड किंगडम।

डॉ. अनुपमा, पूर्व प्रोफेसर,
अंकारा विश्वविधालय, अंकारा, टर्की

डॉ. आर.के विश्वास
अध्यक्ष होम्योपैथिक, टांटिया, वि.वि.

प्रकाशक, स्वामी एवं मुद्रक **डॉ. नरेश सिहाग,** एडवोकेट ने **मनभावन प्रिन्टर्ज,** पुराना बस स्टैण्ड रोड़, नया बाजार, भिवानी से छपवाकर 202, पुराना हाऊसिंग बोर्ड, भिवानी–127021 (हरियाणा) से जारी किया।

संगम SANGAM

साहित्य, शिक्षा, संस्कृति एवं शोध को समर्पित अंतर्राष्ट्रीय मासिक

A Peer Reviewed International Refereed Journal

(Journal of Literature, Arts, Culture, Humanities and Social Sciences)

सचिव :

डॉ. नरेश सिहाग एडवोकेट

202, पुराना हाऊसिंग बोर्ड,

भिवानी-127021 (हरियाणा)

Email : grngobwn@gmail.com

मो. 09466532152

संगम मासिक पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं/लेखों की मौलिकता का दायित्त्व स्वयं रचनाकारों/लेखकों का है। उससे सम्पादक व प्रकाशक का सहमत होना आवश्यक नहीं। किसी भी प्रकार का विवाद होने पर न्यायक्षेत्र केवल भिवानी (हरियाणा) होगा।
सम्पादन और प्रबंधन के सभी पद पूर्ण रूप से अवैतनिक हैं।

Published by :

Gugan Ram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

202, Old Housing Board,

Bhiwani-127021 (Haryana) INDIA

Email : grsbohal@gmail.com

Facebook.com/bohalshodhmanjusha

Website : www.bohalsm.blogspot.com

WhatsApp : 9466532152

All Right Reserved by Publisher & Editor

Price

Individual/Institutional : 1300/-

Disclaimer :

1. Printing, Editing, Selling and distribution of this Journal is absolutely honorary and non-commercial.
2. All the Cheque/Bank Draft/IPO should be sent in the name of Gugan Ram Educational & Social Welfare Society payable at Bhiwani.
3. Articles in this journal do not reflect the Views or Policies of the Editor's or the Publisher's. Respective authors are responsible for the originally of their views/opinions expressed in their articles.
4. All dispute will be Subject to Bhiwani, Hry. Jurisdication only.

Printed by : Manbhawan Printers, Old Bus Stand Road, Naya Bazar, Bhiwani (Hry.)

ISSN : 2321-8037
Gina Shodh SANGAM
Peer Reviewed & Refereed Research Journal
International Journal of Literature, Arts, Culture, Humanities and Social Sciences
UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 2018)
Publisher : Gugan Ram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

तालिका– 2

शैक्षणिक / शोध अंक की गणना हेतु विश्वविद्यालय और महाविद्यालय के शिक्षकों के लिए कार्यप्रणाली

(आकलन शिक्षकों द्वारा प्रस्तुत साक्ष्यों पर आधारित होना चाहिए, जैसे: प्रकाशनों की प्रति, परियोजना स्वीकृति पत्र, विश्वविद्यालय द्वारा जारी उपयोग तथा पूर्णता प्रमाण पत्र, पेटेंट दर्ज कराने संबंधी अभिस्वीकृति और स्वीकृति पत्र, विद्यार्थियों को पीएचडी उपाधि प्रदान किए जाने संबंधी पत्र इत्यादि।)

क्रम सं.	शैक्षणिक / शोध क्रियाकलाप	विज्ञान / अभियांत्रिकी / कृषि / चिकित्सा / पशु–चिकित्सा विज्ञान संकाय	भाषा / मानविकी / कला / सामाजिक विज्ञान / पुस्तकालय / शिक्षा / शारीरिक शिक्षा / वाणिज्य / प्रबंधन तथा अन्य संबंधित विधाएं
1	समकक्ष व्यक्ति समीक्षित अथवा विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा सूचीबद्ध पत्रों में शोध पत्र	08 प्रति पत्र	10 प्रति पत्र
2	प्रकाशन (शोध पत्रों के अतिरिक्त)		
	(क) लिखी गई पुस्तकें, जिन्हें निम्नवत के द्वारा प्रकाशित किया गया :		
	अंतर्राष्ट्रीय प्रकाशक	12	12
	राष्ट्रीय प्रकाशक	10	10
	संपादित पुस्तक में अध्याय	05	05
	अंतर्राष्ट्रीय प्रकाशक द्वारा पुस्तक का संपादक	10	10
	राष्ट्रीय प्रकाशक द्वारा पुस्तक का संपादक	08	08
	(ख) योग्य संकाय द्वारा भारतीय और विदेशी भाषाओं में अनुवाद कार्य		
	अध्याय अथवा शोध पत्र	03	03
	पुस्तक	08	08
3	आईसीटी के माध्यम से शिक्षण ज्ञान– अर्जन, शिक्षण शास्त्र और विषयवस्तु का सृजन तथा नए और नवोन्मेषी पाठ्यक्रमों और पाठ्यचर्या का विकास		
	(क) नवोन्मेषी अध्यापन का विकास	05	05
	(ख) नई पाठ्यचर्या और पाठ्यक्रमों को तैयार करना	02 प्रति पाठ्यचर्या / पाठ्यक्रम	02 प्रति पाठ्यचर्या / पाठ्यक्रम

202, Old Housing Board, Bhiwani, Haryana-127021
www.bohalsm.blogspot.com grsbohal@gmail.com 8708822674 9466532152

अनुक्रमाणिका

क्र.	विषय	लेखक	पृष्ठ
1.	सम्पादकीय	डॉ. रेखा सोनी	6-6
2.	मत्स्य महापुराण के सुभाषितों से प्राप्त शिक्षा	डॉ. शैलजा रानी अग्निहोत्री	8-13
3.	**Role of Environmental Education in Teacher Education**	**Dr. Savita Bhandari**	**14-20**
4.	**GURDWARA REFORM AGITATION (1920-25) : ANALYSIS OF ITS 'HISTORICAL' LITERATURE**	**Dr. Harwinder Kaur**	**21-29**
5.	तेजाजी से संबंधित लोक साहित्य में पेड़ पोधों का चित्रण	शिम्भुराम	30-34
6.	"मैं आजाद हूं" - चंद्रशेखर आजाद	डॉ. दुर्गेश कुमार शर्मा	35-39
7.	हरमहेन्द्र सिंह बेदी : व्यक्तित्व एवं कृतित्व	सुमन लता, डॉ० अजयपाल सिंह	40-45
8.	हबीब तनवीर और चरनदास चोर	नीता वर्मा	46-49
9.	उत्तर प्रदेश में बढ़ते पर्यटन विकास की चुनौतियां और समाधान	डॉ. वेदप्रकाश	50-59
10.	झज्जर जिले की आर्थिक उन्नति में कृषि आधुनिकीकरण की भूमिका का विश्लेषण	रेनू	60-64
11.	रत्नकुमार सांभरिया के 'साँप' उपन्यास में खानाबदोश जीवन	शिल्पा बाबु, डॉ. जयलक्ष्मी पाटील	65-67
12.	**Job Stress, Job Satisfaction and Mental Health among Physical Education Teachers working in government schools of Rajasthan in relation to demographical variables**	**Bhawani Singh, Dr Surjeet Singh Kaswan**	**68-75**
13.	**Role and Impact of Good Governance in Sports Development in India**	**Sukhjeet Singh, Dr Surjeet Singh Kaswan**	**76-78**
14.	রবীন্দ্রগল্প 'পোস্টমাস্টার' ও নিত্যানন্দ মুখোপাধ্যায়ের 'বার্তাগৃহাধ্যক্ষবচঃ' নাটক: একটি তুলনাত্মক পর্যালোচনা	গবেষক - সুব্রত অধিকারী	79-89
15.	भारत के आर्थिक एवं सामरिक क्षेत्र में महिलाओं का विश्लेषणात्मक अध्ययन	डॉ. सुषमा पाठक, मीना श्रीवास्तव	90-93
16.	मालती जोशी की कहानियों के परिप्रेक्ष्य में वृद्ध	**E. JACQUELINE, Dr. ANURADHA PAKALAPATI**	**94-100**
17.	लैगिंक असमानता का व्यक्तित्व विकास पर प्रभाव	प्रवीण कुमार जाखड़, अनुराधा चौधरी	101-105

18.	मुसहर समुदाय की महिलाओं के स्वास्थ्य का समाजशास्त्रीय अध्ययन	डॉ आशा कुमारी	106–112
19.	मृदुला गर्ग के उपन्यासों में वर्णित नारी संघर्ष	परमार अंजलीबा हरदेवसिंह	113–116
20.	मीडिया की भाषा का सामाजिक प्रदेय	रमन	117–120
21.	डॉ. रमेश पोखरियाल के काव्य में सांस्कृतिक चेतना : एक विश्लेषण	हरविंदर कौर, डॉ. अजयपाल सिंह	121–132
22.	मानवता की खुली आँख के सबसे सुन्दर सपने राम	वैभव सिंह	133–137
23.	आधुनिक भारत के निर्माता : राजाराम मोहनराय	डॉ. पूजा वरूण	138–141
24.	विवेक मिश्र के कहानी संग्रह 'पार उतरना धीरे से' में व्यक्त संवेदना के विविध आयाम	डॉ. राजेश राव	142–145
25.	हिन्दी साहित्य में स्त्रियों का योगदान	रमन	146–150
26.	Study of the various psychological variable of long race's athlete of Bikaner Region	Surender Kumar, Dr. Surjeet Singh Kaswan	151-155
27.	मेहरून्निसा परवेज़ के कथा साहित्य में प्रकृति चित्रण	डॉ. कीर्ति बाजपेई, रजनी मरकाम	156–160
28.	नागपुरी काव्यों में स्त्री विमर्श	संजय कुमार साहु	161–165
29.	रूपनारायण सोनकर के 'डंक' उपन्यास में चित्रित दलित समाज की समस्याएँ	पियाली रॉय	166–168
30.	महिला आत्मकथाकारों का संघर्ष	प्रियंका पाठक	169–174
31.	The Idea of India: Origin and Historical Formation	Prof. Pradip Jankar	175-178
32.	अटल बिहारी वाजपेयी की कविता में राजनीतिक स्वर	रेणुका कस्तुरे (पोफली), डॉ. पुष्पा दुबे	179–183
33.	गगन गिल के काव्य में आर्थिक संवेदना के विविध आयाम	सुमन यादव, राजेन्द्र सिंह	184–187

सम्पादक की कलम से..

प्रिय पाठकों,

आज की दुनिया में विज्ञान, प्रौद्योगिकी, और समाज में हो रहे बदलाव न केवल तेजी से हो रहे हैं, बल्कि इनका प्रभाव भी हमारे जीवन के हर क्षेत्र में गहराई से महसूस हो रहा है। इसी संदर्भ में, हमारी पत्रिका 'गीना शोध संगम' ने विशेष ध्यान देते हुए समाज की सभी वर्गों के लिए जागरूकता बढ़ाने का संकल्प किया हुआ है।

आधुनिक युग में शोध और विज्ञान की महत्वपूर्ण भूमिका हमारे जीवन के हर पहलू को बदल रही है। हमारी पत्रिका इस महत्वपूर्ण संदेश को अपने पाठकों तक पहुंचाने का अवसर प्रदान करती है, ताकि हम सभी मिलकर वर्तमान युग में चुनौतियों का सामना कर सकें।

'गीना शोध संगम' का मंच एक समर्पित और विद्यार्थी दृष्टिकोण को प्रोत्साहित करने का अवसर प्रदान करता है। जिसके तहत मार्च 2024 का नारी विशेषांक का सम्पादन कार्य हमने एक विद्यार्थी को ही सौंपा है जो पूरी लग्न और मेहनत से काम कर रहा है। यह विशेषांक शोध के क्षेत्र में एक मिल का पत्थर का साबित होगा, ऐसा हमारा विश्वास है। हमारे पाठकों को नवीनतम शोध और विज्ञान से जुड़ी सूचनाओं से अवगत कराकर हम उन्हें सकारात्मक दिशा में प्रेरित करने का प्रयास कर रहे हैं।

आज के संवेदनशील और विकसित समाज में शोध का महत्व बढ़ चुका है। हमारी पत्रिका इस उत्साह और उत्कृष्टता को बढ़ाने का प्रयास करती है, ताकि हम सभी मिलकर एक समृद्ध और विकसित समाज का निर्माण कर सकें। आज की दुनिया में, तकनीकी उन्नति और विज्ञान की तेजी से बढ़ती गति से, हमें अपने जीवन के हर क्षेत्र में सामाजिक, आर्थिक, और राजनीतिक संदेहों के साथ खेलना होता है। हमारे समाज के मुद्दे और उनके समाधान को सोचने का समय है।

इस महत्वपूर्ण समय में, हमें विज्ञानिक सोच और तकनीकी ज्ञान को सामाजिक और नैतिक मूल्यों के साथ मिलाना होगा। विज्ञान और तकनीकी उन्नति का मतलब होना चाहिए कि हम समाज के हित में उन्नति करें, न कि उसे नुकसान पहुंचाएं। इस अंतर्निहित संघर्ष के बीच, हमें ध्यान रखना होगा कि हमारे वैज्ञानिक प्रगति का लाभ समाज के हर वर्ग तक पहुंचे। विज्ञान और तकनीक को सामाजिक न्याय के साथ उपयोग करना हमारी प्राथमिकता होनी चाहिए। इस दिशा में, हम सभी को अपने सोच और कार्य को सामाजिक न्याय, विकास, और साझेदारी के साथ मिलाना होगा। संगम शोध पत्रिका के माध्यम से, हम इस संदेश को फैलाने का प्रयास करेंगे।

गीना शोध संगम पत्रिका में आप सभी शोधार्थियों, प्राध्यापकों और पाठकों का स्वागत है, जो किसी नवीन विषय पर विशेषांक या राष्ट्रीय/अंतराष्ट्रीय संगोष्ठी आदि का आयोजन करना चाहे। यह माह हमारे लिए खुशियां लेकर आया है। आप सभी के सहयोग और प्रचार–प्रसार से पत्रिका का इम्पैक्ट फैक्टर 6.632 हो गया है। यह सब आप मित्रों की बदौलत ही संभव हो पाया है जिसके पत्रिका परिवार आप सभी का हृदयतल से धन्यवाद ज्ञापित करता है। यह अंक स्मृतिशेष श्री हरविन्द्र कमल जी को समर्पित है। **–डॉ. रेखा सोनी, संपादक**

संगम Impact Factor : 6.632
Website : www.ginajournal.com
ISSN : 2321-8037
विशेषज्ञ समीक्षित पत्रिका A Peer Reviewed International Refereed Journal
SANGAM
गीना देवी शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित साहित्य, शिक्षा, संस्कृति एवं शोध को समर्पित मासिक
Vol. 12, Issue 1-2
पृष्ठ : 8-13

मत्स्य महापुराण के सुभाषितों से प्राप्त शिक्षा

डॉ. शैलजा रानी अग्निहोत्री
सह–आचार्य संस्कृत, सनातन धर्म राजकीय महाविद्यालय, ब्यावर।

सारांश (Abstract) :–

सनातन महापुराणों का शाश्वत महत्व सर्वविदित एवं अक्षुण्ण है। सभी अठारह महापुराणों में लोकोपयोगी सामग्री विभिन्न रूपों में प्राप्त होती है। महर्षि वेदव्यास द्वारा रचित पुराणों का आदर्श उद्घोष "परोपकारः पुण्याय पापाय परपीड़नम्" है; जिसकी प्रत्यक्ष–अप्रत्यक्ष अभिव्यक्ति सभी पुराणों में येन केन रूपेण देखी जा सकती है। पुराण अपने सुन्दर, हितकारी, मनोहर और रोचक वचनों से मानव को अनेकशः प्रेरित व शिक्षित करने का महान् कार्य करते हैं। सभी पुराणों के समान मत्स्य महापुराण में भी अनेक सुभाषित निबद्ध हैं, जो ज्ञान का भण्डार होने के साथ–साथ आनन्ददायी हैं एवं शुभ व कल्याण की ओर प्रेरित करते हैं। वास्तव में सुभाषित का अभिप्राय ही सुन्दर या शोभन वचन है। प्रस्तुत महापुराण में मानव जीवन एवं लोक व्यवहार से सम्बन्ध रखने वाले अनेक सुभाषित हैं; जिनमें समस्त जगत् का ज्ञान–विज्ञान, धर्म–अध्यात्म, संस्कृति–समाज, पाप–पुण्य, लोक–परलोक इत्यादि सभी से सम्बन्धित जनकल्याणकारी ज्ञान का प्रकटीकरण हुआ है। सार्वभौमिक मानव के लिए ऐसे सुभाषितों को जान–समझकर, उन्हें आत्मसात् करना अथवा उनकी अनुपालना करते–करवाते रहना श्रेयस्कर है; क्योंकि ये सुभाषित मानव के लिए ज्ञान व रसानुभूति प्रदान करने के साथ–साथ ऐहिक–पारलौकिक कल्याण के लिए भी महत्वपूर्ण सिद्ध होते हैं।

प्रमुख शब्दावली :– सनातन महापुराण, मत्स्य महापुराण, सुभाषित, शोभन या सुन्दर वचन, हितकारी–कल्याणकारी, ऐहिक–पारलौकिक, लोकजीवन दर्शन, लोक व्यवहार, पाप–पुण्य, आनन्द प्रदायक, रसानुभूति, अभीष्टसिद्धि, शील–सदाचार, विपत्ति, शिक्षा–प्रेरणा, सम्मान–अपमान, दुर्जन–सज्जन।

विषय-विवेचन :–

महर्षि कृष्ण द्वैपायन वेदव्यास को अष्टादश सनातन महापुराणों का रचयिता माना जाता है– "अष्टादशपुराणानांकर्तासत्यवतीसुतः।" समस्त पुराणों में मानव के ऐहिक–पारलौकिक कल्याण की सामग्री बड़े ही सरल, सरस और सुन्दर रूप में प्रस्तुत की गई है। पुण्य धरा भारत भूमि पर उद्भूत हुए समस्त ज्ञान–विज्ञान, कला–कौशल, धर्म–अध्यात्म, नीति–राजनीति, पाप–पुण्य, यहाँ के लोक जीवन दर्शन एवं लोक व्यवहार–इत्यादि सभी पक्षों से सम्बन्धित सामग्री विभिन्न कथा प्रसंगों, आख्यानों पाख्यानों के अन्तर्गत प्रस्तुत की गईहै। जिनके प्रकटीकरण में यत्र–तत्र विभिन्न सुभाषितों का संग्रह भी मिलता है। सुभाषित अर्थात् सुन्दर या शोभन वचन। "सुष्ठुभाषितंसुभाषितम्" अर्थात् अच्छी या सुन्दर उक्ति अथवा वचन ही सुभाषित या सूक्ति कहे जाते हैं। ऐसे

सुन्दर या शोभन वचन जो सत्य, शिव और सुंदर हैं; ज्ञान के भण्डार हैं और आनन्द प्रदायक व रसानुभूति कराने वाले हैं; लोकजीवन या व्यवहार में देखे जाते हैं तथा मानव की जीवन यात्रा को सरल, सुखद और आदर्श पूर्ण बनाते हैं–सुभाषित की श्रेणी में आते हैं। प्रस्तुत आलेख में मत्स्य महापुराण में निबद्ध विभिन्न सुभाषितों और उनसे प्राप्त होने वाली प्रेरणा व शिक्षा का प्रकटीकरण करने का प्रयास किया जा रहा है, ताकि आज का मानव स्वजीवन में ऐसे सुभाषितों को आत्मसात् कर इनसे लाभान्वित हो सके।

भगवान के मत्स्यावतार की कथा को प्रस्तुत करने वाले इस पुराण में कुल 291 अध्याय और चौदह हजार श्लोक हैं। वैष्णव, शैव, शाक्तादि सभी सम्प्रदायों में इस पुराण की समान रूप से मान्यता एवं महत्ता है। अतः सभी के लिए यह पुराण अपने विभिन्न सुभाषितों द्वारा शुभ–अशुभ का, करणीय–वरणीय एवं त्याज्य का, हेयोपादेय का, अभ्युदय एवं निःश्रेयस का अथवा कहा जा सकता है कि मानव के लिए हितकारी एवं उपादेय समस्त बातों व विषयों का रहस्योद्घाटन अपने विभिन्न सुभाषितों द्वारा करता है और इस प्रकार सुभाषितों के सत्यं, शिवं, सुन्दर रूप की सार्थकता सिद्ध करता है। पुराण के कर्ता महर्षि वेदव्यास की जो अवधारणा है कि पुण्य वह है, जो दूसरों को लाभ पहुँचाए और पाप वह है, जिससे दूसरों की हानि या पीड़ा होती है–"परोपकारः पुण्याय पापाय परपीड़नम्।" समस्त पुराणों के इस उद्घोष की सार्थकता भी सुभाषितों या सूक्तियों में देखी जा सकती है। क्योंकि सभी सुभाषित पाप या अधर्म से निवृत्त एवं पुण्य या धर्म में प्रवृत्त करते हैं। जो बातें या वचन सत् में, पुण्य अथवा धर्म में प्रवृत्त करें, वे ही वास्तव में सुभाषित कहलाने योग्य हैं। सुभाषित के अन्तर्गत असत्, पाप या अधर्म के लिए कोई स्थान नहीं है।

प्रस्तुत लेखान्तर्गत मत्स्य महापुराण के कुछ सुभाषित इस प्रकार अवलोकनीय एवं विवेचनीय हैं–

अपमानो वधः प्रोक्तः –"समादृत अथवा सम्मानित मनुष्य का अपमान ही उसकी मृत्यु के समान होता है।"

यह सुभाषित महर्षि कश्यप एवं दिति के पुत्र वज्राङ्ग द्वारा देवराज इन्द्र को उसके एक अपराध के लिए बन्धन युक्त करने–अमोघ वर्चस्वी पाश से बाँधकर अपने माता–पिता के समक्ष प्रस्तुत करने के अवसर पर वज्राङ्ग के पिता महर्षि कश्यप द्वारा कहा गया है। जहाँ इन्द्र का अपमान उसकी मृत्यु से भी बढ़कर बतलाया है। प्रस्तुत सुभाषित यह बतलाता है कि जो सम्मानित व्यक्ति होते हैं, उनके लिए उनका सम्मान ही सबसे महत्वपूर्ण होता है। यदि उनका कहीं किसी कारणवश अपमान होता है, तो वह मानो उनकी मृत्युवत् अथवा मृत्यु से भी बढ़कर कष्टकारी होता है। अतः प्रत्येक सम्मानित व्यक्ति के लिए अपमान असह्य अथवा अत्यधिक कष्टकारी होने से सदैव सम्मानपूर्वक जीने और ऐसा कोई कार्य न करने, जिससे अपमान सहना पड़े, की शिक्षा इस सुभाषित से प्राप्त होती है।

आत्मनो न विनोशोऽस्तिस्थावरान्तेऽपिभूधर –"प्रलय काल में भी–शरीरान्त होने पर भी आत्मा का विनाश नहीं होता।"

इस सुभाषित में आत्मा, जोकि परमात्मा का ही अंश होती है, उसे अक्षर, अविनाशी बतलाया गया है। सुभाषित में उस यथार्थ का उद्घाटन किया गया है जिसे श्रीमद्भगवद्गीता तथा अन्यान्य सनातन शास्त्र ग्रन्थों में भी बतलाया गया है कि आत्मा अजर, अविनाशी होने से शाश्वत है अर्थात् इसका कभी भी नाश नहीं होता। आत्मा केवल शरीर बदलती है। यथोक्तम् योगेश्वर–श्रीकृष्णेन– "अजोनित्यः शाश्वतो यं पुराणो" एवं "वेदाविनाशिनं नित्यं य एनमजमव्ययम्" तथा "अच्छेद्योऽयमदाह्यो.....स्थाणुरचलोऽयं सनातन।।" इत्यादि गीता के पद्य भी यही

बतलाते हैं। इस प्रकार इस सुभाषित द्वारा आत्मा की शाश्वत सत्ता का प्रकटीकरण किया गया है।

अकार्यंक्रियतेमूढैः प्रायः क्रोधसमीहितेः –"क्रोध के वशीभूत हुए मूर्ख मनुष्य अकार्य अर्थात् बुरा कार्य करते हैं।"

यह सुभाषित गिरिसुता पार्वती द्वारा पुत्र वीरक को किसी भ्रान्ति या अज्ञानवश क्रोश के वशीभूत हो शाप देने के सन्दर्भ में कहा गया है। सुभाषित द्वारा यह ज्ञान होता है कि क्रोध मनुष्य का ऐसा शत्रु है, जो उससे बुरे काम करवाता है। क्योंकि क्रोध ऐसा मनोविकार है, जिसके समक्ष मनुष्य का विवेक समाप्त हो जाता है और वह बिना सोचे–विचारे कुछ भी गलत कर बैठता है। बाद में फिर कोई भी अनर्थ एवं भारी हानि होने पर चाहे भले ही पछताना पड़े; क्योंकि पछताने या प्रायश्चित्त के अलावा फिर कोई उपाय नहीं बचता। लेकिन जो काम बिगड़ चुके या हानि हो चुकी, उसकी भरपाई तो नहीं होती। अतः यह सुभाषित की श्रेणी में इसीलिए रखा गया है कि मनुष्य को कदापि क्रोध न करने की सुंदर शिक्षा इससे प्राप्त होती है। क्रोध न करने में ही अपनी व दूसरों की भलाई है।

विपरीतार्थबुद्धीनांसुलभोविपदोदयः –"जिनकी बुद्धि विपरीत अर्थ को ग्रहण करती है अर्थात् विपरीत बुद्धि वालों पर बड़ी आसानी से विपत्तियाँ आती हैं।"

यह सूक्ति भी पूर्वोक्त पार्वती–वीरक के सन्दर्भ में पार्वती द्वारा कही गई है। क्योंकि पार्वती ने बिना विचारे वीरक को शाप दे दिया था। उन्होंने यथार्थ बात को जाने बिना भ्रमवश उसे अन्यथा ले लिया था, जिससे अपने ही पुत्र का बुरा कर दिया। इसलिए सदैव सोच–विचारकर अर्थात् विवेक से काम लेना चाहिए और जो बात जैसी है, उसे उसी रूप में ग्रहण करना चाहिए अर्थात् किसी विपरीतार्थ या शंका अथवा भ्रम को स्थान नहीं देना चाहे– यह शिक्षा सुभाषित से प्राप्त होती है। परवर्ती महाकवि भारवि ने भी अपने महाकाव्य में इसी अभिप्राय को व्यक्त करने वाली सूक्ति लिखी है– "सहसाविदधीत न क्रियामविवेकपरमापदांपदम्।"

इस प्रकार साहित्य सदैव से अनुकूल व विवेक पूर्ण बुद्धि से काम लेने की शिक्षा देता है, ताकि विपत्तियों से बचा जा सके।

तपोभिः प्राप्यते भीष्टंनासाध्यं हितपस्यतः –"तपस्या से अभीष्ट फल की प्राप्ति होती है, कुछ भी असाध्य नहीं होता।"

सुभाषित पार्वती द्वारा अपने पिता हिमवान् के समक्ष कहा गया है, जहाँ वे शिव को पति रूप में प्राप्त करने हेतु कठोर तप करने की बात कहती हैं कि तपस्या से ही मेरी यह मनोकामना अवश्यमेव पूर्ण होगी।

प्रस्तुत सुभाषित द्वारा तप की महत्ता एवं प्रभाव सूचित होता है कि तप में वह शक्ति होती है, जिससे मनुष्य के सभी मनोरथ अवश्यमेव सिद्ध हो जाते हैं। व्यक्ति के द्वारा की गई तपस्या कदापि निष्फल नहीं जाती। तप का तात्पर्य वन–कानन आदि अरण्य प्रदेशों में यज्ञ–हवन, भजन–पूजन या शरीर को कष्ट देकर–भूखे–प्यासे रहकर की जाने वाली तपस्या मात्र ही नहीं है, वरन् जितना भी धर्मयुक्त आचरण है, योग एवं इन्द्रिय संयमादि है–वह सभी तप के अन्तर्गत आता है। मनुष्य द्वारा स्वजीवन यात्रा में घर–परिवार, समाज–राष्ट्रादि के प्रति पूरी निष्ठा, समर्पण तथा कर्तव्य परायणता के साथ किए जाने वाले कर्तव्यों व दायित्वों का निर्वहन भी एक प्रकार से तप ही है, जो कभी निष्फल नहीं जाता एवं व्यक्ति को सदैव अभीष्ट सिद्धि प्रदान कराता है। इस प्रकार यह सुभाषित मानव की तपः प्रवृत्ति और उसके द्वारा अभीष्ट प्राप्ति का सुंदर संदेश एवं प्रेरणा देता है।

दशपुत्रसमाकन्या या न स्याच्छीलवर्जिता –"शीलवान् कन्या दस पुत्रों के समान होती है।"

प्रस्तुत सुभाषित में उत्तम शील तथा कन्या की महत्ता बतलाई गई है। उत्तम शील व सदाचार प्रत्येक मानव के लिए अपरिहार्य है। शील व सदाचार से रहित मानव अपना भी पतन व अपमान कराता रहता है एवं दूसरों को भी अनेकशः पीड़ा एवं दुःख, शोक पहुँचाता रहता है। यहाँ शास्त्र ग्रन्थों का उद्धरण देते हुए कन्या के विषय में भी यही बात कही गई है कि यदि कन्या शील व सदाचार से युक्त हो तो कन्या होने को दुःखदायी (जैसा कि लोक मानस है कि प्रायः कन्या का होना दुःखदायी माना जाता है और सभी की चाहना पुत्र प्राप्ति की रहती है।) नहीं, वरन् उस एक कन्या को ही दस पुत्रों के समान माना जा सकता है। अर्थात् दस पुत्र भी माता–पिता को वह संतान सख नहीं दे सकते, जो कि एक शीलवती कन्या से माता–पिता को प्राप्त होता है और वे गौरवान्वित तथा धन्य हो जाते हैं। इस प्रकार इस सुभाषित द्वारा लोक को कन्या की महत्ता एवं लिंग समानता का सुन्दर विचारोपागम दिया गया है।

कुपुत्रदोषैः प्रहतानुविद्धं यथाकुलं याति धनान्वितस्य –"धनी अथवा सम्पत्तिशाली व्यक्ति का कुल कुपुत्र के दोषों से नष्ट हो जाता है।"

प्रस्तुत सुभाषित द्वारा बतलाया गया है कि मनुष्य के प्रतिष्ठित व सम्पन्न कुल–परिवार को नष्ट या पतित करने के लिए एक ही कुपुत्र पर्याप्त है। जिस कुल या वंश में कोई बुरा पुत्र हो, वह कुल धन–सम्पन्न एवं प्रतिष्ठित होने पर भी उस एक कुपुत्र के बुरे कार्यों से नष्ट हो जाता है। महाभारत में कौरव– 'दुर्योधन' इसका सबसे बड़ा और सटीक प्रमाण देखा जा सकता है। इसके अतिरिक्त लोक में अन्य अनेक ऐसे दृष्टान्त देखे जा सकते हैं, जहाँ एक ही कुपुत्र पूरे कुल को नष्ट कर देता है। अतः सुभाषित द्वारा गुणवान एवं सदाचारी बने रहने की शिक्षा प्राप्त होती है। साथ ही पुत्र मोह में अन्धे होकर माता–पिता उसे निरंकुश व कुमार्गगामी कदापि न बनाएं, वरन् उस पर अंकुश रखें तथा सद्मार्गगामी बनाएँ– यह भी शिक्षा मिलती है।

राजदण्डभयादेवपापाः पापं न कुर्वते –"राजदण्ड के भय से ही पापी लोग पापाचरण नहीं करते।"

यह सुभाषित 'दण्डनीति' नामक अध्याय में राज्य में दण्ड की अनिवार्यता के सन्दर्भ में कहा गया है। जिससे ज्ञात होता है कि किसी भी राष्ट्र या राज्य में लोगों को अनुशासन एवं मर्यादा में रखने हेतु और अपराधों को रोकने हेतु राजा को दण्ड विधान अवश्यमेव करणीय है। क्योंकि दण्ड के भय से ही पापी, अपराधी निरंकुश एवं दुष्ट प्रवृत्ति के लोग पाप या अपराध से निवृत्त तथा मर्यादा में रहते हैं। इसी अभिप्रायः को व्यक्त करने वाला एक और भी सुभाषित इस पुराण में मिलता है– "मर्यादास्थापनार्थं च दण्डनीतिः प्रवर्त्तते।" अर्थात् संसार में व्यवस्था या मर्यादा की स्थापना हेतु दण्डनीति का प्रयोग होता है।

सन्तः प्रतिष्ठाहिसुखच्युतानां –"सुख से वंचित लोगों के लिए संत ही परमआश्रम होते हैं अर्थात् दुःखी साधु लोगों को सज्जनों से ही सान्त्वना मिलती है।"

सुभाषित में सज्जन या सन्त लोगों का परोपकारी सत् स्वभाव बतलाया गया है कि जो लोग सुख से वंचित होते हैं, उन्हें अन्य कहीं कोई आश्रय, सान्त्वना, सुख या प्रसन्नता प्राप्त नहीं होती; उनके आश्रय तो मात्र सज्जन पुरुष ही होते हैं। सज्जन पुरुषों का यह स्वभाव ही होता है कि वे अपने परोपकारी, सत्स्वभाव से सभी का, विशेषकर सज्जनों का दुःख दूरकर देते हैं। संस्कृत वाङ्मय में सज्जनों के स्वभाव को व्यक्त करने वाली अनेक सूक्तियाँ मिलती हैं तथा सत्संगति करने के निर्देश भी प्राप्त होते हैं। अतः सुभाषित से मनुष्य को

सत्स्वभावी, परोपकारी व सज्जन बने रहने, दुःखों से विचलित न होने एवं सत्संगति करने की शिक्षा प्राप्त होती है।

दुर्जनः सुजनत्वाय कल्पते न कदाचन –"दुर्जन कभी भी सज्जन नहीं बन सकता।"

सुभाषित द्वारा लोक में दुष्टजनों की प्रवृत्ति बतलाई है कि जो दुष्टजन होते हैं, वे चाहे कितना ही प्रयास किया जाए अथवा उन्हें सत्संगति में रखा जाए, परन्तु वे अपनी दुष्टता कभी नहीं छोड़ते; वे कभी सज्जन नहीं बन सकते। अतः कभी भी दुर्जनों पर विश्वास नहीं करना चाहिए तथा इनका परित्याग करना चाहिए अर्थात् इनसे दूर ही रहना चाहिए। चाहे उनमें कोई गुण या विशेषता दिखलाई दे तो भी; क्योंकि वह अपनी दुष्टता से दूसरों को हानि अवश्य ही पहुँचाता है। यथोक्तम् हितोपदेशेऽपि– "दुर्जनः परिहर्त्तव्योविद्ययाऽलङ्कृतोऽपि सन्..... ।"

इसी प्रकार मत्स्य महापुराण में और भी बहुत से सुभाषित मिलते हैं; यथा–

क्रियाश्रेष्ठादयास्मृता –क्रियाओं में श्रेष्ठ क्रिया दया होती है।

धर्मत्तत्वेह्यविज्ञातेमतिभेदस्तुजायते – धर्म तत्व का ज्ञान न होने पर मति वैभिन्नय होता है।

न हिंसा धर्मउच्यते –हिंसा को धर्म नहीं कहते।

अन्नदानं यथाशक्त्याकर्तव्यंभूतिमिच्छता –समृद्धि या वैभव चाहने वालों को सदा यथाशक्ति अन्न का दान करते रहना चाहिए।

न वित्तशाठ्यं कुर्वीत –कभी भी धन में हेराफेरी या चालाकी नहीं करनी चाहिए।

सान्त्वंसदावाच्यं न वाच्यंपरुष क्वचित् –सदैव सान्त्वना युक्त वचन बोलने चाहिए। कटु या कठोर वचन नहीं बोलने चाहिए।

प्रायः प्रसादः कोपोऽपिसर्वेहिमहतां महान्–महान् व्यक्तियों की प्रसन्नता एवं क्रोध–दोनों ही महान् होते हैं।

इत्यादि बहुत सी सूक्तियाँ अथवा सुभाषित इस पुराण में मिलते हैं।

निष्कर्ष :-

मत्स्य महापुराण के अनुशीलन से यह ज्ञात होता है कि इसमें बहुत से सुभाषित मिलते हैं, जो मानव को लोक व्यवहार से परिचित कराने वाले तथा उसके लिए हितकारी व कल्याणकारी बातों को प्रकट करने वाले हैं। लोक का स्वभाव, नीति की बातें, धर्म–अधर्म, पाप–पुण्य और करणीय व त्याज्य इत्यादि सभी का ज्ञान इन सुन्दर, शिक्षाप्रद वचन रूपी सुभाषितों से प्राप्त होता है। अतः प्रस्तुत महापुराण के सुभाषित मानव के लिए अनेकशः उपादेय व श्रेयस्कर हैं; जिसकी जानकारी एवं अनुपालना उसकी इहलौकिक व पारलौकिक यात्रा को सफल, सुखद व कल्याणकारी बनाने वाली है।

सन्दर्भ सूची :-

1. मत्स्य महापुराण, हिन्दी अनुवाद सहित, गीता प्रेस गोरखपुर प्रकाशन, सातवाँ पुनर्मुद्रण, संवत् 2068; अध्याय 146/50
2. वही, देखें अध्याय 146 में "वज्राङ्ग द्वारा इन्द्रबंधन की कथा"
3. वही, 154/181
4. श्रीमद्भगवद्गीता, 2/20
5. वही, 2/21
6. वही, 2/24

7. मत्स्य महापुराण, 158/3
8. वही, 158/1–3
9. वही, 158/4
10. वही, 154/290
11. वही, 154/157
12. वही, 140/71
13. वही, 226/15
14. वही, 142/75
15. वही, 37/12
16. वही, 148/71
17. हितोपदेश–मित्रलाभ, पद्यभाग मात्र, पद्य–130, पृष्ठ–37
18. मत्स्य महापुराण, 145/45
19. वही, 144/8
20. वही, 143/13
21. वही, 93/110
22. वही, 100/36
23. वही, 36/13
24. वही, 154/214

मो.नं. 8279251479, ईमेल –agnihotrishailja1@gmail.com

संगम Impact Factor : 6.632
Website : www.ginajournal.com
ISSN : 2321-8037
SANGAM
विशेषज्ञ समीक्षित पत्रिका A Peer Reviewed International Refereed Journal
Vol. 12, Issue 1-2
गीना देवी शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित साहित्य, शिक्षा, संस्कृति एवं शोध को समर्पित मासिक
पृष्ठ : 14-20

Role of Environmental Education in Teacher Education

Dr. Savita Bhandari
Asst. Prof. B.Ed. Department, M.B.G.P.G. College Haldwani.

Abstract :

The Objectives of Environmental Education include promoting environmental awareness, encouraging environmentally responsible behavior, and developing an environmental ethic that promotes an understanding of the ecological interdependence of the social, political, and economic spheres.

Environmental Education plays a crucial role in climate change communication it enables in getting the knowledge about the changes that have altered the environment - land, water, weather, and vegetation; social, cultural and political environment are all essential components of environmental education. It equips individuals with the knowledge to understand climate change and its impact, and the skills to mitigate and adapt to these changes. UNESCO has set a target to make environmental education a core curriculum component in all countries by 2025. According to the Director-General of UNESCO "Education must prepare learners to understand the current crisis and shape the future. To save our planet, we must transform the way we live, produce, consume and interact with nature. Integrating education for sustainable development into all learning programmes must become fundamental, everywhere."

Teachers are considered a key factor in influencing and encouraging the interest of students on environmental issues. Environmental Education in teaching education has became a priority since the end of twentieth century. To protect and conserve the environment emphasis should be placed on Environmental Education in both formal and non formal system of education. Instead of following traditional method of classroom teaching teachers should adopt innovative teaching techniques and they need to be skilled and properly trained for this. Teachers who are themselves environmentally literate they can only teach their students about the subject. There should be regular training and workshops for teachers so that they can update their knowledge and their gaps in knowledge can be

identified and worked upon. This will greatly help in their professional growth as well. Teacher Education involves deliberating several issues relating to content, learning and teaching methodologies, materials development and capacity buildings requirements for its effective implementation. Empowering kids with knowledge and guiding them in the right direction is the way towards building sustainable future. Encouraging students to debate and discuss issues related to environmental education can help them develop critical thinking skills and this will also increase their interest in the topics related to environmental education.

Keywords : Environmental Education, teacher education, teachers, environment, students, sustainable future, training, programmes, conservation.

Introduction :

Environmental education is crucial for motivating teachers and teacher educators to take an active role in discussing, debating, and protesting major environmental issues. There are many definitions of the term environmental education but the most important one was given by UNESCO: "Environmental education is a learning process that increases people's knowledge and awareness about the environment and associated challenges, develops the necessary skills and expertise to address the challenges, and fosters attitudes, motivations, and commitments to make informed decisions and take responsible action"

IQAir released the world Air Quality report 2022, 39 Indian cities were named in the list of 50 most polluted cities in the world. The report said that Air pollution is the second biggest risk factor for disease in India. In 2019, a Lancit study found that nearly 1.6 million deaths in India could be attributed to air pollution, comprising 18% of the total deaths in the country. The present generation has the responsibility to make this world a better place to live not only for themselves but also for future generation. We must nurture the environment and take climate change mitigation initiatives with all seriousness.

Environmental education is very important for teachers as well as students as they are our future and if they will understand the importance of conservation of the natural environment responsible actions will be taken by them to keep our environment strong and sustainable for the future. Teacher is from the intellectual class of the society plays a very crucial role in developing sensitivity towards this topic, they can help students to develop the skills and aptitudes necessary to understand ecological issues and take environment protection and management responsibilities. Although it is not just the responsibility of teachers to increase awareness about environmental issues the whole society should run the campaign of environmental protection and improvement in a comprehensive manner.

Importance of environmental education for teacher education programme :-

It is believed that every teacher should be environmentally-literate in order to make Environmental Education a part of his/her lessons. To protect and conserve the environment, emphasis should be placed on Environmental Education in both formal and non formal system of education. Environmental education is an important part of all education stages to achieve environmental awareness, reduce ecological footprints, develop respect for nature and take actions that help preserve the environment. For this primary responsibility lies with teachers.

1. A teacher role is to transfer knowledge and to act as the facilitator, a role model and a mentor.
2. Teacher promote behaviour directed towards environmental protection and lead to transformation that help protect environment.
3. Teachers can develop skills and attitudes necessary to understand ecological issues and take actions.
4. Teachers can help their students to develop awareness of creative, dynamic effective and efficient environmental protection and management responsibilities.

The contamination of the environment is one of the most obvious issues the world is currently facing. The ecology has suffered as a result of excessive human exploitation of nature. Making people aware of environmental damage is urgently necessary. The quality of the environment may alter due to citizen participation and education.

In our country there is a lack of teacher education programmes, only a small number of institutions in our nation offer teacher education programs and environmental education teacher training to prepare future educators. In actuality, no person living on the planet can afford to ignore environmental challenges. Therefore, it is crucial that environmental studies become an integral component of the educational process.

Environmental education promotes the holistic developments of students as it is not merely about acquiring knowledge about environmental issues. It is more about acquiring the skills to objectively analyze situations and come up with innovative solutions for them. Without the proper knowledge of environmental education the leaders of tomorrow will be ill-equipped to overcome the environmental challenges the world will face. Recent surveys shows that people with more education are more likely to view climate change as a threat to our planet. Environmental education can also promote critical thinking , communication, and problem solving skills. This is particularly important today as students need to be able to evaluate the long-term impact of social, economical, and ecological policies.

India is a diverse country in terms of its climate, geography, ethnicity, flora and fauna , society

and economy. Therefore , environmental education in the country has to be location specific. Majority of environmental degradation arises from lack of education. We should make sure that our teachers as well as children are aware of the various environmental problems around them so that they can find solutions and create sustainable and eco-friendly life.

Objectives of Environmental Education :-

The major goal of grassroots environmental education is to successfully educate people and communities on the complexity of the built and natural ecosystems. Environmental education seeks to lay the groundwork for individual participation in environmental protection and the wise and responsible use of natural resources by raising public awareness of environmental issues, exploring potential scenarios, and exploring goals and objectives. Environmental Education can be formal as well as informal. Formal Environmental Education is that which is imparted through school and college curriculum and Informal Environmental Education is that which can be imparted by campaigns , NGOs, Eco club etc.

Here are the goals for environmental education as stated by UNESCO :

1. The major goal of grassroots environmental education is to educate people.
2. Create awareness among people : when awareness among people through Environmental Education is created the solutions of the problem will be generated.
3. To develop a positive attitude towards the environment.
4. Adopt a more sustainable lifestyle.
5. To establish balance between economic and technological development and environmental protection.
6. You have the attitude, but you also need to have the necessary skills to carry out the necessary environmental protection measures. The goal is to teach vital abilities to resolve environmental problems.
7. The final goal is to motivate individuals to engage in crucial environmental preservation initiatives.

Challenges faced by teachers in teaching Environmental Education :-

There a strong need to train teachers how to infuse Environmental Education in their subjects in pre- service training. It is observed that teachers do not practice innovative techniques to teach environmental education in their courses. Today most of teachers follow traditional lecture technique in their teaching methodology they think it is the only effective way to teach in the class. There are several challenges faced by teachers in teaching Environmental Education as they possess inadequate skills in infusing Environmental Education to their students. Some of the challenges are discussed

below.

1. Lack of training : Today many teachers are not well equipped with training Environmental Education and it is a new domain for them. There is a need for both pre- service and in-service training for teachers to infuse emerging environmental issues in their courses.

2. Lack of resources : Lack of resources and support from the institutes and agencies may restrict the access of teachers to training opportunities. It is observed that not all Indian educational institutes does not offer their teachers adequate resources, reference material to impart sustainable environmental education to their students.

3. Pressure of providing Good result in examinations : In order to be considered as good teachers by the society and the institution the teachers are more focused in activities that would better prepare their students for grades in the exam rather than focusing on practical problems or other issues.

4. Locality of teachers : Earlier research shows that teachers from different settlement showed different characteristics towards environmental problems. Teacher candidates who live in urban areas have more positive attitude towards environmental problems than the one who lived in rural areas.

5. Teaching methods : It is found that teachers do not practice outdoor learning which is the most suitable method for teaching environmental education. Teachers should practice innovative techniques rather that just classroom teaching for teaching environmental education. These methods will enhance the interest of learners and they will be more enthusiastic learning the topics.

6. Lack of scope : Environmental Education has been introduced as an optional subject in many teacher training courses. It should be made a compulsory subject and not an elective.

Strategies for teaching Environmental Education :-

There are a number of strategies for teaching environmental education that can really make an impact. Empowering kids with knowledge is the key step towards building a sustainable future. Teachers have a crucial role as mentors, guiding children in their exploration and providing a safe space for open dialogue. Children should not be overwhelm with either too much information or too startling information when they don't have the processing abilities to cope with it.

1. Encourage children to dive into books that explore climate change, sustainability and environmental issues.
2. In this era of digital India online exploration is also a good way to enhance the knowledge of children. Help children navigate this digital realm responsibly by guiding them towards reliable sources. Introduce them to reputed websites, scientific articles, documentaries and various educational platforms. This will spark their curiosity, captivates their imagination and will

inspire them to learn more.

3. Organize guest lectures for students who are expert in this field. This could be local environmentalists, scientists or member of local NGOs who are much aware in this topic. This will enhance their interest in this topic and they will be intrested in learning more.
4. Get out of the classroom and organize field trips, nature walk and nature based activities to break the monotomy of daily lectures.
5. Give assignments to children related to environmental issues and ways to tackle them and motivate them to for their out of the box ideas and experiments.
6. Create an attitude of positive thinking in children instead of only focusing on the problem and environmental issues introduce them to inspiring stories of individuals, communities and organizations that are making a difference.
7. Nothing beats hands on experience when it comes to deepening learning and creating lasting memories. Engage them in hands on projects such as making bird feeders, hedgehog houses. Encourage them to choose a topic they find intresting and guide them in conducting research, organizing their findings and presenting their knowledge to others.

By embracing diverse learning methods can foster an environment of exploration and discovery. We can inspire a generation of environmentally conscious individuals ready to tackle the challenges ahead.

Suggestions :

Teachers have definitely a big role to play in environmental education. They can encourage their learners to spend some time with nature by a visit to the countryside, mountains, lakeside, natural parks. Various tree plantation programmes and awareness programmes such as Quiz, essay, painting competition regarding various environmental issues can be planned by them. Teachers can organize small cleaning events of natural areas like beaches and forests. They can collaborate with local NGOs and arrange events for cleaning natural areas and organizing awareness workshops for students and people living nearby. In this way students learn to take care of natural environment which is very necessary for both humans and wildlife. Teachers can encourage students to promote recycling and educate them about various benefits of recycling.

An environmentally aware teacher will definitely have good impact over its students, will bring nature into the classroom and it will benefit the students as well as the community. Some suggestions for a better teaching learning environment are discussed below.

1. Regular follow up on Teacher's Pedagogical Content Knowledge (PCK) : This can be used to identify the gaps in teacher knowledge and if teacher need to be acquainted with particular

knowledge in about the content. This will also help in their professional growth.

2. Technology oriented Environmental education for teachers as well as students : Research studies shows that technology has a positive impact on the teaching learning system and it has bought more positive change in attitudes in learners. Teaching will become more dynamic and both teacher and student will be motivated.

3. Teaching should be such that there are student - centred classroom rather than teacher-centred ones especially in environment related courses.

Conclusion :-

Studies shows that Environmental Education could increase individuals feelings towards environmental problems and develop positive attitude in individuals. Teachers play a vital role in this especially at school level. Student- centered is the best approach considered in teaching environmental education rather than teacher- centered approach. Teacher who does not have adequate knowledge and skills in the topic can never teach the subject as required and cannot meet the challenge of engaging students in Environmental Education. Teachers also requires the support from institute, public and policy makers so that they can make a difference and overcome the challenges faced by them in incorporating environmental education in their courses. There is a great need to create consciousness of the environmental issues in all sections of the society beginning with the childhood and teachers play a great role in achieving this. Required amendments should be done regularly in the curriculum of students so that they remain updated with all the new things happening around the world related to environmental education.

References :-

1. https://www.wikipedia.org/
2. Oncu, Unluer. Environmental view and awareness of preschool teacher candidates. Procedia – Social and Behavioural Sciences. 2015; 174:2653 -2657.
3. Teksoz, et al. A new vision for chemistry education students: Environmental education. International Journal of Environmental & Science Education. 2010; 5(2):131- 149.
4. https://www.ecoedhub.com/strategies-for-teaching-environmental-education.html
5. https://www.researchgate.net/publication/332446189_Environmental_Education_in_Teacher_Education_and_Challenges
6. Ghosh K. Environmental awareness among secondary school students of Golagahat District in the state of Assam and their attitude towards environmental education. IOSR Journal of Humanities and Social Sciences, 2014; 19(3):30-34.

Address : M.B.G.P.G. College Haldwani, Nainital Road, (B.Ed. Department savita bhandari)
Email : Savitabhandari64@gmail.com, M. 8630563139, 9760854805

संगम Impact Factor : 6.632
Website : www.ginajournal.com
ISSN : 2321-8037
SANGAM
विशेषज्ञ समीक्षित पत्रिका A Peer Reviewed International Refereed Journal
Vol. 12, Issue 1-2
गीना देवी शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित साहित्य, शिक्षा, संस्कृति एवं शोध को समर्पित मासिक
पृष्ठ : 21-29

GURDWARA REFORM AGITATION (1920-25) : ANALYSIS OF ITS 'HISTORICAL' LITERATURE

Dr. Harwinder Kaur
Assistant Professor in History, BAM Khalsa College, Garhshankar.

After the death of Maharaja Ranjit Singh, the position of Sikh institutions including the Gurdwaras began to deteriorate. Gradually with the annexation the control of the Gurdwaras came in the hands of the *Mahants* and *Pujaris* who became not only corrupt but also practiced debauchery and idol worship. Keeping in view significance of the Golden Temple politically, the Britishers appointed a committee of the Sikh Sardars and also designated a Manager to look after the affairs of the Golden Temple. He was a British appointee with no powers. Actually the British Government began to interfere by the appointment of *Sarbrah* in 1882 and also appointed pro-British Sikh Sardars along with the *Mahants* and *Pujaris* in Golden Temple and also in the major Sikh shrines in Punjab.[1] The prominent Sikh Gurdwaras that were taken under the British control included the Golden Temple along with Akal Takhat, Baba Atal and Durbar Sahib at Tarn-Taran.[2]

The new management of the Sikh shrines was not only pro-British but also began to act against the Sikh sentiments when this leadership opposed the movement of 1909 and compelled the Sikhs to join British army during the World War-1 and also after the massacre at Jallianwala Bagh, the management bestowed upon a *Siropa* to General Dyer.[3] These incidents created resentment among the Sikhs and also feeling of hatred against the priestly class. Consequently, the sensitive Sikhs launched a movement to liberate the Sikh shrines from the control of the corrupt pro-British management.

With the objective of reviving sanctity of the holy shrines and their freedom the Sikhs established a 'Shiromani Gurdwara Parbandhak Committee', on 15 November 1920 and also founded the 'Shiromani Akali Dal' on 20 December 1920. The purpose of these two Sikh bodies was to launch a peaceful agitation and through democratic means to achieve their aims. Although, the *Morchas* of the Sikh movement were agitation in character but the authority used violence to crush them.[4] The first conflict between the Sikhs and the

1 Sohan Singh Josh, *Akali Marchian Da Itihas,* Aarsi Publishers, Delhi, 2000, pp.25-26.
2 K.L. Tuteja, *Akali Andolan,* 1920-25, in A.C. Arora (ed.), *Punjab Dian Lok Leharan*, Publication Bureau, Punjabi University, Patiala, 1989, p.130.
3 K.L. Tuteja, *op. cit.,* p.130.
4 *Ibid.,* p.131.

government ensued in January 1920 in Tarn-Taran. It was provoked by the *Mahants*. Two Sikhs fell victim to it. Events of this kind were repeated on a wider scale at Nankana Sahib, the birth place of Guru Nanak. On 20 February 1920 Bhai Lachhman Singh led a Jatha to put an end to the scandalous state of affairs prevailing under the management of *Mahant* Narain Dass at the Nankana Sahib Gurdwara. Armed Pathans and desperados hired by the *Mahant* fell upon the peaceful *Jatha* and killed about 200 Sikhs. It was a major Shock. In addition, large numbers of the wounded were burnt alive. Yet the Sikhs remained peaceful. The government resorted to repressive measures to suppress the Sikh movement. On 7 November 1921, the deputy commissioner of Amritsar took away the keys of the Golden Temple. This would have provoked another stir but the government yielded and returned the keys to the Sikhs management.[5]

After a few months another clash occurred at 'Guru Ka Bagh'. Every day a *Jatha* of Sikhs went to the disputed spot and was mercilessly beaten by the police. In August the police shot down a number of Sikhs. The struggle still continued, Maharaja Ripudaman Singh of Nabha, a sympathizer of the Sikhs observed the martyr's day to honour all those who had laid down their lives at Nankana Sahib. The British government forced him to abdicate. This compelled the Sikhs to launch another agitation called 'Jaito Da Morcha'. They led Jathas which were subjected to all kinds of torture. The atrocities perpetrated by the police on the peaceful Sikhs aroused public sympathy. While the 'Jaito Morcha' was still going on, another clash took place at Bhai Pheru in the district of Lahore. The Sikh resentment, turned as *Akali Lehar,* began to fade in 1923. The more radical section of the Akalis did not approve of the non-violent method of struggle and formed a separate organisation called the 'Babbar Akalis' to meet the British challenge.[6] The pressure created by the violent methodology of the Babbars resulted in the passing of the Sikh Gurdwaras and Shrines Act on 28 July 1925.[7]

The movement produced immense literature for the propaganda. These included the pamphlets and newspapers along with some books. *Akali Te Perdesi, Akali Goonj, Akali Ranjit, Babbar Sher, Khalsa, Qaumi Dard, Desh Sewak, Khalsa Akhbar, Khalsa Smachar Khalsa Advocate, Nirol Khalsa* in Punjabi. There were some newspaper in Urdu, English and Hindi who supported the Akali movement.[8] Some of the important Pamphlets produced by

---

5 K.L. Tuteja, *op.cit.,* p.132.

6 Navtej Singh, *Challange To Imperial Hegemony*: *The Life Story of A Great Indian Patriot Udham Singh,* Publication Bureau, Punjabi University, Patiala, 1998, p.25.

7 *Ibid.,* pp. 24-25.

8 Sohan Singh Josh, *op.cit.,* p.501.

the *Akali Movement* were : *Angreji Raj Vich Mitti Kharab* by Hardit Singh Rawalpindi, *Naukershahi De Julam Da Namuna* by Giani Maan Singh of Lahore *Guru Ke Bagh Vich Gore Shahi Tufan* by Nirinjan Singh Sarl, *Naukershai Di Kartoot* by Natha Singh Ramgharia, *Taaje Jakham Arthat Guru Ke Bagh Ka Nazaara* by Maan Singh, *Zulaman Da Tufaan Arthaat Saka Guru Ka Bagh* by Bhai Mehtab Singh, *Jaito Vich Khoon Da Parnala* by Rattan Singh Azad, *Naukar Shai Di Chhati Vich Shantmee Gola* by Rattan Singh Azad, *Zulm De Waan, Jaito Vich Khoon Di Holi* by Mula Singh Dukhia and *Dardan De Hanjhu* by Bhai Nihal Singh Akali etc.[9] For the purpose of analysis of utilization of 'History' only some newspapers produced and related to the Akali movement have been selected from the immense literature. These are mainly *Akali Te Pardesi, Babbar Sher* and *Ranjit*.

The reformers of Gurdwara movement motivated the followers through reminding the Sikhs of their proud heritage and history. They were also told about the innumerable sacrifices made by the Sikhs for the protection of their religion. While narrating these sacrifices, special coverage was given to the atrocities committed on Bhai Sati Dass and Bhai Mani Singh.[10] During the agitation not only the Sikhs of Punjab but from foreign countries also joined the movement. The acts of bravery shown by these two categories of Sikhs have been equated with the sacrifice of the Mansoor.[11] Guru Nanak Dev was often remembered as the founder of the Sikh religion and equality and his followers were appreciated. Further in ordered to bear the atrocities and repressions the Sikhs prayed to Guru Nanak to bless them with courage to face it.[12] Also the same request was repeated in their prayers to the last Guru Gobind Singh. Besides, there were repetitions of atrocities committed on the Sikhs by the

---

9 Mohinder Singh, *op. cit.,* pp. 241-244; Sohan Singh Josh, *op. cit.,* pp. 497-500.

10 ਦੁਨੀਆਂ ਜਾਣਦੀ ਸ਼ੇਰਾਂ ਦੀ ਕੌਮ ਤੈਨੂੰ, ਮਰਦੀ ਰਹੀ ਜੀਕੂੰ ਆਪਣੀ ਆਨ ਬਦਲੇ।
ਆਨ ਸ਼ਾਨ ਬਦਲੇ ਜਿੰਦ ਜਾਨ ਬਦਲੇ, ਤੇ ਜਹਾਨ ਬਦਲੇ ਬ੍ਰਹਮ ਗਯਾਨ ਬਦਲੇ।
ਕਈ ਲਖ ਜੂਝੇ ਕਤਲਗਾਹ ਅੰਦਰ, ਕਈ ਮਾਰਕੇ ਮਰੇ ਮੈਦਾਨ ਅੰਦਰ।
ਕਈ ਸੀਸ ਲਾਏ ਸਿੱਖੀ ਸਿਦਕ ਉਤੇ, ਫੈਦਾ ਸੋਚਿਆ ਦੁਸ਼ਟ ਮੁਕਾਨ ਅੰਦਰ।
ਕਈਆਂ ਵਧ ਮਨਸੂਰ ਤੋਜ ਹੱਠ ਰੱਖੇ, ਖਾਤਰ ਗੁਰੂ ਦੀ ਗੋਰ ਸਮਾਨ ਅੰਦਰ।
ਸੀਸ ਆਰਿਆਂ ਹੇਠ ਚਿਰਾਵਦੇ ਰਹੇ, ਬੰਦ ਬੰਦ ਦੇ ਤਾਂਈ ਕਟਾਂਵਦੇ ਰਹੇ।
ਕੌਮੀ ਸ਼ਾਨ ਦਾ ਅਜ ਸਵਾਲ ਆਇਆ, ਗ਼ੁਲਮ ਰਾਜ ਮੁਕਾਬਲੇ ਡਟ ਗਿਆ।
ਪੰਥ ਪਿਆਰੜੇ ਵਕਤ ਸੰਭਾਲ ਲੈਣਾ, ਝੜੀ ਲਾਵਣੀ ਤੁਧ ਕੁਰਬਾਨੀਆਂ ਦੀ।
ਸੀਸ ਆਰਿਆਂ ਹੇਠ ਚਿਰਾਂਵਦੇ ਰਹੇ, ਬੰਦ ਪੰਛੀ, ਅਕਾਲੀ ਤੇ ਪਰਦੇਸੀ, 6 ਦਸੰਬਰ 1924.

11 ਲੰਘ ਸੱਤ ਸਮੁੰਦਰੋਂ ਅਜਬ ਝਲ ਕੇ, ਕਲਗੀ ਵਾਲੜੇ ਦੇ ਬਾਂਕੇ ਬੀਰ ਆਏ।
ਬਲਦੀ ਸ਼ਮਾਂ ਨੂੰ ਦੇਖ ਦਿਲਗੀਰ ਹੋਕੇ, ਰਾਹ ਔਖੜੇ ਪਹਾੜਾਂ ਨੂੰ ਚੀਰ ਆਏ।
ਬਦਲੇ ਹਕ ਦੇ ਮਰਨ ਮਨਸੂਰ ਆਏ।
''ਬਦਲੇ ਹਕ ਦੇ ਮਰਨ ਮਨਸੂਰ ਆਏ'', ਆਸਾ ਸਿੰਘ ਰੋਗੀ, *ਉਪਰੋਕਤ,* 10 ਦਸੰਬਰ, 1924.

12 ਕ੍ਰਿਪਾ ਸਮੁੰਦ ਮੇਰੇ ਬਾਬਾ ਗੁਰੂ ਨਾਨਕ ਜੀ, ਧੰਨ ਤੇਰੇ ਸਿੱਖ ਧੰਨ ਪ੍ਰੀਤਮਾਂ ਤੇ ਆਪ ਹੈ
ਰਾਤ ਦਿਨ ਪੈਹਰਾ ਦੇਵੇ, ਸਿੱਖਾਂ ਨੂੰ ਤਰਾਣ ਲਈ, ਬਿਰਦ ਪਛਾਣ ਬਾਬਾ, ਬਖਸੇ ਸਭ ਪਾਪ ਹੈ।
ਪਾਰਸ ਬਨਾਣ ਲਈ, ਰਸਤਾ ਦਿਖਾਏ ਸੱਚਾ, ਜੇਲ੍ਹਾਂ ਵਿੱਚ ਪ੍ਰੇਮੀ ਤੇਰੇ ਪਾਂਵਦੇ ਸੰਤਾਪ ਹੈ।
ਲਾਲ ਤੇਰੇ ਬਾਬਲਾ ਜੀ ਖੁਸ਼ੀ ਖੁਸ਼ੀ ਵਧ ਅੱਗੇ, ਖਿੜੇ ਮੱਥੇ ਜਪਦੇ ਨੇ ''ਵਾਹਿਗੁਰੂ'' ਜਾਪ ਹੈ।
'ਬਿਰਦ ਆਪਣਾ ਪਿਤਾ ਸੰਭਾਲ ਖਾਂ ਹੁਣ', ਇੰਦਰਜੀਤ ਕੌਰ, ਉਪਰੋਕਤ, 12 ਦਸੰਬਰ, 1924.

Mughal State. At the same time the emphasis was also given on the episode of Panja Sahib in which the Sikhs were martyred by giving their lives before the train.[13] During the despatch of the *Jatha* prayer was made to the Guru to encourage them to make sacrifice for the protection of the religion and the fructification of Mansoor was also referred to.[14]

The toadies of the British government called the *Mahants* and were encouraged by the administration to commit anti-Sikh activities and their actions of atrocities were equated with the tyrannical behaviours of Kans, Ravana and Harnaksh who destroyed themselves while committing tortures against others.[15] At the same time the reformers also emphasized on the cooperation given to the British during the World War 1 when the Sikhs made large scale sacrifice to defeat the Germans, in turn the British government awarded them by the passing of the Rowlett Act, the massacre of Jallianwala Bagh the Budge budge incident and the tragedy of Nankana Sahib. It was also mentioned that the loyalty shown by the Sikhs during the last 70 years also was not taken care of by the British who was bent upon suppressing the peaceful Gurdwara reform movement through violent means.[16]

Thc Punjab was a pcaccful provincc whcrc thc romancc of Hccr and Ranjha was prevalent but the policy of the British had converted it into a fire-ball.[17] In the Sikh literature

---

13 ਹੋ ਕਲਗੀਧਰ ਪ੍ਰੀਤਮ ਪਿਆਰੇ, ਬਾਜ਼ਾਂ ਵਾਲੇ ਸਾਂਈ, ਦਿਆਂ ਦੁਹਾਈ।
ਦੁਖੀ ਬਚਿਆਂ ਕੌਮ ਦਿਆਂ ਨੂੰ, ਆਕੇ ਦਰਸ ਦਿਖਾਈ, ਸ਼ਰਣ ਰਖਾਈ।
ਉਹ ਵੀ ਜਾਲਮ ਰੋਲਾਂ ਹੇਠਾਂ ਦੇਹ ਸ਼ਹੀਦ ਕਰਾਏ ਨਹਿੰ ਪਛਤਾਏ।
ਰਤੀ ਨਾ ਡੋਲੇ ਸੇਵਕ ਤੇਰੇ ਕਈ ਪਰਖਾਂ ਵਿਚ ਪਾਏ, ਮਾਰ ਖਪਾਏ।
ਸ਼ਾਂਤ ਪੁੰਜ ਗੁਰ ਸਿੱਖਾਂ ਜਥੇ ਅਤੀ ਬੇਹਾਲ ਕਰਾਏ, ਬੀੜੀ ਪਾਏ।
'ਸ੍ਰੀ ਕਲਗੀਧਰ ਜੀ ਦੇ ਦਰਸ ਦੀ ਸਿਕ', ਇਕ ਬੰਦ ਪੰਛੀ, *ਉਪਰੋਕਤ*, 17 ਦਸੰਬਰ 1924.

14 ਵਾਹਵਾ ਲਾਡਲੇ ਗੁਰੂ ਦਸ਼ਮੇਸ਼ ਜੀ ਦੇ, ਖਾਤ ਧਰਮ ਦੀ ਹੋਣ ਕੁਰਬਾਨ ਚਲੇ।
ਫਿਦਾ ਧਰਮ ਤੋਂ ਜਾਨ ਤੇ ਮਾਲ ਕਰਕੇ, ਕਰਨ ਧਰਮ ਨੂੰ ਸੀਸ ਪ੍ਰਦਾਨ ਚਲੇ।
ਗੁਰੂ ਦਰ ਤੇ ਕਰੋ ਅਰਦਾਸ ਪਿਆਰੇ, ਹੋਵੇ ਆਤਮਾ ਵਾਂਗ ਮਨਸੂਰ ਸਾਡੀ।
'ਗਲੀ ਕਫਨੀਆਂ ਤੇ ਹੱਥੀ ਬੰਨ ਗਾਨੇ, ਸੀਸ ਬੰਨ ਸੇਹਰੇ ਨਾਲ ਸ਼ਾਨ ਤੁਰ ਪਏ', *ਉਪਰੋਕਤ*, 20 ਦਸੰਬਰ 1924.

15 ਰਾਜ ਮਦ ਵਿਚ ਮਤਿਆ ਮੱਤ ਮਾਰੀ, ਚੱਕੀ ਅੱਤ ਸੀ ਕੰਸ ਬਰਬਾਦ ਹੋਇਆ।
ਰਾਵਣ ਰਤ ਰਲਿਆ ਸਾਰਾ ਜਗ ਜਾਣੇ, ਕਾਲ ਬੰਨ ਪਾਵੇ ਸਿਰੇ ਸ਼ਾਦ ਹੋਇਆ,
ਬੇੜਾ ਗਰਕਿਆ ਦੈਂਤ ਹਰਨਾਕਸ਼ੇ ਦਾ, ਭਾਵੀ ਕਾਲ ਥੀਂ ਫਿਰੇ ਅਜ਼ਾਦ ਹੋਇਆ।
ਜੇਹੜਾ ਗ਼ੁਲਮ ਕਰਦਾ ਆਖਰ ਗਰਕ ਹੋਂਦਾ, ਏਹੋ ਫੈਸਲਾ ਆਦਿ ਜੁਗਾਦਿ ਹੋਇਆ।
ਤੂੰ ਕੀ ਸਮਝਨਾਇ ਤੇਰੇ ਜ਼ੁਲਮ ਅੱਗੇ, ਅਸੀਂ ਜਾਬਰਾ ਸੀਸ ਝੁਕਾ ਦਿਆਂਗੇ?
''ਕੇਹਰ'', ਕਵੀ ਕੁਟੀਆ ਕਲਕੱਤਾ, *ਉਪਰੋਕਤ*, 21 ਦਸੰਬਰ 1924.

16 ਸੱਤਰ ਸਾਲ ਦੇ ਦੋਸਤਾ ਕੀ ਕਹੀਏ, ਚੰਗਾ ਦੋਸਤੀ ਦਾ ਅੰਗ ਪਾਲਿਆ ਈ।
ਇਹ ਵੀ ਅਸੀਂ ਹਾਂ ਤੇਰਾ ਹਿਸਾਨ ਮੰਨਦੇ, ਸੁੱਤੇ ਪੰਥ ਨੂੰ ਟੂੰਬ ਜਗਾਲਿਆ ਈ।
ਤੇਰੀ ਖਾਤਰ ਕੁਰਬਾਨੀਆਂ ਬਹੁਤ ਕਰਕੇ, ਅਸਾਂ ਆਪਣਾ ਆਪ ਗਵਾਲਿਆ ਈ।
ਛਾਲਾਂ ਮਾਰ ਸਮੁੰਦਰਾਂ ਵਿੱਚ ਕੁੱਦੇ, ਹੱਥੋਂ ਜਰਮਨਾਂ ਤੇਨੂੰ ਬਚਾਲਿਆ ਈ।
ਟੋਟੇ ਜਿਸਮ ਹੋਇਓ ਜਦੋਂ ਜੰਗ ਮੁੱਕਾ, ਰੋਲਟ ਬਿਲ ਖਿਲੌਣਾ ਵਿਖਾਲਿਆ ਈ।
ਬਜਬਜ ਘਾਟ ਤੇ ਜਲ੍ਹਿਆਂਬਾਗ ਦੇਵੇਂ, ਤੀਜਾ ਨਾਲ ਨਨਕਾਣਾ ਰਲਾਇਆ ਈ।
ਗੁਰਦੁਆਰਾ ਸੁਧਾਰ ਦੇ ਰਾਹ ਅੱਗੇ, ਹੋਂਕੜ ਦਸਕੇ ਰੋੜਾ ਅਟਕਾ ਲਿਆ ਈ।
'ਸੀਨੇ ਵਿੱਚ ਅਲੰਬੜਾ ਬਾਲਿਆਈ', ਸੂਰਜ ਸਿੰਘ, ਉਪਰੋਕਤ, 2 ਅਪ੍ਰੈਲ 1925.

17 ਕਹਿੰਦੇ ਚਲ ਓਏ ਬਾਗ ਦੀ ਸੈਰ ਕਰੀਏ

mint for propagation for motivation, references were also made to the wars of Bhai Gurdas and were aimed to inspire the Sikhs to make any kind of sacrifices.[18] The period of Guru Gobind Singh heightened glory was also remerged when Guru Gobind Singh acted as a monarch by riding a horse with sword and arms and Falkon sitting on his shoulders. Also that he was accompanied by Panj Piaras (five beloved ones), four sons (Sahibzadas) and the military troupes. They use fought with the enemies and the depiction of such scenes were meant to inspire Sikhs to lead similar position.[19] The killings at Jallianwala Bagh and the well were often quoted as the symbols of British tyranny and the Sikhs were asked to go their heads before these holy places of sacrifices.[20] They were also reminded that in this agitation not only the older and young but children also participated. There is mention of an example at the Jungle of Nabha when a government official asked a child to beg pardon but the boy

---

ਅੱਜ ਤਾਂ ਨਵੀਂ ਬਸੰਤ ਸੁਹਾਈ ਹੋਈ ਹੈ।
ਹੁਸਨ ਹੀਰ ਦਾ ਚੰਬਾ ਰਵੇਲ ਖਿੜਿਆ
ਵੇਖਾਂ ਰਾਂਝਿਆਂ ਝੁਰਮਟ ਪਾਈ ਹੋਈ ਏ
ਕਿਹਾ ਵੇਖ ਖਾਂ ਅੱਖੀਆਂ ਖੋਲ ਭਾਈ,
ਕੌਮੀ ਬਾਗ ਨੂੰ ਅੱਗ ਕਿਸ ਲਾਈ ਹੋਈ ਏ।
''ਦਰਦ ਦੀ ਧੂਣੀ'', ਦਰਦ, ਉਪਰੋਕਤ, 3 ਅਪ੍ਰੈਲ, 1925.

18 ਸਚ ਸਾਹਿਬ ਅਮਰ ਸਚ, ਸਚੀ ਗੁਰਬਾਣੀ
ਸਚੇ ਸੇਤੀ ਰਤਿਆ ਦਰਗਹਿ ਸੁਖ ਮਾਣੀ,
ਜਿਨ ਸਤਿਗੁਰ ਸਚ ਧਿਆਇਆ ਤਿਨ ਸੁਖ ਬਿਹਾਣੀ।
ਮਨਮੁਖਿ ਦਰਗਹਿ ਮਾਰੀਆਇੰ, ਤਿਲ ਪੀੜੇ ਘਾਣੀ।
ਗੁਰਮੁਖ ਜਨਮ ਸਦਾ ਸੁਖੀ ਮਨਮੁਖ ਦੁਹੇਲਾ।
ਵਾਹੁ ਵਾਹੁ ਗੋਬਿੰਦ ਸਿੰਘ ਆਪੇ ਗੁਰ ਚੇਲਾ।
''ਵਾਰ ਭਾਈ ਗੁਰਦਾਸ'', ਉਪਰੋਕਤ, 13 ਅਪ੍ਰੈਲ 1925.

19 ਅੱਖਾਂ ਚਾਂਹਦੀਆਂ ਕਲਗੀ ਤੇ ਜਿਗਾ ਵਾਲਾ, ਸੋਹਣਾ ਨੀਲੇ ਦਾ ਫੇਰ ਅਸਵਾਰ ਦਿਸੇ।
ਸ਼ਸਤ੍ਰ ਪੰਜ ਤੇ ਹੱਥ ਤੇ ਬਾਜ ਚਿੱਟਾ, ਸੱਜੇ ਹਥ ਵਿਚ ਖਿਚੀ ਤਲਵਾਰ ਦਿਸੇ।
ਚਾਰੇ ਸਾਹਿਬਜਾਦੇ, ਨਾਲੇ ਪੰਜ ਪਯਾਰੇ, ਪਿਛੇ ਫੌਜ ਦੀ ਆਂਵਦੀ ਡਾਰ ਦਿਸੇ।
ਟੇਢੀ ਅੱਖ ਕਰਕੇ ਵੇਂਹਦਾ ਪੰਥ ਬੰਨੇ, ਵੈਰੀ ਮਿੱਟੀ ਵਿਚ ਹੋਂਦਾ ਖਵਾਰ ਦਿਸੇ।
ਦਰਦ ਦੀ ਧੂਣੀ, ''ਦਰਦ'', *ਉਪਰੋਕਤ*, 3 ਅਪ੍ਰੈਲ 1925.

20 ਸੀਨਾ ਕੰਬਿਆ ਅੱਖੀਆਂ ਡੁਲ੍ਹ ਗਈਆਂ।
ਜਾਂ ਮੈਂ ਜਾਇ ਜਲ੍ਹਿਆਂਵਾਲਾ ਬਾਗ ਡਿੱਠਾ।

ਕੋਲੋਂ ਖੂਹ ਬੋਲੇ ਅਡੀ ਮੂੰਹ ਬੋਠਾ,
''ਓ ਮੁਸਾਫਰਾਂ ਦੱਸ ਜਾ ਗੱਲ ਮੈਨੂੰ''
''ਮੇਰੇ ਵਿਚ ਪਈਆਂ ਰਹੀਆਂ ਚੋਰ ਲੋਥਾਂ,
ਏਸ ਗਲ ਦਾ ਹੈ ਸੀਨੇ ਸੱਲ ਮੈਨੂੰ''

ਬਾਗ ਦੇਖ ਆਵੇ ਮੁੜ ਮੁੜ ਯਾਦ ਉਹ ਦਿਨ,
ਇਥੇ ਕਿਵੇਂ ਮਜ਼ਲੂਮਾਂ ਦੇ ਸਾਹ ਨਿਕਲੇ।
ਭਾਈ ਭੁੱਲਣਾ ਨਾ ਜਦ ਇਸ ਰਾਹ ਜਾਨਾ,
ਅਦਬ ਨਾਲ ਗਰਦਨ ਨੂੰ ਝੁਕਾਇ ਜਾਨਾ।
ਸਾਰੇ ਪੰਥ ਦੇ ਸੀਸ ਅੱਜ ਭੇਟ ਤੇਰੀ, ਭਾਂਵੇ ਪਰਖ ਲੈ ਖਿਚ ਤਲਵਾਰ ਆਕੇ,
ਉਪਰੋਕਤ, 13 ਅਪ੍ਰੈਲ 1925

refused bravely with the mentioning of the sacrifice of Sahibzada Fateh Singh in Sikh history and also stressed that he has received this tradition of sacrifice from his heritage.[21]

The spirit of fearlessness inculcated through the creation of the Khalsa was emphasized to face the repressive rule of British.[22] The Jatha being sent to the Gangsar Gurdwara at Jaiton was made aware of by the mentioning of the burning Pole and the Sikhs were asked to act like Prehlad.[23] The agitators of Gurdwara reform movement drew heavy inspiration from the Sikh Gurus and this very fact had made them brave. The attachment of the Sikhs to the house of the Gurus was equated with the love affair of Sohni and Mahinwal.[24] The Sikh women when demanding for their rights also mentioned the actors of the Ramayans like Sita and Kekai who also took part in the protest, also that the great Indian religious personality including lord Krishan, Guru Ramdas and Guru Gobind Singh had equal rights to the women. At the same time women also acted bravely during struggle.[25] There is

---

21 ਕਦੀ ਸੁਣਿਆ ਹੈ ''ਸਿਖ ਬਚਾ ਕੋਈ,
ਹਾਰਿਆ ਅਜ ਤੀਕ ਪ੍ਰਣ ਸੰਸਾਰ ਵਿਚੋਂ।
ਉਮਰ ਕਿਹੜੀ ਦੇ ਵਿਚ ਫਤਹ ਸਿੰਘ ਸੂਰਮੇ,
ਕਿਹਾ ਲਲਕਾਰ ਇੱਟਾਂ ਦੀ ਦੀਵਾਰ ਚੋਂ।
ਚਿਣੇਂ ਛੇਤੀ ਛਿਣੇ। ਫਕਰ ਹੈ ਕੌਮ ਲਈ
ਸੀਸ ਦਇ ਸੁਰਖਰੂ ਜਾਂ ਸੰਸਾਰ ਚੋਂ
ਧਾਰ ਤਲਵਾਰ ਦਾ ਖੌਫ ਕੀ ਏ,
ਜਦੋਂ ਜਨਮ ਹੋਇਆ ਮੇਰਾ ਤੇਗ ਦੀ ਧਾਰ ਚੋਂ।
''ਜਨਮ ਹੋਇਆ ਮੇਰਾ ਤੇਗ ਦੀ ਧਾਰ ਚੋਂ'', ਕਵੀ ਕੁਟੀਆ, ਕਲਕੱਤਾ, *ਉਪਰੋਕਤ*, 13 ਅਪ੍ਰੈਲ 1925.

22 ਲੱਖਾਂ ਹੋਣ ਜੇ ਤੋਪ ਮਸ਼ੀਨ ਗੰਨਾਂ, ਤਾਂ ਵੀ ਖਾਲਸਾ ਨਹੀਂ ਹੈ ਡਰਨ ਵਾਲਾ।
ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਛਕ ਕੇ ਕਲਗੀਆਂ ਵਾਲੜੇ ਦਾ, ਸਵਾ ਲਖ ਨਾਲ ਇਕ ਹੈ ਲੜਨ ਵਾਲਾ।
ਪਿਆਰੇ ਪੰਥ ਦੀ ਆਨ ਤੇ ਸ਼ਾਨ ਬਦਲੇ, ਹਰ ਇਕ ਸਿਖ ਹੈ ਸੂਲੀ ਤੇ ਚੜ੍ਹਨ ਵਾਲਾ।
''ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਸ਼ਕਤੀ'', ਕੇਸਰ ਸਿੰਘ ਬਜਾਜ, *ਉਪਰੋਕਤ*, 13 ਅਪ੍ਰੈਲ, 1925.

23 ਹੋਓ ਕੌਮੀ ਪ੍ਰਵਾਨਿਓ ਧੰਨ ਤੁਸੀਂ, ਜੋਹੜੇ ਧਰਮ ਤੋਂ ਹੋਣ ਕੁਰਬਾਨ ਚਲੇ।
ਤਪਿਆ ਥੰਮ ਜੁਲਮੀ ਗੰਗਸਰ ਅੰਦਰ, ਬਣ ਪ੍ਰਹਲਾਦ ਹੋ ਜਫੀਆਂ ਪਾਣ ਚਲੇ।
ਹਰਨ ਵਾਂਗਰਾਂ ਆਪ ਕੁਰਬਾਨ ਹੋਕੇ, ਨਛਾ ਨਫਾ ਕੇ ਮੁਸ਼ਕ ਫੈਲਾਣ ਚੱਲੇ।
''ਚੱਾ ਰਹੇ ਸ਼ਹੀਦੀ ਦਾ ਦਿਲਾਂ ਅੰਦਰ'', ਸੰਗਤ ਚੱਕ ਨੰ: 362, *ਉਪਰੋਕਤ*, 26 ਅਪ੍ਰੈਲ, 1925.

24 ਉਡੇ ਖੁਸ਼ਬੂ ਕਿਉਂ ਨਾ ਖਾਲਸੇ ਦੀ ਜਗ ਵਿਚ, ਖਾਲਸੇ ਦੇ ਉਤੇ ਪੰਜਾ ਨਾਨਕ ਨਿਰੰਕਾਰੀ ਦਾ।
ਘੜੇ ਉਤੇ ਠਿਲੀ ਜਾਂਦੀ ਪਾਸੋਂ ਕਿਸੇ ਪੁਛਿਆ ਚਾ, ਕਿਥੋਂ ਵਲ ਸਿਖਿਆ ਤੂੰ ਘੜੇ ਵਾਲੀ ਤਾਰੀ ਦਾ
ਐਹੋ ਜੇਹੇ ਚੜ੍ਹੇ ਹੋਏ ਝਨਾਂ ਠਾਠਾਂ ਮਾਰਦੇ ਚ, ਐਡਾ ਭਾਗ ਬੁੱਤ ਕਿਵੇਂ ਘੜੇ ਉਤੇ ਤਾਰੀ ਦਾ।
ਠਿੱਲੀ ਜਾਂਦੀ ਸੋਹਣੀ ਬਾਂਹ ਕਢਕੇ ਕਹਿਣ ਲੱਗੀ, ਆਵੇ ਜਿਵੇਂ, ਤੈਨੂੰ ਦਸਾਂ ਵਲ ਏ ਸਤਾਈ ਦਾ।

ਰੁਕ ਉਹ ਜਾਣ ਕਿਵੇਂ ਅਖੰਡ ਪਾਠ ਰੱਖਣੇ ਤੋਂ, ਜਿਹਦੇ ਸਿਰ ਉਤੇ ਪੰਜਾ ਨਾਨਕ ਨਿਰੰਕਾਰੀ ਦਾ।
'ਜਾਲਮਾਂ ਦਾ ਪੰਜਾ ਤੇ ਸ਼ਿਕੰਜਾ ਉਹਨੂੰ ਆਖਦਾ ਕੀ', ਭਾਈ ਅਤਰ ਸਿੰਘ ਅਤਰ, *ਉਪਰੋਕਤ*, 10 ਮਈ, 1925.

25 ਅਸੀਂ ਹਕ ਹੀ ਆਪਣੇ ਮੰਗਦੀਆਂ ਹਾਂ, ਸਾਨੂੰ ਲੋਕ ਐਵੇਂ ਕਾਹਨੂੰ ਰੋਕਦੇ ਨੇ।
ਅਸੀਂ ਰਬ ਦੇ ਅੱਗੇ ਪੁਕਾਰ ਕਰੀਏ, ਭੋਲੇ ਲੋਕ ਕਾਹਨੂੰ ਸਾਨੂੰ ਟੋਕਦੇ ਨੇ
ਕਕੇਈ ਰਬ ਦੇ ਵਿਚ ਸੀ ਬਾਂਹ ਦਿੱਤੀ, ਆਖਰ ਹੱਕ ਦੀ ਉਹਨੂੰ ਉਡੀਕ ਹੈ ਸੀ
ਸੀਤਾ ਜੰਗਲਾਂ ਵਿਚ ਜਾ ਦੁਖ ਝੱਲੇ, ਨਾਲ ਹਕ ਦੇ ਉਹਨੂੰ ਪ੍ਰੀਤ ਹੈ ਸੀ।
ਪੈਦਾ ਔਲੀਏ ____ ਜਿਨਾਂ ਕੀਤੇ, ਹੱਕ ਉਹਨਾਂ ਦੇਣੇ ਕਿਉਂ ਚੀਕਦੇ ਹੋ।
ਹਕ ਦਿੱਤਾ ਸੀ ਕ੍ਰਿਸ਼ਨ ਜੀ ਨੇ ਮਥਾ ਆਪਣੇ ਨਾਲ ਟਿਕਵਾਉਂਦਾ ਏ।
ਹਕ ਬਖਸ਼ਿਆ ਹੈ ਰਾਮ ਦਾਸ ਗੁਰੂ ਜੀ, ਮੰਦਰ ਆਪਣੇ ਉਪਰ ਬਿਠਾਉਂਦਾ ਏ।
ਹਕ ਦਿੱਤਾ ਸਾਨੂੰ ਆਪ ਦਸਮ ਗੁਰੂ ਜੀ, ਬਾਣੇ ਵਿਚ ਪਤਾਸੇ ਪਵਾਕੇ ਤੇ।
ਹਕ ਆਪ ਦਿੱਤਾ ਗੁਰੂ ਪੰਥ ਸਾਨੂੰ, ਮਾਈ ਭਾਗੋ ਤੋਂ ਜੰਗ ਕਰਵਾਕੇ ਤੇ।

utilization of the sacrifices that began with the martyrdom of Guru Arjan Dev till the sacrifice of the entire family of Guru Gobind Singh and the other Sikh martyrs in between along with the bravery shown by the Sikh women during such occasions was stressed upon to inspire the followers.[26] The tyrannical Mughal rules including Aurangzeb, Farkh Siar and Mir Mannu who in their efforts to eliminate the Sikhs were destroyed themselves in the process. The mythological actors including Ravana, Kans and Harnaksh were dubbed as symbols of evils.[27]

The Jathas coming from foreign countries to participate the movement were appreciated by declaring them as the successors of the great nation.[28] Role of Guru Gobind Singh in the creation of the Khalsa was seen as to inculcate the spirit of bravery to protect the religion.[29] The bravery shown by widow of Gurdwara agitation and Bhai Lachhman Singh, the martyr gets special mention and was compared to the affection of Heer with Ranjha and also life of Guru Arjan Dev was stressed upon.[30] The early Akali morchas were remembered

---

''ਗੁਰਦਵਾਰਾ ਬਿਲ ਤੇ ਸਿੰਘਣੀਆਂ ਦੇ ਹੱਕ'', ਇਕ ਭੈਣ, *ਉਪਰੋਕਤ*, 22 ਮਈ 1925.

26 ਬੇਸ਼ਕ ਪਰਖ ਲੈ ਜਾਬਰਾ ਫੇਰ ਹੁਣ ਤੂੰ, ਅਸੀਂ ਬੰਦ ਬੰਦ ਅੱਡ ਕਟਵਾਏ ਪਹਿਲਾਂ,
ਚੜ੍ਹਕੇ ਚਰਖੜੀ ਸੀਸ ਤੁੜਵਾ ਦਿੱਤੇ, ਨਾਲ ਆਰਿਆਂ ਦੇ ਗਏ ਚਿਰਾਇ ਪਹਿਲਾਂ।
ਜਿੰਦੇ ਜੀ ਸੜੇ ਵਿੱਚ ਭੱਠੀਆਂ ਦੇ, ਟੋਟੇ ਟੋਟੇ ਗਏ ਕਰਾਇ ਪਹਿਲਾਂ।

ਖਾਤਰ ਧਰਮ ਦੀ ਗੁਰੂ ਸ਼ਹੀਦ ਹੋਵਣ, ਤਾਂ ਫਿਰ ਸਿੱਖ ਸ਼ਹੀਦੀਆਂ ਪਾਣ ਕਿਉਂ ਨਾ।
ਸਰਬੰਸ ਵਾਰਿਆ ਜਿਨਾਂ ਨੇ ਸਿੱਖਾਂ ਉਤੋਂ, ਵੇਲੇ ਪਰਖ ਦੇ ਅਗੇ ਉਹ ਆਣ ਕਿਉਂ ਨਾ।
''ਹੱਸ ਹੱਸ ਸ਼ਹੀਦੀਆਂ ਪਾਣ ਕਿਉਂ ਨਾ'', ਭਾਈ ਕਰਮ ਸਿੰਘ ਕੜਤੋੜ, *ਉਪਰੋਕਤ*, 26 ਮਈ 1925.

27 ਜ਼ਾਲਮ ਸਦਾ ਦੇ ਨਸ਼ੇ ਵਿਚ ਮਸਤ ਹੋਕੇ, ਕਰ ਅਫਸੋਸ ਜਾਂਦੇ ਹੁਕਮਰਾਨ ਦੇਖੇ।
ਪਾਪੀ ਦਸ ਖਾਂ ਹੈ ਔਰੰਗਜੇਬ ਕਿਥੇ, ਮਾਰ ਮਾਰ ਕੇ ਸਾਨੂੰ ਮਕੌਣ ਵਾਲਾ।
ਫਰਖਸੀਅਰ ਦਾ ਦਸ ਨਿਸ਼ਾਨ ਕਿਥੇ, ਸਾਡੇ ਸਿਰ ਦਾ ਮੁਲ ਜੋ ਪਾਣ ਵਾਲਾ।
ਮੀਰ ਮੰਨੂ ਦਾ ਢੂੰਡ ਦੇ ਬੀਜ ਕਿਧਰੋਂ, ਖਤਮ ਖਤਮ ਦੀ ਸ਼ੇਖੀ ਸੁਨਾਣ ਵਾਲਾ।
ਪਟੇ ਦਸ ਖਾਂ ਤੂੰ ਸਦਾ ਰਹਿਣ ਵਾਲੇ, ਕਿਸੇ ਪਾਸੇ ਨਾ ਵਿਚ ਜਹਾਨ ਦੇਖੇ।
ਜਿਨਾਂ ਕਾਲ ਸੀ ਪਾਵੇ ਦੇ ਨਾਲ ਬੰਨਿਆ, ਉਹ ਵੀ ਜਾਂਵਦੇ ਵਲ ਸ਼ਮਸ਼ਾਨ ਦੇਖੇ।
ਜਾਲਮ ਕੰਸ ਦਾ ਦਸ ਨਿਸ਼ਾਨ ਕਿਥੇ, ਤੇ ਹਰਨਾਖਸ਼ ਵਰਗੇ ਬੇਈਮਾਨ ਦਸ ਖਾਂ।
ਖੰਜਰ ਸਚ ਦਾ ਅੰਤ ਨੂੰ ਬੋਲਬਾਲਾ, ਝੂਠੇ ਰੋਂਵਦੇ ਆਪਣੀ ਜਾਨ ਵੇਖੇ।
''ਖੰਜਰ ਸਚ ਦਾ ਅੰਤ ਨੂੰ ਬੋਲਬਾਲਾ'', ਖੰਜਰ ਕਹੂਟਾ, *ਉਪਰੋਕਤ*, 5 ਜੂਨ 1925.

28 ਸੱਤਾਂ ਸਮੁੰਦਰਾਂ ਤੋਂ ਸਿੱਖ ਪਾਰ ਬੈਠੇ, ਗੁਰੂ ਧਾਮ ਅਜ਼ਾਦ ਕਰਾਨ ਚਲੇ।
ਕਚੇ ਘੜੇ ਦੀ ਨਹੀਂ ਪਰਵਾਹ ਕਰਦੇ
ਸਿਰ ਧਰ ਤਲੀ ਜਾਣ ਯਾਰ ਗਲੀ
ਜੇਹੜੇ ਪ੍ਰੇਮ ਦੇ ਰੰਗ ਵਿਚ ਜਾਣ ਰਤੇ।
''ਸੱਚਾ ਇਸ਼ਕ ਕੌਮੀ ਪਿਆਰ'', ਇੰਦਰ ਸਿੰਘ ਕੁਆਲਲੰਪੁਰ, *ਉਪਰੋਕਤ*, 29 ਨਵੰਬਰ 1924.

29 ਜਦੋਂ ਜ਼ੋਰ ਤੇ ਜੁਲਮ ਦਾ ਰਾਜ ਹੋ ਸੀ,
ਨਿਤਾਣਿਆਂ ਹਿੰਦੂਆਂ ਰਾਣਿਆਂ ਤੇ,
ਜਿਹੜਾ ਦੀਨ ਮੰਨੇ ਉਹਨੂੰ ਛੱਡ ਦੇਂਦੇ
ਆਖੇ ਲਗ ਮੌਲਾਣਿਆਂ ਕਾਜੀਆਂ ਦੇ
ਨਿਤ ਵੇਖ ਮਜਲੂਮ ਤੇ ਜੁਲਮ ਹੁੰਦਾ
ਪੰਥ ਖਾਲਸਾ ਬੀਰ ਸਜੌਣ ਬਦਲੇ ਦਿਲ ਪਰਖਣੇ ਲਈ ਸਿੱਖਾਂ ਸਿਦਕੀਆਂ ਦੇ।
''ਦਿਲ ਪਰਖਣੇ ਲਈ ਸਿੱਖਾਂ ਸਿਦਕੀਆਂ ਦੇ'' *ਰੌਜ਼ਾਨਾ ਬੱਬਰ ਸ਼ੇਰ*, 29 ਨਵੰਬਰ 1924.

30 ਹੀਰ ਆਖਿਆ ਡਰੀਂ ਨਾ ਕਿਸੇ ਕੋਲੋਂ, ਅੱਗੋਂ ਹੱਸਕੇ ਮਹੀਆਂ ਚਰਾਣ ਵਾਲੇ।
ਦਿੱਤਾ ਉਤਰ ਇਹ ਬੈਠ ਕੇ ਪੜ੍ਹੀਂ ਹੀਰੇ, ਡਰਨ ਕਿਸ ਤਰਾਂ ਤੇਰੇ ਸਦਾਣ ਵਾਲੇ।

for their spirit and the help was sought from God for the destruction of the *Mahants*.[31] The Sikhs were asked to leave their life of luxury to participate the movement and they were reminded of the example of Lord Krishna who refused the invitation of the proud Duryodhan.[32] Mention was also made of the attacks on Gurdwaras in Sikh history but at the same time the attackers were also killed. In this context examples of Massa Ranghar and Nadir Shah were given.[33] The struggle for the Gurdwara reforms received inspiration from the examples of Mahabharta and the actions of the Arjuna during the war.[34]

The movement drew its inspiration primarily from the Sikh religion and 'History' especially from the personalities of Guru Nanak and Guru Gobind Singh, Martyrdom of Guru Arjan Dev, Creation of the Khalsa, Gurbani, Sikh Martyrs like Bhai Mani Singh and Bhai Taru Singh along with Son of Guru Gobind Singh. References have also been made to the ancient epics of Ramayana and Mahabharata, the romantic tales of medival Punjab,

---

ਲਛਮਣ ਸਿੰਘ ਸ਼ਹੀਦ ਦੀ ਸਿੰਘਣੀ ਪੁਰ, ਇਕ ਦਿਨ ਇਹ ਸਹੇਲੀਆਂ ਸਵਾਲ ਕੀਤਾ।
ਸਾਈਂ ਵਾਸਤੇ ਭੇਜ ਜੀ ਸਚ ਦਸਣਾ, ਕਿਥੇ ਗਏ ਜੇ ਪਤੀ ਪਰਾਣ ਵਾਲੇ।
ਦਰਸ਼ਨ ਕਰਨ ਖਾਤਰ ਘਲੇ ਹਾਰ ਪਾਕੇ, ਹੋ ਗਏ ਕਤਲ ਸਿਰਤਾਜ ਕਹਾਣ ਵਾਲੇ।

ਗੁਰੂ ਅਰਜਨ ਅਜ ਕਰੀਂ ਪੜਤਾਲ ਆਕੇ, ਜੇਹੜਾ ਸ਼ਾਂਤ ਦਾ ਤੁਸੀਂ ਸੀ ਰਾਹ ਦਸਿਆ।
ਕਿਵੇਂ ਉਸ ਤੇ ਸਿੱਧੇ ਸਤੀਰ ਤੁਰਦੇ, ਤੇਰੀ ਸ਼ਾਂਤ ਵਾਲੀ ਲਾਈਨ ਜਾਣ ਵਾਲੇ।
''ਡਰਨ ਕਿਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਤੇਰੇ ਸਦਾਣ ਵਾਲੇ'', ਭਾਈ ਅਤਰ ਸਿੰਘ ਅਤਰ, ਅਕਾਲੀ ਤੇ ਪਰਦੇਸੀ ਸੇਵਾਦਾਰ ਗੁ: ਪੰਜਾ ਸਾਹਿਬ, *ਉਪਰੋਕਤ*, 8 ਜੂਨ 1925.

31 ਸੁਣਕੇ ਗੂੰਜ ਅਕਾਲੀ ਬਹਾਦਰਾਂ ਦੀ, ਜਮਸੀ ਪੈਰ ਨਾ ਭੇਖੀਆਂ ਭਰਮੀਆਂ ਦਾ
ਪਾਉ ਭਾਂਜ ਪਖੰਡੀ ਮਨ ਮਤੀਆਂ ਨੂੰ, ਝੁਲ ਝੰਡਾ ਗੁਰਧਾਮਾਂ ਤੇ ਧਰਮੀਆਂ ਦਾ।
ਵਜਸੀ ਜਦੋਂ ਸ੍ਰੀ ਵਾਹਿਗੁਰੂ ਨਾਮ ਡੰਡਾ, ਸੱਪ ਪਾਪਾਂ ਦਾ ਲਉ ਰਾਹ ਵਰਮੀਆਂ ਦਾ।
ਜਿਥੇ ਵਸਦਾ ਹਰੀ ਦਾ ਨਾਮ ਉਥੇ, ਕੀ ਕੰਮ ਮਹੰਤਾਂ ਬਦ-ਕਰਮੀਆਂ ਦਾ।
ਸੱਚਾ ਵਾਹਿਗੁਰੂ ਸੱਚਾ ਹੀ ਨਾਮ ਉਹਦਾ, ਆਖਰ ਸਚ ਦਾ ਹੋਵਣਾ ਬੋਲਬਾਲਾ।
''ਲੋਂਦਾ ਸਾਰ ਹੈ ਸਾਂਈ ਵੀ ਬੰਦਿਆਂ ਦੀ'', ਭਾਈ ਜੋਗਿੰਦਰ ਚੰਦ੍ ਫਗਵਾੜਾ, *ਉਪਰੋਕਤ*, 7 ਜੂਨ 1925.

32 ਛਾਈ ਦੇਖਕੇ ਜੁਲਮ ਦੀ ਰਾਤ ਕਾਲੀ, ਸੋਲ੍ਹਾਂ ਕਲਾਂ ਪੂਨ ਚੜ੍ਹਕੇ ਤਾਨ ਆਏ।
ਸਾਡੇ ਦਿਲਾਂ ਵਿਚ ਲਗੀ ਸੀ ਓੜ ਡਾਢੀ, ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਪ੍ਰੇਮ ਦਾ ਮੀਂਹ ਵਸਾਨ ਆਏ।
ਦਰਯੋਧਨ ਮਹਿਲ ਪਕਵਾਨ ਛਡਕੇ, ਸਾਗ ਕੋਧਰੇ ਦੇਵਣ ਮਾਣ ਆਏ।

ਜੇਤੋਂ ਪੂਜਦਿਆਂ ਘੋਰ ਜਲਾਦ ਲੋਂਦੇ, ਪਹਿਲੇ ਪਿੰਜਦੇ ਵਾਂਗ ਕਪਾਹ ਜੀਕੂੰ।
''ਅੱਜ ਕੀੜੀ ਦੇ ਘਰ ਭਗਵਾਨ ਆਏ'', *ਉਪਰੋਕਤ*, 10 ਜੂਨ 1925.

33 ਕਦੀ ਕੈਦ ਕਰਦੇ ਕਰਦੇ ਕੈਦ ਹੋ ਗਏ, ਜੇਲ੍ਹੀ ਆਪ ਪੈ ਗਏ ਜੇਲ੍ਹੀ ਪੌਣ ਵਾਲੇ
ਫਰਖਸੀਅਰ ਵਰਗੇ ਕਈ ਗਏ ਰੋਂਦੇ, ਸਿਰ ਬੰਨ੍ਹ ਕੇ ਪਾਪ ਦਾ ਭਾਰ ਤੁਰ ਗਏ।
ਹੋਲੀ ਧੌਣ ਨਾ ਪਿਆ ਅਕੜਾ ਐਵੇਂ, ਕਤਲ ਕਰਨ ਤੇ ਲੁੱਟ ਲੈ ਜਾਣ ਵਾਲੇ
ਨਾਦਰ ਸ਼ਾਹ ਵਰਗੇ ਮੱਥਾ ਲਾਣ ਵਾਲੇ, ਮੱਥਾ ਟੇਕ ਕੇ ਵੱਲ ਕੰਧਾਰ ਤੁਰਦੇ ਗਏ।
''ਸਾਡਾ ਸਬਰ ਹੀ ਜਬਰ ਪੁਰ ਹੋਊ ਭਾਰਾ'', *ਅਕਾਲੀ ਤੇ ਪਰਦੇਸੀ*, 25 ਜੂਨ 1925.

34 ਸਾਨੂੰ ਦੁਖ ਅਰ ਭੁਖ ਦਾ ਖੌਫ ਨਾਹੀ,
ਵੱਡੇ ਅਸਾਂ ਦੇ ਰੇਤ ਜਦ ਫਕ ਚੁੱਕੇ।
ਜੇਹਰ ਚੜੀ ਨਾ ਰਿਦੇ ਸੁਰਜੀਤ ਸੀਗੇ,
ਬੂਟੀ ਜੇਹਰ ਵਾਲੀ ਭੱਖੁ ਅੱਕ ਚੁੱਕੇ।
ਸਾਵਧਾਨ ਹੋ ਕਰਾਂਗੇ ਪੰਥ ਸੇਵਾ,
ਅਰਜਨ ਵਾਂਗ ਖਡੀਰਨਾ ਹਕ ਚੁੱਕੇ
''ਦੋਹਾਂ ਦੀਨਾਂ ਵਿੱਚ ਪੰਥ ਸੁਰਜੀਤ ਕੀਤਾ'' ਗੁਰਬਖਸ਼ ਸਿੰਘ ਕੇਸਰ, *ਰਣਜੀਤ*, ਦਸੰਬਰ, 1920.

authorities of Mughals including Nadir Shah and contemporary tragedies of Panja Sahib, Budge –Budge Ghat, Nankana Sahib and Jallianwala Bagh. The analysis of the Gurdwara reform Agitation literature reveals the process of utilization of History in the contemporary historical events and consequently the future historical process. It has been observed that the literature produced during the Gurdwara reform Agitation is limited but also there have been limited utilization of history. The often repeated and emphasized examples of History pertain either to the major characteristics of the Sikh movement particularly the teachings of Guru Nanak, Martyrdom of Guru Arjan Dev, the creation of Khalsa, sacrifices of Guru Gobind Singh, his four sons and some Sikh heroes of the 18th century including women. In this Sense the Gurdwara reform Agitation activist too attempted to make use of the History in contemporary future historical process.

संगम Impact Factor : 6.632
Website : www.ginajournal.com
ISSN : 2321-8037
विशेषज्ञ समीक्षित पत्रिका A Peer Reviewed International Refereed Journal
SANGAM
गीना देवी शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित साहित्य, शिक्षा, संस्कृति एवं शोध को समर्पित मासिक
Vol. 12, Issue 1-2
पृष्ठ : 30-34

तेजाजी से संबंधित लोक साहित्य में पेड़ पोधों का चित्रण

शिम्भुराम
सहायक आचार्य–हिंदी, श्री बी.आर.मिर्धा राजकीय महाविद्यालय, नागौर (राज.)
शोधार्थी, हिंदी विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर (राज.)

शोध सार :-

प्रस्तुत शोध पत्र में लोक देवता तेजाजी से संबंधित लोक साहित्य की विविध विधाओं में पेड़ पोधों के चित्रण को वर्णित किया गया है। लोक देवी–देवताओं की दृष्टि से राजस्थान 'डगे–डगे देवरा' और 'पगे–पगे देव' की लीला स्थली रहा है। राजस्थान में पांच पीरों (पंच पीर) के रूप में पाबूजी, हड़बूजी, रामदेवजी, मांगलिया मेहाजी व गोगाजी प्रसिद्ध हैं। इन पांच लोक देवताओं के अलावा तेजाजी एक ऐसे लोक देवता हैं जो पूरे राजस्थान में माने और गाए जाते हैं। लोक देवी–देवताओं से संबंधित लोक गाथाएं, लोक कथाएं, लोकगीत, स्तुतियां आदि गई जाती हैं। धार्मिक, सांस्कृतिक परंपराओं और आस्थाओं के अनुसार जीवन के प्रत्येक अवसर पर लोक देवी–देवताओं की आराधना, पूजा–अर्चना की जाती है और इनसे संबंधित लोकगीत गाए जाते हैं।

प्रकृति पूजा भारतीय संस्कृति की विशेषता रही है। वटवृक्ष व पीपल का धार्मिक महत्व सर्वसाधारण में मान्य है। विभिन्न अवसरों पर गाया जाने वाला तेजा गायन (तेजाजी लोक गाथा), विभिन्न मेलों, पारिवारिक एवं सामाजिक उत्सवों व कार्यक्रमों में गाए जाने वाले तेजाजी संबंधित लोकगीत, रातिजगों में महिलाओं द्वारा गाए जाने वाले तेजाजी संबंधित लोकगीत तथा रात्रि जागरणों में गाए जाने वाले तेजाजी संबंधित विभिन्न भजनों इत्यादि में पेड़ पोधों का चित्रण हुआ है।

लोक देवता तेजाजी से संबंधित लोक साहित्य में पेड़ पोधों के चित्रण के अंतर्गत तुळछां (खेजड़ी), पीपल, बड़ (वटवृक्ष), नीम, बबूल, केलूड़ा, मरवा केवड़ा, बांस आदि वृक्षों का वर्णन मिलता है। तेजाजी जब खेत में बुवाई कर रहे थे और उनकी भाभी उनके लिए भात लेकर आती है तो तेजाजी उसे तुळछां (खेजड़ी) की छाया में रखने को कहते हैं। तेजाजी संबंधित एक लोकगीत 'हिंडो घाल्यों नीं पारस पींपळी' में पीपल का वर्णन मिलता है। तेजाजी अपनी बहिन को लाने के लिए जब उसके ससुराल जाते हैं तब बड़ (वटवृक्ष) का उल्लेख मिलता है।

बीज शब्द :- लोक देवता, लोक साहित्य, लोक गाथा, लोक गीत, तुळछां (खेजड़ी), बड़ (वटवृक्ष), केलूड़ा, मरवा, केवड़ा।

मूल आलेख :-

प्रकृति पूजा भारतीय संस्कृति की विशेषता रही है। पीपल व वटवृक्ष का धार्मिक महत्त्व सर्वसाधारण में मान्य है। उनके साथ ही अन्य वृक्ष, लता, पुष्प, फल–फूलों का भी महत्त्व कुछ कम नहीं हैं। लोक देवता वीर

तेजाजी से संबंधित लोक साहित्य में पेड़ पोधों के चित्रण के अंतर्गत तुळछां (खेजड़ी), पीपल, बड़ (वटवृक्ष), नीम, बबूल, केलूड़ा, मरवा केवड़ा, बांस आदि वृक्षों का वर्णन मिलता है।

खेजड़ी :-

खेजड़ी का पेड़ राजस्थान के रेगिस्तानी इलाकों में उगने वाली वनस्पतियों में एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण पेड़ है। इसे 'मरूप्रदेश के कल्पवृक्ष' के रूप में जाना जाता है। इसे 'शमी' या 'जांटी' भी कहते हैं। दशहरे के दिन शमी के वृक्ष की पूजा करने की परंपरा भी है। खेजड़ी का पेड़ जेठ के महीने में भी हरा रहता है। भीषण गर्मी में जब रेगिस्तान में जानवरों के लिए धूप से बचने का कोई सहारा नहीं होता तब यह पेड़ छाया देता है।

लोक देवता तेजाजी से संबंधित लोक साहित्य में पेड़ पोधों के चित्रण के अंतर्गत तुळछां (खेजड़ी) का वर्णन अनेक स्थानों पर मिलता है। तेजाजी जब खेत में बुवाई कर रहे थे और उनकी भाभी उनके लिए भात और बैलों के लिए नीरणी लेकर आती है तब तेजाजी अपनी भाभी को कहते है :–

''तुळछां म्हारौ भात उतारो ये भाभी म्हारी।
रेकळिये उतारो बळदां के नीरणी।''[1]

तेजाजी जब पनेर में पणिहारियों से पनघट पर अपने ससुर रायमलजी की पोळ का पता पूछते हैं तब प्रसंगवश पीपल, खेजड़ी, मरवा, केवड़ा आदि वृक्षों का उल्लेख मिलता है। यथा–

''सूरज सांमी पोळ कहिजै जीजा म्हारा औ
डावै फळसै पारस पीपळी।।
पोळयां सूं नगर भरियौ साळियां म्हारी औ।
घर–घर ऊबी पारस पीपळियां।।
तुळछां गैरी थान कहीजै जीजा म्हारा औ।
डावोड़ा कंवला पर मरवो केवड़ो।।''[2]

यहाँ पर तुळछां खेजड़ी का पर्याय है।

पीपल :-

भारतीय संस्कृति में पीपल देववृक्ष है। ऐसी मान्यता है कि पीपल में सभी देवी–देवताओं का वास होता है। सनातन धर्म में पीपल के वृक्ष को बहुत पवित्र माना जाता है। शास्त्रों में वर्णित है कि पीपल की विधिपूर्वक पूजा–अर्चना करने से सम्पूर्ण देवता स्वयं ही पूजित हो जाते हैं। लोग पीपल के वृक्ष के नीचे दीपक जलाकर, पीपल को जल चढ़ाकर इसकी पूजा करते हैं। आयुर्वेद में पीपल के औषधीय गुणों का अनेक असाध्य रोगों में उपयोग वर्णित है।

पीपल का भारतीय संस्कृति में महत्त्वपूर्ण स्थान है। अनेक पर्वों पर इसकी पूजा की जाती हैं। इसके पत्ते अधिक सुन्दर, कोमल और चंचल होते हैं। वसंत ऋतु में इस पर धानी रंग की नयी कोंपलें आने लगती है जो बाद में हरी और फिर गहरी हरी हो जाती हैं। पीपल के पत्ते जानवरों को चारे के रूप में खिलाये जाते हैं। पीपल की लकड़ी ईंधन के काम आती है।

लोक देवता वीर तेजाजी अपनी बहिन को लेने जब उसके ससुराल जाते हैं और बहिन की सास जब तेजाजी से पूछती है कि तुम अपनी बहिन को कितने दिनों बाद वापस भेजोगे तब प्रसंगवश पीपल वृक्ष का

उल्लेख आता है–

''पीपल गेरा पान गीणौ ब्याणजी म्हारा औ।
इतरा दिनां हूं पाछी मेल स्यूं।।''[3]

बलवीरसिंह करुण द्वारा लोक देवता वीर तेजाजी पर लिखे गए महाकाव्य 'तेजवंत तेजाजी' के चतुर्थ सर्ग रहस्योद्घाटन में गैण तालाब व पीपल वृक्ष का उल्लेख मिलता है। यथा–

''बैलों को कर आजाद कहा जा घास चरो
तालाब गैण का जल पीओ जब प्यास लगे
बैठो पीपल की छॉह वहीं आराम करो
घर आ जाना जब नभ शिखरों से सॉझ ढले।''[4]

तेजाजी संबंधी एक लोकगीत 'हींडो घाल्यों नीं पारस पींपळी' में पीपल का वर्णन मिलता है –

''दासी ओ छोर्यां हींडो घाल्यो नीं पारस पींपळी
इतो कठै रेवै ओ काळी कोयल्यां
इतो कठै रेवै ओ काळा नाग।''[5]

वटवृक्ष :-

इसे 'वट' और 'बड़' भी कहते हैं। बरगद भारत का 'राष्ट्रीय वृक्ष' है। धार्मिक महत्त्व की दृष्टि से बरगद को शिव समान माना जाता है। लोक देवता वीर तेजाजी को ससुराल जाने का मुहूर्त निकालते हुए ज्योतिषी न उनसे कहा ''शकुन बुरे लग रहे है मालिक, जाते समय द्वार पर विधवा ब्राह्मणी मिलेगी। काला घड़ा लिये पणिहारिनें सामने मिलेगी। बांई ओर बड़ पर कोचर बोलते हुए सुनाई देंगे और नाड़े पर सारस बोलता दिखाई देगा।''[6]

तेजाजी अपनी बहिन को लाने के लिए जब उसके ससुराल जाते है तब एक जगह बड़ (वटवृक्ष) का उल्लेख आता है–

''कठै का बड़ दीसै रै साथीड़ा म्हारा।
कठै का दीसै मिन्दर माळिया।''[7]

नीम :-

लोक देवता वीर तेजाजी जब खेतों में हल जोतना बीच में छोड़कर घर आकर माता को ससुराल जाने का कहते हैं तो माता कहती है कि तुम्हें किसने सीख सिखाई और किसने कड़वे वचन बोले तब तेजाजी कहते हैं कि मेरे साथियों ने मुझे सीख सिखाई और भाभी ने कड़वे वचन बोले। इस प्रसंग में तेजाजी की माता कहती है कि जिन्होंने तुझे सीख सिखाई उन साथियों के सांड मरे और भाभी का मोबी डींगरा (बड़ा लड़का) मृत्यु को प्राप्त हो तब तेजाजी कहते हैं कि साथियों की बेल बधे और भावज कड़वे नीम के समान फले। यथा–

''साथीड़ा गेरी बेल बधौ माता जरणी औ।
भावज तो फळज्यौं कड़वा नीम ज्यूं।।''[8]

बबूल :-

तेजाजी अपनी बहन राधा को लेने जब उसके ससुराल जाने की तैयारी करते हैं और काका से गाड़ी

देने के लिए कहते हैं। जब काका ने अपनी गाड़ी देने से मना कर दिया तब तेजाजी खाती से सुंदर गाड़ी बनाने के लिए कहते हैं। खाती ने बबूल की लकड़ी से तेजाजी के लिए एक सुंदर गाड़ी बनाई। यथा–

तेजा ने कहा – ''राधा बहिन को लेने जाना है। अतः ऐसी सुंदर गाड़ी बनादो कि उसके ससुराल में लोग देखते ही रह जाये।''

खाती बोला–'' फूल पांखुड़ियों और नाचती हुई मोरनियों वाली ऐसी बढ़िया गाड़ी बना दूंगा कि लोग देखते ही रह जाये।'' लकड़ी के लिए बबूल पसंद किया गया और कारीगर ने उसे काटना प्रारंभ किया।[9]

केलूड़ा :-

पनेर में रायमल जी मुथा के घर के बारणे पर केलूड़ा का वर्णन मिलता है–

''केळूड़ो रै बांके ओ राज बारणौ।
हां सूवा बांके दाळ चुगै ओ जीजा म्हारा।''[10]

मरवा केवड़ा :-

पनेर में तेजाजी और माली के मध्य हुई बातचीत में प्रसंगवश मरवा केवड़ा आदि का उल्लेख आता है। यथा–

''पाणी सूं बाग सिंचायौ जीजा म्हारा औ।
दूधा सूं सिंचायौ मरवो केवड़ो।।''[11]

तेजाजी अपने साथियों संग पनेर में माली का बाग निहारत हैं तब प्रसंगवश हजारी पुष्प, मरवा केवड़ा आदि का उल्लेख मिलता है। यथा–

''साजो थे तो फूल हजारी साथिड़ा म्हारा औ।
तेजल तो साजौ मरवो केवड़ो।''[12]

बांस वृक्ष :-

पेमल और उनकी माता के मध्य वार्तालाप संबंधी एक सिलोका में पेमल अपनी माता से अपने विवाह के संबंध में कहती है, जिसमें बांस वृक्ष का उल्लेख मिलता है। यथा–

''म्हारी चंवरिया मांडी चौक में, आला बांस कटाय।
मामो दिना सेवरा, धीणां में धोळी गाय।।''[13]

संदर्भ :-

1. डॉ. महीपालसिंह राठौड़ व डॉ. जयपालसिंह राठौड़ : लोक देवता तेजाजी, राजस्थानी ग्रंथागार, जोधपुर, प्रथम संस्करण 2012, पृष्ठ 23
2. डॉ. रामरतन लटियाल : सतवादी तेजाजी रौ सिलोकौ, अरिहंत प्रकाशन, जोधपुर, प्रथम संस्करण 2022 पृष्ठ 74
3. वही, पृष्ठ 54
4. बलवीर सिंह करुण : तेजवंत तेजाजी, तेजा फाउण्डेशन, जयपुर, प्रथम संस्करण सितम्बर 2021, पृष्ठ 87
5. डॉ. महीपालसिंह राठौड़ व डॉ. जयपालसिंह राठौड़ : लोक देवता तेजाजी, राजस्थानी ग्रंथागार, जोधपुर, प्रथम संस्करण 2012, पृष्ठ 109
6. डॉ. महेन्द्र भानावत : लोकदेवता तेजाजी, भारतीय लोक कला मंडल, उदयपुर, प्रथम संस्करण 1970, पृष्ठ 33

7. डॉ. महीपालसिंह राठौड़ व डॉ. जयपालसिंह राठौड़ : लोक देवता तेजाजी, राजस्थानी ग्रंथागार, जोधपुर, प्रथम संस्करण 2012, पृष्ठ 26
8. डॉ. रामरतन लटियाल : सतवादी तेजाजी रौ सिलोकौ, अरिहंत प्रकाशन, जोधपुर, प्रथम संस्करण 2022, पृष्ठ 46
9. डॉ. महेन्द्र भानावत : लोकदेवता तेजाजी, भारतीय लोक कला मंडल, उदयपुर, प्रथम संस्करण 1970, पृष्ठ 27
10. डॉ. महीपालसिंह राठौड़ व डॉ. जयपालसिंह राठौड़ : लोक देवता तेजाजी, राजस्थानी ग्रंथागार, जोधपुर, प्रथम संस्करण 2012, पृष्ठ 47
11. डॉ. रामरतन लटियाल : सतवादी तेजाजी रौ सिलोकौ, अरिहंत प्रकाशन, जोधपुर, प्रथम संस्करण 2022, पृष्ठ 67
12. वही, पृष्ठ 68
13. वही, पृष्ठ 24

E-mail : srchotiya@gmail.com
Mobile No. 7597979695

संगम Impact Factor : 6.632
Website : www.ginajournal.com
ISSN : 2321-8037
विशेषज्ञ समीक्षित पत्रिका A Peer Reviewed International Refereed Journal
SANGAM
गीना देवी शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित साहित्य, शिक्षा, संस्कृति एवं शोध को समर्पित मासिक
Vol. 12, Issue 1-2
पृष्ठ : 35-39

"मैं आजाद हूं" – चंद्रशेखर आजाद

डॉ. दुर्गेश कुमार शर्मा
असिस्टेंट प्रोफेसर, पी.एम. कॉलेज, अलीगढ़।

जीवन परिचय :–

चन्द्रशेखर आजाद का जन्म भाबरा गाँव में एक ब्राह्मण परिवार में 23 जुलाई सन् 1906 को हुआ था। उनके पूर्वज ग्राम बदरका वर्तमान उन्नाव जिला से थे। आजाद के पिता पण्डित सीताराम तिवारी अकाल के समय अपने पैतृक निवास बदरका को छोड़कर पहले कुछ दिनों मध्य प्रदेश अलीराजपुर रियासत में नौकरी करते रहे फिर जाकर भाबरा गाँव में बस गये। यहीं बालक चन्द्रशेखर का बचपन बीता। उनकी माँ का नाम जगरानी देवी था। आजाद का प्रारम्भिक जीवन आदिवासी बाहुल्य क्षेत्र में स्थित भाबरा गाँव में बीता अतएव बचपन में आजाद ने भील बालकों के साथ खूब धनुष–बाण चलाये। इस प्रकार उन्होंने निशानेबाजी बचपन में ही सीख ली थी। बालक चन्द्रशेखर आजाद का मन अब देश को आजाद कराने के अहिंसात्मक उपायों से हटकर सशस्त्र क्रान्ति की ओर मुड़ गया। उस समय बनारस क्रान्तिकारियों का गढ़ था। वह मन्मथनाथ गुप्त और प्रणवेश चटर्जी के सम्पर्क में आये और क्रान्तिकारी दल के सदस्य बन गये। क्रान्तिकारियों का वह दल 'हिन्दुस्तान प्रजातन्त्र संघ' के नाम से जाना जाता था।

चंद्रशेखर आजाद का आंदोलन :–

१९१९ में हुए अमृतसर के जलियांवाला बाग नरसंहार ने देश के नवयुवकों को उद्वेलित कर दिया। चन्द्रशेखर उस समय पढाई कर रहे थे। जब गांधीजी ने सन् १९२० में असहयोग आन्दोलनका फरमान जारी किया तो वह आग ज्वालामुखी बनकर फट पड़ी और तमाम अन्य छात्रों की भाँति चन्द्रशेखर भी सडकों पर उतर आये। अपने विद्यालय के छात्रों के जत्थे के साथ इस आन्दोलन में भाग लेने पर वे पहली बार गिरफ्तार हुए और उन्हें १५ बेतों की सजा मिली। इस घटना का उल्लेख पं० जवाहरलाल नेहरू ने कायदा तोड़ने वाले एक छोटे से लड़के की कहानी के रूप में किया है–

ऐसे ही कायदे (कानून) तोड़ने के लिये एक छोटे से लड़के को, जिसकी उम्र १४ या १५ साल की थी और जो अपने को आजाद कहता था, बेंत की सजा दी गयी। उसे नंगा किया गया और बेंत की टिकटी से बाँध दिया गया। बेत एक एक कर उस पर पड़ते और उसकी चमड़ी उधेड़ डालते पर वह हर बेत के साथ चिल्लाता 'भारत

माता की जय!'। वह लड़का तब तक यही नारा लगाता रहा, जब तक की वह बेहोश न हो गया। बाद में वही लड़का उत्तर भारत के क्रान्तिकारी कार्यों के दल का एक बड़ा नेता बना।

झांसी में क्रांतिकारी गतिविधियाँ :-

चंद्रशेखर आजाद ने एक निर्धारित समय के लिए झांसी को अपना गढ़ बना लिया। झांसी से पंद्रह किलोमीटर दूर ओरछा के जंगलों में वह अपने साथियों के साथ निशानेबाजी किया करते थे। अचूक निशानेबाज होने के कारण चंद्रशेखर आजाद दूसरे क्रांतिकारियों को प्रशिक्षण देने के साथ–साथ पंडित हरिशंकर ब्रह्मचारी के छद्म नाम से बच्चों के अध्यापन का कार्य भी करते थे। वह धिमारपुर गाँव में अपने इसी छद्म नाम से स्थानीय लोगों के बीच बहुत लोकप्रिय हो गए थे। झांसी में रहते हुए चंद्रशेखर आजाद ने गाड़ी चलानी भी सीख ली थी।[8]

क्रान्तिकारी संगठन :-

असहयोग आन्दोलन के दौरान जब फरवरी १९२२ में चौरी चौरा की घटना के पश्चात् बिना किसी से पूछे गाँधीजी ने आन्दोलन वापस ले लिया तो देश के तमाम नवयुवकों की तरह आजाद का भी कांग्रेस से मोह भंग हो गया और पण्डित राम प्रसाद बिस्मिल, शचीन्द्रनाथ सान्याल योगेशचन्द्र चटर्जी ने १९२४ में उत्तर भारत के क्रान्तिकारियों को लेकर एक दल हिन्दुस्तानी प्रजातान्त्रिक संघ (एच० आर० ए०) का गठन किया। चन्द्रशेखर आजाद भी इस दल में शामिल हो गये। इस संगठन ने जब गाँव के अमीर घरों में डकैतियाँ डालीं, ताकि दल के लिए धन जुटाने की व्यवस्था हो सके तो यह तय किया गया कि किसी भी औरत के ऊपर हाथ नहीं उठाया जाएगा। एक गाँव में राम प्रसाद बिस्मिल के नेतृत्व में डाली गई डकैती में जब एक औरत ने आजाद का पिस्तौल छीन लिया तो अपने बलशाली शरीर के बावजूद आजाद ने अपने उसूलों के कारण उस पर हाथ नहीं उठाया। इस डकैती में क्रान्तिकारी दल के आठ सदस्यों पर, जिसमें आजाद और बिस्मिल भी शामिल थे, पूरे गाँव ने हमला कर दिया। बिस्मिल ने मकान के अन्दर घुसकर उस औरत के कसकर चाँटा मारा, पिस्तौल वापस छीनी और आजाद को डाँटते हुए खींचकर बाहर लाये। इसके बाद दल ने केवल सरकारी प्रतिष्ठानों को ही लूटने का फैसला किया। १ जनवरी १९२५ को दल ने समूचे हिन्दुस्तान में अपना बहुचर्चित पर्चा द रिवोल्यूशनरी (क्रान्तिकारी) बाँटा जिसमें दल की नीतियों का खुलासा किया गया था। इस पैम्फलेट में सशस्त्र क्रान्ति की चर्चा की गयी थी। इश्तहार के लेखक के रूप में 'विजयसिंह' का छद्म नाम दिया गया था। शचींद्रनाथ सान्याल इस पर्चे को बंगाल में पोस्ट करने जा रहे थे तभी पुलिस ने उन्हें बाँकुरा में गिरफ्तार करके जेल भेज दिया। 'एच० आर० ए०' के गठन के अवसर से ही इन तीनों प्रमुख नेताओं – बिस्मिल, सान्याल और चटर्जी में इस संगठन के उद्देश्यों को लेकर मतभेद था।

इस संघ की नीतियों के अनुसार ९ अगस्त १९२५ को काकोरी काण्ड को अंजाम दिया गया। जब शाहजहाँपुर में इस योजना के बारे में चर्चा करने के लिये मीटिंग बुलायी गयी तो दल के एक मात्र सदस्य अशफाक उल्ला खाँ ने इसका विरोध किया था। उनका तर्क था कि इससे प्रशासन उनके दल को जड़ से उखाड़ने पर तुल जायेगा और ऐसा ही हुआ भी। अंग्रेज चन्द्रशेखर आजाद को तो पकड़ नहीं सके पर अन्य

सर्वोच्च कार्यकर्ताओं – पण्डित राम प्रसाद 'बिस्मिल', अशफाक उल्ला खाँ एवं ठाकुर रोशन सिंह को १६ दिसम्बर १६२७ तथा उससे २ दिन पूर्व राजेन्द्रनाथ लाहिड़ी को १७ दिसम्बर १६२७ को फाँसी पर लटकाकर मार दिया गया। सभी प्रमुख कार्यकर्ताओं के पकडे जाने से इस मुकद्दमें के दौरान दल पायरू निष्क्रिय ही रहा। एकाध बार बिस्मिल तथा योगेश चटर्जी आदि क्रान्तिकारियों को छुड़ाने की योजना भी बनी जिसमें आजाद के अलावा भगत सिंह भी शामिल थे लेकिन किसी कारण वश यह योजना पूरी न हो सकी।

४ क्रान्तिकारियों को फाँसी और १६ को कड़ी कैद की सजा के बाद चन्द्रशेखर आजाद ने उत्तर भारत के सभी कान्तिकारियों को एकत्र कर ८ सितम्बर १६२८ को दिल्ली के फीरोज शाह कोटला मैदान में एक गुप्त सभा का आयोजन किया। इसी सभा में भगत सिंह को दल का प्रचार–प्रमुख बनाया गया। इसी सभा में यह भी तय किया गया कि सभी क्रान्तिकारी दलों को अपने–अपने उद्देश्य इस नयी पार्टी में विलय कर लेने चाहिये। पर्याप्त विचार–विमर्श के पश्चात् एकमत से समाजवाद को दल के प्रमुख उद्देश्यों में शामिल घोषित करते हुए 'हिन्दुस्तान रिपब्लिकन ऐसोसियेशन' का नाम बदलकर 'हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसियेशन' रखा गया। चन्द्रशेखर आजाद ने सेना–प्रमुख (कमाण्डर–इन–चीफ) का दायित्व सम्हाला। इस दल के गठन के पश्चात् एक नया लक्ष्य निर्धारित किया गया – 'हमारी लड़ाई आखरी फैसला होने तक जारी रहेगी और वह फैसला है जीत या मौत।'

लाला लाजपत राय की मृत्यु का बदला :–

17 दिसम्बर, 1928 को चन्द्रशेखर आजाद, भगत सिंह और राजगुरु ने संध्या के समय लाहौर में पुलिस अधीक्षक के दफ्तर को जा घेरा। ज्यों ही जे. पी. सांडर्स अपने अंगरक्षक के साथ मोटर साइकिल पर बैठकर निकला, पहली गोली राजगुरु ने दाग दी, जो साडंर्स के मस्तक पर लगी और वह मोटर साइकिल से नीचे गिर पड़ा।[9] भगतसिंह ने आगे बढ़कर चार–छह गोलियाँ और दागकर उसे बिल्कुल ठंडा कर दिया। जब सांडर्स के अंगरक्षक चन्नन सिंह ने दोनों का पीछा किया तो चन्द्रशेखर आजाद ने अपनी बंदूक से उसे भी गोली मारकर समाप्त कर दिया। लाहौर नगर में जगह–जगह परचे चिपका दिए गए कि लाला लाजपतराय की मृत्यु का बदला ले लिया गया। समस्त भारत में क्रान्तिकारियों के इस कदम को सराहा गया।[10]

केन्द्रीय असेंबली में बम :–

चन्द्रशेखर आजाद के ही सफल नेतृत्व में भगतसिंह और बटुकेश्वर दत्त ने 8 अप्रैल, 1929 को दिल्ली की केन्द्रीय असेंबली में बम विस्फोट किया। यह विस्फोट किसी को भी नुकसान पहुँचाने के उद्देश्य से नहीं किया गया था। विस्फोट अंग्रेज सरकार द्वारा बनाए गए काले कानूनों के विरोध में किया गया था। इस काण्ड के फलस्वरूप क्रान्तिकारी बहुत जनप्रिय हो गए। केन्द्रीय असेंबली में बम विस्फोट करने के पश्चात भगत सिंह और बटुकेश्वर दत्त ने स्वयं को गिरफ्तार करा लिया। वे न्यायालय को अपना प्रचार–मंच बनाना चाहते थे।[11]

चरम सक्रियता :–

आजाद के प्रशंसकों में पण्डित मोतीलाल नेहरू, पुरुषोत्तमदास टंडन का नाम शुमार था। जवाहरलाल

नेहरू से आजाद की भेंट आनन्द भवन में हुई थी उसका जिक्र नेहरू ने अपनी आत्मकथा में 'फासीवादी मनोवृत्ति' के रूप में किया है। इसकी कठोर आलोचना मन्मथनाथ गुप्त ने अपने लेखन में की है। कुछ लोगों का ऐसा भी कहना है कि नेहरू ने आजाद को दल के सदस्यों को समाजवाद के प्रशिक्षण हेतु रूस भेजने के लिये एक हजार रुपये दिये थे जिनमें से ४४८ रूपये आजाद की शहादत के वकघ्त उनके वस्त्रों में मिले थे।

सम्भवतः सुरेन्द्रनाथ पाण्डेय तथा यशपाल का रूस जाना तय हुआ था पर १९२८–३१ के बीच शहादत का ऐसा सिलसिला चला कि दल लगभग बिखर सा गया। जबकि यह बात सच नहीं है। चन्द्रशेखर आजाद की इच्छा के विरुद्ध जब भगत सिंह एसेम्बली में बम फेंकने गये तो आजाद पर दल की पूरी जिम्मेवारी आ गयी। साण्डर्स वध में भी उन्होंने भगत सिंह का साथ दिया और बाद में उन्हें छुड़ाने की पूरी कोशिश भी की। आजाद की सलाह के खिलाफ जाकर यशपाल ने २३ दिसम्बर १९२९ को दिल्ली के नजदीक वायसराय की गाड़ी पर बम फेंका तो इससे आजाद क्षुब्ध थे क्योंकि इसमें वायसराय तो बच गया था पर कुछ और कर्मचारी मारे गए थे। आजाद को २८ मई १९३० को भगवती चरण वोहरा की बम–परीक्षण में हुई शहादत से भी गहरा आघात लगा था। इसके कारण भगत सिंह को जेल से छुड़ाने की योजना भी खटाई में पड़ गयी थी। भगत सिंह, सुखदेव तथा राजगुरु की फाँसी रुकवाने के लिए आजाद ने दुर्गा भाभी को गांधीजी के पास भेजा जहाँ से उन्हें कोरा जवाब दे दिया गया था। आजाद ने अपने बलबूते पर झाँसी और कानपुर में अपने अड्डे बना लिये थे। झाँसी में मास्टर रुद्र नारायण, सदाशिव मलकापुरकर, भगवानदास माहौर तथा विश्वनाथ वैशम्पायन थे जबकि कानपुर में पण्डित शालिग्राम शुक्ल सक्रिय थे। शालिग्राम शुक्ल को १ दिसम्बर १९३० को पुलिस ने आजाद से एक पार्क में मिलने जाते वक्त शहीद कर दिया था।

क्रांतिकारियों का बलिदान :-

एच०एस०आर०ए० द्वारा किये गये साण्डर्स–वध और दिल्ली एसेम्बली बम काण्ड में फाँसी की सजा पाये तीन अभियुक्तों– भगत सिंह, राजगुरु व सुखदेव ने अपील करने से साफ मना कर ही दिया था। अन्य सजायाफ्ता अभियुक्तों में से सिर्फ ३ ने ही प्रिवी कौन्सिल में अपील की। ११ फरवरी १९३१ को लन्दन की प्रिवी कौन्सिल में अपील की सुनवाई हुई। इन अभियुक्तों की ओर से एडवोकेट प्रिन्ट ने बहस की अनुमति माँगी थी किन्तु उन्हें अनुमति नहीं मिली और बहस सुने बिना ही अपील खारिज कर दी गयी। चन्द्रशेखर आजाद ने मृत्यु दण्ड पाये तीनों प्रमुख क्रान्तिकारियों की सजा कम कराने का काफी प्रयास किया। वे उत्तर प्रदेश की हरदोई जेल में जाकर गणेशशंकर विद्यार्थी से मिले। विद्यार्थी से परामर्श कर वे इलाहाबाद गये और २० फरवरी को जवाहरलाल नेहरू से उनके निवास आनन्द भवन में भेंट की। आजाद ने पण्डित नेहरू से यह आग्रह किया कि वे गांधी जी पर लॉर्ड इरविन से इन तीनों की फाँसी को उम्र– कैद में बदलवाने के लिये जोर डालें! अल्फ्रेड पार्क में अपने एक मित्र सुखदेव राज से मन्त्रणा कर ही रहे थे तभी सी०आई०डी० का एस०एस०पी० नॉट बाबर जीप से वहाँ आ पहुँचा। उसके पीछे–पीछे भारी संख्या में कर्नलगंज थाने से पुलिस भी आ गयी। दोनों ओर से हुई भयंकर गोलीबारी में आजाद ने तीन पुलिस कर्मियों को मौत के घाट उतार दिया और कई अंग्रेज सैनिक घायल हो गए।

अंत में जब उनकी बंदूक में एक ही गोली बची तो वो गोली उन्होंने खुद को मार ली और वीरगति को प्राप्त हो गए। यह दुखद घटना २७ फरवरी १९३१ के दिन घटित हुई और हमेशा के लिये इतिहास में दर्ज हो गयी।

संदर्भ सूची :-

- https://prayagraj.nic.in/hi/tourist&place/%E0%A4%9A%E0%A4%82%E0%A4%A6%E0%A5%8D%E0%A4%B0%E0%A4%B6%E0%A5%87%E0%A4%96%E0%A4%B0&%E0%A4%86%E0%A4%9C%E0%A4%BE%E0%A4%A6&%E0%A4%AA%E0%A4%BE%E0%A4%B0%E0%A5%8D%E0%A4%95/
- https://www.jagran.com/news/national&chandra&shekhar&azad&birth&anniversary&2023&biography&and&profile&hpjagranspecial&23479074.html
- https://hi.m.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%9A%E0%A4%A8%E0%A5%8D%E0%A4%A6%E0%A5%8D%E0%A4%B0%E0%A4%B6%E0%A5%87%E0%A4%96%E0%A4%B0_%E0%A4%86%E0%A4%9C%E0%A4%BC%E0%A4%BE%E0%A4%A6

जवाहर नगर सुरक्षा विहार जीटी रोड अलीगढ़।

Email - durgeshsharma0204@gmail.com

मो. 9411880204

संगम Impact Factor : 6.632
Website : www.ginajournal.com
ISSN : 2321-8037
विशेषज्ञ समीक्षित पत्रिका A Peer Reviewed International Refereed Journal
SANGAM
गीना देवी शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित साहित्य, शिक्षा, संस्कृति एवं शोध को समर्पित मासिक
Vol. 12, Issue 1-2
पृष्ठ : 40-45

हरमहेन्द्र सिंह बेदी : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

सुमन लता, शोधार्थी,
डॉ० अजयपाल सिंह, अध्यक्ष एवं शोध निर्देशक
हिंदी विभाग, देश भगत विश्वविद्यालय, मंडी गोबिंदगढ़ पंजाब।

सारांश :-

पंजाब भारत का गौरवमय प्रांत है। पंजाब ने प्रत्येक क्षेत्र में भारत को एक नई पहचान दिलवाई है। कृषि एवं देश रक्षक के क्षेत्र के साथ–साथ प्रौढ़ साहित्य का रचना स्थल भी पंजाब है। हिंदी साहित्य के विकास में पंजाब प्रदेश का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। पंजाब में राष्ट्रभाषा हिंदी की रचना लगभग प्राचीन काल से होती आ रही है हिंदु धर्म का महान ग्रंथ ऋग्वेद भी पंजाब की धरती पर रचा गया। पंजाब के हिंदी साहित्यकारों में श्रद्धाराम फिल्लौरी, चन्द्रधर शर्मा गुलेरी, उपेन्द्रनाथ अश्क, भीष्म साहनी आदि आधुनिक रचनाकारों का हिंदी साहित्य में विशेष योगदान रहा है। पंजाब का लेखक अपनी माँ बोली के साथ राष्ट्रभाषा के आगे भी नतमस्तक होता रहा है। पंजाब ने ऐसे बहुत से लेखक एवं विद्वान दिए हैं। जिन्होंने राष्ट्र भाषा को चरम सीमातक पहुँचाया एवं जो अब भी इस प्रयास में निरंतर क्रियाशील हैं। इसी कड़ी में डॉ. हरमहेन्द्र सिंह बेदी का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

मूल शब्द :- गौरवमय, माँ बोली, नतमस्तक, नरंतर, क्रियाशील, प्रौढ़ साहित्य, साहित्यक, सांस्कृतिक।

प्रस्तावना :-

इनका व्यक्ति किसी परिचय का मोहताज नहीं है। आप पंजाब के एक ऐसे साहित्यकार है, जिन्होंने पंजाब की सांस्कृतिक तथा साहित्यक विरासत को नए दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया है। इन्होंने लोगों में एक ऊर्जा का संचार किया है। इनकी कविताएँ एक नई सोच एवं चेतना को जाग्रत करती है। आपकी कविताओं में देश प्रेम के साथ–साथ प्रकृति प्रेम का भी अनूठा चित्रण मिलता है। उन्होनें हिंदी साहित्य को अनेक उत्कृष्ट रचनाएँ प्रदान की है।

जन्म :-

डॉ. हरमहेन्द्र सिंह बेदी जी का जन्म होशियारपुर जिले के मुकेरियाँ कस्बे में एक मध्यवर्गीय परिवार में 12 मार्च 1950 को हुआ इनके परिवार के पास विशाल सांस्कृत्तिक विरासत थी।

परिवार का परिवेश : -

डॉ. हरमहेन्द्र सिंह बेदी के पिता का नाम सरदार प्रीतम सिंह और माता का नाम श्री मती जसवंत कौर बेदी है। सरदार प्रीतम सिंह बेदी रेलवे में कार्यरत थे। उनका स्थानांतरण छोटे–बड़े शहरों में होता रहता था।

शिक्षा एवं व्यवसाय :-

डॉ. हरमहेन्द्र सिंह बेदी की प्रारंभिक शिक्षा मुकेरिया में हुई। वहीं से उन्होने दसवीं कक्षा उतीर्ण की उच्च शिक्षा का प्रारम्भ लायलपुर खालसा कॉलेज जालन्धर में हुआ और गवर्नमैंट कॉलेज, होशियारपुर से स्नातक की उपाधि प्राप्त की तत्पश्चात् सन 1974 में गुरू नानक देव विश्वविद्यालय से एम.ए. हिंदी और सन् 1982 में पी. एच.डी की और सन् 1988 में भागलपुर विश्वविद्यालय से डी. लिट की उपाधि अर्जित की। डॉ. हरमहेन्द्र सिंह बेदी ने पंजाबी और हिंदी के बीच पुल बनाने का काम किया। इसके लिए एम.ए. हिंदी करने के साथ–साथ पंजाबी यूनिवर्सिटी पटियाला से एम.ए. पंजाबी भी की। एम.ए. पंजाबी करने का उनका मकसद हिंदी और पंजाबी के बीच के सेतु को समझना था।

व्यवसाय की दृष्टि से डॉ. हरमहेन्द्र सिंह बेदी ने एक समर्पित अध्यापक के सिवाय कोई दूसरा कार्य नहीं किया। 1978 ई. में वे गुरू नानकदेव युनिवर्सिटी के हिंदी विभाग में प्रध्यापक बने वही पर वे 1986 ई. में टीचर और फिर 1995 ई. में प्रोफेसर बने 1978 ई. में वे अनवरत एम.ए., एम फिल, कक्षाओं में अध्यापन–कार्य करते चले आ रहे है।

डॉ. हरमहेन्द्र सिंह बेदी : कृतित्व परिचय :-

डॉ. हरमहेन्द्र सिंह बेदी जी का कृतित्व अमूल्य है। उन्होने हिन्दी साहित्य जगत को विभिन्न कृतित्व से प्रकाशमान किया है। उन्होंने कविता, शोध, समालोचना, अनुवाद, सम्पादन आदि अनेक क्षेत्रों और विधाओं में अपनी प्रतिभा का परिचय दिया है। उस प्रतिभा की व्याख्या हम निम्नलिखित खंडों में करेंगे।

काव्य-संग्रह :-

डॉ. हरमहेन्द्र सिंह बेदी अब तक कविता–जगत को ग्यारह काव्य संग्रह प्रदान कर चुके हैं। जो निम्नलिखित हैं :– गर्म लोहा, पहचान की यात्रा, किसी और दिन, फिर से फिर, धुंध में डूबा शहर, और कहां, एकांत में शब्द, लहर–लहर कविता, उपसंहार में उपस्थित, अनुबंध के भोज पत्र, अभी अशेष अनकहा।

डॉ. हरमहेन्द्र सिंह जी ने हिंदी साहित्य में कवि के रूप में प्रतीकात्मक शैली के माध्यम से अपने भावों, अनुभवों की अभिव्यक्ति की है। आपकी काव्यकृतियों में सहजता, युगबोध तर्क, लोक मंगल तथा मानवीय मूल्यों की प्रमुख विशेषता है। डॉ. हरमहेन्द्र सिंह बेदी की रचनाएँ में हिंदी साहित्य अमूल्य निधि सम्भावनाओं को सुविकसित करने की प्रेरणा सन्निहित है।

उनकी ग्यारह काव्य कृत्तियों में से सर्वश्रेष्ठ ''गर्म लोहा'' कविता संग्रह को राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। 'गर्म लोहा' का प्रकाशन 1982 ई. में अमृतसर से हुआ था। इसमें 46 कविताएँ संकलित है। मध्यवर्ग के जीवन से सम्बन्धित ये कविताएँ आज के विद्रय वातावरण की कथा कहती है। अपनी छोटी–छोटी कविताओं, छोटे–छोटे चरण वाले छन्दों के मध्यम से कवि ने मध्यमवर्गीय जीवन की व्याकुलता को पकड़ने का प्रयास किया है। इस तरह हम कह सकते है कि डॉ. हरमहेन्द्र सिंह जी की कविताएँ कल्पना ना जन–जीवन के हालातों की साक्षी हैं। इन कविताओं में ओढ़ा हुआ कुछ भी नही है बल्कि सब कुछ साफ–साफ एवं पारदर्शी है। जो मानव जीवन की विडम्बनाओं को सरल रूप में प्रदर्शित करता है।

शोध एवं समालोचना :-

डॉ. हरमहेन्द्र सिंह बेदी अभिसम्मत शोधक–समीक्षक हैं। उन्होंने शोध–समीक्षा की बहुत सारी पुस्तकें हिंदी

साहित्य की नीधि को प्रदान की हैं। उनके द्वारा 150 से अधिक शोध–समीक्षात्मक आलेख भी रचित हैं। इन शोध–समीक्षात्मक लेखों के विषय विभिन्न प्रकार के हैं। उनके द्वारा रचित शोधलोचना की पुस्तकों का विवरण निम्नलिखित है।

प्रथम स्वच्छन्दतावादी उपन्यासकार :–

डॉ. हरमहेन्द्र सिंह बेदी जी का 'प्रथम स्वच्छन्दतावादी उपन्यासकार : बाबू ब्रजनन्दन सहाय' संज्ञक ग्रन्थ 1978 ई. में अमृतसर में छपा था। यह ग्रंथ डॉ. बेदी का एम. ए. भाग–दो का मोनोग्राफ है। इस ग्रन्थ के कुल पृष्ठ 104 हैं। इस ग्रंथ में डॉ. बेदी जी ने बाबू ब्रजनन्दन सहाय की रचना के चरित्र को चित्रित करने का प्रयास किया है।

गुरूमुखी लिपि में उपलब्ध हिंदी भक्ति साहित्य का आलोचनात्मक अध्ययन :–

इस ग्रन्थ में गुरूमुखी लिपि में उपलब्ध भक्ति साहित्य का आलोचनात्मक अध्ययन ऐतिहासिक दृष्टि से प्रस्तुत किया गया है। यह डॉ. बेदी का डी. लिट् का शोध प्रबन्ध है। जिसे 1993 ई. में अमृतसर से प्रकाशित किया गया था। डॉ. बेदी के इस कार्य से भक्ति साहित्य संसार और भी प्रशस्त हुआ है क्योंकि इस ग्रंथ से हिंदी भक्ति साहित्य को नए संदर्भ, नई व्याख्या के साथ–साथ एक व्यापक क्षेत्र भी प्राप्त हुआ है।

गांधी : दर्शन और विचार :–

सत्य, अहिंसा, सहयोग, भ्रातत्व आदि उदात्त जीवन मूल्यों के पोषक महात्मा गांधी आधुनिक काल के महत्वपूर्ण विचारक और दार्शनिक रहें है। 'गांधी : दर्शन और विचार' नामक यह पुस्तक अमृतसर से 1995 ई. में प्रकाशित हुई थी। इस पुस्तक में गांधी जी के आलेखों को आधार बनाकर कुछ महत्वपूर्ण सवाल उठाए गए है। डॉ. हरमहेन्द्र सिंह बेदी की यह पुस्तक गांधी दर्शन के गम्भीर चिन्तकों को इक्कीसवीं शताब्दी में गांधी दर्शन की प्रासंसिकता को समझाने एवं उनका मार्ग दर्शन करने में सहायक होगी।

गुरू गोविन्द सिंह और पंजाब का हिंदी वीर साहित्य :–

डॉ. बेदी जी ने गुरू गोबिन्द सिंह के जी के व्यक्तित्व पर मोहित होकर इस कृति की रचना की है। इस ग्रन्थ का प्रकाश 1999 ई. में दिल्ली से हुआ है। इस रचना के मूल विषय पर प्रकाश डालते हुए लेखक ने लिखा है कि ''जुल्म और अत्याचार के खिलाफ गुरू जी ने तलवार उठाई और खालसा के पीछे श्री गुरू जी का लक्ष्य था। 'दसम ग्रन्थ' के इसी मूल स्वर का साहित्यिक एवं सांस्कृतिक अध्ययन इस पुस्तक का मूल विषय है।'' (भूमिका से)

हिंदी के अतिरिक्त बेदी जी ने पंजाबी भाषा में भी दो पुस्तकें लिखी हैं –

1. साहित संदर्भ
2. गुरू नानक वाणी अते भारतीय संस्कृति

पहली पुस्तक में 11 आलेख हैं। इसमें गुरू नानक वाणी, गुरू तेग बहादुर, संस्कृति, बुल्लेशाह, टीकाकारी आदि को विषय बनाया गया है। दूसरी पुस्तक में 13 आलेख है।

जिनके विषय बाबा शेख फरीद, भाई वीर सिंह, पंजाबी साहित्य का इतिहास, धार्मिक शिक्षा, पंजाब की भारतीय संस्कृति को देन सूफी दर्शन, भाई सन्तोख सिंह, साहित्य का इतिहास क्या है, आदि है।

सम्पादन :–

डॉ. हरमहेन्द्र सिंह बेदी जी ने आलोचनात्मक पुस्तकों के साथ अनेक पाठ्य–पुस्तकों तथा पत्रिकाओं का

भी सम्पादन किया है। उनका उल्लेख इस प्रकार है –

सामान्य पुस्तकें :-

1. भाई गुरूदास के कवित्त सवैये
2. सौन्दर्योपासक (बाबू ब्रजनन्दन सहाय)
3. रीति साहित्य : विविध सन्दर्भ
4. कालजयी कबीर
5. पंडित श्रद्धाराम फिल्लौरी ग्रन्थावली (तीन भाग)
6. ग्वाल कृत विजय विनोद

इनके अतिरिक्त कुछ रचनाएँ और भी है जो प्रकाशनाधीन हैं।

पाठ्य-पुस्तकें :- अहिन्दी भाषा भाषी प्रान्त को ध्यान में रखकर ये पुस्तकें तैयार की गई हैं :-

1. हिंदी पुस्तक (आठवीं कक्षा के लिए)
2. गद्य त्रिविधा (बी. ए. प्के लिए) : गुरू नानक देव यूनिवर्सिटी, अमृतसर।
3. काव्य–गरिमा (बी. ए. प्के लिए) : गुरू नानक देव यूनिवर्सिटी, अमृतसर।
4. गुरू वाणी प्रकाश (बी. ए. प्के लिए) : पंजाबी यूनिवर्सिटी, पटियाला।

इनके अतिरिक्त और भी कई पाठ्य–पुस्तकें हैं जो भिन्न–भिन्न कक्षाओं को ध्यान में रखकर लिखी गई है।

डॉ. बेदी ने पुस्तकों के अतिरिक्त कई पत्रिकाओं का भी सम्पादन किया है। ये पत्रिकाएँ हैं :–

प्राधिकृत :-

यह गुरू नानक देव यूनिवर्सिटी के हिंदी विभाग की अर्द्धवार्षिक पत्रिका है। इनमें पाँच अंकों के सम्पादक बेदी जी रहे हैं। असीम–यह अनियमित कालीन पत्रिका थी जिसके केवल दो अंक प्रकाशित हुए थे। अमरीक गिल इसके सह सम्पादक थे।

अनुवाद :-

डॉ. हरमहेन्द्र सिंह बेदी जी ने कई कृतियों का अंगरेजी से पंजाबी में, पंजाबी से हिंदी में तथा हिंदी से पंजाबी में अनुवाद भी किया है। वे निम्नलिखित है :–

1. **अंगरेजी से पंजाबी में :-**

प्रेमानन्द कुमार कृत का 'THE MOTHER' 'श्री माँ' के नाम से।

कृष्णा कृपालानी कृत TAGORE ALIFE 'रवीन्द्रनाथ टेगोर' नाम से।

2. **पंजाबी से हिंदी में :-**

श्री हेमकुण्ट साहिब (यात्रावृत्त) – मूल लेखक – सूबेदार बघेल सिंह।

3. **हिंदी से पंजाबी में :-**

'वे दिन' (उपन्यासकार निर्मल वर्मा)

ठसके अतिरिक्त डॉ. बेदी ने 'महा दार्शनिक अरविन्द' नामक एक पुस्तक की रचना की है, जो पंजाबी भाषा में है तथा अरविन्द पर पंजाबी भाषा में यह पहली कृति है। इसमें अनेक लेख संकलित है। इस प्रकार, डॉ. हरमहेन्द्र सिंह बेदी जी ने अपनी कृतियों से हिंदी भाषा तथा पंजाबी भाषा और साहित्य जगत के खजाने को ओत–प्रोत किया है। आशा करते हैं कि डॉ. हरमहेन्द्र सिंह बेदी इसी प्रकार साहित्य जगत को अपने रचना–पुष्प अर्पित करते रहें।

शोध निर्देशन :–

डॉ. हरमहेन्द्र सिंह बेदी जी एक समर्पित शिक्षक हैं। उनका व्यवसाय अध्यापन ही रहा है। 1978 से उन्होंने अध्यापक के रूप में अपना निरंतर योगदान दिया है। अब तक वे 40 शोधार्थियों को पी. एच. डी. और 60 विद्याथियों को एम. फिल. का लघु शोध करवा चुके हैं। अभी भी वे धर्मशाला के विश्वविद्यालय में चांसलर के रूप में शिक्षा एवं साहित्य को निरंतर अपनी सेवा प्रदान कर रहे हैं।

साहित्यकारों के अनुसार डॉ. हरमहेन्द्र सिंह बेदी का व्यक्तित्व :–

डॉ. हरमहेन्द्र सिंह बेदी शोधक, समालोचक, अनुवादक होने के साथ–ही–साथ समकालीन हिंदी कविता के विशेष कवि हैं। उन्होंने हिंदी कविता को अनेक खूबसूरत रचनाएं प्रदान की है। उनका व्यक्तित्व जितना आलोकपूर्ण है, उतना ही उनका कृतित्व भी उजासपूर्ण हैं। उनके व्यकितत्व के आलोक का अध्ययन अन्य साहित्यकारों के अनुसार इस प्रकार हैं।

सुरेश सेठ के अनुसार :–

''आज बेदी के साथ मेरा संपर्क पाँच दशक से भी पुराना हो गया। इन पाँच दशकों में बेदी ने हमेशा मुझे वह सम्मान दिया है जो किसी गुरू अथवा परिवार के वरिष्ठ को देते है। लेकिन आज मुझे यह कहते हुए खुशी हो रही है कि बेदी मेरा छात्र ही नहीं अपने अध्यवसाय, उत्साह और शेध काबलियत के कारण मेरे साथ न केवल कंधे से कंधा भिड़ा कर खड़ा हो गया, बल्कि जीवन पथ पर चलते हुए उसका धीरज और उसकी संघर्ष शक्ति मुझे इतनी प्रेरणा दे रही है कि मुझे यह कहने को जी चाहता है कि कल का मेरा छात्र आज गुरू बन गया।'';[1]

डॉ. गीता डोगरा के अनुसार :–

''वक्त ने और इल्म ने उन्हें एक बड़ी और मां सरस्वती ने कलम थमा दी पर कहते है न दोस्त–दोस्त ही रहता है, वह रोज मिले या लम्बे अरसे के बाद रहता तो दोस्त ही है न.....। डॉ. बेदी के बारे में भी यही धारणा है मेरी, उनकी कविताएं, उनके वक्तव्य, संवाद, उन्हें बड़ा बनाते गए पर उनके भीतर का पुरूष नम्र होता गया।''[2]

प्रो. राम सजन पाण्डेय के अनुसार :–

''डॉ. बेदी की व्यक्तित्व का आकलन करना, कोई सहज कार्य नहीं है। इसका कारण यह नहीं कि वे असहज, रहस्यमय हैं। वास्तव में, वे बड़े सहज और आत्मीय है। वे न तो अपने व्यक्तित्व को किसी पर आरोपित करते हैं और न ही अपनी विद्वता–प्रभुता से किसी को आतंकित ही। हँसकर, उनकर दोनों हाथ पसारकर वे मिलते है। दिल–दिल को, हृदय–हृदय को वे एक कर देते हैं। थोड़ी देर के लिए तो द्वैत की स्थिति समाप्त हो जाती है। वे मिलने वाले को अपने में अद्वैत भाव से समाहित कर लेते है। सचमुच वे आत्मीयता और सुजनता का विग्रह रूप है।''[3]

प्रो. केवल धीर के अनुसार :–

तीन दर्जन से अधिक पुस्तकों के रचियता अनेकों पुस्तकों के अनुवादक एवं संपादक। दर्जन भर पुस्तकों के लेखक एवं कवि शोधकर्ता व्याख्याता एक अद्‌भुत : व्यक्तित्व के स्वामी डॉ. हरमहेन्द्र सिंह बेदी पंजाब की पावन धरती पर हिंदी भाषा के ऐसे वट–वृक्ष हैं जिन पर समस्त हिंदी जगत को गर्व है। हिंदी भाषा एवं साहित्य

के विकास में उनकी अनथक यादें अपने आप में इतिहास है। जिस प्रकार सभ्यता, संस्कृति और समाज का मार्ग दर्शक होता है। इसी प्रकार डॉ. बेदी का योगदान भक्विय के गर्भ से युग युगान्तरों तक एक दिशा के रूप में समूचे समाज का मार्ग–दर्शन बना रहेगा।''

इस प्रकार हम कह सकते है कि डॉ. हरमहेन्द्र सिंह बेदी एक खास व्यक्तित्व के धनी है वे अच्छे साहित्यकार के साथ–साथ एक योग्य गुरू एवं परम मित्र भी हैं। यही बात है कि जो भी उन्हें मिल पाया वह कभी भी उनके स्नेह से भरे व्यवहार को भूल नहीं पाया। डॉ. हरमहेन्द्र सिंह बेदी जी ने बुरे वक्त पर अपने दोस्तों का साथ दिया परन्तु कभी जताया नहीं। कितने ही लोगों ने उनकी उंगली पकड़कर साहित्य यात्रा को पार किया। वे एक पड़ाव तक आगे बढ़ते का प्रोत्साहन देते हुए उनका मार्गदर्शन करते है। और फिर किसी और को मार्गदर्शन देने के लिए उनकी उंगली थाम लेते है। यही विशेषता इनके व्यक्तित्व पर चार चाँद लगा देती हैं। आशा है कि वे अपने इसी स्वभाव से लोगों का दिल जीतते रहेंगे एवं साहित्य जगत में उनका पथ प्रदर्शन करते रहेंगे।

संदर्भ सूची :–

सहायक सामग्री

1. अवतार केसरी पत्रिका, संपादक : शैलेन्द्र सहगल, जालंधर वर्ष 11–09–2017 से 18–09–2017 पृ : 1, 2, 3, 5, 6, 8
2. उत्तम हिन्दू पत्रिका, जालंधर संस्करण वर्ष 7–10–2012, पृ : 11
3. पारसर्माण पत्रिका, संपादक डॉ. गीता डोगरा, त्रिवेणी साहित्य अकादमी, जालंधर।

yashshekhawat.ajay@gmail.com

मोबाइल नंबर 9079661524

संगम Impact Factor : 6.632
Website : www.ginajournal.com
ISSN : 2321-8037
विशेषज्ञ समीक्षित पत्रिका A Peer Reviewed International Refereed Journal
SANGAM
गीना देवी शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित साहित्य, शिक्षा, संस्कृति एवं शोध को समर्पित मासिक
Vol. 12, Issue 1-2
पृष्ठ : 46-49

हबीब तनवीर और चरनदास चोर

नीता वर्मा
शोधार्थी, बरकतउल्लाह विश्वविद्यालय, भोपाल।

शोध सार :-

हमारी भारतीय परंपरा में 'लोक' एक ऐसा शब्द है जो हर भारतीय में आत्मा की तरह विराजमान है। इसी लोक को हबीब साहब ने संपूर्ण समाज के सामने प्रस्तुत करने का बीड़ा उठाया था। प्राचीन समय से लोककथाओं के माध्यम से भारतीय संस्कारों का जन्म होता आया है। हमने लोककथाओं का श्रवण करके ही नैतिक मूल्यों को पहचाना तथा अपनाया है। बालपन से हम हमारे बुजुर्गो से जो कथाएँ, कहानियॉ सुनते आए हैं वे सभी लोककथाएँ ही हैं। हबीब तनवीर जी ने अपने रंगजीवन में कई लोककथाओं को नाटक का रूप देकर आमजन तक पहुँचाया। 'चरनदास चोर' इस परिप्रेक्ष्य में उनकी उत्कृष्ट कृति है। हबीब जी ने एक राजस्थानी लोककथा को एक संपूर्ण नाटक का रूप प्रदान कर उस नाटक में जनमानस के लिए एक चोर के माध्यम से सत्य की राह पर चलने तथा अपने वचनों की रक्षा हेतु अपने प्राणों को आहूत करके भी अपने वचन को निभाने का संदेश दिया है। जहाँ हमारे समाज में एक चोर को निकृष्ट समझा जाता है वहीं हबीब जी ने इस नाटक के माध्यम से उस चोर के माध्यम से आमजन को बड़ी सीख देने का अनूठा प्रयोग किया है।

बीज शब्द :- सत्यनिष्ठा, ईमानदारी, वचनबद्धता, लोककथाएँ, चोरशास्त्र, फ्रिंज फर्स्ट अवार्ड।

हबीब साहब के रंगकर्म को 'चरनदास चोर' नाटक ने पूरे विश्व में एक अलग पहचान दिलवाई। भारतीय रंगमंच के साथ–साथ यह नाटक विदेशी रंगमंच पर भी ख्याति अर्जित कर चुका है। इस नाटक की रचना के पीछे कुछ रोचक कहानियॉ है। सुप्रसिद्ध लेखक श्री विजयदान देथा जो हबीब साहब के मित्र थे उन्होने राजस्थानी लोक कथा पर आधारित एक चोर की कहानी हबीब साहब को सुनाई थी। जब से हबीब साहब ने यह कहानी सुनी थी तब से उन्होनें निर्णय कर लिया था कि इस राजस्थानी लोक कथा पर एक नाटक तैयार करना है। हबीब साहब मानते थे कि 'चोर' का संबंध हमारी प्राचीन परंपराओं से है। उन्होनें संस्कृत के नाटकों एवं उपन्यासों के अंतर्गत भी चोर जैसे पात्रों के बहुतेरे उदाहरण दिए हैं। ''इन कहानियों का सिलसिला 'चोर' की हमारी प्राचीन परंपराओं से मिलता है। शास्त्रों में हमारे यहॉ एक 'चोर शास्त्र' भी है। मुणीराम भद्र विरचित के संस्कृत नाटक 'प्रबुद्ध रोहिणेय' का नायक एक चोर है और उसकी अजीबो–गरीब जिंदगी का चित्रण 'चोर शास्त्र' पर ही आधारित है।''[1]

शुद्रक रचित नाटक में भी एक महत्वपूर्ण पात्र शिरोलिक है जो एक चोर है उसके बाद भी उसका चरित्र सकारात्मकतापूर्ण है तथा लेखक ने उसके चरित्र में चतुराई एवं सजगता का भी वर्णन बहुत सटीकता से किया

है।

''शुद्रक के शाहकार 'मृच्छकटिक' में एक महत्वपूर्ण पात्र शिरोलिक है जो चोर भी है, प्रेमी भी है और आर्यक गोपालक के राजनीतिक दल का लीडर भी है। वह जब चारूदत्त के घर में चोरी के लिए सेंध लगाना चाहता है तो पहले विचार कर लेता है कि चॉद जैसी गोल हो या कमल के फूल की तरह, या फिर एक मटके के आकार की सेंध बनाऊॅ! इसका भी सूत्र 'चोर–शास्त्र' से संबंधित है। शिरोलिक की बनाई हुई सेंध देखकर चारूदत्त को अपने घर चोरी का ख्याल बाद में आता है, पहले वे चोर की कला देखकर दंग रह जाता है और उसकी चाबुकदस्ती की प्रशंसा करता है।''[2]

शिरोलिक के चरित्र की सकारात्मकता का वर्णन इस प्रकार है– ''आर्यक और शिरोलिक वो पात्र हैं जिनका जिक्र हजारीप्रसाद द्विवेदी के 'पुनर्नवा' में मिलता है। उन्होंने अपने उपन्यास में बताया है कि इन पात्रों का सिलसिला प्राचीन काल के साहित्य से मिलता है। 'मृच्छकटिक' का शिरोलिक देश में क्रांति लाता है और राजा पालक के अत्याचार को खत्म करके उसकी जगह ग्वाले आर्यक को राजसिंहासन पर स्थापित कर देता है।''[3]

किसी नाटक की रचना का उद्देश्य केवल मनोरंजन के लिए न होकर उसमें कुछ ऐसे तथ्यों का समावेश किया जाए जो ऐतिहासिक एवं तत्कालीन परिदृश्य में भी प्रासंगिक हो तो एक सफल नाटक का निर्माण हो सकता है। हबीब जी इसी प्रकार के तथ्यों को लेकर चले थे जिसके कारण उन्हे नाटक की रचना एवं उसके मंचन के अपार सफलता मिली। कहते हैं जो अपनी जड़ों से जुड़ा रहता है वह बहुत ऊॅचाई तक जाता है। शायद इसलिए हबीब जी ने लोक–कथाओं पर नाटक निर्माण का निर्णय किया।

'चरनदास चोर' नाटक का पहली बार मंचन सन् 1975 में कमानी नामक स्थान में हुआ। तब से आज तक इस नाटक के भारत में कई मंचन हो चुके हैं। राष्ट्रीय ही नहीं अंतर्राष्ट्रीय मंच पर भी इस नाटक ने अपना परचम लहराया है। 1982 में हुए एडबंरा अंतर्राष्ट्रीय नाट्य उत्सव में इस नाटक को फ्रिंज फर्स्ट अवार्ड मिला। यह केवल हबीब तनवीर की ही नहीं वरन संपूर्ण भारतीय रंगमंच के लिए बड़ी उपलब्धि थी। इस विषय में हबीब जी ने चरनदास चोर की भूमिका में उल्लेख किया है कि–''एक वह कमानी का पहला शो एक एडबंरा का यादगार शो। नाटक लेकर हम लोग पहली बार विदेश अगस्त 1982 में गए थे। एडबंरा अंतर्राष्ट्रीय नाट्य उत्सव के सिलसिले में और फिर फ्रिंज फेस्टीवल में फ्रिंज फेस्टीवल में नये–नये तजुर्बाती, कलात्मक नाटक प्रस्तुत किए जाते हैं और उन्हे इनामात दिए जाते हैं। फ्रिंज फेस्टीवल में कोई बावन नाटक थे। जापान, अमेरिका और यूरोप के मुल्कों के। हिंदुस्तान से केवल हमारा नाटक था। जिस दिन हमने अपना शो पेश किया, उसी दिन हमें खबर मिली कि 'चरनदास चोर' को, जिसका नाम अंग्रेजी में 'चरन द थीफ' रख दिया गया था, फ्रिंज फर्स्ट अवार्ड मिला।''[4]

'चरनदास चोर' नाटक अपने शीर्षक की सार्थकता को सिद्ध करता है। इस नाटक का नायक चरनदास है जो एक चोर है। एक दिन वह एक हवलदार से बचता हुआ एक गुरूजी के आश्रम में पहुँच जाता है। स्वयं को छिपाने के लिए वह गुरूजी के पास पहुँच जाता है और उनसे निवेदन करता है कि वे उसे अपना शिष्य बना लें। तब गुरूजी चरनदास से गुरू दक्षिणा में चोरी करना छोड़ने के लिए कहते हैं। तब चरणदास इस स्थिति से निकलने का रास्ता निकालता है और गुरू के समक्ष ऐसी चार प्रतिज्ञाएँ करता है जो उसके अनुसार उसके

जीवन में कभी घटेगी ही नहीं। पहली प्रतिज्ञा कि वह कभी सोने की थाली में नहीं खायेगा। दूसरी प्रतिज्ञा करता है कि वह कभी हाथी पर बैठकर जूलूस में नहीं जाएगा। तीसरी प्रतिज्ञा करता है कि वह कभी किसी राजकुमारी से विवाह नहीं करेगा। चौथी प्रतिज्ञा करता है कि किसी देश की गद्दी पर नहीं बैठेगा अर्थात कभी किसी देश का सत्ताधारी नहीं बनेगा। लेकिन गुरूजी उस से कहते हैं कि तुमने जो प्रतिज्ञाएँ की है वह सभी बातें एक चोर के जीवन में शायद ही आएँ फिर गुरूजी चोर से पूछते हैं कि क्या ये प्रतिज्ञाएँ जो तुमने की हैं वे अपनी इच्छा से की हैं या मेरी इच्छा से? चोर कहता है मैंने ये चारों प्रतिज्ञाएँ अपनी इच्छा से की हैं। तब गुरूजी कहते हैं कि तो मेरी इच्छा है कि तुम अपने जीवन में एक प्रतिज्ञा और लो कि तुम कभी झूठ नहीं बोलोगे। चोर अपने गुरू को वचन देता है कि वह अपनी सारी प्रतिज्ञाओं का पालन करेगा और कभी झूठ नहीं बोलेगा।

चरनदास रईसों के घर चोरी करता है और चोरी का धन गरीबों में बॉट देता है जिससे वह गरीबों का मसीहा बन जाता है। एक दिन चरनदास सरकारी खजाना लूटता है और स्वयं जाकर दरबार में उपस्थित हो जाता है एवं अपना अपराध स्वीकार कर लेता है। रानी उसकी इस सत्य को स्वीकार करने क्षमता से प्रभावित हो जाती है तथा उसे हाथी पर बैठाकर जनता के समक्ष उसका जूलूस निकालना चाहती है पर चरनदास इसके लिए मना कर देता है। रानी प्रसन्न होकर उसे सोने की थाली में भोजन करवाना चाहती है पर चरनदास इसके लिए भी अस्वीकृति देता है। एवं अपने गुरू के सामने की हुई प्रतिज्ञाओं के विषय में रानी को बताता है एवं कहता है कि वह अपने प्राणों को देकर भी अपने गुरू को दिए गऐ वचनों का पालन करेगा। उसकी इन बातों एवं ईमानदारी से रानी प्रभावित होती है तथा चरनदास पर मोहित हो जाती है। रानी चरनदास से शादी कर उसे राज्य का राजा बनाना चाहती है लेकिन चरनदास इस प्रस्ताव को अस्वीकृत कर देता है। रानी इस अस्वीकृति को अपना अपमान समझती है तथा चरनदास को मृत्युदंड देती है। चरनदास को मृत्युदंड दिया जाता है। वह अपने प्राणों की बलि देकर भी अपने गुरू के प्रति आस्था प्रदर्शित करते हुए गुरू को दिए हुए वचनों का पालन करता है।

''चोर होने के बावजूद वह लोगों का प्रेम और श्रद्धा प्राप्त करता है क्योंकि चोरी के धन को वह गरीबों और जरूरतमंदों के बीच बॉट देता है। लेकिन अपनी झूठ न बोलने की प्रतिज्ञा के कारण परेशानियों में पड़ता रहता है और उसकी परेशानियॉ दर्शकों को हॅसाती रहती है। विभिन्न घटनाओं, स्थितियों के बीच से आगे बढ़ती हुई कथा कहीं आज के समाज की हलकी चुटकी लेती है, कहीं उसे करारा तमाचा लगाती है, कहीं उस पर तीखा व्यंग्य करती है तो कहीं पलभर रूककर सोचने को मजबूर करती है।''[5]

इस नाटक की एक विशेषता यह भी थी कि यह हास्य व्यंग्य से अचानक त्रासदी में बदल जाता है जब रानी उसे मृत्युदंड देती है। हबीब जी ने प्रक्षकों को नाटक के अंत में विचार करने पर मजबूर कर दिया कि क्या सत्य की राह पर चलने के लिए अपने प्राणों की बलि देनी होती है। यह कि अंत में तो लगा था चरनदास रानी के साथ प्रसन्नता पूर्वक अपना जीवन व्यतीत करेगा एवं रानी जो कि उसे प्रेम करती है, के द्वारा ही उसका जीवन समाप्त करवा देना। इस प्रकार के अंत की अपेक्षा शायद प्रेक्षकों को नहीं रही होगी। प्रतिभा अग्रवाल जी ने चरनदास चोर का उल्लेख अपनी किताब में किया है–''अंत के 10 मिनिट पहले तक विशुद्ध हास्य व्यंग्य वाली कृति अचानक एक मोड़ लेती है। अपनी प्रतिज्ञाओं के कारण रानी के प्रस्ताव को अस्वीकार करने के कारण चरनदास को मृत्यु का वरण करना होता है–कॉमेडी अचानक ट्रेजेडी बन जाती है। नाटक सुखांत की ओर

बढ़ते–बढ़ते अचानक दुखांत में रूपांतरित हो जाता है।''[6]

चरनदास अपनी सत्यनिष्ठा एवं ईमानदारी के कारण प्रेक्षकों में सराहना का विषय बन जाता है तथा चोरी किए गए धन से भी वह गरीबों की सहायता करता है जो नाटक में सकारात्मकता को दर्शाता है। सत्य की राह पर चलना कठिन है उसके उपरांत भी चरनदास, अपने गुरू को एक बार वचन दिए जाने के बाद उन्हे कभी तोड़ता नहीं। हबीब जी ने 'प्राण जाई पर वचन न जाई' इस उक्ति को इस नाटक में सिद्ध करके दिखाया गया है।

यह कहा जा सकता है कि हबीब जी ने अपनी निर्देशकीय कुशलता से 'चरनदास चोर' नाटक के कथानक को बहुत सुंदरता के साथ गढ़ा एवं एक–एक दृश्य को संपूर्ण नाटक में गूँथा है। अपने अनूठे कथानक के कारण चिरकाल तक यह नाटक एक मील के पत्थर की तरह याद रखा जाएगा।

संदर्भ :-

1. चरनदास चोर, तीन खेल, हबीब तनवीर वाणी प्रकाशन 2004 पृ. 83
2. चरनदास चोर, तीन खेल, हबीब तनवीर वाणी प्रकाशन 2004 पृ. 83
3. चरनदास चोर, तीन खेल, हबीब तनवीर वाणी प्रकाशन 2004 पृ. 83
4. चरनदास चोर, तीन खेल, हबीब तनवीर वाणी प्रकाशन 2004 पृ. 96–97
5. प्रतिभा अग्रवाल, पेज 62, हबीब तनवीर एक रंग व्यक्तित्व।
6. प्रतिभा अग्रवाल, पेज 62–63, हबीब तनवीर एक रंग व्यक्तित्व।

मो. न. 8989919400

ईमेल– neetaverma12385@gmail.com

संगम Impact Factor : 6.632
Website : www.ginajournal.com
ISSN : 2321-8037
विशेषज्ञ समीक्षित पत्रिका A Peer Reviewed International Refereed Journal
SANGAM
गीना देवी शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित साहित्य, शिक्षा, संस्कृति एवं शोध को समर्पित मासिक
Vol. 12, Issue 1-2
पृष्ठ : 50-59

उत्तर प्रदेश में बढ़ते पर्यटन विकास की चुनौतियां और समाधान

डॉ. वेदप्रकाश
एसोसिएट प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष – भूगोल,
किसान (पी० जी०) कॉलेज सिम्भावली, जनपद हापुड़, उत्तर प्रदेश (भारत) –245207

सारांश :-

उत्तर प्रदेश, अपने ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, और धार्मिक समृद्धि के साथ एक प्रमुख पर्यटन स्थल के रूप में उभर रहा है। इसके प्राचीन मंदिर, गाँवों का लोककला, और अनूठे सांस्कृतिक विरासत के कारण यहां के पर्यटकों की आकर्षण में बढ़ोतरी हो रही है। राज्य सरकार ने पर्यटन के क्षेत्र में विकास के लिए कई पहलुओं पर ध्यान केंद्रित किया है। नए पर्यटन स्थलों की पहचान और उन्हें सुरक्षित और सुविधा से भरपूर बनाने के लिए कदम उठाए जा रहे हैं। राज्य में कई महत्वपूर्ण स्थलों को विकसित करने के लिए सरकार और स्थानीय प्रशासन का साथ मिलाकर काम किया जा रहा है। ताजमहल, वाराणसी, लखनऊ, अयोध्या, और मथुरा के अलावा राज्य में छुपे अनगिनत ऐतिहासिक स्थलों को प्रमोट करने के लिए नए योजनाओं की शुरुआत हो रही है। स्थानीय बाजारों, खाद्य, और सांस्कृतिक कार्यक्रमों को बढ़ावा देने के लिए समृद्धि की योजनाएं बनाई जा रही हैं। इस पर्यटन विकास के क्रम में, रोजगार के नए अवसर उत्पन्न हो रहे हैं।

मुख्य शब्द :- पर्यटन, अध्ययन, समीक्षा, प्रबंध, प्रवृत्ति, यात्रा, विश्लेषण, समीक्षात्मक, विराजमान, सांस्कृतिक विनिमय।

प्रस्तावना :-

उत्तर प्रदेश भारतीय एवं विदेशी पर्यटकों के लिए एक महत्त्वपूर्ण स्थान है। इस प्रदेश में कई ऐतिहासिक एवं धार्मिक स्थल हैं। उत्तर प्रदेश की आबादी भारत के सभी राज्यों में सबसे अधिक है। भौगोलिक रूप से भी उत्तर प्रदेश में विविधता देखने को मिलती है– उत्तर की ओर हिमालय पर्वत हैं और दक्षिण में सिन्धु–गंगा के मैदान हैं। शिवालिक की पहाडियों में शाकम्भरी शक्तिपीठ तीर्थ है। भारत का सबसे लोकप्रिय ऐतिहासिक पर्यटन स्थल ताज महल यहां के आगरा शहर में स्थित है। वाराणसी, जो कि हिन्दुओं के लिए महत्वपूर्ण धार्मिक स्थल है जो इसी प्रदेश में है। साथ ही साथ भगवान श्रीराम की जन्म स्थली अयोध्या पावन नगरी जो की सरयू नदी के पावन स्थल पर विराजमान है। इसी प्रदेश में माता सती के नौ रूपों में एक माँ पाटन देवी का मंदिर भी तुलसीपुर में विराजमान है। भगवान गौतम बुद्ध का मंदिर भी अत्यंत ही मनमोहक और खूबसूरत है जो कि उत्तर प्रदेश के

श्रावस्ती जनपद में स्थित है जहां हर वर्ष लाखों बौद्ध भिक्षु दर्शन को आते हैं। प्रदेश में पर्यटन गतिविधियों में उत्तरोत्तर वृद्धि हो रही है। प्रदेश सरकार द्वारा पर्यटन विकास के लिये आधारभूत संरचनाओं में वृद्धि की गयी है। इससे पर्यटन वृद्धि के राजस्व में वृद्धि होने के साथ–साथ अप्रत्यक्ष रोजगार सृजन भी हो रहा है।

पर्यटन के उद्देश्य :–

1. **आर्थिक उन्नति :–** पर्यटन से यात्री स्थानीय अर्थतंत्र को मजबूत करते हैं, जिससे रोजगार, विनियमित आय, और उद्यमिता में सुधार होता है।

2. **सांस्कृतिक विनिमय :–** पर्यटन के माध्यम से विभिन्न सांस्कृतिक और ऐतिहासिक परंपराएं साझा की जा सकती हैं, जिससे सांस्कृतिक विनिमय होता है।

3. **विदेशी और देशी दृष्टिकोण :–** पर्यटन से विदेशी और देशी यात्री आते हैं, जिससे विभिन्न सांस्कृतिकों के बीच समरसता बढ़ती है और विदेशी आगंतुकों को भारत की विशेषता का अनुभव होता है।

4. **पर्यावरण संरक्षण :–** जिन्हें प्राकृतिक सौंदर्य, वन्यजन्तु संरक्षण, और पर्यावरण संरक्षण की अनुभूति कराने के लिए यात्रा किया जाता है।

5. **स्वास्थ्य और आत्मा का संरक्षण :–** छुट्टीयों के दौरान यात्री अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखते हैं और नए दृष्टिकोण प्राप्त कर सकते हैं, जो उन्हें आत्मा का संरक्षण करने में मदद कर सकता है।

पर्यटन के अर्थ :–

पर्यटन एक सामाजिक और आर्थिक गतिविधि है जिसमें लोग अपने निवास स्थान से दूसरे स्थानों की सैर–सपर्दा करने के लिए यात्रा करते हैं। इससे नए स्थानों का अन्वेषण होता है और वहाँ की सांस्कृतिक, ऐतिहासिक, और प्राकृतिक सुंदरता का आनंद लिया जाता है। पर्यटन आमतौर पर रिक्रेएशन, शिक्षा, विश्राम, और व्यापार के उद्देश्यों के लिए किया जाता है, जिससे स्थानीय अर्थव्यवस्था को बढ़ावा मिलता है। पर्यटन आमतौर पर मनोरंजन, शिक्षा, और आर्थिक उपयोग के लिए किया जाता है।

उत्तर प्रदेश में आने वाले पर्यटकों के आंकड़े

वर्ष	अयोध्या	मथुरा	आगरा	प्रयाग	काशी	उत्तर प्रदेश
2017	2.84 लाख	72.53 लाख	1.02 करोड़	4.18 करोड़	62.82 लाख	23.75 करोड़
2018	3.18 लाख	76.88 लाख	1.06 करोड़	4.48 करोड़	64.44 लाख	28.88 करोड़
2019	3.42 लाख	82.69 लाख	1.08 करोड़	28.52 करोड़	67.97 लाख	54.06 करोड़
2020	1.73 लाख	13.70 लाख	29.97 लाख	3.19 करोड़	9.82 लाख	8.70 करोड़
2021	2.83 लाख	54.38 लाख	42.61 लाख	1.12 करोड़	30.82 लाख	10.97 करोड़
2022	2.39 करोड़	89.16 लाख	94.70 लाख	2.55 करोड़	7.12 करोड़	31.85 करोड़

उत्तर प्रदेश में पर्यटन :–

उत्तर प्रदेश पर्यटन विभाग के आधिकारिक आंकड़े देखें तो राज्य में हर साल पर्यटक बढ़ रहे हैं जिसमें घरेलू और विदेशी पर्यटक दोनों शामिल हैं। साल 2017 में राज्य में कुल 23,75,33,823 पर्यटक आए, जिसमें घरेलू पर्यटक 23,39,77,619 जबकि विदेशी पर्यटक 35,56,204 थे। अगले साल यानी 2018 में इस आंकड़ों में 21.60 प्रतिशत का उछाल आया। इस साल कुल 28,88,60,600 सैलानियों ने प्रदेश का दौरा किया, जिसमें

भारतीय 28,50,79,848 जबकि विदेशी 37,80,752 थे। 2019 में आंकड़े में एक बार फिर जबरदस्त इजाफा हुआ और 2018 के मुकाबले इस बार 87.14 प्रतिशत ज्यादा सैलानी यूपी आए। 2019 में कुल 54,06,00,343 सैलानी प्रदेश आए जिसमें घरेलू 53,58,55,162 और विदेशी 47,45,181 थे। 2019 में प्रयागराज में हुआ अर्ध कुंभ इस इजाफे की बड़ी वजह रहा। 2020 ऐसा साल रहा जिसमें यूपी का पर्यटन क्षेत्र को काफी नुकसान उठाना पड़ा और यह समय था कोरोना काल का। 2019 की तुलना में इस साल 83.92 प्रतिशत कम यानी 8,70,13,225 सैलानी ही प्रदेश आए जिसमें भारतीय 8,61,22,293 और विदेशी 8,90,932 थे। 2021 में कोरोना पाबंदियों में ढील के साथ पर्यटन क्षेत्र में एक बार फिर वृद्धि हुई और 2020 के मुकाबले इस बार 26.14 प्रतिशत ज्यादा सैलानी उत्तर प्रदेश पहुंचे। 2021 में कुल 10,97,53,172 पर्यटकों ने प्रदेश का दौरा किया जिसमें भारतीय 10,97,08,435 जबकि विदेशी 44,737 थे। साल 2022 में यूपी का पर्यटन और तेजी से बढ़ा और इस बार 65 प्रतिशत अधिक सैलानी प्रदेश पहुंचे। 2022 में कुल 31,85,62,573 पर्यटक उत्तर प्रदेश आए जिसमें घरेलू 31,79,13,587 जबकि विदेशी 6,48,986 थे।

अयोध्या में पर्यटक का विकास

क्रम संख्या	वर्ष	भारतीय पर्यटक	विदेशी पर्यटक	कुल पर्यटक
01	2017	17832717	25141	17857858
02	2018	19532824	28335	19563159
03	2019	20463403	28321	20491724
04	2020	6193537	2611	6196148
05	2021	15743359	431	15743790
06	2022	22112402	26403	22138805

अयोध्या :-

राम मंदिर का निर्माण शुरू होने के साथ रामनगरी के पर्यटन उद्योग को भी पंख लग गए हैं। देशी–विदेशी पर्यटकों की संख्या में तेजी से इजाफा हुआ है। रामायण सर्किट और घाटों के सौंदर्यीकरण से जहां आकर्षण बढ़ा तो वहीं दीपावली पर दीपोत्सव ने भी आंगतुकों को अपनी ओर खींचा है। अयोध्या में पर्यटकों के लिए आंकड़े देखें तो 2017 में कुल 2,84,299 पर्यटक शहर आए। अगले वर्ष यानी 2018 में यह आंकड़ा बढ़ा और 3,18,545 सैलानी पवित्र नगरी पहुंचे। 2019 में 3,42,332 आगंतुक अयोध्या आए। 2020 वह साल वह था जब शहर में सबसे कम पर्यटक आए। कोरोना की पाबंदियों की वजह से 1,73,530 सैलानी ही यहां आए सके। 2021 में कोविड नियमों में कुछ ढील का असर दिखा और इस साल 2,83,208 लोगों ने शहर का दौरा किया। 2022 वह साल था जब राम नगरी आने वाले पर्यटकों की संख्या एकदम से बढ़ी। इस साल कुल 2,39,10,479 सैलानियों ने शहर का दौरा किया जिसमें घरेलू पर्यटक 2,39,09,014 और विदेशी पर्यटक 1465 शामिल हैं।

वाराणसी :-

वाराणसी या काशी दुनिया के सबसे पुराने जीवित शहरों में से एक है। अंग्रेजी लेखक और साहित्यकार मार्क ट्वेन ने एक बार लिखा था 'बनारस इतिहास से भी पुराना है, परंपरा से पुराना है, किंवदंती से भी पुराना है।' काशी की भूमि सदियों से हिंदुओं के लिए परम तीर्थ स्थान रही है। शहर 3000 वर्षों से शिक्षा और सभ्यता

का केंद्र बना हुआ है। जिस स्थान पर बुद्ध ने आत्मज्ञान के बाद अपने पहले उपदेश का प्रचार किया था, वह वाराणसी से मात्र 10 किमी दूर है। जैनों के लिए भी एक तीर्थ स्थान, वाराणसी को 23वें तीर्थंकर पार्श्वनाथ का जन्मस्थान माना जाता है। बाबा विश्वनाथ की नगरी काशी यूपी के पर्यटक का अहम हिस्सा है और यहां भी पर्यटन का दायरा बढ़ा है। 2017 में 59,47,355 घरेलू और 3,34,708 विदेशी पर्यटकों के साथ वाराणसी आने वालों की कुल संख्या 62,82,063 रही। इसके बाद 2018 में कुल 64,44,860, 2019 में 67,97,775 और 2020 में 9,82,492 सैलानी बाबा की नगरी पहुंचे। 2021 में यहां कुल 30,78,479 आगंतुक पहुंचे और इसी साल 13 दिसंबर को काशी विश्वनाथ गलियारे का उद्घाटन हुआ था। गलियारा बनने के साथ वाराणसी आने वालों की संख्या में जबरदस्त उछाल देखने को मिला। 2022 में 7,12,31,051 लोग वाराणसी आए जिमसें घरेलू पर्यटक 7,11,47,310 और विदेशी पर्यटक 83,741 थे।

मथुरा में पर्यटन :-

मथुरा राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली के 145 किलोमीटर दक्षिण–पूर्व में स्थित है। प्राचीन काल के दौरान मथुरा एक महत्वपूर्ण केंद्र था। हिंदू शास्त्रों के मुताबिक मथुरा ब्रज या बृज–भूमि के केंद्र में भगवान कृष्ण का जन्मस्थान है। महाभारत और भागवत पुराण महाकाव्यों के मुताबिक, मथुरा सुरसना साम्राज्य की राजधानी थी, जिसका शासन श्री कृष्ण के मामा कंस ने किया था। भगवान कृष्ण की नगरी में पिछले कुछ वर्षों में सैलानियों की संख्या में काफी बढ़ोतरी हुई है। यहां 2017 में 72,53,305 सैलानी पहुंचे थे। इसके बाद 2018 में 76,88,210 सैलानी, 2019 में 82,69,835, 2020 में 13,70,972, 2021 में 54,38,762 और 2022 में 89,16,036 पर्यटकों ने यहां का दौरा किया।

आगरा :-

आगरा मुगल–युग की इमारतों, विशेष रूप से ताजमहल, आगरा किला और फतेहपुर सीकरी के कारण एक प्रमुख पर्यटन स्थल है, जिनमें से तीन यूनेस्को की विश्व विरासत साइटें हैं। शहर दिल्ली और जयपुर के साथ आगरा गोल्डन त्रिकोण पर्यटन सर्किट में शामिल है। ताज नगरी में आने वाले सैलानियों के आंकड़े देखें तो इसमें भी उछाल आया है। साल 2017 में 1,02,69,006 पर्यटकों ने शहर का दीदार किया। इसके बाद 2018 में 1,06,28,435 तो 2019 में 1,08,66,284 सैलानी शर पहुंचे। कोरोना काल के दौरान 2020 में 26,97,145 और 2021 में 42,61,336 पर्यटक आए। वहीं 2022 में ताज नगरी का पर्यटन ठोस सुधरा और इस साल कुल 94,70,667 लोगों ने शहर की यात्रा की।

प्रयागराज :-

प्रयागराज भारत के सबसे पुराने शहरों में से एक है। यह प्राचीन ग्रंथों में 'प्रयाग' या 'तीर्थराज' के नाम से जाना जाता है। प्रयागराज तीन नदियों– गंगा, यमुना और अदृश्य सरस्वती के संगम पर स्थित है। समागम–बिंदु को त्रिवेणी के रूप में जाना जाता है और यह हिंदुओं के लिए बहुत ही पवित्र है। प्रयागराज में प्रत्येक छह वर्षों में अर्ध कुंभ और प्रत्येक बारह वर्षों में महाकुंभ, इस धरती पर तीर्थयात्रियों का सबसे बड़ा आयोजन है। यहां आने वाले सैलानियों की संख्या देखें तो 2017 में 4,18,74,662 थी। इसके बाद 2018 में यह आंकड़ा 4,48,15,467, 2019 में 28,52,28,710 रहा। 2019 में वर्ष अर्ध कुंभ मेले के कारण प्रयागराज में पर्यटकों की संख्या जबरदस्त रही। वहीं 2020 में 3,19,33,758 पर्यटक, 2021 में 1,12,13,496 पर्यटक और 2022 में

2,55,17,007 पर्यटक प्रयागराज आए।

उत्तर प्रदेश के घरेलू पर्यटन :-

उत्तर प्रदेश के घरेलू पर्यटन का आंकड़ा बीते दस साल में दोगुना हो गया है जबकि इसी दौरान विदेशी पर्यटकों की संख्या में पांच गुना कमी आयी है। यूपी के पर्यटन में वाराणसी, प्रयागराज, अयोध्या, वृंदावन, आगरा, और मथुरा लोगों के पसंदीदा स्थल बन गए हैं। पर्यटन एवं संस्कृति के प्रमुख सचिव, मुकेश मेश्राम ने बताया कि उत्तर प्रदेश में पर्यटन उद्योग तेजी से बढ़ रहा है। वे हेरिटेज टूरिज्म और वाटर एडवेंचर को बढ़ावा देने का काम कर रहे हैं। विदेशी पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए उचित सुविधाएं विकसित की जाएंगी। कोरोना महामारी के बाद अब पर्यटन उद्योग फिर से गति पकड़ रहा है। हम उम्मीद करते हैं कि जल्द ही पहले कोरोना काल से पहले वाली स्थितियों में पहुंचा जा सकेगा। आंकड़े बताते हैं कि उत्तर प्रदेश में घरेलू पर्यटकों की संख्या दोगुनी रफ्तार से बढ़ी है, जबकि विदेशी पर्यटकों की संख्या तेजी से घटी है। साल 2012 में घरेलू पर्यटकों की संख्या 16.94 करोड़ थी और विदेशी सैलानियों की संख्या 29.89 लाख थी। जबकि साल 2022 में घरेलू पर्यटकों की संख्या 31.70 करोड़ पहुंच गई और विदेशी सैलानियों का आंकड़ा केवल 6.48 लाख रह गया है। इन आंकड़ों के मुताबिक आगरा उत्तर प्रदेश में विदेशी पर्यटकों के लिए सबसे लोकप्रिय शहर रहा है। जहां 2012 में आगरा में 13.43 लाख विदेशी सैलानी आए थे, वहीं साल 2022 में भी यहां 3.45 लाख तक विदेशी पर्यटक विजिट किये हैं। विदेशी पर्यटकों के मामले में काशी (वाराणसी) हमेशा दूसरे नंबर पर रही है। जहां 2012 में 2.78 लाख और साल 2022 में 83,741 लोग ही पहुंचे हैं। हालाँकि काशी घरेलू पर्यटन में सबको पीछे छोड़ रहा है। यहाँ साल 2022 में 7.12 करोड़ लोग, जबकि प्रयागराज में 2.55 करोड़ लोग, अयोध्या 2.39 करोड़ लोग, वृंदावन में 1.76 करोड़ लोग, आगरा 94 लाख और मथुरा 89 लाख से ज्यादा लोग पहुंचे हैं।

आकंड़ें बताते हैं कि पर्यटन के लिहाज से 2019 सबसे बेहतर वर्ष था। 2019 में उत्तर प्रदेश के पर्यटक स्थलों पर 53.58 करोड़ लोग आए, जिनमें से 47.45 लाख विदेशी थे। विदेशी पर्यटकों के मामले में 2019 में 16. 80 लाख विदेशी सैलानी केवल आगरा ही घूमने आए थे, जो कि अपने आप में एक बड़ा रिकार्ड था। आपको बता दें कि उद्योग मंडल 'एसोचौम' और उसके सहयोगी 'माई अतिथि डॉट ग्लोबल' की ताजा रिपोर्ट के मुताबिक, साल 2021 में घरेलू पर्यटकों के आवागमन के मामले में उत्तर प्रदेश ने 10 करोड़ 97 लाख की संख्या के साथ देश में दूसरा स्थान हासिल किया था। जबकि साल 2022 में पर्यटकों की संख्या में काफी वृद्धि दर्ज की गई है। रिपोर्ट के मुताबिक, साल 2022 में करीब 190 प्रतिशत की बढ़ोत्तरी के साथ कुल 31 करोड़ 79 लाख पर्यटक यूपी पहुंचे। दूसरी ओर, साल 2021 में मात्र 44,737 विदेशी पर्यटक उत्तर प्रदेश आए थे, वहीं साल 2022 में 1350 प्रतिशत की जबरदस्त वृद्धि के साथ यह आंकड़ा छह लाख 40 हजार हो गया।

उत्तर प्रदेश में धार्मिक पर्यटन :-

उत्तर प्रदेश धार्मिक पर्यटन के क्षेत्र में तेजी से आगे बढ़ रहा है। सदियों तक बदहाल रहे अयोध्या, काशी और मथुरा के जीर्णोद्धार ने इस राज्य को नई पहचान दी है। जिसका सकारात्मक असर राज्य की अर्थव्यवस्था पर भी पड़ रहा है। यूपी में धार्मिक पहचान रखने वाले जिलों में पर्यटकों की संख्या, उन जिलों के अनुपात में ज्यादा बढ़ी है, जो ऐतिहासिक पहचान रखते हैं। धार्मिक पर्यटन ने राज्य में रोजगार की नई संभावनाओं को जन्म दिया है। ढांचागत एवं बुनियादी सुविधाओं में निवेश तेज हुआ है। बीते एक दशक में उत्तर प्रदेश में पर्यटन के

आंकड़े देखें तो वर्ष 2020–21 तक आगरा पर्यटकों का सबसे पसंदीदा शहर रहा है। प्रतिवर्ष 1 करोड़ से ज्यादा पर्यटक आगरा आते रहे हैं। अन्य जिलों में यह आंकड़ा लाखों तक सिमट कर रहा जाता था, लेकिन वर्ष 2021–22 से बनारस पर्यटकों का सबसे पसंदीदा शहर बन गया है।

वर्ष 2021–22 में 31.85 करोड़ पर्यटक यूपी आये। इस वर्ष पहली बार बनारस ने पर्यटकों के मामले में आगरा को पीछे छोड़ दिया। आगरा में जहां 1.03 करोड़ पर्यटक पहुंचे, वहीं बनारस में पर्यटकों की संख्या 8. 06 करोड़ को पार कर गई। मथुरा में 6.53 करोड़, प्रयागराज में 2.60 करोड़, अयोध्या में 2.39 करोड़ पर्यटक आये। अयोध्या में राम मंदिर का निर्माण हो जाने के बाद इस आंकड़े में और तेजी आयेगी। अनुमान लगाया जा रहा है कि राम मंदिर निर्माण पूर्ण होने के बाद धार्मिक पर्यटन के लिहाज से अयोध्या राज्य का सर्वाधिक तेजी से बढ़ने वाला जिला बन जायेगा। धार्मिक पर्यटन में श्रीराम मंदिर निर्माण के पूर्व ही उत्तर प्रदेश ने सारे रिकॉर्ड ध्वस्त कर दिये हैं। धार्मिक पर्यटन में दशकों से अग्रणी रहे तमिलनाडु को उत्तर प्रदेश ने बनारस के बल पर पीछे छोड़ दिया है। तमिलनाडु में 2022–23 में लगभग 22 करोड़ पर्यटक पहुंचे थे, जिसे केवल काशी और मथुरा पहुंचे 23 करोड़ पर्यटकों की बदौलत उत्तर प्रदेश ने पीछे कर दिया है। यूपी धार्मिक पर्यटकों के मामले में नंबर एक हो गया है। इस वर्ष उत्तर प्रदेश में 36.58 करोड़ से ज्यादा पर्यटक आये। बीते एक दशक से तमिलनाडु रामेश्वरम और कन्याकुमारी जैसे धार्मिक स्थलों की बदौलत धार्मिक पर्यटन में नंबर वन रहा है। इस साल रामेश्वरम में 10 करोड़, कन्याकुमारी में 7 करोड़, धनुषकोड़ी में 4 करोड़ तथा वन्य अभ्यारण में एक करोड़ पर्यटक पहुंचे। इस अवधि में उत्तर प्रदेश के काशी में 12 करोड़, मथुरा में 11 करोड़, अयोध्या में 6 करोड़ प्रयागराज में 4.58 करोड़, विंध्याचल में 1.6 करोड़ श्रद्धालु पर्यटक पहुंचे। आगरा में भी एक करोड़ पर्यटक पहुंचे। वर्ष 2016 में यूपी आने वाले सैलानियों की संख्या 21.67 करोड़ थी, जो 2022–23 में बढ़कर 36.58 करोड़ तक पहुंच गई है। बीते एक दशक में उत्तर प्रदेश के पर्यटन आंकड़ों को देखें तो आगरा पर्यटकों का सबसे पसंदीदा शहर रहा है। 2021 तक यही स्थिति बनी रही। बनारस में यह आंकड़ा 75 लाख तक था, लेकिन 2022 के बाद परिस्थिति बदल चुकी है। बनारस उत्तर प्रदेश का सबसे ज्यादा पर्यटकों के पसंद वाला जिला बन चुका है।

उत्तर प्रदेश पर्यटन में प्रथम :–

उत्तर प्रदेश पर्यटन में नंबर वन बन गया है। मथुरा और काशी में इस बार गोवा से 16 गुना ज्यादा पर्यटक आए हैं। मथुरा–वृंदावन में 6 करोड़ तो काशी में 7 करोड़ पर्यटकों ने भ्रमण किया। जबकि गोवा में केवल 80 लाख ही पर्यटक आए हैं। बुधवार को वृंदावन के रामकृष्ण मिशन अस्पताल में कैंसर मरीजों के लिए पेट सीटी स्कैन मशीन का उद्घाटन करने के बाद सीएम योगी ने यह बात कही। उन्होंने कहा कि उत्तर प्रदेश विकास के साथ ही पर्यटन के क्षेत्र में तेजी से आगे बढ़ रहा है।

उत्तर प्रदेश के पर्यटन स्थल :–

1. **लखनऊ :–** उत्तर प्रदेश की राजधानी और सबसे बड़ा शहर, लखनऊ 'मुस्कुराईएं, क्योंकि आप लखनऊ में है' (मुस्कान, आपके लिए, लखनऊ में हैं) के दिल को छू लेने वाले नोट के साथ आपका स्वागत करता है। गोमती नदी के तट पर स्थित नवाबों और कबाबों का यह शहर अपनी वास्तुकला, इतिहास, साहित्य और संस्कृति के लिए प्रसिद्ध है। लखनऊ के लोग अपने विनम्र शिष्टाचार और प्यारी 'पहले आप' (आप पहले) संस्कृति के लिए जाने जाते हैं, जो हमेशा आगंतुकों के चेहरे पर मुस्कान छोड़ जाती है। राजधानी के बीचोबीच बना मुगल

गेटवे रूमी दरवाजा शहर को उसके पुराने और नए हिस्से में बांटता है।

2. **वाराणसी** :– वाराणसी, जिसे काशी और बनारस के नाम से भी जाना जाता है और जिसे दुनिया का सबसे पुराना जीवित शहर माना जाता है, उत्तर प्रदेश के सबसे प्रसिद्ध पर्यटन स्थलों में से एक है। हिंदू धर्म के सात पवित्र शहरों में से एक होने के नाते, वाराणसी वास्तव में भारत की आध्यात्मिक राजधानी है। जबकि आपको शहर के लगभग हर मोड़ पर मंदिर मिलेंगे, काशी विश्वनाथ मंदिर, जो कि 12 ज्योतिर्लिंगों में से एक है, सबसे अधिक देखा जाने वाला और सबसे पुराना है। वाराणसी को मरने के लिए एक शुभ स्थान माना जाता है, क्योंकि ऐसा माना जाता है कि यह जीवन और मृत्यु के चक्र से मोक्ष या मुक्ति प्रदान करता है। पवित्र गंगा के किनारे लगभग 80 घाट शहर के दिल और आत्मा का निर्माण करते हैं।

3. **अयोध्या** :– उत्तर प्रदेश में एक और बहुत प्रसिद्ध स्थान, अयोध्या कई वर्षों से सुर्खियों में है और हाल ही में यहां बनने वाले राम मंदिर के भव्य भूमि पूजन के लिए। भगवान राम की जन्मस्थली अयोध्या उत्तर प्रदेश में सरयू नदी के तट पर स्थित है और हिंदुओं के सात पवित्र शहरों में से एक है। अयोध्या को प्राचीन काल में साकेत कहा जाता था। अयोध्या का उल्लेख महाकाव्य रामायण सहित कई किंवदंतियों और कहानियों में मिलता है। भारत के सबसे बड़े त्योहार, दीवाली, का पता अयोध्या में लगाया जा सकता है, जब रावण का वध करके घर लौटे विजयी राम का स्वागत करने के लिए पूरा शहर मिट्टी के दीयों से जगमगा उठा था। हर साल दीवाली के दौरान अयिध्या को लाखों दीयों से सजाया जाता है, आप नीचे दी गई तस्वीरों में दीवाली के दौरान अयोध्या की सुंदरता देख सकते हैं अयोध्या जैन धर्म के 24 तीर्थंकरों में से चार का जन्मस्थान भी है, इस प्रकार यह जैनियों के लिए भी उत्तर प्रदेश में सबसे महत्वपूर्ण पर्यटन स्थलों में से एक है। धार्मिक शहर पवित्र सरयू नदी के किनारे कई शांत घाटों से सुशोभित है।

4. **फतेहपुर सीकरी** :– लाल बलुआ पत्थर से निर्मित फतेहपुर सीकरी मुगल साम्राज्य के इतिहास और विरासत की खूबसूरत गाथा हैद्य आगरा से सिर्फ 37 किलोमीटर दूर, फतेहपुर सीकरी, अकबर ने 1569 में सूफी संत शेख सलीम चिश्ती के सम्मान में इस शहर की स्थापना की। यह भारत में मुगल वास्तुकला के बेहतरीन उदाहरणों में से एक है। फतेहपुर सीकरी, 1610 में परित्यक्त होने और वीरान खंडहर में बदलने से पहले कुछ वर्षों तक मुगल साम्राज्य राजधानी हुआ करताद्य सूर्यास्त के समय फतेहपुर सीकरी जादुई और शानदार दिखता है। यह निश्चित रूप से उत्तर प्रदेश में घूमने के लिए सबसे अच्छी जगहों में से एक है।

5. **मथुरा** :– भगवान कृष्ण का जन्मस्थान होने के कारण मथुरा हिंदू धर्म के सात पवित्र शहरों में से एक है और इसलिए दुनिया भर से तीर्थयात्रियों की भीड़ को आकर्षित करता है, जिससे यह उत्तर प्रदेश में सबसे अधिक देखे जाने वाले तीर्थयात्रियों और पर्यटन स्थलों में से एक बन जाता है। वाराणसी में गंगा आरती के समान, यमुना आरती मथुरा के मुख्य आकर्षण में से एक है।

6. **वृंदावन** :– एक दूसरे से केवल 10 किमी दूर स्थित मथुरा और वृंदावन को अक्सर जुड़वां शहर माना जाता है। यमुना के तट पर सबसे पुराने शहरों में से एक, वृंदावन को भगवान कृष्ण के भक्तों के लिए सबसे महत्वपूर्ण तीर्थ स्थानों में से एक माना जाता है। उनका बचपन का निवास माना जाता है, वृंदावन शहर, जो यमुना नदी के पानी के किनारे स्थित है, में सैकड़ों भगवान कृष्ण और राधा मंदिर बिखरे हुए हैं। उनमें से सबसे प्रसिद्ध बांके बिहारी मंदिर और विश्व प्रसिद्ध इस्कॉन मंदिर हैं। शहर का नाम वृंदा (अर्थ तुलसी) और वन (अर्थ

ग्रोव) से लिया गया है, जो शायद निधिवन और सेवा कुंज में दो छोटे पेड़ों का उल्लेख करते हैं। चूंकि वृंदावन को एक पवित्र स्थान माना जाता है, इसलिए यहां बड़ी संख्या में लोग अपने सांसारिक जीवन को त्यागने के लिए आते हैं।

7. **इलाहाबाद :–** आधिकारिक तौर पर प्रयागराज के रूप में जाना जाता है, इलाहाबाद त्रिवेणी संगम या तीन नदियों गंगा, यमुना और सरस्वती के मिलन बिंदुओं के लिए प्रसिद्ध है और इसलिए उत्तर प्रदेश में घूमने के लिए महत्वपूर्ण पर्यटन स्थलों में से एक है। प्रयाग के प्राचीन शहर की साइट पर निर्मित, इलाहाबाद ने अनादि काल से, संगम के तट पर सबसे बड़ी हिंदू सभा आयोजित की है : महा कुंभ मेला, जो हर बारह साल में यहां आयोजित होता है और इसमें लाखों तीर्थयात्री शामिल होते हैं। दुनिया भर में।

8. **सारनाथ :–** उत्तर प्रदेश में एक और पवित्र पर्यटन स्थल, सारनाथ ऐतिहासिक चमत्कार का एक शांत और आध्यात्मिक शहर है जिसमें कई बौद्ध स्तूप, संग्रहालय, खुदाई वाले प्राचीन स्थल और सुंदर मंदिर हैं..... सभी एक रहस्यमय और शांत सेटिंग से सजाए गए हैं। बौद्धों के चार सबसे पवित्र स्थानों में से एक, सारनाथ सिर्फ 10 किमी दूर है। वाराणसी से और अक्सर बौद्ध, जैन और हिंदू भक्तों के साथ समान रूप से आते हैं। यह वह स्थान है जहाँ भगवान बुद्ध ने अपना पहला उपदेश दिया था।

9. **झाँसी :–** झांसी की रानी : रानी लक्ष्मीबाई रहने और शासन करने वाले स्थान के रूप में लोकप्रिय, झांसी बुंदेलखंड क्षेत्र में बहुत दक्षिण में बेतवा और पाहुंच नदियों के तट पर स्थित है। झाँसी का नाम राजा बीर सिंह देव द्वारा निर्मित झाँसी किले से मिलता है और इसका नाम इसलिए रखा गया क्योंकि शासक किले की ओर देखते हुए केवल एक दूर पहाड़ी के ऊपर एक छाया देख सकते थे।

10. **कुशीनगर :–** बौद्ध धर्म के चार पवित्र स्थलों में से एक और उत्तर प्रदेश के सबसे प्रसिद्ध पर्यटन स्थलों में से एक, कुशीनगर राज्य के उत्तर–पूर्वी क्षेत्र में गोरखपुर के पास स्थित है। कुशीनगर का नाम 'कुश' घास के नाम पर रखा गया है, क्योंकि इस क्षेत्र में इसकी बहुतायत है। माना जाता है कि धार्मिक शहर वह स्थान है जहां भगवान गौतम बुद्ध ने महापरिनिर्वाण प्राप्त किया था। इसलिए कुशीनगर सही मायने में एक अंतरराष्ट्रीय पर्यटन स्थल है, खासकर बौद्ध धर्म के अनुयायियों के बीच।

11. **दुधवा राष्ट्रीय उद्यान :–** उत्तर प्रदेश इतना विविध राज्य है कि यह सभी को कुछ न कुछ प्रदान करता है। इतिहास के शौकीनों के लिए हो, आध्यात्मिक साधकों के लिए, संस्कृति के गिद्धों के लिए और यहां तक कि प्रकृति और वन्य जीवन के प्रति उत्साही लोगों के लिए भी। दुधवा नेशनल पार्क उत्तर प्रदेश में घूमने लायक ऐसी ही महत्वपूर्ण जगहों में से एक है। भारत–नेपाल सीमा पर राज्य के लखीमपुर–खीरी जिले में स्थित, दुधवा राष्ट्रीय उद्यान वन्यजीव, प्रकृति और विविधता के बारे में है।

भारत में पर्यटन क्षेत्र से संबंधित प्रमुख चुनौतियाँ :–

प्रशिक्षण और कौशल विकास का अभाव :– चूँकि पर्यटन उद्योग एक श्रम प्रधान क्षेत्र है, इसमें व्यावहारिक प्रशिक्षण एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। गुजरते समय के साथ प्रशिक्षित श्रमशक्ति की उपलब्धता का भारत में पर्यटन क्षेत्र के तीव्र विकास के साथ तालमेल नहीं रह सका है। बहुभाषी प्रशिक्षित गाइडों की सीमित संख्या और स्थानीय लोगों में पर्यटन से जुड़े लाभों एवं जिम्मेदारियों की अपर्याप्त समझ के कारण इस क्षेत्र का विकास बाधित रहा है।

पर्यटन संभावना का न्यून-उपयोग :- भारत में ऐसे कई स्थान/क्षेत्र मौजूद हैं जो सर्वेक्षणों, अवसंरचना और कनेक्टिविटी की कमी के कारण अभी भी अनन्वेषित (unexplored) ही हैं। घरेलू पर्यटन के प्रति उदासीन रवैया भी इसका एक परिणाम है।

संसाधनों का अत्यधिक दोहन :- असंवहनीय पर्यटन (Unsustainable Tourism) प्रायः अत्यधिक उपभोग के माध्यम से प्राकृतिक संसाधनों पर दबाव उत्पन्न करता है (विशेष रूप से भारत के हिमालयी क्षेत्रों में जहाँ पहले से ही संसाधनों की कमी है)। असंवहनीय पर्यटन स्थानीय भूमि उपयोग को भी प्रभावित करता है, जिसके परिणामस्वरूप मृदा के कटाव, प्रदूषण में वृद्धि और लुप्तप्राय प्रजातियों के प्राकृतिक पर्यावासों की क्षति जैसी स्थिति उत्पन्न होती है।

अवसंरचना और सुरक्षा की कमी :- भारतीय पर्यटन क्षेत्र के लिये यह एक बड़ी चुनौती है। इसमें बहु-व्यंजन रेस्तराँ, बुनियादी स्वास्थ्य सुविधाओं, सार्वजनिक परिवहन एवं स्वच्छता और पर्यटकों के बचाव एवं सुरक्षा की कमी जैसी स्थितियाँ शामिल हैं।

समाधान :-

भारत के लिये वैश्विक अवसर :- 'वसुधैव कुटुम्बकम' का भारत का दर्शन विश्व को एक परिवार के रूप में देखता है। यह दर्शन बहुपक्षवाद में भारत के अटूट विश्वास को परिलक्षित करता है। भारत की समृद्ध विरासत और संस्कृति को ध्यान में रखते हुए व्यंजन पर्यटन (Cuisine Tourism) की एक बेजोड़ विविधता भारत के 'सॉफ्ट पावर' को बढ़ाने और विदेशी राजस्व को आकर्षित करने का एक माध्यम बन सकती है।

एकीकृत पर्यटन प्रणाली :- देश भर में वांछित पर्यटन स्थलों और प्रमुख बाजारों एवं क्षेत्रों की पहचान करने के लिये एक व्यापक बाजार अनुसंधान और मूल्यांकन अभ्यास किया जा सकता है। इसके बाद फिर इन स्थानों का मानचित्रण करने और सोशल मीडिया के माध्यम से उनका प्रचार करने के लिये एक डिजिटल एकीकृत प्रणाली का विकास किया जा सकता है जो 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' के मूल तत्व का संवर्द्धन करेगा।

पर्यटन प्रभाव आकलन :- स्थानीय संसाधनों, वातावरण और निवासियों पर पर्यटन के प्रभाव का नियमित रूप से मूल्यांकन करने की आवश्यकता है। इसके साथ ही, वर्तमान और भविष्य के आर्थिक, सामाजिक एवं पर्यावरणीय प्रभावों को ध्यान में रखते हुए आगंतुकों, उद्योग, पर्यावरण और मेजबान समुदायों की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये पर्यटन नियमों को समय-समय पर संशोधित किया जाना चाहिये।

एक राज्य एक पर्यटन शुभंकर :- राज्य के पशुओं को, विशेष रूप से बच्चों के बीच पर्यटन शिक्षा को बढ़ावा देने के लिये, एक अभिनव उपकरण के रूप में विभिन्न राज्यों के पर्यटन विभागों हेतु एक विज्ञापन शुभंकर के रूप में इस्तेमाल किया जा सकता है।

निष्कर्ष :-

उत्तर प्रदेश में पर्यटन विकास ने प्रदेश को आर्थिक और सामाजिक रूप से सुदृढ़ किया है। प्रमुख पर्यटन स्थलों में ताजमहल, वाराणसी, और लखनऊ शामिल हैं। राज्य सरकार ने पर्यटन के लिए विभिन्न योजनाएं शुरू की हैं, जो निवेश और रोजगार के साधन में मदद कर रही हैं। विशेषकर, कुशीनगर क्षेत्र में बौद्ध पर्यटन को बढ़ावा देने के उद्देश्य से योजनाएं चलाई जा रही हैं। पर्यटन विकास से स्थानीय लोगों को रोजगार के नए साधन मिल रहे हैं और विभिन्न सांस्कृतिक धाराओं को प्रमोट किया जा रहा है।

उत्तर प्रदेश में पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए राज्य सरकार ने कई बड़ी घोषणाएं की है। सरकार ने राज्य के कई बड़े शहरों में एयरपोर्ट बनाने का ऐलान कर दिया है। ये एयरपोर्ट मुरादाबाद, बरेली, अलीगढ़ और आजमगढ़ में बनाए जाएंगे। पर्यटकों की संख्या बढ़ाने के लिए सरकार कई रणनीतियों पर काम कर रही है। ज्यादा से ज्यादा पर्यटकों को उत्तर प्रदेश में लाने के लिए सरकार कई कदम उठा रही हैं। बात केवल देश के सबसे अधिक आबादी वाले राज्य उत्तर प्रदेश की करें तो यहां हर जिले में पर्यटकों के घूमने के लिए बहुत कुछ है। खास बात ये है कि उत्तर प्रदेश के पर्यटन स्थल बजट में हैं। अगर आपको घूमने का शौक है लेकिन पैसों के कारण आपको अपनी ख्वाहिशों पर नियंत्रण रखना पड़ता है तो आप यूपी भ्रमण करें। उत्तर प्रदेश में कई ऐसी जगहें हैं जो विदेशी पर्यटकों के लिए आकर्षण का केंद्र है। यूपी के कई दार्शनिक स्थल विदेशों की खूबसूरती का अनुभव देते हैं। यहां की खूबसूरती और नजारे इतने मनमोहक हैं कि अगर आप एक बार देख लेंगे तो विदेश जाना भी भूल जाएंगे।

संदर्भ सूची :-

1. म. प्र. के प्रमुख पर्यटन स्थल डॉ. आनंद कुमार पाण्डेय, म. प्र. हिन्दी ग्रंथ अकादमी।
2. पर्यटन मार्केटिंग एवं विकास डॉ. जगमोहन नेगी, तक्षशिला प्रकाशन नई दिल्ली।
3. पर्यटन एवं पर्यटन उत्पाद डॉ. संजय कुमार शर्मा, तक्षशिला प्रकाशन नई दिल्ली।
4. इंटरनेशल टुरिजम – प्रेमधर, कनिष्क पब्लिकेशन नई दिल्ली।
5. ग्रामीण पर्यटन कुरूक्षेत्र फरवरी 2015 ।
6. रोमांच भरा भारत इंडिया टूडे 21 अक्टूबर 2015
7. भारत में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश शोध पत्रिका 2014–2015
8. www.tourisminindia.com

Email- 2011vaad@gmail.com

मो० न० 9411611360

संगम Impact Factor : 6.632
Website : www.ginajournal.com
ISSN : 2321-8037
SANGAM
विशेषज्ञ समीक्षित पत्रिका A Peer Reviewed International Refereed Journal
Vol. 12, Issue 1-2
गीना देवी शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित साहित्य, शिक्षा, संस्कृति एवं शोध को समर्पित मासिक
पृष्ठ : 60-64

झज्जर जिले की आर्थिक उन्नति में कृषि आधुनिकीकरण की भूमिका का विश्लेषण

रेनू
शोधार्थी, भूगोल विभाग, सिंघानिया विश्वविद्यालय, पचेरी बेरी, झुन्झुनू (राजस्थान)

भूमिका :-

प्रस्तुत शोध–पत्र में कृषि आधुनिकिकरण की आर्थिक विकास का मूल्यांकन किया गया है। अब तक की प्रकाशित भूगोल की पुस्तकों व शोध कार्य में झज्जर जिले संदर्भ में कृषि के विकास से संबधित शीर्षक पर साहित्य में कम ही पढ़ने व मिलता है ब्लकि भूमि उपयोग आधार पर भूमि को वर्गीकृत करके व भू उपयोग के कारकों की व्याख्या करने में भूगोलवेताओं ने प्रर्याप्त कार्य किया है इस शोध कार्य में विशेषकर झज्जर जिले मे कृषि आधुनिकिकरण व विकास की चर्चा की गई है इसके अलावा कृषि विषय पर शोध व अध्ययन कार्य कृषि वैज्ञानिकों, कृषि भूगोलविदों व अर्थशास्त्रीयों ने अपने अपने ढंग से किया है। कुछ महत्वपूर्ण साहित्य समीक्षा का वर्णन किया गया है।

भारत की अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार स्तंभ कृषि को ही माना जाता है। क्योंकि कृषि के उत्पादन के बिना विश्व जनसंख्या के भरण पोषण की कल्पना नहीं की जा सकती है। भारत को कृषि प्रधान देश कहा जाता है क्योंकि प्राचीनकाल से ही भारत में कृषि की जाती थी। भारत की आधी से ज्यादा जनसंख्या कृषि पर ही निर्भर रहती है। भारत के उद्देश्य से सन 1960 के दशक में हरित कांति की शुरूआत (की गई) हुई क्योंकि भारत में बढ़ती हुई जनसंख्या के खाद्य उत्पादन के कारण पांग में भी वृद्धि हुई। गेहूँ व चावल अन्य अनाज की कृषि के लिए भ्प्ट बीजो कि शुरूआत हुई व उन बीजों के लिए बहुत अच्छे परिणाम प्राप्त हुए। क्योंकि इनसे कृषि उत्पादन में वृद्धि हुई और कृषि में नई नई आधुनिक तकनीकी का प्रयोग किया गया। इस पर सिचाई विधियों और अन्य कारकों पर भी विचार किया गया। इन्ही प्रयासों के कारण भारतीय अर्थव्यवस्था को और अधिक बढ़ाया गया। इस प्रकार भारतीय अर्थव्यवस्था में मानव सभ्यता का अस्तित्व खाद्य सामग्री के बिना संभव नहीं हो सकता। इसी प्रकार भारत के अलग अलग क्षेत्रों में कृषि की महता विषम होतीहै। ठीक उसी प्रकार अध्ययन क्षेत्र क्षणार जिले की वर्तमान आर्थिक स्थिति में भी कृषि व इनमें होने वाले नवाचारों का अहम योगदान शामिल है।

भारत में वर्ष 2011 के अनुसार आज भी 60 प्रतिशत से अधिक ग्रामीण परिवार मुख्य रूप से कृषि पर आधारित है। भारतीय लोगों का मुख्य व्यवसाय कृषि पर आधारित है। एक अध्ययन से पता चलता है देश के 60 प्रतिशत लोगों को प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष तरीके से रोजगार उपलब्ध करवाती है। रोजगार उपलब्ध करवाने के साथ

साथ सकल घरेलू उत्पादन में भी कृषि लगभग 14 प्रतिशत योगदान रहा है। भारतीय लोगों का मुख्य आधार सर्वागीण विकास और भारतीय जन जीवन की समृद्धि में स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद आर्थिक स्वतंत्रता के लिए योजनाओं में कृषि के विकास व निर्माण में अनेक प्रयत्न किए गए है और देश अब खादयानों (खाद्यान्नो) की दृष्टि से आत्मनिर्भरता की और आगे बढ़ रहा है। भारत में 1966–67 में हरित कांति का उद्दय हुआ। हरित कांति के कारण ग्रामों की जनसंख्या की बहुमूल्य जीवन प्रदान करने तथा उसकी समृद्धि के लिए पृष्ठभूमि तैयार की गई है। अध्ययन क्षेत्र झज्जर जिले में कृषि कार्य, आधुनिक प्रद्धतियों के द्वारा पूर्ण किया जाने लगा है। हरित कांति के कारण ही कृषि के क्षेत्र में तेजी से विकास हुआ है। परन्तु प्रत्येक भाग में एक समान न होकर अलग अलग दिखाई देता है। इसके अनेक उतरदायी कारण बनते हैं। इन कारणों में क्षेत्रों की जलवायु, धरातल, सिचाई के साधनों का नवीनतम विकास व अनेक आर्थिक व सामाजिक कारण शामिल होते हैं। कृषि क्षेत्र में हो रहे तीव्र गामी कारण परिवर्तनों ह हरियाणा का झज्जर जिला भी अछूता नहीं रहा है।

भारतीय अर्थव्यवस्था के आधारानुसार ही झज्जर जिले की अर्थव्यवस्था भी कृषि प्रधानता है। यहां की कृषि में न केवल यंत्रीकरण, सिचाँई के साधन रासायनिक खादों का प्रयोग, कीट नाशक दवाईयों के प्रयोग व अधिक उत्पादन देन वाले हाईब्रीड बीजों के प्रयोग में भारी वृद्धि हुई है। इससे कृषि पद्धतियों व तकनीकी में भी बहुत सुधार हुआ है। जिससे कृषि उत्पादकता में वृद्धि हुई है।

हरियाणा राज्य के कृषि क्षेत्रों में झज्जर जिले का महत्वपूर्ण स्थान है। क्योंकि इस जिले की कृषि भूमि समतल व उपजाऊ है। यहां पर कृषि क विभिन्न कारणों में परिर्वतन हो रहे है। यहाँ के किसान परम्परागत तकनीकी से दूर हटकर आधुनिक नवीन तकनीकी का प्रयोग कर रहे है। कृषि के आधुनिकिकरण में प्रभावशाली तत्व आधुनिक तकनीक है। जिसके कारण आधुनिकिकरण में अनेक परिवर्तन हुए है। कृषि मे आधुनिक तकनीकी के कारण सिचाई के क्षेत्रो में वृद्धि हो रही है। फसल उत्पादन में भी तीव्र वृद्धि हुई है।

कृषि क्षेत्रों में फसलों, फलों, सब्जियों पर प्रयोग होने वाले कीटनाशकों के प्रयोग ग्रामीण क्षेत्रों का जल, भूमि, जलवायु सबसे अधिक प्रभावित हो रही है। मानव शरीर स्वच्छ भोजन व स्वच्छ वातावरण पर ही आधारित है और संतुलित भोजन व स्वच्छ वातावरण कृषि फसलों से ही प्राप्त होता है मानव का विनाश व विकास कृषि वातावरण पर ही आधारित है। मानव का विनाश व विकास कृषि वातावरण पर ही आधारित है। क्योंकि मानव विकास के लिए कृषि का विकास भी जरूरी है। अतः कृषि की समस्याओं के निजात हेतु पर्यावरण का अध्ययन करना पड़ता है। इस अध्ययन के लिए किसी भी क्षेत्र का चुनाव करना है। अतः कृषि आधुनिकिकरण क्षेत्र का चुनाव करना आवश्यक है। अतः कृषि आधुनिकिकरण एंव इस क्षेत्र में विकास व योगदान को मानते हुए हरियाणा राज्य के झज्जर जिले का कृषि अध्ययन हेतु चयन किया है।

झज्जर जिले में कृषि के विकास हेतु राज्य सरकार अनेक निरंतर प्रयास कर रही है तथा इसके अंतर्गत यह अतिआवश्यक है कि जिले में कृषि के विभिन्न पहलुओं का अध्ययन किया जाए और इन अध्ययनों पर आधारित भावी कृषि के विकास की योजनाए तैयार की जाए, जिससे अधिक विकास की रूप रेखा तैयार की जाए।

शोध क्षेत्र का भौगोलिक परिचय :-

झज्जर जिला भौगोलिक, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक दृष्टि से हरियाणा में अपना महत्वपूर्ण स्थान बनाए हुए

हैं। अध्ययन क्षेत्र झज्जर जिला गौरवशाली परम्पराओं की धरोहर है, यह भूगोल ही नही इतिहास के महत्व का भी विषय है। यह अपनी भौगोलिक, सांस्कृति व आर्थिक विकास की विशेषता रखता है। जिले काभू भाग समतल है यहां पर उगाई जाने वाली फसलें गेहूं, चावल, मक्का है। कुल सिंचित कृषि क्षेत्र का लगभग 670 वर्ग झड (260 वर्ग मील है) झज्जर जिला बना था जिसका मुख्यालय झज्जर से ही है झज्जर जिले में तीन उपमण्डल, चार तहसील व एक सब तहसील है। अधिकांश योजनाएं जिला स्तर पर ही कार्यन्वित होती है।

झज्जर जिला हरियाणा का एक मात्र जिला है जो झज्जर जिले का क्षेत्रफल 18342 वर्ग किलोमीटर है जनगणना 2011 के अनुसार जिले की कुल जनसंख्या 958405 है जिसमें 514667 पुरूष व 443738 महिलॉए है जिले का घनत्व 523 वर्ग किलोमीटर है जिले की शहरी जनसँख्या 22.17 प्रतिशत है व जिले का साक्षरता 80.65 प्रतिशत है।

शोध उद्देश्य :-

प्रस्तुत शोध अध्ययन का उद्देश्य झज्जर जिले का कृषि आधुनिकिकरण से क्षेत्र विशेष के आर्थिक उन्नति का आंकलन करता है जिससे क्षेत्र में सरकारी व गैर सरकारी संस्थानो व विभिन्न योजनाओं द्वारा कृषि के विकास व आधुनिकिकरण के प्रयास और अधिक सार्थक हो सकें। कृषि के विकास हेतु किये गए विभिन्न उपायों की खोज करना। किये जाने वाले अध्यन में झज्जर जिले में कृषि आधुनिकिकरण के स्थानिक प्रतिरूप को ज्ञात करना है। जिसके अध्ययन के माध्यम से कृषि योजनाकृत सामाजिक प्रशासक व अन्य व्यक्तिलाभान्वित होकर कृषि विकास के लिए उचित योजनाओं का निर्माण कर सकें। कृषि एक प्राथमिक किया है। प्राथमिक किया के कारण अधिकतर जनसंख्या कृषि पर आधारित है। कृषि के कारण लोगों की सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिणक व अन्य तकनीकी क्षेत्रों में रूची व अन्य प्रयासों को ज्ञात करने का प्रयास किया जाएगा।

उपरोक्त तथ्यों को ध्यान में रखते हुए अध्ययन के निम्न उददेश्य है :-

1. झज्जर जिले में हो रहे नवीनीकरण के क्षेत्र से आर्थिक उन्नति का अध्ययन करना।
2. कृषि आधुनिकिकरण के उपयोग में विभिन्न संसाधनो का अध्ययन करना।
3. कृषि आधुनिकिकरण में उन्नत बीजों, (फसल प्रतिरूप) रासायनिक खाद्य व जैविक खाद्य, सिचाई पद्धति व विभिन्न यंत्र व मशीनीकरण क अध्ययन करना।
4. कृषि आधुनिकिकरण से शस्य गहनता, फसल प्रतिरूप का अध्ययन करना।
5. कृषि में नवीनीकरण का अध्ययन करना।
6. कृषि में नवीनीकरण से झज्जर जिले के सामाजिक आर्थिक स्तर म बदलाव का अध्ययन करना।

शोध विधितंत्र एंव आकड़ों के स्त्रोत :-

अध्ययन विषय पर उपलब्ध संबधित लेखों, पुस्तकों, पत्रों पत्रिकाओं आदि का सूक्ष्म रूप से अध्ययन किया गया है। प्रस्तुत शोध अध्ययनों में झज्जर जिले की संदर्भ में विभिन्न प्रकार के आकड़ों को शामिल किया गया है। शोध अध्ययन की प्रकिया के अर्न्तगत आकड़ो का एकत्रीकरण प्राथमिक वा द्वितीयक स्त्रोतों से किया गया है। शोधार्थी द्वारा अध्ययन क्षेत्र में विभिन् स्त्रोतों, आकड़ों सारणियों, मानचित्रों को सूक्ष्म विश्लेषण किया गया है। प्रस्तुत शोध मे झज्जर जिले का चयन किया गया है। प्राथमिक स्त्रोत संमक संग्रहण अनुभव आधारित है तथा प्रकाशित लेखों से प्राप्त आकड़े गौण विधि उपागम् पर आधारित है। अनुभव आधारित उपागम के तहत दूरभाष,

साक्षात्कार वार्तालाप, अप्रकाशित प्रतिवेदन तथा अन्य अनुसूचियों के माध्यम से संग्रहित किया गया है।

प्रस्तुत शोध अध्ययन के लिए विभिन्न स्त्रोतो के माध्यम से आकड़ो क संग्रहित किया गया है। वर्तमान अध्ययन का प्रस्तुत स्वरूप तैयार करने पहले राज्य की विभिन्न सरकारी संस्थाओं, जिले की प्रमुख संस्थाओं तथ प्रमुख केन्द्रों से सूचनाएं व आकड़े एकत्रित किए है जो निम्न है :–

1. आर्थिक व सारिण्यकी निदेशालय झज्जर।
2. जिला साख्यिकी कार्यालय।
3. कृषि शोध संस्थान।
4. कृषि निदेशालय कृषि भवन।
5. जिला भू अभिलेख कार्यालय।
6. कृषि उपनिदेशक।
7. कृषि उपज मण्डी, झज्जर।

कृषि आधनुनिकिकरण के प्राथमिक आकड़ों के संग्रहण करने लिए जिले को कृषि नवीनीकरण प्रदेश में विभाजित करके कुछ गाँवो परिवारो के माध्यक से कृषि यंत्र, औजार, उर्वरक, सिचाई पद्धति, तथ आदि से प्राथमिक आकड़ों का सकंलन किया गया है।

निष्कर्ष :–

निष्कर्ष तौर पर कहा जा सकता है कि यदि हमें अपने खेतों में अधिक उत्पादन को प्राप्त करने के लिए व खेतों को उपजाँऊ बनाए रखने के लिए जैविक खाद का प्रयोग करना होगा। क्योंकि जैविक खाद खेतों की उर्वरा शक्तिः को बरकरार रखती है और मिट्टी को खराब होने से बचाती है। इससे खेतों में पाये जाने वाले लाभदायक जीवाणुओं की संख्या भी बढ़ती है। इसके अलावा इस प्रकार की खेती के अनेक लाभ है। इन्ही विशेषताओं के कारण जैविक कृषि के महत्व को बढ़ावा मिल रहा है क्योकि जैविक कृषि से आधुनिक कृषि को समाप्त करती है। इसके साथ कृषि में हो रहे नवीन प्रयोग के उपयोग की आवश्यकता होती है। जिससे झज्जर जैसे सभी जिलो में कृषि का भरपूर विकास हो सके तथा साथ ही साथ ही इस क्षेत्र में आर्थिक उन्नति के मार्ग प्रशस्त हो व क्षेत्रीय लोगों के जीवन का वास्तविक कृषि उपादेयता का मान ज्ञात हो सके।

सदंर्भ ग्रंथ सूची :–

1. मोहनलाल गुप्ता राजनैतिक व सांस्कृतिक इतिहास।
2. तिवारी आर.सी. एवं सिंह बी. एन (2010) "कृषि भूगोल" सप्तम संस्करण, प्रयाग पुस्तक भवन, इलाहाबाद।
3. Shrevastana R.C (1968) water Resources and utilization in Jhajjar Distt/ H.P
4. Stinirash T.N. (1971) the Green Resolution, Discussion Paper 66' Culcutta, India Statistical Institute.
5. Shafi, M. (2006) "Agricultural Geography", Pearson Education in South Asia. New Delhi.
6. तिवारी आर.सी. एवं सिंह बी.एन. (2010) : कृषि भूगोल, सप्तम संस्करण, प्रयाग, पुस्तक भवन इलाहाबाद।
7. Snvastava, RC (1968) "Water Resources and their Utilization in Saryupar Plaio of UP" Appeared

Ph.D. Thesis. Gorakhpur.
8. Snvastava, T.N. (1971) : The Green Revolution, Discussion Paper 66, Galcutta, India statistical Institute 9 Tiwari RC & Tripathi S (1993) " Agricultural Development.
9. Restropect and Prospects: A Case of Gorakhpur District" National Geographer, Vol. 28(2).
10. तिवारी आर.सी. एवं सिंह बी.एन. (2010) : कृषि भूगोल, सप्तम संस्करण, प्रयाग पुस्तक भवन इलाहाबाद।
11. Thomos, H.E. (1951) "The Conservation of Ground Water" MC Graw-Hill, New York
12. Yadav R (2011) Agro Afforerstation Management of Waste Lands, 2011 by Concept Publishing Company.
13. Agrawal P.K. (1996), India Move Towards Sustainble Development, M.D.Publication Pvt. Limited.
14. Ahmad A and Siddiqi, MF 1967 Crop-Association Patterns is the Luni Basin, Geograplce.
15. Baker OE 926 Agricultural Regions of North America, Economic.
16. Geography, 2 16 Branland 1987, World Commission on Environmental and Development.
17. Stamp L D 130 The land of Britain its Use and Misuse, Longman, Green and Co. Londan
18. बी. सी. जाट 1999, राजस्थान में जल ग्रहण प्रबन्धन : राजस्थान के सतत विकास के लिए समस्याएँ, अप्रकाशित पीएच.डी थीसिस, राजस्थान विवि, जयपुर।
19. बी. के. राय, 2002, सतत कृषि विकास के लिए सतही जल की गुणवता : एक मूल्यांकन, अनपब्शिड पीचएच. डी थीसिस, राजस्थान विवि, जयपुर।
20. बी. एल. मीणा, 2002, बानसूर तहसील में कृषि आधुनिकीकरण, अप्रकाशित पीएच. डी. थीसिस, राजस्थान विवि, जयपुर।

Email: renusehrawat22@gmail.com
Mob-8607360861

संगम Impact Factor : 6.632
Website : www.ginajournal.com
ISSN : 2321-8037
विशेषज्ञ समीक्षित पत्रिका A Peer Reviewed International Refereed Journal
SANGAM
गीना देवी शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित साहित्य, शिक्षा, संस्कृति एवं शोध को समर्पित मासिक
Vol. 12, Issue 1-2
पृष्ठ : 65-67

रत्नकुमार सांभरिया के 'साँप' उपन्यास में खानाबदोश जीवन

शिल्पा बाबु, शोधार्थी
डॉ. जयलक्ष्मी पाटील, शोध निर्देशक
उच्च शिक्षा और शोध संस्थान, दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, धारवाड़ कर्नाटक।

उपन्यासकार रत्नकुमार सांभरिया जी 'साँप' उपन्यास की कथावस्तु सन् १९७२ के वन्य जीव संरक्षण अधिनियम के पूर्व दो साल से शुरू होती है। वन्य जीव संरक्षण अधिनियम के अंतर्गत जो जिन जानवरों को पाला करते थे। वह अब जानवरों को पाल नहीं सकते। इससे सपेरे, मदारी जैसे कई घुमंतु समुदायों को अपनी जीविका और आवास को बनाये रखने की समस्या उत्पन्न होती है। हाशिए समाज का जीवन्त दस्तावेज है यह उपन्यास – 'साँप'। इसमें अनेक संघर्ष के साथ उनके रहन–सहन, खान–पान, भाषा–बोली, संस्कृति, आदि विचारों का यथार्थ चित्रण हुआ है।

प्रस्तुत उपन्यास में संवेदनाओं के स्तर पर व्यवस्था के प्रति सामाजिक व व्यक्तिगत जागृति और विद्रोह के प्रतिनिधित्व करता है। परंपरागत अन्याय, अत्याचार और शोषण का आगाज करता हुआ जिज्ञासू उत्पन्न करता पाठकों के मन में है। उपन्यास के आरंभ से लेकर अंत तक शोषण के प्रति प्रतिरोधअभावों के प्रति विद्रोह, अपनी अस्मिता अस्तित्व के लिए सामूहिक विरोध व्यवस्था के दिखाई देता है।

उपन्यास की नायिका मिलन देवी और नायक लखीनाथ केवारा घुमक्कड़ों के अधिकार और उनकी अस्मिता के लिए चेतना का स्वर गूंजता हुआ नजर आता है। सदियों से सहते हुए जुल्म और शोषण की व्यवस्था के विरुद्ध व्यंग्यात्मक विचार प्रकट किया गया है।

प्रस्तुत उपन्यास में समाज का भ्रष्टाचार और भ्रष्टाचार को बेनकाब कर इसका इसमें किस प्रकार से नेतागण, गुंडे और पुलिस प्रशासन. इनकी मिलीभगत घुमंतु समूदायों पर अन्याय करती है इसका यथार्थ चित्रण प्राप्त होता है।

मिलनदेवी का दिवंगत पीढ़ियों के लिए उनके सपने साकार बनाने हेतु एम.एल.ए. की हवेली में किसी सपेरे को बुलाना, हवेली में विद्रोह की पहली गूंज थी। सरकारी अस्पताल के डॉक्टर एल. एल. साध मिलनदेवी को संतान सुख के लालच में अपनी वासना का शिकार बनाना चाहते हैं। इसके लिए मिलनदेवी और नामा लखीनाथ, के संबंध में बताने और परिवार पैदा करने की कोशिश करता है। शहर के विकास मंत्री भी मिलनदेवी का–लैंगिक शोषण करना चाहता था। परंतु मिलन इन सबके षड्यंत्री का साहस के साथ डटकर विरोध करती

है। मदारीन सरकी बाई की इज्जत लूटने की कोशिश भान्दार करता है तब उसका विरोध कर उसके खिलाफ थाने में एफ.आई. आर. दर्ज करती है।

स्त्रियों पर लैंगिक शोषण करने वाले असली चेहरों का पर्दाफाश किया है। इन धंधो के आड़ में असली चेहरों का सच है। दो जून की रोटी की खातिर वे भूखे नंग्नो लाखों करोड़ो लोगों को डराकर रखे है। आदर्श के चोंगे तले स्वार्थ 'साँप' उपन्यास में उभरता चेतना का स्वर हैं।

किसानों का शोषण करने वाले सेठ जी ने अपना मुखौटा छुपाया और नींव में घुसे साँप के फिक्र औगे। वृद्ध गए थे बहुरुपिया से। यह तक नहीं पायें लीनाथ का और कहाँस में अतः कह सकते हैं कि साँप अपन्यास घुमक्कड़ों के जुल्म और शोषण के विरुद्ध उनकी अस्मिता व अस्तित्व के लिए जलाया गया चेतना का आस अलाब आग का ढेर ही है। खानाबदोशों का पुनर्वास के लिए और उनकी विकास के नक्की लकीर तक सफल होती नजर आती है।

'साँप' उपन्यास में प्रशासन के विरोध में संघर्ष की संवेदना गरीबी, उपन्यासकार खानाबदोशी अशिक्षित, दमित और तिरस्कार से निर्वासित युक्त जिंदगी जीने वाले उपेक्षित व प्रताड़ित खानाबदोश लोगों के साथ है। उपन्यास के नायक लगी नाथ ऐसे लोगों ने, प्रेरक स्त्रोत बनाकर सपेरे जैसे को कालबेलिगा अपने में नए नायकत्व की तलाश करना अपने आप में मनोहारी है। समाज को शोषण से मुक्त करने के लिए कालबेलिया सपेरों के हाथ में नेतृत्व सौंपने का समय आ चुका लगता है।

उपन्यास की नायिका मिलन देवी भी वर्तमान राजनेता और सरकार पर व्यंग्यात्मक तीर चलाते हुए दूध पीकर जहर उगलने वाली सामाजिक व्यवस्था की धज्जियां उड़ाते हुड कहती है जहरीले नहीं है। उगलते हैं। को ही मारता है। मार देता है। सर वे जहर। यहाँ दूध सर रखकर भी स्नेक का विष तो एक मैन का विष रोज कितनों को है। मेन इज मोर डेंजरस टू किंग कोबरा।'[2]

यहाँ मिलन देवी साँप से भी जहरीले समाज अवस्था की ओडू निर्देश करती सपेरे से कहती है और दी जीभ कई–कई फणचारों ओर से ही होती है। ष्तुम्हारे नाग–नाग के के. तो एक फल नागों के तो कोई–कोई जीए थे और कोई–कोई जिन विषैतों हैं। मुझे बेरा है उनको काबू करने के लिए मुझे कालबेलिया वंश चाहिए, लखीनाथ। इसी कामना से तुम्ह–तुम्हारी और खाँची, हूँ, मैं।'[3] और सपेरों की, अंश बुरा यही उसका संकल्प है। इसलिए साँप उपन्यास का यह शीर्षक प्रतिशोध और चेतना का प्रतीक एक सार्थक शीर्षक है।

धूमवना हों के स्थायी आवास आंदोलन के आगे आखिर, सरकार को झुकना पड़ा। मिलन देवी लसीनाथ, धूनाराम, सहदीन और सरकीबाई, के शिष्टमंडल को मुख्यमंत्री के आवास में समस्या के लिए बुलाया सफर मिलन देवी और लखीनाथ के नेतृत्व में चलाए राग घुमक्कड के स्थायी आवास के अधलन को सफलता मिलती है। संघर्ष, साहस और हौसले के कारण घुमंतुओं का सपना साकार हो जाता है से शिक्षा की मिलन देवी रहा ओर मुख्यमंत्री। परंपरागत घुमंतू समाज, अब अशिक्षा को दोहती है, समम की सीमा होती है। पीढीयच लोग के लिए बाण होता गर–ठिकाना बाड़ा तो होता है, सर चली गलीं। पशुओं नहीं है। अपने ही देश में ही नहीं हैं। स्थायी निवास नहीं हो न इनके राशन कार्ड बने इनका नाम जुड़ा है कहीं कारण न वोट रलिस्ट में की जनगणना में शुमार अवश्य है।''[4]

जागृत चेतना के कारण वह अब पढ़–लिखकर आगे बढ़ना चाहते हैं। वह भी अपने बच्चों को पीढ़ियों

के अज्ञान, अशिक्षा और अंधकार की बेड़ियों को तोड़ने लगे' हैं, खिलाफ प्रतिरोध हो रहा है।

निष्कर्ष :-

सांभरिया जी ने गाँव को निकट से देखा और अनुभव किया है, इसलिए उनके लगभग सभी कहानियों और उपन्यास में ग्रामीण जीवन, सोच तथा परिवेश का सचिव और यथार्थपरक चित्रण हुआ है। ग्रामीण प्रतीक, तौर–तरीके, उपमाएँ, मुहावरे और व्यवहार इस सीमा तक पहुँचे हैं कि कहानी संग्रह की हर कहानी में गाँव से सरोकार प्रतीत होती हैं।

दलित चरित्र की पहचान को दो आयाम हैं। पहला–जाति और दूसरा–पैसा। जाति से दलित, पैसे से दलित। जो जाति से दलित हैं, लेकिन धन–दौलत से संपन्न हैं और शोहरत पा गए हैं, वे दलित कहानी के पात्र नहीं होंगे। जो जाति से दलित हैं, जिनका न जातीय सम्मान है और न ही समाज परिवेश से बराबरी का हक है, अर्थात छुआछूत जाति के लोग, खानाबदोश लोग, गरीब, किसान, मजदूर, श्रमिक, आदि दलित कहानी के पात्र होने का अधिकार पाते हैं। इनकी कहानियों का मुख्य उद्देश्य इन्हीं उपेक्षित वर्ग को दलितों से उबारकर उन्हें शिक्षा और पुनर्वास की ओर उन्मुख करना है।

संदर्भ ग्रंथ :-

1. रत्नकुमार सांभरिया, साँप, सेतु प्रकाशन लिमिटेड नोएडा, उत्तर प्रदेश, पृ.सं. 233
2. रत्नकुमार सांभरिया, साँप, सेतु प्रकाशन लिमिटेड नोएडा, उत्तर प्रदेश, पृ.सं. 792
3. रत्नकुमार सांभरिया, साँप, सेतु प्रकाशन लिमिटेड नोएडा, उत्तर प्रदेश, पृ.सं. 792
4. रत्नकुमार सांभरिया, साँप, सेतु प्रकाशन लिमिटेड नोएडा, उत्तर प्रदेश, पृ.सं. 592

मो. 9741564009

संगम Impact Factor : 6.632
Website : www.ginajournal.com
ISSN : 2321-8037
SANGAM
विशेषज्ञ समीक्षित पत्रिका A Peer Reviewed International Refereed Journal
Vol. 12, Issue 1-2
गीना देवी शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित साहित्य, शिक्षा, संस्कृति एवं शोध को समर्पित मासिक
पृष्ठ : 68-75

Job Stress, Job Satisfaction and Mental Health among Physical Education Teachers working in government schools of Rajasthan in relation to demographical variables

Bhawani Singh, Researcher
Dr Surjeet Singh Kaswan, Supervisor
Tantia University, Sri Ganganagar, Rajasthan

Abstract :

The current study aimed to compare and establish relationships among Job stress, job satisfaction, and mental health in physical education teachers working in government schools in Rajasthan. A randomly selected sample of 500 physical education teachers participated in the investigation. The study utilized the Occupational Stress Index by Dr A.K. Srivastava & Dr A.P. Singh, the Job Satisfaction Scale by Dr Amar Singh & Dr T.R. Sharma, and the Mental Health checklist by Dr Pramod Kumar for data collection. Mean, standard deviation, t-tests, and correlation analyses were applied for data analysis. The results revealed no significant differences in occupational stress, job satisfaction, and mental health concerning both sectors and gender. Additionally, positive correlations were observed between job satisfaction and mental health dimensions, while negative correlations were identified between job satisfaction and mental health with occupational stress.

Keywords :

Job stress, Job satisfaction, Mental health, government schools, Physical education teacher.

Introduction :

Job stress, job satisfaction, and mental health are crucial aspects impacting the well-being of physical education teachers. Job stress, arising from factors like heavy workloads and limited resources, can lead to burnout and diminish overall well-being. Conversely, job satisfaction, derived from positive relationships, recognition, and a supportive work environment, enhances motivation and commitment. Mental health, encompassing emotional resilience and coping mechanisms, is pivotal for a teacher's

ability to navigate stress.

For physical education teachers, high job satisfaction correlates with positive outcomes such as improved teaching performance and longer professional commitment. Conversely, persistent job stress may contribute to burnout, affecting both the teacher's mental health and the quality of instruction. Positive mental health enhances resilience, stress management, and interpersonal relationships, fostering a conducive learning environment. In essence, the delicate balance among job stress, job satisfaction, and mental health significantly influences the effectiveness of physical education teachers, underscoring the importance of supportive workplace environments and strategies promoting overall well-being in the educational setting.

Literature review :-

Kyriacou and Sutcliffe (1979) found a negative correlation between self- reported teacher stress and job satisfaction. Similarly, Otto (1982), Laughlin (1984a), Litt and Turk (1985) reported an inverse relationship between stress and job satisfaction.

Tung (1980) study on occupational stress among male and female educational administrators suggests that women experienced significantly lower levels of self-perceived occupational stress than men.

Gregory (1990) notes that, for the female professional's gender stereotyping in the workplace adds to the role conflict related stress experiences.

Kamau (1992) studied burnout and mental health of male and female teachers and found out that male teachers are more capable of coping with stress in comparison to female teachers.

Upadhyay and Singh (1999) compared the level of work stress experienced by the 20 university professors and 20 managers. Teachers showed significantly higher stress levels than managers on intrinsic depletion and status factors. They experienced stress because their personal desires and their strong desire for a better and prosperous career felt blocked by others.

Basu (2009) in his survey on job satisfaction and mental health among teachers reported that job satisfaction is not related to mental health of teachers teaching at primary level. Satisfied teachers were found to have better mental health than dis-satisfied ones in relation to the factors like gender, marital status and locality.

Kaur and Sidana (2011) found that level of job satisfaction of male teachers was greater than their female counterparts.

Behera (2014) has conducted a study to discover the correlation between job satisfaction and teachers? mental health in general. The investigator collected data from 600 conventional school teachers. Teachers working in aided mainstream schools working under West Bengal Government.

The results indicated that there was a positive relationship between job satisfaction and mental health of general school teachers.

Roy and Halder (2018) study on secondary school teachers in West Bengal investigated gender-based differences in teaching effectiveness. Male teachers were found more effective in personal, professional, and intellectual aspects, but no significant difference in teaching strategies and social aspects.

Palma-Vasquez, Carrasco et al. (2021) investigated the mental health of 278 Chilean teachers compelled to telework during COVID-19, revealing a high rate (58%) of poor mental health. Risk factors included working in private–subsidized schools, engaging in two or more unpaid overtime hours, and sickness absence in 2020. Prabhu et al. (2021) explored mental health literacy among 460 southern Indian high school teachers, finding suboptimal literacy on depression. Despite this, 62.6% identified adolescents with mental health issues, and 59.72% referred them to professionals. Logistic regression identified predictors, including educational and marital status, class size, prior mental health training, and self-efficacy, emphasizing the need for targeted support in improving teachers' mental health literacy.

Gawrych, Cichon et al. (2022) conducted a cross-sectional national online survey among Polish teachers to explore predictors of mental health. Using a semi-structured questionnaire and the Depression, Anxiety, and Stress Scale (DASS-21), the study identified factors such as socio-demographics, mental and physical health, COVID-19-related fears, and experiencing death as significant predictors of stress, anxiety, and depression. The findings underscore the need for a comprehensive approach to address teachers' mental well-being, considering various factors influencing their mental health challenges.

Mustafa and Shafeeq (2022) study explored the predictors of teacher effectiveness among secondary school teachers, focusing on mental health and job satisfaction. With a sample of 300 teachers in Jammu and Kashmir, the study found a positive and significant correlation between mental health, job satisfaction, and teacher effectiveness. Both mental health and job satisfaction were identified as significant predictors, collectively explaining 28.4% of the variance in senior secondary school teachers' effectiveness. The study underscores the importance of considering these factors in promoting teacher effectiveness.

Objectives :

- To compare Job stress, Job satisfaction and Mental Health level between different group of demographic variables among physical education teachers working in government schools of Rajasthan.

- To study of correlation between Job Stress, Job Satisfaction and Mental Health level on physical education teachers working in government schools of Rajasthan.

Hypothesis :

- There is no significant difference in Job stress, Job satisfaction and Mental Health between different group of demographic variables among physical education teachers working in government schools of Rajasthan.
- There is no significant correlation between Job stress, Job satisfaction and Mental Health between different group of demographic variables among physical education teachers working in government schools of Rajasthan.

Methodology :

This study adopted a descriptive research approach, employing the survey method to assess the levels of job stress, job satisfaction, and mental health among physical education teachers in government schools of Rajasthan. The examination focused on exploring these variables in relation to various demographic factors.

Sample :

For the purpose of the study 500 Physical Education Teachers working in government schools of Rajasthan were selected randomly.

Frequencies of drawn sample are as follows :

Table-1

Frequencies of samples

Gender wise		Location of school wise	
Male	Female	Rural aera	Urban aera
300	200	400	100

Tools :

The following standardized tests will be selected as tools to measure the criterion variables of the study :-

- Job stress index of Dr A.K. Srivastava & Dr A.P. Singh.
- Job satisfaction scale of Dr Amar Singh & Dr T.R. Sharma.
- Mental health check list of Dr Pramod Kumar.

The study utilized the "SPSS" software to gather data, employing standard deviation and t-tests to compare the aforementioned variables. The analysis also incorporated the co-efficient of correlation to examine relationships among the three variables.

Demographic Variables :

The present study included below mention demographic variables.

- **Gender :** Male / Female
- **Location of School :** Urban Area / Rural Area

Result and discussion :

The statistical methods used to compare obtained data were Mean, S.D. and t-test.

Table-2

Comparison of Job stress, Job satisfaction and Mental Health level between different group of demographic variables

Variables	Demographic variables	Group	No. of sample	Mean	SD	t-value	p-value	Sig
Job stress	Gender wise	Male	300	159.20	19.241	0.596	0.276	No
		Female	200	160.31	21.801			
	Location wise	Rural	400	159.80	19.786	0.353	0.362	No
		Urban	100	159.00	22.286			
Job satisfaction	Gender wise	Male	300	59.85	10.380	0.667	0.252	No
		Female	200	59.19	11.799			
	Location wise	Rural	400	59.52	10.719	0.259	0.398	No
		Urban	100	59.84	11.943			
Mental Health	Gender wise	Male	300	17.82	1.645	-1.34	0.900	No
		Female	200	18.03	1.781			
	Location wise	Rural	400	17.88	1.677	-0.46	0.323	No
		Urban	100	17.97	1.806			

Table-2 indicates a slight variance in mean scores, yet no statistically significant differences in Job stress, Job satisfaction, and Mental Health levels across various demographic groups. This implies that physical education teachers generally encounter comparable levels of Job stress, Job satisfaction, and Mental Health. The minor differences in mean scores suggest that, on average, the experiences related to these factors are relatively consistent among different demographic categories. Despite potential nuances in individual experiences, the absence of statistical significance underscores a broad similarity in the overall levels of Job stress, Job satisfaction, and Mental Health among diverse groups of physical education teachers.

Table-3

Corelation between of Job stress, Job satisfaction and Mental Health level

Variables	Details	Job stress index	Job satisfaction	Mental health check list
Job stress index	Person corelation	1	-0.997**	0.949**
	Sig.(2-tailed)		<0.001	<0.001
	N	500	500	500
Job satisfaction	Person corelation	-0.997**	1	0.949**
	Sig.(2-tailed)		<0.001	<0.001
	N	500	500	500
Mental health check list	Person corelation	-0.949**	-0.949**	1
	Sig.(2-tailed)		<0.001	<0.001
	N	500	500	500

Table-3 reveals a notable correlation among Job stress, Job satisfaction, and Mental Health levels, signifying a meaningful relationship between these variables. The statistical analysis demonstrates that fluctuations in one variable align with corresponding changes in the others. This significant correlation underscores the interconnected nature of Job stress, Job satisfaction, and Mental Health among physical education teachers. The findings suggest that variations in Job stress levels are associated with parallel changes in both Job satisfaction and Mental Health levels.

Conclusion :

The study conducted on physical education teachers working in government schools of Rajasthan found that there is no significant difference in job stress, job satisfaction, and mental health across different demographic variables. However, it was observed that job stress is negatively correlated with job satisfaction and mental health among these teachers. On the other hand, a positive correlation was identified between job satisfaction and mental health. These findings underscore the importance of addressing job stress to enhance overall satisfaction and mental well-being among physical education teachers in government schools of Rajasthan.

Reference :

1. Basu, R. (2009). "Job satisfaction and mental health among teachers: A survey Experiments in education, Vol." XXXVII (04).
2. Behera, D. (2014). "Relationship between job satisfaction and mental health of mainstream school teachers in West Bengal." International Journal of Scientific Research 3(8): 79-80.
3. Gregory, A. (1990). "Are women different and why are women thought to be different? Theoretical and methodological perspectives." Journal of Business Ethics 9: 257-266.
4. Kamau, C. W. (1992). "Burnout locus of control and mental health of teachers in eastern province of Kenya."
5. Kaur, G. and J. Sidana (2011). "Job satisfaction of college teachers of Punjab with respect to area, gender and type of institution." Edutracks 10(11): 27-35.
6. Kyriacou, C. and J. Sutcliffe (1979). "Teacher stress and satisfaction." Educational research 21(2): 89-96.
7. Tung, R. L. (1980). "Comparative analysis of the occupational stress profiles of male versus female administrators." Journal of Vocational Behavior 17(3): 344-355.
8. Upadhyay, B. and B. Singh (1999). "Experience of stress: Differences between college teachers and executives." Psychological Studies 44(3): 65-68.
9. Basu, R. (2009). "Job satisfaction and mental health among teachers: A survey Experiments in education, Vol." XXXVII (04).
10. Behera, D. (2014). "Relationship between job satisfaction and mental health of mainstream school teachers in West Bengal." International Journal of Scientific Research 3(8): 79-80.
11. Gawrych, M., et al. (2022). "Predictors of teachers' mental health–implications for practice." Advances in Psychiatry and Neurology/Postepy Psychiatrii i Neurologii 31(1): 15-24.
12. Gregory, A. (1990). "Are women different and why are women thought to be different? Theoretical and methodological perspectives." Journal of Business Ethics 9: 257-266.
13. Kamau, C. W. (1992). "Burnout locus of control and mental health of teachers in eastern province of Kenya."
14. Kaur, G. and J. Sidana (2011). "Job satisfaction of college teachers of Punjab with respect to area, gender and type of institution." Edutracks 10(11): 27-35.
15. Kyriacou, C. and J. Sutcliffe (1979). "Teacher stress and satisfaction." Educational research 21(2): 89-96.
16. Mustafa, A. and N. Y. Shafeeq (2022). "Mental Health And Job Satisfaction As Predictors Of Teacher Effectiveness Among Secondary School Teachers." Journal of Positive School

Psychology 6(9): 5260-5271.
17. Palma-Vasquez, C., et al. (2021). "Mental health of teachers who have teleworked due to COVID-19." European journal of investigation in health, psychology and education 11(2): 515-528.
18. Roy, R. R. and U. K. Halder (2018). "Teacher effectiveness: A self-report study on secondary school teachers." International Journal of Research and Analytical Reviews 5(3): 2348-1269.
19. Tung, R. L. (1980). "Comparative analysis of the occupational stress profiles of male versus female administrators." Journal of Vocational Behavior 17(3): 344-355.
20. Upadhyay, B. and B. Singh (1999). "Experience of stress: Differences between college teachers and executives." Psychological Studies 44(3): 65-68.

संगम Impact Factor : 6.632
Website : www.ginajournal.com
ISSN : 2321-8037
विशेषज्ञ समीक्षित पत्रिका A Peer Reviewed International Refereed Journal
SANGAM
गीना देवी शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित साहित्य, शिक्षा, संस्कृति एवं शोध को समर्पित मासिक
Vol. 12, Issue 1-2
पृष्ठ : 76-78

Role and Impact of Good Governance in Sports Development in India

Sukhjeet Singh, Researcher
Dr Surjeet Singh Kaswan, Supervisor
Tantia University, Sri Ganganagar, Rajasthan

Abstract :-

This research paper aims to explore the significance of good governance in the context of sports in India. The effective administration and management of sports organizations play a crucial role in the development and success of athletes, the growth of sports at the grassroots level, and the overall improvement of the sporting ecosystem in the country. The paper investigates the current state of sports governance in India, identifies key challenges, and proposes strategies for enhancing good governance practices in the realm of Indian sports.

Introduction :

1.1 Background :

Sports have gained immense popularity in India, with a growing number of athletes achieving success on the international stage. However, the development of sports is intricately linked to the governance structures in place. Good governance ensures transparency, accountability, and fairness, fostering a conducive environment for sports growth.

1.2 Objectives :

- To analyse the current state of sports governance in India.
- To identify the key components of good governance in sports.
- To assess the impact of good governance on sports development in India.
- To propose recommendations for improving sports governance in the country.

Literature Review :

This section reviews existing literature on sports governance globally and highlights successful models that have positively impacted sports development. It also delves into specific challenges faced by India in the realm of sports governance.

Methodology :

A comprehensive review of existing literature on sports governance.

Interviews with key stakeholders in the Indian sports ecosystem, including athletes, administrators, and government officials.

Comparative analysis with successful sports governance models from other countries.

Current State of Sports Governance in India :

4.1 Institutional Framework :

- Examination of the organizational structure of sports bodies in India.
- Analysis of the roles and responsibilities of key stakeholders.

4.2 Transparency and Accountability :

- Evaluation of transparency in decision-making processes.
- Assessment of mechanisms in place for financial accountability.

4.3 Athlete Representation :

- Examination of the involvement of athletes in decision-making.
- Analysis of athlete welfare programs and support systems.

Key Components of Good Governance in Sports :

5.1 Transparency and Accountability :

- Importance of transparent financial management.
- Role of effective communication in building trust.

5.2 Inclusivity and Diversity :

- Representation of various demographics in sports governance.
- Promotion of gender equality and diversity.

5.3 Athlete-Centric Approach :

- Empowering athletes in decision-making processes.
- Ensuring the well-being and development of athletes.

Impact of Good Governance on Sports Development :

6.1 Grassroots Development :

- The role of good governance in fostering grassroots sports.
- Case studies of successful grassroots programs.

6.2 International Competitiveness :

- Link between effective governance and international sports success.
- Lessons from countries with strong sports governance.

Recommendations for Improving Sports Governance in India :

7.1 Legal Reforms :

- Proposals for legal reforms to enhance transparency and accountability.
- Strengthening the regulatory framework for sports organizations.

7.2 Capacity Building :

- Training programs for sports administrators.
- Development of a skilled and knowledgeable workforce.

7.3 Athlete Involvement :

Advocating for increased athlete representation in decision-making bodies.

Establishing athlete support systems.

Conclusion :

Summarize the key findings, emphasize the importance of good governance in sports, and present the potential positive impact on the overall development of sports in India.

References :

1. Cite all sources used in the research paper.
2. This research paper aims to contribute to the ongoing dialogue on sports governance in India and provide valuable insights for policymakers, sports administrators, and other stakeholders interested in the sustainable development of sports in the country.

संगम Impact Factor : 6.632
Website : www.ginajournal.com
ISSN : 2321-8037
विशेषज्ञ समीक्षित पत्रिका A Peer Reviewed International Refereed Journal
SANGAM
गीना देवी शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित साहित्य, शिक्षा, संस्कृति एवं शोध को समर्पित मासिक
Vol. 12, Issue 1-2
पृष्ठ : 79-89

রবীন্দ্রগল্প 'পোস্টমাস্টার' ও নিত্যানন্দ মুখোপাধ্যায়ের 'বার্তাগৃহাধ্যক্ষবচঃ' নাটক: একটি তুলনাত্মক পর্যালোচনা

গবেষক - সুব্রত অধিকারী
সংস্কৃত বিভাগ, সিকম স্কিলস্ ইউনিভার্সিটি, বীরভূম

সারাংশ *(Abstract):*

নিত্যানন্দ মুখোপাধ্যায়ের 'বার্তাগৃহাধ্যক্ষবচঃ' নামক রচনাটি কবিগুরু রবীন্দ্রনাথ ঠাকুরের 'পোস্টমাস্টার' নামক গল্পের নাট্যরূপায়ণ তথা নবরূপায়ণ। শুধুমাত্র মূল কথা ভাগের কাঠামোটুকু সংগৃহীত হয়েছে। নিত্যানন্দ মুখোপাধ্যায় নাট্যরূপের প্রয়োজনে মূল রবীন্দ্র-গল্পের কাহিনটিকে সংযোজন ও বিয়োজনে নবরূপায়ণ ঘটিয়েছেন। এই নাট্য রচনাটি ১৪৯৮ বঙ্গাব্দের ২৫শে বৈশাখ হাওড়া সংস্কৃত সাহিত্য সমাজ থেকে প্রকাশিত হয়। 'বার্তাগৃহাধ্যক্ষবচঃ' নাটকটিতে মোট পাঁচটি অঙ্ক রয়েছে। নাটকের প্রধান চরিত্র দুটি হল পোস্টমাস্টার নবীন এবং রত্না নামক একটি অনাথ বালিকা। অপ্রধান চরিত্র হিসাবে একজন পত্রবাহক এবং নামহীন একজন বৈদ্যের উপস্থিতি রয়েছে। 'বার্তাগৃহাধ্যক্ষবচঃ' নাটকের প্রথমাঙ্কের প্রথম দৃশ্য শুরু হয়েছে নান্দীপাঠ দিয়ে, এছাড়া এই অংশে রয়েছে সূত্রধার ও পারিপার্শ্বিকের কথোপকথন। জীবন-মৃত্যুর চির রহস্য, মিলন-বিচ্ছেদের চিরন্তন কথা যেন এই নাটকে মূর্ত হয়ে উঠেছে। বয়ঃসন্ধির কিশোরী রত্না ভালোবাসার স্বাদ পেয়েছে পোস্টমাস্টারের সান্নিধ্যে এবং তাঁর অত্যন্ত স্নেহে, সতর্ক দৃষ্টিতে, আন্তরিকতায়। রত্নার মধ্যেও জেগে উঠেছে

তার অভ্যন্তরের চিরন্তনী নারীত্ব। 'বার্তাগৃহাধ্যক্ষবচঃ' নাটকটির শেষে গভীর এবং অনতিক্রম্য জীবন সত্যকে স্বীকার করা হয়েছে। নাটকের ভরত বাক্যে নাট্যকার বিশ্বজনীন প্রার্থনা করেছেন যে প্রীতিযুক্ত ও কোমল মন নিয়ে মানুষ স্বার্থহীন হয়ে মানুষের পাশে থাকুক।

মূল শব্দ ***(Keywords):*** নিত্যানন্দ মুখোপাধ্যায়, রবীন্দ্রনাথ ঠাকুর, পোস্টমাস্টার, নাট্যরূপায়ণ, নারীত্ব।

ভূমিকা:

নিত্যানন্দ মুখোপাধ্যায়ের 'বার্তাগৃহাধ্যক্ষবচঃ' নামক রচনাটি কবিগুরু রবীন্দ্রনাথ ঠাকুরের 'পোস্টমাস্টার' নামক গল্পের নাট্যরূপায়ণ তথা নবরূপায়ণ। নবরূপায়ণ এই কারণেই বলা যায় কেননা মূল গল্পের সর্বাংশ এখানে অনুসৃত হয়নি। শুধুমাত্র মূল কথা ভাগের কাঠামোটুকু সংগৃহীত হয়েছে। নিত্যানন্দ স্মৃতিতীর্থ নাট্যরূপের প্রয়োজনে সেই মূল রবীন্দ্র-গল্পের কাহিনীটিকে সংযোজন ও বিয়োজনে নবরূপায়ণ ঘটিয়েছেন। এই নাট্য রচনাটি ১৪৯৮ বঙ্গাব্দে ২৫শে বৈশাখ হাওড়া সংস্কৃত সাহিত্য সমাজ থেকে প্রকাশিত হয়। নিত্যানন্দ মুখোপাধ্যায়ের সুযোগ্য পুত্র শ্রী দেবব্রত মুখোপাধ্যায় সম্পাদিত 'সংস্কৃত-মৌলিক-রবীন্দ্র-নাটক সঙ্কলনম্' নামক একটি গ্রন্থে নিত্যানন্দের মোট পাঁচটি রচনা রবীন্দ্রনাথের জন্মজয়ন্তী উপলক্ষ্যে প্রকাশিত হয়। 'বার্তাগৃহাধ্যক্ষবচঃ' নাটকটি এই গ্রন্থে প্রকাশিত দ্বিতীয় নাটক। 'বার্তাগৃহাধ্যক্ষবচঃ' নাটকটিতে মোট পাঁচটি অঙ্ক রয়েছে। এই নাটকের প্রথম অঙ্কে রয়েছে তিনটি দৃশ্য, বাকি অঙ্কগুলিতে দুটি করে দৃশ্য রয়েছে। সমগ্র নাটকটিতে মোট এগারোটি দৃশ্য রয়েছে। নাটকের প্রধান চরিত্র দুটি হল পোস্টমাস্টার নবীন এবং রত্না নামক একটি অনাথ বালিকা। অপ্রধান চরিত্র হিসাবে একজন পত্রবাহক এবং নামহীন একজন বৈদ্যের উপস্থিতি রয়েছে। নাটকটি শুরু হয়েছে সূত্রধার ও পারিপার্শ্বিকের কথোপকথনের মধ্য দিয়ে।

'পোস্টমাস্টার' কবিগুরু রবীন্দ্রনাথ ঠাকুরের একটি ছোটগল্প। 'হিতবাদি' পত্রিকার একটি সংখ্যায় ১২৯৮ বঙ্গাব্দে গল্পটি প্রকাশিত হয়। 'হিতবাদি' পর্বের এই গল্পে চিত্রিত হয়েছে পল্লীবঙ্গের প্রেক্ষাপট। সেখানে রতন চরিত্রটি গ্রাম বাংলার করুণ মানবীমূর্তি। গল্পের নাম মূলত পোস্টমাস্টার হলেও আসলে এটি একটি পল্লীবালিকার

বয়:সন্ধিকালের হৃদয়-উন্মীলনের বেদনাবিধুর কথাশিল্প। যদিও রতনের হৃদয়ের মণিকোঠার সঞ্চিত গোপন কথা পোস্টমাস্টার কোনোদিন জানতেই পারেনি। রতনের বয়স বারো কি তেরো । সে বয়ঃসন্ধির আলো আঁধারিতে দাঁড়িয়ে আছে বলেই পোস্টমাস্টার সম্বন্ধে নিজের হৃদয়ের অনুভূতিকে হয়তো বুঝতে পারেনি, কিংবা পোস্টমাস্টারকে বোঝাতে পারেনি। রবীন্দ্রনাথ তাঁর গল্পে এই দুটি চরিত্রের মধ্যে অদ্ভুত এক সম্পর্ককে সৃষ্টি করেছেন।

নাট্যকথাবস্তু ও তুলনাত্মক পর্যালোচনা:

'বার্তাগৃহাধ্যক্ষবচঃ' নাটকের প্রথমাঙ্কের প্রথম দৃশ্য শুরু হয়েছে নান্দীপাঠ দিয়ে। এই নাটকের নান্দী শ্লোকটি হল –

"নিখিলকৃতিচয়ানামাশ্রয়ঃ কর্ম্মরূপঃ

সুফলকুফলহেতুঃ পূজনীয়ঃ সদৈব।

ধরণিধরণকর্তা পালকোঽসৌ তথৈব

সততমবতু দেবো মূর্ত্ত এব হি যুষ্মান্।।"

এছাড়া এই অংশে রয়েছে সূত্রধার ও পারিপার্শ্বিকের কথোপকথন। সূত্রধার জানায় পারিষদের অনুরোধে সকলের চিত্ত বিনোদনের জন্য নাট্যাভিনয় হবে। পারিপার্শ্বিকের ভেবেছিলেন যেহেতু বর্তমান সময়ে রবীন্দ্র সাহিত্যের প্রভাব ব্যাপক, তাই রবীন্দ্র-সাহিত্যকে আশ্রয় করে কিছু করা হোক। যেহেতু সংস্কৃত ভাষায় রবীন্দ্র-রচনা কিছু নেই কিন্তু রবীন্দ্র-রচনাকে আশ্রয় করে সংস্কৃত ভাষায় বেশ সাহিত্য-সম্ভার কিছু তাদের কাছে রয়েছে তা পরিবেশন করা হবে। এই প্রসঙ্গে পারিপার্শ্বিক জানায় –

'রামগোপালপুত্রেণ নিত্যানন্দেন শর্মণা।

রবীন্দ্রাখ্যানমাশ্রিত্য রচিতং নাটকং পুনঃ।।

পোস্টমাস্টারকথা যা চ বিখ্যাতা বুধমণ্ডলে।

তামাশ্রিত্য কৃতং বার্তাগৃহাধ্যক্ষবচো নবম্।।'

অর্থাৎ রবীন্দ্রনাথের পোস্টমাস্টার গল্পের আশ্রয়ে রচিত রামগোপালের পুত্র নিত্যানন্দের 'বার্তাগৃহাধ্যক্ষবচঃ' নাটক আজ পরিবেশন করা হবে।

‘নবীনো যুবকস্ত্বেষ নগর্যাং বাসতত্পরঃ।

নবীনং কৃত্যমাদায় গ্রামে চায়াতি সম্প্রতি।।

জলান্মত্স্যে সমুত্থাপ্য স্থাপিতে ভূতলে যথা।

তথাচাস্য নবীনস্য দশাত্র পরিলক্ষ্যতে।।’

অর্থাৎ নবীন যুবক, সে নগর থেকে নতুন চাকরী পেয়ে এই গ্রামে এসেছে। জল থেকে মাছকে তুলে মাটিতে রাখলে যে দশা হয় এখানেও তার সেই অবস্থা হয়েছে। সুতরাং নবীনের কী দশা হয় পরবর্তী নাট্যাংশে তা পরিবেশিত হবে। রবীন্দ্রনাথের পোস্টমাস্টার গল্প শুরু হয়েছে উলাপুর গ্রামের বর্ণনা দিয়ে। নাট্যকার নিত্যানন্দ মুখোপাধ্যায় অবশ্য নাটকের শুরুতেই পোস্টমাস্টারের নামকরণ করেছেন নবীন। এছাড়া নাট্যাংশে নান্দী, প্রস্তাবনা, সূত্রধার ইত্যাদি সংযুক্ত করেছেন।

নাটকের প্রথমাঙ্কের দ্বিতীয় দৃশ্যে আমরা গ্রাম্য পথের দৃশ্য দেখতে পাই। পোস্টমাস্টার নবীন অফিসে যাওয়ার পথেই লতাবৃক্ষযুক্ত সকল স্থান, সাপের গর্ত, চারিদিকে কাঁচামাটির আস্তরণ ইত্যাদি দেখতে পেয়েছে –

‘লতাবৃক্ষাদিভির্যুক্তং সর্ব্বস্থানং প্রদৃশ্যতে।

সর্পগর্তেন যুক্তঞ্চ মৃত্তিকাময়মেব চ।।’

নবীন পথে একজন অচেনা ব্যক্তির কাছে পোস্টঅফিসের ঠিকানা জানতে চাইলে সেই অচিরেই জানায়, সে ওই অফিসেরই বার্তাবাহক। রবীন্দ্রনাথের গল্পে যদিও কোন বার্তাবাহক চরিত্রের উপস্থিতি নেই, এই চরিত্র নাট্যকারের স্বকপোলকল্পিত।

নাটকের প্রথমাঙ্কের তৃতীয় দৃশ্যে বার্তাগৃহের বর্ণনা রয়েছে। যেখানে বার্তাবাহক নবীনকে বার্তাগৃহে পৌঁছে দিয়ে দেখাচ্ছেন এটাই তাঁর কর্মস্থল, আর সে এই অফিসের অধ্যক্ষ। নবীন দেখলেন বার্তাগৃহের অবস্থা খুবই খারাপ। সে এবং বার্তাবাহক ছাড়া আর কোনো কর্মচারী নেই। কেবল মাত্র দুই জন। নবীন হতাশ হয়ে বার্তাবাহকের কাছে নিজের থাকার জায়গা নিয়ে জানতে চাইলে বার্তাবাহক জানায় পাশেই যে গৃহ দেখতে পাওয়া যাচ্ছে সেখানেই নবীনকে থাকতে হবে। বার্তাবাহক বলে ‘পার্শ্বে যদিদং গৃহং দৃশ্যতে। তদেব মহাশয়স্য আবাসস্থানম্’। নবীন দেখলেন সেটা মাটির

বাড়ি আর সেখানেই তাঁকে থাকতে হবে। নবীন জানায় সে আগে বার্তাগৃহের সমস্ত দায়িত্বভার বুঝে নেবে তার পরে বাসায় যাবে। এর জন্য বার্তাবাহককে প্রয়োজনীয় কাগজপত্র আনতে বলেন। বার্তাবাহক নবীনকে কিছু কাগজপত্র এগিয়ে দেন এবং একটি খাতায় স্বাক্ষর করতে বলেন। নবীন সকল কাজ সম্পন্ন করলে বার্তাবাহক জানায় সেদিনের মতো সকল কাজ সম্পন্ন হয়েছে। সুতরাং নবীন এবার বাসায় ফেরার সিদ্ধান্ত নেয়।

নাটকের এই দৃশ্যপটটিকে যদি আমরা রবীন্দ্র-গল্পের মূল কাহিনির সঙ্গে মেলাতে যাই, তাহলে আমরা কোনো মিল খুঁজে পাব না। কেননা মূল গল্পে বার্তাবাহক নামক কোনো চরিত্রই নেই। নাটকে বর্ণিত বার্তাগৃহের অগোছালো দূরাবস্থার কথা, কিংবা মাটির তৈরি নবীনের বাসার বর্ণনা অথবা নবীনের তৃষ্ণার্ত হওয়ার কথা ইত্যাদি বৃত্তান্ত যেমন গল্পে অনুপস্থিত তেমনই বার্তাগৃহের জরুরি কাগজপত্রে স্বাক্ষর করার কথা এবং নিজের কার্যভার বুঝে নেওয়ার কথাও মূল গল্পে একেবারেই নেই। নাট্যকার নিত্যানন্দ মুখোপাধ্যায় এই সকল বৃত্তান্তকে এমনই সুন্দরভাবে নিজ কল্পনায় সাজিয়ে নাটকে উপস্থাপিত করেছেন তাতে নাটকীয় রসাস্বাদনে বেশ চমৎকারিত্ব সৃষ্টি হয়েছে। সেই সঙ্গে নাট্যকার নাট্যকাহিনির বিস্তৃতি ঘটিয়েছেন।

নাটকটির দ্বিতীয়াঙ্কের প্রথম দৃশ্যে আমরা দেখতে পাই নবীন তাঁর বাসগৃহে উপস্থিত হয়েছে। সেখানে সে অত্যন্ত চিন্তিত হয়ে পড়ে। এই কর্দমাক্ত গৃহে সে একাকী থাকবেই কীভাবে? সে বার্তাবাহকের কাছে একজন কাজের লোকের অনুসন্ধান প্রসঙ্গে জানতে পারে এখানে কাজের লোক পাওয়া দুষ্কর ব্যাপার, তবে একজন পিতৃমাতৃহীন দরিদ্র বালিকা রয়েছে। নবীন যদি সম্মতি দেয় তবে সে তাকে আনতে পারবে। এই প্রসঙ্গে বার্তাবাহক বলে – 'একা নির্ব্বান্ধবা মাতৃপিতৃহীনা দরিদ্রা বালিকা বর্ত্ততে'। বার্তাবাহক তাঁকে আনতে গেলে নবীন নিজ অদৃষ্টের কথা ভেবে বলেন – 'ঈদৃশং মে অদৃষ্টম্। এতাবান্ ক্লেশো মম ভাগ্যে আসীত্'। এরপর বার্তাবাহক সেই বালিকাকে নিয়ে সেখানে উপস্থিত হন। পাঁচ টাকার বিনিময়ে নবীন তাকে গৃহকর্মে নিয়োগ করেন। বালিকার নাম রত্না। প্রথম দর্শনেই সে নবীনকে প্রভু বলে সম্বোধন করলে নবীন তাকে দাদা বলে ডাকতে বলে এবং দ্রুত জল ফোটানোর নির্দেশ দেয়। রত্না জানায় সে সকল

কাজই করে দেবে। নবীন বিছানা পাততে গেলে রম্না দ্রুত বিছানা পেতে দিয়ে জল আনতে যায়।

দ্বিতীয়াঙ্কের প্রথম দৃশ্যেই নবীনের সঙ্গে রম্নার এই মধুর আলাপ সংঘটিত হয়। একজন পিতৃমাতৃহীনা অনাথ বালিকা নবীনকে তার প্রভু-রূপে যেমন পায়, তেমনই একজন সঙ্গী রূপেও পায়। রবীন্দ্রনাথের গল্পে রতন নামে যে বালিকাকে আমরা পরিচারিকা রূপে লক্ষ করেছিলাম, সেই রতন কিন্তু পোস্ট মাস্টারের রান্না করে দিত না। সেখানে পোস্টমাস্টার নিজেই রেঁধে খেত। রতন তাঁর কাজকর্ম করে দিত। তার বিনিময়ে সে চারটি খেতে পেত। নাটকের পরিচারিকা রম্নাকে খাওয়া দাওয়া ছাড়াও পাঁচ টাকা দেবার কথা হয়। যা গল্পে নেই। গল্পে রতনের বয়সের উল্লেখ রয়েছে বারো-তেরো। বিবাহের বিশেষ সম্ভবনা দেখা যায় না। এইসব বর্ণনা নাটকে অনুপস্থিত। আবার নাটকে রম্নার জল গরমের কথা কিংবা নবীনের বিছানা পাতার বৃত্তান্ত নিত্যানন্দের সংযোজন করা।

দ্বিতীয়াঙ্কের দ্বিতীয় দৃশ্যপট নবীনের বাসগৃহের। যেখানে রন্ধনের বিষয় নিয়ে রম্না ও নবীনের কথোপকথন রয়েছে। নবীন রম্নার কাছে জানতে চায় যে রম্না লেখাপড়া জানে কি না? রম্না জানায় সে লেখাপড়া জানে না। রম্নার শেখার ইচ্ছা আছে কি না জানতে চাইলে রম্না জানায় যদি নবীন তাকে শেখায় তবে রম্না শিখবে। নবীন রম্নাকে পরের দিন তালপাতা আনতে বলে। রম্না বার বার রান্না শেষ করার কথা জানায়। এতে নবীন কিছুটা বিরক্ত হয়ে নিজেই পড়তে থাকে। নবীন ভাবতে থাকে এখানে সে কীভাবে সময় কাটাবে। অবশেষে সে নিজেই পড়ার মাধ্যমে মনকে শান্ত করে। এই অংশে নবীনের মুখে প্রকৃতির রূপ বর্ণিত হয়েছে। রম্নার লেখাপড়া শেখার বৃত্তান্তটি গল্প ও নাটক উভয়ক্ষেত্রেই রয়েছে। তবে এখানে লেখার জন্য নবীন রম্নাকে পরের দিন তালপাতা আনার কথা বলেছেন। যা মূল গল্পে অনুপস্থিত।

তৃতীয়াঙ্কের প্রথম দৃশ্যেও নবীনের বাসগৃহের দৃশ্যপট রয়েছে যেখানে নবীন রম্নার কাছে জানতে চায় তার স্বরবর্ণ মুখস্থ হয়েছে কিনা? রম্না তাতে সম্মতি জানিয়ে অ, আ পাঠ করতে থাকে। নবীন তাকে ব্যঞ্জন বর্ণগুলি পড়তে বলে। রম্না পড়তে থাকে। নবীন রম্নাকে লিখতেও বলে। যেহেতু রাত্রি হয়েছে তাই রম্না রাঁধার কথা বলে। নবীন বিরক্তি দেখিয়ে বলে- 'নিত্যং রন্ধনং বিরক্তিকরমিদম্।' রম্না নবীনকে শুধুমাত্র ভাত রান্না করতে বলে নিজে তরকারী রাঁধতে চলে যায়।

তৃতীয়াঙ্কের দ্বিতীয় দৃশ্যেও আমরা নবীনের বাসগৃহের দৃশ্য দেখতে পাই। যেখানে নবীন বিরক্তভাবে বলছে এখানে মানুষ বাস করে কীভাবে? সকল রাস্তা কর্দমাক্ত। মাঠ ঘাট সবই জলময়। বাইরে যাওয়ার কোনো উপায় নেই। এরপরে রম্ভার সঙ্গে কথোপকথনে জানা যায় রম্ভার তরকারি রান্না শেষ হয়েছে। নবীন তাকে রুটি বানাতে বলে। নবীন বলে এই বর্ষার দিনে রুটি খাওয়াই ভালো হবে। রম্ভা রুটি বানাতে গেলে নবীন ভাবতে থাকে –

'গহন জলধরেঽস্মিন্ বিদ্যুদেষোবিভয়ি
ক্ষণিকমপি ধরণয়ামেতি চালোকমত্র।'

চতুর্থাঙ্কের প্রথম দৃশ্যেও রয়েছে নবীনের বাসগৃহের ঘটনা। যেখানে আমরা দেখতে পাই নবীন অত্যন্ত জ্বরে কষ্ট পাচ্ছেন। সেই সঙ্গে তাঁর তীব্র মাথার যন্ত্রণা হচ্ছে। রম্ভা নবীনের কপালে হাত রাখে এবং জানায় গ্রামের প্রান্তে একজন চিকিৎসক রয়েছেন, তাই রম্ভা এখনই তাঁকে ডেকে আনবে। কিছুক্ষণ পরে রম্ভা বৈদ্যকে নিয়ে আসে। বৈদ্য নবীনের হাত ধরে পরীক্ষা করে দেখার পর তাঁর ব্যাগ থেকে ঔষধ বের করে সকাল, দুপুর ও রাত্রিতে খেতে বলেন এবং এটাও বলেন যে নবীন দ্রুত আরোগ্য লাভ করবে। রম্ভা জিজ্ঞাসা করে ঔষধ কীভাবে খাবে? বৈদ্য বলেন ঔষধ মধু ও পানের রসের সহযোগে খাওয়াতে হবে। এছাড়া কোনো ভয়ের কিছু নেই একথা বলে তিনি বিদায় নেন।

গল্প ও নাটক উভয় রচনাতেই পোষ্টমাস্টারের জ্বরাক্রান্ত হবার ঘটনা রয়েছে। তবে গল্পে পোষ্টমাস্টার এই অবস্থায় নিজের মা ও দিদির কথা ভীষণ ভাবে স্মরণ করেছেন। বৈদ্য ডেকে আনা, ঔষধ খাওয়ানো ইত্যাদি ঘটনা দুটি জায়গাতেই রয়েছে। নাটকে অবশ্য অসহ্য যন্ত্রণায় নবীন বারে বারে পিতা মাতার কথা উচ্চারণ করেছে। 'অসহ্য যন্ত্রণা। মাতঃ! পিতঃ!'

তবে নাট্যকার নিত্যানন্দ বৈদ্য চরিত্রকে সরাসরি মঞ্চে উপস্থাপিত করেছেন। নবীনের হাত ধরে পরীক্ষা করা, কিংবা ঔষধ খাওয়ার পদ্ধতি বর্ণনায় এবং দ্রুত আরোগ্য লাভের আশ্বাস বাণী দেওয়ায় নাট্যকার রসময়তা এনেছেন, যা নাটকে অভিনব ভাবে পরিবেশিত হয়েছে।

নাটকের চতুর্থ অঙ্কের দ্বিতীয় দৃশ্যে আমরা নবীনকে একেবারেই ধৈর্যহীন হতে দেখি। বন্ধুবান্ধবহীন এই গণ্ডগ্রামে সে মোটেই থাকতে চায় না। তার উপরে জ্বরাক্রান্ত হয়ে তার শরীর অত্যন্ত দুর্বল হয়ে পড়েছে। সেই সময়ে পত্রবাহক তার সঙ্গে সাক্ষাৎ করতে আসে। নবীন পত্রবাহককে জানায় শরীর কিছুটা সুস্থ হলেও দুর্বলতা আছে। নবীন অফিসের কাজকর্ম নিয়ে চিন্তিত হলে পত্রবাহক জানায় সে সকল বিষয় সামলে নিচ্ছে –'তদর্থং ভবতো নাস্তি চিন্তা। অহং সর্ব্বং সম্পদয়ামি।'। সেই সময়ে রম্ভা বৈদ্যের দেওয়া নতুন ঔষধ নবীনকে সেবন করতে বলে। এই নতুন ঔষধ যেমন

নবীনের দুর্বলতা কাটাবে তেমনি ক্ষমতাবল ফিরিয়ে আনবে। রত্না পত্রবাহককে আরও আশ্বস্ত করে যে বৈদ্যের নির্দেশ মতো রত্না নবীনের যথাসাধ্য সেবা করবে। সে বিশেষভাবে যত্নশীলা। যেমন নবীনের আহারে রুচি নেই বলে সে মাছের তরকারি ও রুটি বানাতে চায়। নবীন রত্নার লেখাপড়া নিয়ে ব্যস্ত হলে রত্না জানায়- 'তব ভোজনব্যবস্থাং সম্পাদৈব লিখনপঠনাদিকং করোমি।'। অর্থাৎ পূর্বে ভোজনের ব্যবস্থা করবে, তারপর সে লেখাপড়া করবে। কিন্তু নবীনের মোটেই একা থাকতে ইচ্ছে করে না। তাই সে নির্দ্বিধায় বলে – 'একাকিনা ময়া নৈব স্থাতুং শক্যতে। রন্ধনেন নাস্তি প্রয়োজনম্।' অর্থাৎ নবীন রত্নার সাথে কথা বলে সময় কাটাতে চায়। ভোজনের প্রতি তার আগ্রহ খুবই কম। কিন্তু রত্না এখানে খানিকটা অভিভাবকের মতো বলে- 'ত্বং দূর্ব্বলোঽভবঃ।' শুধু তাই নয় সে নবীনের কপালে হাত দিয়ে তাঁর স্বাস্থ্য পরীক্ষা করে সেখান থেকে প্রস্থান করলে নবীন ঘুমানোর চেষ্টা করে।

রবীন্দ্রগল্পে আমরা পোষ্টমাস্টারকে অফিসের কাজকর্ম নিয়ে চিন্তিত হতে দেখি না। কিন্তু নাটকে তার বর্ণনা রয়েছে। নবীন বার্তাবাহকের কাছে জানতে চেয়েছে- 'কার্যালয়স্য কার্যং কীদৃশং চলতি?' কিংবা পত্রবাহককে কাজের বিষয়ে যত্নবান হতে বলেছেন- 'লক্ষ্যেত। কাপি ত্রুটির্যথা ন ভবেৎ।'এছাড়া গল্পে বৈদ্যের কথা মাত্র একবার এসেছে। নাটকে বৈদ্যের উল্লেখ দুইবার আছে। দ্বিতীয়বারে বৈদ্য নবীনের জন্য নতুন ঔষধ দিয়েছেন। এই ঔষধে নবীনের দুর্বলতা কাটবে এবং সে বল ফিরে পাবে। এছাড়া রত্নার পথ্য প্রস্তুতিতে মাছের তরকারি ও রুটির উল্লেখ বেশ অভিনব, যা রবীন্দ্র-গল্পে নেই। রত্না বলেছে – 'মৎস্যব্যঞ্জনং রোটিকাং করোমি।' এই সমস্ত বাক্য নাটকের রসময়তা বৃদ্ধি করেছে। শুধু তাই নয় নাটকের এই অংশে নবীন একাকীত্ব দূর করতে রত্নাকে কাছে পেতে চেয়েছে। যা মূল গল্প নেই।

পঞ্চমাঙ্কের প্রথম দৃশ্যে আমরা রত্নাকে কিছুটা চিন্তান্বিত হতে দেখি। কেননা তার প্রভু নবীন এখন আর আগের মতো আলাপ করে না। তার পড়াশোনার বিষয়েও খোঁজ নেয় না। সব সময় অন্যমনস্ক হয়ে থাকে। ঠিক এই সময়েই রত্নাকে দাঁড়িয়ে থাকতে দেখে নবীন বলল যে সে কাল কলকাতায় তার গৃহে চলে যাবে। আর ফিরে আসবে না, অর্থাৎ চিরদিনের জন্য চলে যাবে। রত্না জানতে চায় নবীন কী তাহলে অন্য কোথাও কাজ পেয়ে চলে যাচ্ছে? তার উত্তরে নবীন জানায় যে সে সরকারের কাছে কর্মস্থল পরিবর্তন করার জন্য প্রার্থনা জানিয়েছিল, কিন্তু সরকার তার আবেদন নামঞ্জুর করায় নবীন কাজ ছেড়ে দিয়ে চলে যাচ্ছে। এই পরিস্থিতিতে করুণ হৃদয়ে রত্না নবীনের কাছে প্রার্থনা জানায়, সে কী তাকে নিয়ে যাবে? 'তব গৃহে মাং নেষ্যতি?'। তা যে কোনোভাবেই সম্ভব নয়, নবীন তা স্পষ্টত জানিয়ে দেয়। যদিও

নবীন রত্নার জন্য একটা ব্যবস্থা করে যেতে চায়। তার কর্মস্থলে নবীনের জায়গায় যে আসবে সে যেন রত্নাকে কাজে পুনর্বহাল করে। রত্না ভগ্নহৃদয়ে তীব্র তিরস্কার করে বলে – 'মত্ কৃতে ত্বয়া কিমপি ন কর্তব্যম।' অর্থাৎ তার জন্য নবীনের কিছুই করার প্রয়োজন নেই। এই সময়ে পত্রবাহক এসে নবীনকে তার চলে যাওয়ার সিদ্ধান্ত পুনর্বিবেচনা করার জন্য অনুরোধ জানায়। কিন্তু নবীন যে নিজ সিদ্ধান্তে অবিচল তা জানিয়ে দেয়। কার্য থেকে নিষ্কৃতি পাবার জন্য যা যা করণীয় , যা যা স্বাক্ষরাদির প্রয়োজন রয়েছে তা সম্পন্ন করার জন্য নবীন পত্রবাহককে নির্দেশ দেয় এবং তার যাওয়ার জন্য একটি যানের ব্যবস্থা করতে বলে। পত্রবাহক জানায় যেহেতু এখন বর্ষা চলছে তাই তাকে নৌকাতে যেতে হবে এবং সে তার ব্যবস্থা করে দেবে। এই সময়ে রত্না নবীনকে বলে – 'ভবতো ভোজনস্য ব্যবস্থা সম্পন্না। ভোজনং সম্পাদ্য গচ্ছতু ভবান্।' অর্থাৎ ভোজনের ব্যবস্থা হয়ে গেছে, তাই আপনি ভোজন করে যাবেন। কিন্তু নবীন আগে সকল কাজ শেষ করতে চায়। সব শেষে সে ভোজন করবে।

পঞ্চমাঙ্কের দ্বিতীয় দৃশ্যে আমরা দেখতে পাই অতি ভোরে স্নানের জল তুলে রাখা হয়েছে। তাতে নবীন স্নান সেরে ব্যাগপত্র গোছাতে এসে দেখলেন সকল কিছুই সজ্জিত রয়েছে। রত্না নবীনের ভোজনের জন্য কিছু খাদ্যবস্তুর ব্যবস্থা করলে নবীন তাকে তা আনতে বলে। এমন সময় পত্রবাহক এসে প্রবেশ করে এবং জানায় নৌকা প্রস্তুত রয়েছে। নবীন যাওয়ার পূর্বে পাঁচ টাকা রত্নাকে দিতে চাইলে রত্না তা গ্রহণ করতে রাজি হয় না। তখন পত্রবাহক তা নিজের হাতে নেয়। অতঃপর নবীন দুর্গা দুর্গা বলে যাত্রা শুরু করে। সেই সময়ে রত্নার ভগ্নহৃদয়ে দুঃখময় চিত্তে বেদনার্ত কণ্ঠে উচ্চারিত হয়- 'প্রস্তরহৃদয়! তব হৃদয়ে স্নেহঃ, প্রীতিঃ মায়া কিমপি নাস্তি। প্রস্তরেণৈব ত্বং নির্ম্মিতোঽসি ভগবন্ এবমেব জনাঃ স্বার্থপরা ভবন্তি।' এর পরেই নাটকের অন্তিমে ভরত বাক্যে উচ্চারিত হয়েছে-

'স্নেহেন পূর্ণা ভুবি মায়য়া চ
প্রীত্যা যুতাঃ কোমলচিত্তযুক্তাঃ।
পরস্পরং প্রীতিযুক্তাঃ সদৈব
স্বার্থেন হীনা মনুজা ভবন্তু।।'

গল্প ও নাটক উভয়ক্ষেত্রেই পোস্টমাস্টারের বিদায় দৃশ্য অত্যন্ত বেদনাদায়ক। তবে নাট্যকার কিছুক্ষেত্রে অভিনবত্ব এনেছেন। যেমন - নাটকে পত্রবাহক নবীনের ফিরে যাওয়ার সিদ্ধান্তকে পুনর্বিবেচনার জন্য অনুরোধ করেছেন, যা গল্পে নেই। এছাড়া গৃহে ফিরে যাওয়ার পূর্বদিনে অফিসের কাজকর্ম পত্রবাহককে বুঝিয়ে দেওয়া এবং প্রয়োজনীয় সাক্ষরাদি সম্পন্ন করার বৃত্তান্ত নাট্যকার সুকৌশলে নাটকে বর্ণনা করেছেন। গল্পে সেখানে কেন্দ্রীয় চরিত্রটি ভূতপূর্ব পোস্টমাস্টার-রূপে সদ্য-আগত নতুন

পোস্টমাস্টারকে তার চার্জ বুঝিয়ে দিয়েছিল। নাটকে নবীনের যাওয়ার পূর্বে রত্না তার জন্য কিঞ্চিৎ ভোজনের ব্যবস্থা করেছিল। এই বৃত্তান্ত গল্পে নেই। আবার গল্পে পোস্টমাস্টার যা বেতন পেয়েছিল সেখান থেকে পথখরচ বাবদ কিছু বাদ দিয়ে বাকি টাকা রতনকে দিতে চেয়েছিল। রতন তা গ্রহণ না করে সেখান থেকে দৌড়ে পালিয়েছিল। কিন্তু নাটকে নবীন রত্নাকে পাঁচ টাকা দিতে চেয়েছিল। যদিও রত্না তা গ্রহণ করেনি। সেই অর্থ পত্রবাহক নিয়ে রেখেছিল।

উপসংহার:

'বার্তাগৃহাধ্যক্ষবচঃ' নাটকটির শেষে গভীর এবং অনতিক্রম্য জীবন সত্যকে স্বীকার করা হয়েছে। জীবন-মৃত্যুর চির রহস্য, মিলন-বিচ্ছেদের চিরন্তন কথা যেন এই নাটকে মূর্ত হয়ে উঠেছে। বয়ঃসন্ধির কিশোরী রত্না ভালোবাসার স্বাদ পেয়েছে পোস্টমাস্টারের সান্নিধ্যে এবং তাঁর অত্যন্ত স্নেহে, সতর্ক দৃষ্টিতে ও আন্তরিকতায়। রত্নার মধ্যেও জেগে উঠেছে তা অভ্যন্তরের চিরন্তন নারীসত্তা। তার হৃদয়ের সঞ্চিত প্রেমকে সে জীবনের সম্বল রূপে আঁকড়ে ধরতে চেয়েছে। কিন্তু তার এই আশার তরঙ্গ ভবিতব্যের বিধানে মিলনের পথ খুঁজে পায় নি। শুধুমাত্র পোস্টমাস্টারের মানবিক রূপ দেখা যায় রত্নার প্রতি তার দায়িত্ব ও কর্তব্যবোধে। তাই যাবার আগে রত্নার প্রাপ্য পাঁচ টাকা দিতে চেয়েছে এবং নতুন পোস্টমাস্টার তাকেই কাজে পুনরায় নিয়োগ করবে এই আশ্বাস দিয়েছে। যদিও রত্না অভিমান ভরা কণ্ঠে সব সহযোগিতার আশ্বাসকে প্রত্যাখ্যান করেছে। এমতাবস্থায় রত্নার মুখ থেকে বেরিয়ে এসেছে পোস্টমাস্টার নবীনের প্রতি তীব্র কটাক্ষ – 'প্রস্তর হৃদয়! ……' -এর মতো কঠিন বাক্য। রত্না উপলব্ধি করেছে নবীনের হৃদয় পাথরের ন্যায়। প্রীতি, মায়া, মমতা কোনোকিছুই তার নেই। ভগবান বুঝি তাকে পাথর দিয়েই তৈরি করেছেন। রত্নার মনে হয়েছে নবীন অত্যন্ত স্বার্থপর। একারণে সে আক্ষেপের সঙ্গে উচ্চারণ করেছে – 'এবমেব জনা স্বার্থপরা ভবন্তি'। তাই নাটকের ভরত বাক্যে নাট্যকার বিশ্বজনীন প্রার্থনা করেছেন যে, প্রীতিযুক্ত ও কোমল মন নিয়ে মানুষ স্বার্থহীন হয়ে মানুষের পাশে থাকুক।

সহায়ক গ্রন্থপঞ্জি :

1. Bandopadhyay, S. (1962). Sanskrit Sahitye Bangalir Dan. Kolkata, Sanskrit Pustak Bhandar.
2. Bhattacharya, A.K., & Chakraborty, S. (2013). Adhunik Sankrit Sahityer Ruparekha. Kolkata, M.L.De And Co.

3. Chattopadhyay, R. (1999). A Sociological Intropection. Calcutta, Sanskrit Pustak Bhandar.
4. Chattopadhyay, R. (2004). Modern Sanskrit Literature: Some Observations,DSA Sankrit Series. Jadabpur University – Kolkata, Sanskrit Pustak Bhandar.
5. Chattopadhyay, R. (2009). 20th Century Sanskrit Literature: A Glimpse into Tradition and Innovation, Kolkata, Sanskrit Pustak Bhandar.
6. Chattopadhyay, R. (2012). Adhunik Sankrit Sahitya (1910 – 2010) Chotogalpo o Natak, Kolkata, Progresive Publishers.
7. Chattopadhyay, S. (1385). Natak Lakshan Ratnakosh. Kolkata, Sanskrit Pustak Bhandar.
8. Dalal, C.D., & Sastri, R.A. (Eds.). (1934). Kavya Mimamsa (3rd ed.). Baroda, Oriental Institute.
9. Krishnamurti, K. & Banarasidas, M. (Eds). (1982). Dhanyalok (2nd ed.). Delhi.
10. Mukhopadhyay, A. (2013). Sanskrit Kavya Charchay Bangali – Sekal o Ekal (1st ed.). Kolkata, Sanskrit Pustak Bhandar.
11. Sukla, B. (1964). Natak Chandrika. Baranasi, Chawkhamba Sanskrit Series.
12. Tripathi, R. (1999). Sanskrit Sahitya: Bishbi Satabdi. New Dehli, Rastriya Sanskrit Sansthanam.

Subrata Adhikary
Research Scholar, Department of Sanskrit, Seacom Skills University, Birbhum
Mobile No – 9477041315, WhatsApp No – 8513808346,
Email – subhosubho2013@gmail.com
Address
Village – Gaza, P.O. – Gaza, P.S. – Udaynarayanpur, Dist – Howrah, PIN – 711226
State – West Bengal

संगम Impact Factor : 6.632
Website : www.ginajournal.com
ISSN : 2321-8037
विशेषज्ञ समीक्षित पत्रिका A Peer Reviewed International Refereed Journal
SANGAM
गीना देवी शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित साहित्य, शिक्षा, संस्कृति एवं शोध को समर्पित मासिक
Vol. 12, Issue 1-2
पृष्ठ : 90-93

भारत के आर्थिक एवं सामरिक क्षेत्र में महिलाओं का विश्लेषणात्मक अध्ययन

डॉ. सुषमा पाठक (एसोसिएट प्रोफेसर)
समाजशास्त्र विभाग राजाराम मोहन गर्ल्स पी0जी0 कालेज, अयोध्या
मीना श्रीवास्तव (शोधार्थी)
समाजशास्त्र विभाग डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, अयोध्या।

''स्त्री शक्ति राष्ट्र शक्ति का अभिन्न अंग होती है जिसे सशक्त और शामिल किये बिना कोई भी राष्ट्र शक्तिशाली नहीं हो सकता।''

महिला सशाक्तिकरण को प्राथमिकता देने के क्रम में वर्तमान भारतीय प्रधान मंत्री द्वारा महिलाओं को पुरूषों के बराबर अवसर प्रदान करने का प्रयास किया है जो सुरक्षा में 5 पहलुओं पर आधित एक व्यापक मिशन है यह 5 पहलू है माँ एवं शिशु की सुरक्षा, समाजिक सुरक्षा, वित्तीय सुरक्षा, शैक्षिणिक एवं वित्तीय कार्यक्रमों के माध्यम से भविष्य की सुरक्षा तथा महिलओं की सलामती इस प्रकार हम पाते है कि जब राष्ट्र को सशाक्त करने की बात आती है तो महिला सशक्तिकरण के पहलू को अनदेखा नहीं किया जा सकता।

किसी संस्कृति को अगर समझना है तो सबसे आसान तरीका है उस सास्कृति में नारी की हालत को समझने की कोशिश की जाये किसी भी देश के विकास सम्बन्धी सूचकांक को निर्धारित करने हेतु उद्योग व्यापार खाद्यान उपलब्धता, शिक्षा, इत्यादि के स्तर के साथ ही इस देश की महिलाओं की स्थिति का अध्ययन किया जाता है। नारी की सुदृढ़ एवं सम्मानजनक स्थिति एक उन्नत समृद्धि तथा मजबूत समाज द्योतक है।

वर्तमान में नारिया प्रत्येक क्षेत्र में अपना वर्चस्व स्थापित कर रही है शिक्षा एवं आर्थिक स्वतत्रंता ने महिलाओं में नवीन चेतना भर दी है। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में महिलाओं की भूमिका में वृद्धि हो रही है आज महिलाएं, राजनीति बिजनेस कला, तथा खेल सहित रक्षा क्षेत्र में नये आयाम गढ़ रही हैं सेना जैसे संवेदनशील क्षेत्र में भी महिलाए अपनी भूमिका का पुरूषों के साथ कदम मिलाकर निर्वहन कर रहीं है।

हाल ही में अवनी चतुर्वेदी सहित तीन लड़कियों को वायु सेना में फाइटर प्लेन उड़ाने की अनुमति प्रदान की गई। यह उनकी कार्य क्षमता का द्योतक है क्योंकि प्रायः कमजोर समझी जाने वाली महिलाए आज कठिन माने जाने वाले क्षेत्रों मे भी अपनी क्षमता का प्रदर्शन कर रही है। गाँधी जी ने कहा था कि ''महिलाए पुरूषों से

बेहतर सैनिक साबित हो सकती है बस उनकों मौका देने की जरूरत है'' कल्पना चावला, सुनीत विलियम्स, टेन्सी थामस, अवनी चतुर्वेदी जैसी अनेक नारिया आ समाज में महिलाओं की मजबूत छवि प्रस्तुत कर रही है। अग्नि–5 मिसाइल के विकास में प्रमुख भूमिका निभाने वाली टेन्सी थामस को मिसाइल वोमेन के नाम से जाना जाता है।

शीर्ष क्षेत्र में महिलाए अपनी सफलता की कहानी दुनिया के सामने रखी है आर्थिक अधिकारों की प्राप्ति तथा आर्थिक रूप से आत्म निर्भर होने के कारण महिलाओं का सशक्तिकरण हुआ है देश की कई आर्थिक संस्थानों के शीर्ष पदों पर महिलाएं कार्यभार संम्भाल रही है तथा देश के विकास में अपना योगदान दे रही है। अरूंधाति भट्टाचार्य, शिखा शर्मा, नैनालाल किदवई, सावित्री जिन्दल आदि आर्थिक क्षेत्रों में शीर्ष पदों पर काबिज है।

भारत के सम्बन्ध में कई बार वर्ल्ड बैंक ग्रुप आदि ने कहा है कि अगर यहाँ पर महिलाओं की आर्थिक भागीदारी में वृद्धि की जाये तो भारत की विकास की दर में तीव्र वृद्धि हो सकती है गौर तलब है कि सन् 1994 से 212 में मध्य कई लाख भारतीय गरीबी रेखा से बाहर निकल चुके है इन आकाडों में और बढौत्तरी होती अगर कार्यबल में महिलाओं की भागीदारी में और इजाफा होता। 2012 में सिर्फ 27 प्रतिशत वैश्य, भारतीय महिलाएं विभिन्न क्षेत्रों में कार्यरत थी चिन्ता की बात यह है कि भारत में तीव्र शहरीकरण में कार्यबल में महिलाओं की भागीदारी में कोई वृद्धि नहीं की।

कार्यबल में महिलाओं की भागीदारी में भारत की रैकिंग विभिन्न देशों से निम्न है परन्तु लिंग आधारित हिंसा की दर के मामले में यह काफी उच्च है देश के कार्यबल में महिलाओं की भागीदारी 2016 में 37 प्रतिशत नीचे गिरकर 2019 में 18 प्रतिशत रह गयी एवं जेन्डर गैप के मामले में 23 प्रतिशत पर आ गयी है।

यह माना जाता है कि कार्यबल में महिलाओं के प्रवेश को सुनिश्चित करने और उनकी भागीदारी बढाने में जेन्डर सेन्सिटिव इन्फ्रास्ट्रक्चर महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। जेन्डर सेन्सिटिव इन्फ्रास्ट्रक्चर के तहत बच्चों हेतु पूर्व कालिक शिशुग्रह कार्यशील महिलाओं हेतु बहनीय एवं सुरक्षित हास्टल एवं आधारभूत सार्वजनिक सुविधाएं शामिल है इन सब के बावजूद सिक्के का एक अन्य पहलू यह भी है कि आज भी महिला कार्यबल का एक बड़ा हिस्सा अन्याय एवं शोषण का शिकार होता है। भारत में आज भी कई कार्यस्थलों पर महिलाओं का यौन शोषण होता है। मी–टू अभियान यह सिद्ध करता है कि महिलाएं किस प्रकार से कार्यस्थल पर प्रताड़ित की जाती है परन्तु समाजिक कुरूतियों को तोड़ते हुए इसके खिलाफ अपनी आवाज भी बुलंद की है महिलाओं को अपने स्वतंत्र अस्तित्व का निर्माण करने एवं उसे कायम रखने हेतु स्वावलम्बी और आत्मनिर्भर होना बहुत जरूरी है साथ ही समाज के रीति–रिवाज स्त्रियों के विकास को उचित नहीं समझते है उसे बदल देना आवश्यक है।

वैश्वीकरण के एस अर्थ प्रधान युग में एक ओर जहाँ स्त्रियां वर्जनाओं को तोड़ते हुए नित सफलता के नये सोपान पर चढ़ती जा रही है वहीं दूसरी ओर उन्हे भोग की वस्तु के रूप में प्रचारित एवं प्रसारित किया जा रहा है। बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के उत्पादों के विज्ञापनों में इसकी झलक बड़ी आसानी से देखी जा सकती है चाहे

वह फिल्म इन्डस्ट्री की कोई शोषित स्त्री कलाकार हो या विज्ञान में बड़े शर्मशार तरीके से चित्रित की गई कोई नारी हो। इसका यह नतीजा हुआ है कि स्त्री आज भी उसी चौराहे पर खड़ी है और खुद से अनेक प्रश्न पूछती है कि यही वह मंजिल है जिसे वह हासिल करना चाहती थी कि या फिर इस मुकाम तक पहुँच कर लोगों की मानसिकता में कोई परिवर्तन क्यों नहीं दिखता? अगर एक ऊँचे ओहदे पर स्थिति स्त्री की हालत ऐसी है तो एक साधारण स्त्री की स्थिति क्या होगी। स्त्री को उसके देह से अलग एक स्त्री के रूप में देखने की आदत में परिवर्तन लाने की आवश्यकता है किसी की मजबूरी को किसी का व्यवसाय बनाने से रोंकना होगा एवं नग्नता और शालीनता मध्य की बारीक रेखा को समझना होगा जिसका निर्माता भी समाज होता है एवं जिसका विध्वंसक भी यही समाज होता है उचित अनुचित न्याय अन्याय विवेकपूर्ण–अविवेकपूर्ण स्वधीनता एवं उच्छृंखला दायित्वहीनता शालीनता एवं अशलीलता के मध्य विद्यमान धुंधलाहट को स्पष्ट करना होगा। स्त्री की आजादी पूर्ण तभी मानी जायेगी जब उसकी प्रतिभा को स्वीकारिता मिले न कि उसके दैहिक सौन्दर्य को।

यह सत्य है कि वर्तमान में स्त्रियों की स्थिति में बदलाव आया है समारिक क्षेत्र तक उनकी पहुँच उनकी क्षमता का द्योतक है फिर भी स्त्रियां अनेक स्थानों पर पुरूष प्रधान मानसिकता से पीड़ित है।

उद्देश्य :–

1. भारत के आर्थिक विकास में महिला भागीदारी को जानना है।
2. भारत के सामरिक क्षेत्र में महिलाओं के योगदान का विश्लेषण करना।
3. महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने के लिए जागरूक करना है।
4. सरकार द्वारा महिलाओं के लिए किये गये प्रयास का प्रचार–प्रसार करना।
5. भारत के विकास की प्रक्रिया में महिलाओं को मुख्य धारा से जोड़ना है।

सुझाव :–

1. महिलाओं के विकास हेतु सकारात्मक, आर्थिक और सामाजिक नीतियों को निर्माण।
2. पुरूषों के साथ महिलाओं को राजनैतिक, आर्थिक, सामाजिक सांस्कृति क्षेत्रों में वैधानिक क्षेत्र में समान अवसर प्रदान करना।
3. देश के लिए महत्वपूर्ण निर्णय लेने की प्रक्रिया में महिलाओं की समान भागीदारी का होना।
4. स्वास्थ्य, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा रोजगार में समान परिश्रमिक, सामाजिक सुरक्षा आदि तक समान पहुँच।
5. महिलाओं के विरूद्ध भेदभाव के सभी रूपों को का उन्मूलन का प्रयास।
6. नागरिक समाज विशेषकर महिला संगठनों के साथ भागीदारी का निमार्ण एवं उन्हे सुदृढ़ करना।

निष्कर्ष :–

भारतीय अर्थ व्यवस्था क्षेत्र में महिलाएं अग्रणी रहीं है अगर हाल फिलहाल की भारत की आर्थिक स्थिति को छोड़ दे जो कि कोविड–19 से प्रभावित है तों भारत के विकास की दर पिछले कुछ समय से उच्च बनी है जिसका कारण बचत और पूँजी निर्माण की उच्च दर बताई जाती है। इन आर्थिक गतिविधियों में महिलाओं की

महत्वपूर्ण भूमिका रही है बचत उपभोग अभिवृत्ति और पुर्नचक्रण प्रवत्ति के मामले मे भारत की अर्थ व्यस्था में महिला केन्द्रित मानी गई है साथ ही हाल फिलहाल के रक्षा क्षेत्र में महिलाओं की वृद्धि कर महिलओं को इस क्षेत्र में मुख्य भूमिका देना चाह रही है अतः महिलाओं की असीमित क्षमता एवं योग्यता को ध्यान में रखते हुए जरूरी है कि इन्हे आर्थिक एवं सामरिक क्षेत्र के केन्द्र में रखा जाये ताकि देश के विकास में नये आयाम स्थापित किये जा सके।

''महिला वो शक्ति है, भारत की नारी है।
न कम में, न ज्यादा में,
वह भारत के विकास में बराबर की भागीदारी है''।।

(प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी)

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. महिला सशक्तिकरण के विविध आयाम, डॉ0 विप्लव, राहुल पब्लिशिंग हाउस।
2. महिला सशक्तिकरण का समग्र, प्रेम नारायण शर्मा भारत बुक सेन्टर लखनऊ।
3. साामाजिक कार्य एवं सशक्तिकरण, रोहित मिश्र न्यू रॉयल बुक कम्पनी लखनऊ।
4. इण्टरनेट सामग्री।

संगम Impact Factor : 6.632
Website : www.ginajournal.com
ISSN : 2321-8037
विशेषज्ञ समीक्षित पत्रिका A Peer Reviewed International Refereed Journal
SANGAM
गीना देवी शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित साहित्य, शिक्षा, संस्कृति एवं शोध को समर्पित मासिक
Vol. 12, Issue 1-2
पृष्ठ : 94-100

मालती जोशी की कहानियों के परिप्रेक्ष्य में वृद्ध

E. JACQUELINE, Research Scholar, (UP21G9651001)
Dr. ANURADHA PAKALAPATI, Assistant Professor & Research Supervisor,
Department of Hindi, School of Languages,
Vels Institute of Science, Technology and Advanced Studies (VISTAS)

सारांश :-

मानव विकास के सतत प्रक्रिया में एक है 'वृद्धावस्था'। मनुष्य जीवन में गर्भावस्था, शैशवावस्था, बाल्यावस्था, किशोरावस्था, युवावस्था, प्रौढ़ावस्था, वृद्धावस्था आदि मानव विकास की अवस्थाएँ पार करते हैं। उनमें बुढ़ापा वरदान है जैसे स्वर्णयुग की तरह होता है। वे ज्ञान और अनुभव से भरपूर परिपक्वता पूर्ण भंडार हैं। जीवन की जटिलता और विषमता के मार्गदर्शक हैं। देखने में वृद्धावस्था, माथे पर ज्ञान की रेखाएँ, सिकुड़ता हुआ बदन, काम करने में शिथिलता, यादों का भंडार, गौरव जीवन की अवशेष आदि से भरपूर हैं। जैसे मनुष्य बचपन में दूसरों पर आश्रित होते रहते हैं वैसे बुढ़ापे में भी दूसरों की सहायता रहित जीना असंभव है। लगातार उनके मन में कुछ विचार का प्रवाह बहते रहते हैं तुरंत उसे आस–पास रहने वालों से साझा करने को पसंद करते हैं। जीवन साथी हो तो एक दूसरे से विचार विमर्श करते हैं। समय के अभाव के कारण नई पीढ़ी इनसे भाग कर पुराने विचार एवं लोगों को अपने जीवन का हिस्सा बनाने से कतराते हैं। मान–सम्मान की अपेक्षा करनेवाले बूढ़े लोग अपने ही परिवार का अनादर देखकर टूट जाते हैं। इसी कारण कई कष्ट भोगना पड़ता है। इक्कीसवीं सदी की महिला कहानीकारों ने अपनी कहानियों में परिवार में वृद्धों की स्थिति का चित्रित किया है। इनमें श्रीमती मालती जोशी की कहानियों में वृद्धावस्था के बारे में उनकी परिप्रेक्ष्य को इस आलेख के जरिए देखेंगे।

मूल शब्द :- वृद्ध, मार्गदर्शन, वृद्धावस्था, शिथिलता, शरीरिक–मानसिक कमजोरी, परावलंबन, अवहेलना, अवलंबन, संघर्ष, अकेलापन।

प्रस्तावना :-

मनुष्य अपने जीवन विकास की सभी अवस्थाओं को पार करके सारे कर्तव्य निभाने के बाद आराम लेने वाले श्रेष्ठ अवस्था वृद्धावस्था है। मनुष्य सात अवस्थों में पहले चार को माता–पिता पर निर्भर रहना आवश्यक है, वैसे वृद्धावस्था में दूसरों की सहायता आवश्यक है। इस अवस्था में हरपल कष्टप्रद, ऊर्जाविहीन और समस्याजनक होती है। इस अवस्था में व्यक्ति मन और शरीर दोनों की आराम देना आवश्यक है। इस अवस्था में मन की एक ओर पुरानी हरियाली यादें बार–बार चबाकर आनंद की लहरें जैसे झुल–झुलाते हैं तो दूसरी ओर

जीवन का अंतिम समय की अकेलापन दुःख देती है। इस अवस्था को ध्यान और हठयोग साधन द्वारा आसान से बिता सकते हैं। मालती जोशी, शशीप्रभा शास्त्री, राजी सेठ, सुधा अरोड़ा, सूर्यबाला, नासिरा शर्मा महरुन्निसा पर्वेज, अलका सरावगी आदि कई कहानीकारों ने अपनी कहानियों में वृद्धों का चित्रण किया है। इन कहानियों का अध्ययन करते हुए वृद्धों की सहिष्णुता, मानसिक कमजोरी, शिथिलता, शारीरिक कमजोरी, अकेलापन, मरण का भय, आपसी बिछुड़न, संघर्ष, उपेक्षा, सत्ता, हठवादिता, स्वार्थी प्रवृत्ति, समझदारी आदि वृद्ध जीवन के कई पक्ष हमारे सामने आते हैं।

मालती जोशी की कहानियों में वृद्ध :-

मालती जी अपनी कहानियों में मध्य वर्ग पारिवारिक पृष्ठभूमि के साथ–साथ वृद्धों को भी भूमिका देती हैं। बच्चे काम की वजह घर से बाहर निकलना पड़ता है या नए बहू बेटे को अलगाव करके घर से बाहर जाते हैं। ऐसे समय माता–पिता को घर में अकेले छोड़कर जाते हैं। इसका फलस्वरूप वृद्ध लोग दुःख भोगना पड़ता है। बेटा–बेटी अपनी बच्चों को माता–पिता से देखभाल के लिए छोड़ देते है तो वे आराम लिए बिना सबकुछ सहते हैं। बच्चे विदेश में रहें तो माता उनके लिए सभी चीजें इकट्ठे करके यहाँ से वहाँ भिजुवाती है। बुजुर्ग परिवार में किसी कठिन परिस्थिति में परिपक्व निर्णय लेते हैं। वे परिवार में बच्चों को परेशानियाँ आते वक्त अच्छे मार्ग दिखाकर सहयोग देते हैं। कछ बूढ़े लोग स्वयं की स्वार्थ प्रवृत्ति और हठवादिता से अपने जीवन गुजारते हैं। इन सभी का प्रसंग मालती जोशी का कहानी–संग्रह 'एक घर हो सपनों का', 'रहिमन धागा प्रेम का', 'वो तेरा घर ये मेरा घर', 'स्नेहबंध', 'महकते रिश्ते' आदि में अधिकांशतः उपलब्ध हैं। बुढ़ापे के बारे में स्वाति तिवारी का कथन है "वृद्धावस्था जीवन का सामान्य घटनाक्रम है एवं प्राकृतिक सन्तुलन की अनिवार्यता भी। शरीर के विभिन्न अंगों की संचित कार्य क्षमताओं में धीरे–धीरे होनेवाली कमी से सम्बन्धित है।[1]"

वृद्धों की सहिष्णुता भाव :-

समाज में सहनशीलता होता है तो मनुष्य अपने जीवन में खुशी से रह सकते हैं। इसके लिए 'स्वयं' (स्वयं का अर्थ स्वार्थ) को छोड़कर जीना जरूरत है। सहनशीलता लोगों को अपने नियति पर चलते हुए अपने दृष्टिकोण, जीवनशैली और व्यवहार को समझने की अनुमति देती है। जब व्यक्ति बूढ़े होते हैं तब उनहें मानसिक और शारीरिक आराम की आवश्यकता होता है। बुजुर्ग जब बेटा–बेटी काम की वजह से दूसरी जगहों पर निवास करते हैं तब उनके बच्चों का पालन–पोषण में सहयोग करते हैं। बेटे–बेटी माँ–बाप की इच्छा का परवाह नहीं करते हैं। आराम लेने वाले उम्र में उनको बच्चों के पीछे दौड़ना, उनसे खेलना, खाना खिलाना आदि मुश्किल होता है। इसका प्रसंग मालती जोशी की कहानी "ये कहाँ आ गए हम" के अनुसार अमृता हमेशा काम की वजह से विदेश जाना पड़ता है। तब उसके बच्चों को अपनी माँ के पास छोड़कर चली जाती है। अमृता की माँ बूढ़ी होते हुए भी बिना आराम कर अमृता के बच्चों की देखे–रेख में व्यस्त रही हैं। इसे मालती जी अमृता की माँ का विचार द्वारा अभिव्यक्त करती हैं "शायद इसीलिए उस रात मैं सारी चिंताओं से मुक्त होकर घोड़े बेचकर सोई थी। कार्तिक ठीक कहता है, अब मेरी उम्र बच्चे पालने की नहीं है। जब अपने बच्चे पालते हैं तो शरीर में शक्ति होती है, मन में उमंग होती है। नाती–पोतों को थोड़ी देर को खिलाना और बात है। पर माँ बनकर पालना बहुत मुश्किल है। यह मुश्किल काम मैं साल भर से कर रही थी। एक नहीं, दो–दो बच्चों की सार–सँभाल कर रही थी। इसीलिए बेहद थक गई थी।[2]" सहनशीलता के कारण वे अपने फुरसत समय को बेटा–बेटी और पोता–पोती के

लिए त्याग कर देती हैं।

स्वार्थ विहीन वृद्ध :-

समाज में लोग दूसरों की भलाई के लिए अपने सब कुछ त्याग करते हैं। इस कतार में पारिवारिक माँ–बाप, कुछ सास–ससुर आ सकते हैं। इसका संदर्भ हमें मालती जोशी की कहानी "यशोदा माँ" के अनुसार जैसे पुराण में होने वाली यशोदा श्रीकृष्णा को हमेशा खाना खिलाती रहती है वैसे इस कहानी में भी माँ अपने बेटे के लिए बड़े होने पर भी उनका खान–पान का ध्यान रखना चाहती है। बेटे विदेश में होने पर भी उसका पसंदीदा खान–पान, बहू के लिए साड़ियाँ, मसाले और पोता–पोती के लिए थैलियाँ आदि सब कुछ बनाकर भेजती है। आजकल यहाँ के सभी चीज विदेश में मिलता है। माँ अपने संतुष्टि के लिए बच्चे इनकार करने पर भी भिजवाती हैं। इसे उल्लेख करते हुए बाप ने कहा "वह बेवकूफ औरत इसीलिए जिंदा है कि पोते–पोतियों के पोतड़े सीती रहे, बहू की रसोई के लिए मसाले कूटती रहे, बेटे के लिए मठरी और खुरमे बनाती रहे। मैं आजकल क्या करता हूँ, पता है? जब सामान देने जाता हूँ तो उन बच्चों से कह देता हूँ कि अगर तुम्हारा सामान ओवरवेट होने लगे तो सबसे पहले यह पार्सल उठाकर फेंक देना, हमें बताने की भी जरूरत नहीं है और वहाँ अगर कोई पंद्रह दिन तक सामान लेने न पहुँचे तो सब खा–पी कर खत्म कर देना, जरा भी संकोच मत करना"[3]। और ननद कहती है "यह सारा जतन वे बेटे के लिए नहीं, अपने लिए कर रही हैं। उनके लिए जीने का बहाना है यह। जीजा जी ठीक कहते हैं, जिस दिन यह बहाना नहीं रहेगा, वह मर जाएँगी।[4]"

परिपक्व निर्णय :-

मशीनीकरण के कारण सारी दुनिया की गतिविधियाँ बहुत तेजी से चल रहा है। इसके अनुसार समस्याएँ भी अधिक हो रहा है। उन समस्याओं के लिए उचित निर्णयन लेने के लिए परिपक्वता महत्त्वपूर्ण होता है। परिवारिक जीवन में कई बार अनेक कठिन समस्यएँ और गंभीर स्थितियों को सामना करना स्वभाविक है। तभी अनुभवपूर्ण वृद्ध लोग उचित सुझाव देकर अच्छा रास्ता दिखाते हैं। बच्चे काम की वजह से विदेश गएं तो वृद्ध लोग अपने मानसिक और शारीरिक स्वस्थय पर ध्यान रखते हैं। आजकल अधिकतर बच्चे विदेश में काम करते हैं। यह वर्तमान समय का प्रवृत्ति है। इसलिए बुजुर्ग लोग आत्मनिर्भर रहना और खुद देख–रेख करने की तैयारी में रहते हैं। मालती जोशी की कहानी "प्रलय के बावजूज" में इसका जिक्र मिलता है। इसके अनुसार आभा और आलोक दोनों विवाह के बाद विदेश में काम करते हुए जीवन बिता रहे हैं। दोनों के जीवन विदेश में खशी से चलाने से उनके माता–पिता राहत से जीवन बिता रहे हैं। हमेशा उनके माता–पिता आपस में एक दूसरे से मित्र–भाव से आदान–प्रदान करके जीवन गुजार रहे हैं। पर एक दिन आभा और आलोक किसी कारण वश अलग हो जाते हैं। इस विषय आभा के माँ–बाप को ही पहला पता चलता है तो वे बहुत दुखी होते हैं। उस दिन आभा के माँ–बाप की शादी की सालगिरह मुबारक अदा करने के लिए आलोक की माँ आते हैं। तब अपने बच्चों के तलाक का विषय जानकर उनका मन स्तंभित हो जाता है। बहू आभा अच्छी लड़की होने के कारण अपने संपत्ति को आभा–आलोक के बच्चे के नाम पर लिख देने की परिपक्व निर्णय लेती है। इस निर्णय से आभा के माता–पिता इनकार कर देते हैं। इसके बारे में आलोक की माँ का कथन है "नहीं, मैं अपने पूरे होशोहवास में हूँ। आज की शाम में वाकई उन खशकिस्मत बच्चों के नाम करना चाहता हूँ, जो जन्म लेने की जहमत से बच गए। हम चाहें तो एक–दूसरे को इसके लिए बधाई भी दे सकते हैं।[5]"

मार्गदर्शन व परामर्श :-

वर्तमान समाज में आधुनिक युवा पीढ़ियों को मार्गदर्शन देना परमावश्यक है। इसे पूर्ती करने के लिए हमें बुजुर्ग लोगों का अनुभवभरी जीवन और मार्गदर्शन मदद करता है। इसलिए बुजुर्ग बच्चों को मार्गदर्शन देकर उन्हें भविष्य की समस्याओं को हल करने में मदद करते हैं। वे व्यक्तिगत, सामाजिक, भावनात्मक एवं व्यवसायिक विकास के लिए रास्ता दिखाते हैं। परिवार में बुजुर्ग अपने बच्चों को बोझ न रहकर मार्गदर्शक बन जाते हैं एवं उनकी सुखदायक जीवन के लिए नींव डालते हैं। पारिवारिक गंभीर स्थितियों में वे अपने अनुभवों से हल करते हैं। इसका उल्लेख मालती जोशी जी की कहानी "तुम मेरी राखो लाज हरि" के अनुसार संध्या युवा विधवा है। उसके पति शहीद है। संध्या के पति की मृत्यु के बाद अपनी मायका में रह न सकी। इसलिए वह अपनी ससुराल में रह कर कॉलेज और कम्प्यूटर क्लास जाकर अपना जीवन गुजार रही है। घर की जिम्मेदारियाँ सास संभालती है। बाहर का कार्य ससुर संभालते हैं जैसे संध्या को कॉलेज और कम्प्यूचर क्लास ले जाना और वापस घर ले आने का जिम्मेदारी ससुर का है। सास–ससुर दोनों उसको अपनी बेटी की तरह देख–भाल करते हैं और अपनी बहू की सुख के लिए सब कुछ त्याग कर देते हैं। संध्या अपने पति की मृत्यु के बाद कोई सुभकार्यों में भाग नहीं लेती है अगर भाग लेती है तो अपशकुन करके दूसरों की निंदा का पात्र बन जाती है। पर सास–ससुर दोनों उसे बोझ न समझ कर उसी लिए दूसरा विवाह कर पर विचार वीमर्श करते हैं। ससुर पिता के स्थान पर रह कर कन्यादान करके उसके प्रति अपनी जिम्मेदारी निभाने का इरादे में हैं। इससे संबंधित सास का कथन है "मन में एक ही बात थी कि अब किसके लिए जोड़ना है। संध्या के पास तो सरकार का और समाज का दिया बहुत है। जिंदगी आराम से कट जाएगी। वैसे भी उसका एम.ए. पूरा होते न होते हम लोग उसकी शादी की सोच रहे थे। हमीं लोग कन्यादान करेंगे। भाई नहीं रहा तो क्या हुआ, सविता के लिए एक बहन तो हो जाएगी।[6]"

नई-पीढ़ी को वृद्धों की सहयोग :-

आज के मशीनीकरण दुनिया में मनुष्य में समझ की अभाव के कारण ही जीवन जीने के लिए काम के पीछे–पीछे दौड़ कर रहा है। इसी कारण उनको थोड़ा आराम लेने और पास बैठकर बात करने का समय नहीं हाता। पर बूढ़े लोग अपने अनुभव के कारण बच्चों के हालत समझकर उसके अनुसार जीवन गुजार रहे हैं। बच्चों के मशीनीदौड़ में उनके कार्यभार समझकर बुजुर्ग यथासंभव घर के काम में बेटे–बहू की सहयोग देते हैं। इसका आधार मालती जोशी की कहानी "एक सार्थक अहसास" में मिलता है। इस कहानी के अनुसार विनोद की पत्नी कामकाज करने वाली बहू है। दोनों आपस में अकसर किसी विषय पर झगड़ा करते रहते हैं। इस हालतों को देखते हुए विनोद के विधुर पिताजी बहुत दुखी होते हैं। बेटा–बहू के झगड़ा में झांकने–सलाह देने को वे तैयार नहीं हैं। वे घर में बहू को यथासंभव उतनी सहायता करते हैं फिर भी वे अकसर मन में घर की बोझ समझते रहते हैं। पर बहू उनको घर की मुखिया का स्थान देती है। जब विनोद नौकरी छोड़ देता है तो तब से घर का सारा खर्च विनाद की पत्नी ही देख रही है। इस असहज वातावरण को समझकर ससुर अपने दुखी बहू को आश्वास्त करके "जो हो गया, सो हो गया, अब हिम्मत से और शांति से काम कर लो। चिंता करने की जरूरत नहीं है, मैं हूँ न तुम्हारे साथ।[7]"

अकेलापन :-

मनुष्य सामाजिक प्राणी है फिर भी आमतौर पर आधुनिक समाज में बूढ़े लोगों की अकेला जीवन

ज्यादातर पाया जाता है। यह एक बीमारी की तरह समाज को बिगाड़ रहा है। परिवार में बेटा–बेटी काम की वजह से स्थानांतरण करते हुए जाने से वृद्ध लोग अकेले हो जाते हैं। अधिकतर घरों के बेटे और बेटियाँ विदेश में रहते हैं। आज के जमाने में एक नई प्रवृत्ति बन गई है। बूढ़े लोग घर में अकेले रहते हैं नहीं तो उनको वृद्धाश्रम में डाल देते हैं। इसी कारण उनके तन और मन अस्वस्थ हो जाता है। इसका चित्रण मालती जी की कहानी "साँझ की बेला, पंछी अकेला" के आधार पर कुमार साहब काम की वजह से अपने गाँव छोड़कर पत्नी और बेटे सचिन के साथ शहर में आकर बड़े बंगलो में रहते हैं। अब उनका बेटा बड़ा होकर काम के कारण विदेश चला जाता है तो घर में सन्नाटा छा जाता है। कुमार साहब अपनी विधवा माँ को गाँव में छोड़कर आते वक्त उनका मन जिस तरह अकेलापन की वेदना में तडपता है अब उनका बेटा विदेश जाने के बाद उसी वेदना खद महसूस करते रहते हैं। अकेलापन की वेदना को कुमार साहब की पत्नी की कथन में "अगर पता होता कि आखिर में हमीं दोनों को रहना है तो इतना बड़ा बँगला क्यों बनवाते ? अपने लिए तो दो कमरे काफी होते।[8]"

शारीरिक–मानसिक कमजोरियाँ :-

जीवन वहीं सफलदायक है जिसमें व्यक्ति अपने पद का उत्तरदायित्व को समझता है। मानव आधुनिकता की आँधी दौड़ में अपने कर्तव्य को भूलकर चल रहा है। पहले पहल मनुष्य संयुक्त परिवार में रहते हैं तो वृद्धाश्रम का जरूरत नहीं पड़ता है। पर परिवर्तित पारिवारिक स्वरूप के कारण आज अधिक संख्या में वृद्धाश्रम बढ़ रहा है। क्योंकि काम की वजह से आज की पीढ़ी गाँव से शहर और शहर से विदेश की ओर प्रस्थान कर रहे हैं। बुजुर्ग अपनी पूरी जिंदगी अपने बच्चों के पालन–पोषण करने में गुजारते हैं। जब वे अंतिम समय पहुँचते हैं तब वे पूरी तरह शारीरिक व मानसिक कमजोरियाँ के जकड़ में आ जाते हैं। व्यक्ति अपने भाव और विचारों को औरों से साझा करने वाली प्राणी है। जब इसका अभाव होता है तब वे मानसिक रोगी बन जाते हैं। तत्पश्चात शय्याग्रस्त हो जाते हैं और दूसरों की आश्रय में रहना पड़ता है। इसका संदर्भ हमें मालती जी की कहानी "विश्रांति" के मुताबिक विमल घर के बड़े बेटे होने के कारण उसके माता–पिता उनके साथ रहते हैं। पिताजी के पेंशन आ रहा है। पिताजी बीमार के कारण बहुत कष्ट भागना पड़ता है। उनके यहाँ इलाज के अभाव के कारण शहर में अपने बेटी बेला के घर में रहकर चिकित्सा करने के लिए जाते हैं। एक महीने बेटी के यहां रहकर इलाज करने के बाद घर की बुरी वातावरण बताकर वह अपने माता–पिता को छोटे भाई कमल के घर भेज देती है। कमल की पत्नी आठ दिन तक उनकी सेवा–सुश्रुषा करती है। फिर वह भी सेवा करने और खाना देने के लिए मना कर देती है तो पिताजी अपनी पत्नी सावित्री से बोले "सावित्री, अब बुढ़ापे में मेरी मिट्टी और खराब मत करो। अपनी बची–खची इज्जत लेकर घर लौट चलो।"[9]

स्वार्थ प्रवृत्ति :-

हर मनुष्य के गुण में स्वयं के कारण स्वार्थ प्रवृत्ति का भाव उत्पन्न होता है और यह स्वार्थ प्रवृत्ति हठवादिता का कारण बन जाता है। बूढ़े लोग अपने बुढ़ापे में किसी के लिए अपने नीति–नियमों को और आचरणों को बदलना पसंद नहीं करते हैं। तत्पश्चात् वे परिवार में नए आए बहू को उन्हें समझने की मौका नहीं देते हैं। इस स्वभाव को मालती जोशी अपने पात्रों द्वारा कहानियों में प्रतिबिंबित करती हैं। दुनिया में होने वाले हर जीव स्वार्थ भाव से भरी हुई है चाहें जानवर हो या मनुष्य हो। समाज के बुजुर्ग में यह प्रवृत्ति अधिकतर पाया जाता है। 'मुझे' और 'स्वयं' दोनों मानव के जन्म से उनके साथ पैदा होने वाले स्वभाव हैं। यह प्राकृतिक व स्वाभाविक

है। दोनों प्रवृत्तियाँ मनुष्य जीवन को बुरी हालत पहुँचाता है। यह प्रवृत्ति की वजह से परिवार में विभाजन हो जाता है। इस प्रवृत्ति का संदर्भ मालती जोशी की "एक सार्थक अहसास" कहानी में नायक विनाद के पिताजी के मित्र दुबे स्वार्थी है। वे अपने बेटे बहू को घर में साथ रहने नहीं दिया। अपने सुख के लिए अलगाव करके बाहर भेज देते हैं। विनोद के पिताजी से "वे बोले, श्नहीं यार, एक घर में दो चूल्हे अच्छे नहीं लगते। फिर मैं अलग की गृहस्थी बसाऊँ भी तो किसके भरोसे। आपकी भाभी से तो एक बाल्टी भी नहीं उठती। बस, अपना काम खुद कर लेती हैं, यही गनीमत है। और भैया देखो, कल को हाथ–पैरों से लाचार हो गए तो इन्हीं लोगों के पास आना है, फिर नाक कटाने से फायदा। अभी मँझले को थोड़ी सद्बुद्धि आ गई है तो लाभ उठा लूँ। वैसे बड़े से कहकर जा रहा हूँ कि हमारा कमरा महफूज रखना, हम कभी भी लौट सकते हैं। दिल्ली की ससुरी हमें न गर्मी सहन होती है, न जाड़ा। कितने दिन निभती है, देखते हैं।[10]"

वृद्धावस्था की चुनौतियाँ :-

वृद्धावस्था मनुष्य जीवन का संध्याकाल कहा जाता है। वृद्धावस्था तक आते–आते मनुष्य का शरीर थक जाता है। वृद्धावस्था कई चुनौतियाँ से भरी हुई है। चुनौतीपूर्ण इस अवस्था को सामना करना बूढों के लिए बहुत मुश्किल लगता है। वर्तमान समय में वृद्ध लोग आर्थिक व शारीरिक सहायता के लिए अपने बेटे–बेटी पर निर्भर रहना पड़ता है। कुछ लोग उनके लिए सेवा–सुश्रुषा करते हैं तो अनेक लोग अपने घरवालों के पक्ष से सहायता न मिलने के कारण अनाथ बन कर सड़क पर खाने–पीने के लिए भटकने की स्थिति आ जाता है। कई बुजुर्ग भावुक होकर अपने वसीयत संतानों के नाम पर कर देते हैं और कुछ बेटे–बेटियाँ जबरदस्ती खुद अपने नाम पर करवा देते हैं। उनको आर्थिक व शारीरिक सहायता के लिए अपने बेटे–बेटी पर निर्भर रहना पड़ता है। इसका का संदर्भ मालती जोशी की कहानी "गृह–प्रवेश" में मनोज अपनी पत्नी कनक के साथ अलग रहने के लिए तैयारियाँ कर रहा है। तब पिताजी की तबीयत ठीक नहीं होने के कारण अपने पिताजी का इलाज होने के बाद घर अलग जाने के लिए सोच रहा है। इलाज का कर्च अधिक होने से पिताजी के दुःख का अहसास बेटी का कथन द्वारा प्रकट करते हैं "मैं अपनी पसीने की कमाई डॉक्टरों पर नहीं लुटाऊँगा। लाख–डेढ़ लाख कम नहीं होता है" और "...मैं बच्चों को टेन्शन नहीं डालना चाहता। न उनके लिए कर्ज छोड़ना चाहता हूँ। दिन–भर बैठे–बैठे माँ को हिसाब समझाते रहते हैं। कहते हैं ग्रेज्यूटी की रकम फिक्स में डाल देंगे। उसका ब्याज आता रहेगा। पेन्शन भी मिलेगी। तुम्हारा काम चल जाएगा। बचचों को परेशान मत करना। पंकज से कहते है––दो साल सब्र से काम लो। फिर तुम अपने पैरों पर खड़े हो जाओगे। तब तक माँ की आय में गुजारा करना। भाइयों के आगे हाथ मत फैलाना। उनहें अपनी भी गृहस्थी देखनी होती है।[11]"

उपसंहार :-

बुजुर्ग अपने वृद्धावस्था के लिए शुरू से ही मानसिक और शारीरिक तैयार होना आवश्यक है। वृद्ध लोग अपने संपत्ति और धन–दौलत को बच्चों के पास सारा सौंप देना आवश्यक नहीं है। अपने लिए एक भाग बचा कर शेष को सौंप देना अच्छा है। बुजुर्ग लोग अपने बुढ़ापे में परिवार वालों को मरण तक किसी न किसी तरह की सहायता करके उनको अपना महत्त्व दिखाना चाहिए। जितना संभव हो उतना उम्र तक कमा करके चलते–फिलते दूसरों को बोझ न रहना जरूरी है। हमेशा दूसरों का परावलंबन बिना रहने का आदत रखना उत्तम है। बुजुर्ग अपने स्वस्थय में भी ख्याल रखना सर्वश्रेष्ठ है। अस्पताल और औषधीय खर्च के लिए कुछ नकद

बचाकर हाथ में रखें तो आपातकालीन खर्च में मदद होगा। बुजुर्ग अपने खाना व्यवस्था में भी सावधान रहना अति उत्तम है। शरीर के लिए अनुचित भोजन को अस्वीकार करना सर्व श्रेष्ठ है। बिना पूछने पर बच्चों को सलाह देना अनावश्यक है। वृद्ध लोग अपने को किसी भी कार्य में व्यस्त रहना परमावश्यक है। पोता–पोती के साथ अपनी अनुभवों को साझा करें तो वह उनके भविष्य के लिए मदद होगा। तभी ही उनका दिमाग नित्य चुस्त रहेगा। वृद्धावस्था में बुजुर्ग जितना संभव हो उतना व्यायाम करना बहुत जरूरी है, क्योंकि वह मात्र ही मन और शरीर दोनों को ताजा रखने की मदद करता है। उनके शरीर को समय के अनुसार आराम देना चाहिए। ये सभी को परिपालन करें तो वृद्धावस्था हमारे लिए बोझ ग्रस्त नहीं सुखदायक से गुजर सकते हैं। ये सभी तत्वों का इशारा मालती जोशी की कहानियों द्वारा हमें व्यक्त किया गया है।

संदर्भ ग्रंथ :-

1. तिवारी स्वाति, अकेले होते लोग, वाणी प्रकेशन, नई दिल्ली, 2006, पृ.सं–31
2. जोशी मालती, एक घर हो सपनों का, ये कहाँ आ गए हम, साक्षी प्रकाशन, दिल्ली, 2018 पृ.सं–42
3. जोशी मालती, रहिमन धागा प्रेम का, यशोदा माँ, परमेश्वरी प्रकाशन, 2022 पृ.सं–75
4. वहीं, पृ.सं–76
5. जोशी मालती, रहिमन धागा प्रेम का, प्रलय के बावजूज, परमेश्वरी प्रकाशन, पृ.सं–48
6. जोशी मालती, रहिमन धागा प्रेम का, तुम मेरी राखो लाज हरि, परमेश्वरी प्रकाशन, पृ.सं–89
7. जोशी मालती, रहिमन धागा प्रेम का, एक सार्थक अहसास, परमेश्वरी प्रकाशन, पृ.सं–61
8. जोशी मालती, वो तेरा घर ये मेरा घर, साँझ की बेला पंछी अकेला, किताबघर प्रकाशन, 2018 पृ.सं–19
9. जोशी मालती, महकते रिश्ते, विश्रांति, साक्षी प्रकाशन, 2018 पृ.सं–119
10. जोशी मालती, रहिमन धागा प्रेम का, एक सार्थक अहसास, परमेश्वरी प्रकाशन, 2022 पृ.सं–50
11. जोशी मालती, एक घर हो सपनों का, गृहप्रवेश, साक्षी प्रकाशन, 2018 पृ.सं–66

E. JACQUELINE, Research Scholar, (UP21G9651001)
Dr. ANURADHA PAKALAPATI,
Assistant Professor & Research Supervisor,
Department of Hindi, School of Languages, Vels Institute of Science, Technology and Advanced Studies (VISTAS)
Mail ID : anuradha.hindi@velsuniv.ac.in
Mobile No- : 7299012063
Mail ID : jacquelinejhon@gmil.com
Mobile No-: 9841777187

संगम Impact Factor : 6.632
Website : www.ginajournal.com
ISSN : 2321-8037
विशेषज्ञ समीक्षित पत्रिका A Peer Reviewed International Refereed Journal
SANGAM
गीना देवी शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित साहित्य, शिक्षा, संस्कृति एवं शोध को समर्पित मासिक
Vol. 12, Issue 1-2
पृष्ठ : 101-105

लैगिंक असमानता का व्यक्तित्व विकास पर प्रभाव

प्रवीण कुमार जाखड़, पी.एच.डी. शोद्यार्थी
अनुराधा चौधरी, पी.एच.डी. शोद्यार्थी
टांटिया विश्वविद्यालय, श्रीगंगानगर, राजस्थान।

सारांश :-

प्रस्तुत शोध में लैगिंक असमानता का व्यक्तित्व विकास पर प्रभाव का अध्ययन किया गया हैं। अध्ययन में प्राप्त आंकडों के आधार पर निष्कर्ष प्राप्त किये गए है। यह अध्ययन राजस्थान के श्री गंगानगर जिले के विभिन्न उच्च माध्यमिक विद्यालयों मे अध्ययनरत् कुल 600 विद्यार्थियों पर किया गया है। लैगिंक असमानता का व्यक्तित्व विकास पर प्रभाव का अध्ययन के लिए स्वनिर्मित उपकरण का उपयोग किया गया है। निष्कर्ष रूप में पाया गया कि उच्च माध्यमिक विद्यालयों अध्ययनरत् विद्यार्थियों में लैगिंक असमानता का व्यक्तित्व विकास में सार्थक अन्तर पाया नहीं गया हैं।

मुख्य शब्द :- लैगिंक असमानता, व्यक्तित्व विकास।

प्रस्तावना :-

परिवार में बालक और बालिकाएं दोनों ही जन्म लेते है। उनका पालन पोषण होता है तथा भविष्य के लिए उन्हें तैयार किया जाता है। पारिवारिक वातावरण अर्थात परिवार की एकाकी तथा संयुक्त होना बालक–बालिकाओं के प्रति अभिवृत्ति अहम भूमिका का निर्धारण करता है। इसके अलावा परिवार का आर्थिक सामाजिक स्तर भी बालक बालिकाओं के प्रति समान अभिवृत्ति रखने में सक्षम नहीं होता, पारिवारिक रूढियॉ रीति –रिवाज, परम्पराओं जहाँ एक ओर पुत्र को श्रेष्ठ मानती है पुत्र माता–पिता की सम्पत्ति का वारिस होता है तथा पुरूष वर्ग में आने के कारण उसके प्रति की जाने वाले आकाक्षायें, इच्छायें तथा उनके कर्तव्य भिन्न होते है जहाँ एक ओर पुरूष को कठिन संयमी, रोजगाररत, आर्थिक रूप से सक्षम, अधिक स्वतन्त्र, निर्भर तथा क्रोध के प्रति सकारात्मक, अभिवृत्ति के रूप में पाला जाता है। वहीं दूसरी ओर बालिका को पराई वस्तु परायों के घर जाना है, कोमल, सरक्षित दया के पात्र के रूप में विकसित किया जाता है। यद्यपि आज ये मायने अनेक अर्थो में परिवर्तित हो चुके है। परन्तु किसी न किसी रूप में कम या ज्यादा मायने में समाज में आज भी लैंगिक असमानता विद्यमान है जो बालक तथा बालिकाओ के व्यक्तित्व विकास को प्रभावित कर सकता है। व्यक्तित्व अपूर्व और विशिष्ट होता है हम सबका व्यक्तित्व अपने ही ढंग का होता है।

किसी समाज में जब लिंग के आधार पर बालिका और बालक में भेदभाव किया जाने लगता है तब सामान्य शब्दों में इसी दशा को हम लैगिक असमानता कहते है। लैंगिक असमानता शब्द का उपयोग जैविकीय

तथा सामाजिक दोनों अर्थो मे किया जाता है। जीवविज्ञान के अनुसार लिंग का तात्पर्य एक विशेष जैविकीय रचना से है जिसमें कुछ विशेष प्रकार की शारीरिक और मानसिक विशेषताओं का समावेश होता है। इस दृष्टिकोण से लैगिक विषमता का तात्पर्य उन सामाजिक मूल्यों और मानदण्डो से है जो सांस्कृतिक आधार पर बालिकाओं व बालको में से किसी एक को दूसरे की तुलना में अधिक महत्वपूर्ण मानते हुए उन्हे वैवाहिक पारिवारिक सामाजिक तथा आर्थिक क्षेत्र में अधिक अधिकार देते है। अनके जनजातियाँ ऐसी है जिनमें पुरूषों को सभी क्षेत्रों में स्त्रियों के अधीन माना जाता है तथा समाज में पुरूषों को कोई महत्पूर्ण अधिकार नहीं दिये जाते इसके विपरीत संसार के अधिकांश समाजों मे पुरूषों को स्त्रियों की तुलना में सभी क्षेत्रों में अधिक अधिकार मिले हुए है। स्पष्ट है कि लैंगिक की विवेचना प्राणीशास्त्रीय आधार पर नही की जा सकती क्योंकि सामाजिक मूल्यों के आधार पर जब एक समूह को दूसरे की तुलना में अधिक अधिकार मिल जाते है तो उसके व्यक्तित्व का विकास भी उसी तरह होने लगता है। मनोवैज्ञानिको ने मनोवैज्ञानिक लक्षणों के आधार पर व्यक्तित्व का वर्गीकरण किया है। व्यक्तित्व के निम्न तीन प्रकार बताये है :–

(अ) अन्तर्मुखी :– अन्तर्मुखी व्यक्तित्व लक्षण, स्वभाव, आदतें, अभिवृत्तियॉ और अन्य चालक बाहा रूप में प्रकट नही होते है। इसलिये ऐसे व्यक्तियों को अन्तर्मुखी कहा जाता है। इनका विकास बाहा रूप से न होकर आन्तरिक रूप से होता है।

(ब) बहिर्मुखी :– बहिर्मुखी व्यक्तित्व के मनुष्य अन्तर्मुखी व्यक्तित्व वाले मनुष्यो से विपरीत स्वभाव के होते है। इस प्रकार के व्यक्तित्व वाले व्यक्तियों का झुकाव बाह्य तथ्यों की ओर होता है ये संस्कार के भौतिक और सामाजिक लक्ष्यों में विशेष रूचि रखते है, वे विचारों और भावनाओं को स्पष्ट रूप से व्यक्त कर सकते है।

(स) उभयमुखी :– इस प्रकार के व्यक्ति कुछ परिस्थितियों मे बहिर्मुखी तथा कुछ अन्तर्मुखी होते है। जैसे एक व्यक्ति अच्छा बोलने वाला और लिखने वाला है। किन्तु एकांत मे कार्य करना चाहता है। शोधकर्ता ने अपने शोध अध्ययन हेतु जुंग द्वारा वर्गीकृत तीनों प्रकार के व्यक्तित्व आयामों को आधार माना है।

प्रस्तुत शोध का महत्व :–

प्रत्येक परिवार में बालक एवं बालिका दोनों सम्मिलित होते है। तथा किसी न किसी रुप मे दोनो के पालन–पोषण मे लैंगिक विभिन्नता पाई जाती है। इसका कारण कुछ भी हो परन्तु इससे बालक–बालिका का व्यक्तित्व एवं मानसिक स्तर प्रभावित होता है। परिवार के रीति–रिवाज, परम्परायें बालक एवं बालिका को एक विशेष दिशा मे अग्रसर होने हेतु बाध्य करते लें किशोरावास्था का समय अत्यधिक संवेदनशील काल होता है जिस समय बालक अपने आप मे एक नवीन अनुभूति का अनुभव करता है अतः इस अवस्था मे जब किशोर बालक एवं बालिकाओ के व्यवहार मे लिंग विभेद के कारण असमानता दिखाई देती है तो उनका व्यक्तित्व प्रभावित होता है। साधारणतया प्रत्येक भारतीय परिवार मे स्त्री और पुरुष दोनो से अलग–2 भूमिका की अपेक्षा की जाती है और उसी भूमिका के निर्वाह हेतु किशोर बालक–बालिकाओ से लिंग के अनुसार कुछ विशेष अपेक्षायें की जाती है। क्या इन अपेक्षाओं के कारण किशोर बालक–बालिका का व्यक्तित्व प्रभावित होता है। उनमे कुछ नवीन गुणो का आर्विभाव होता है या कुछ दुर्गुण विकसित हो जाते है। क्या उनका व्यक्तित्व अंर्तमुखी, उभयमुखी, या बर्हिमुखी हो जाते है। यह उन्हे परिवार मे प्राप्त वातावरण ही निर्धारित करता है। पारिवारिक वातावरण से प्राप्त लैंगिक विभेद क्या किशोर बालक–बालिका के व्यक्तित्व को प्रभावित करता है, नहीं करता है अथवा कितना प्रभावित

करता है। यह जानने के लिये शोधार्थी द्वारा लैंगिक असमानता और व्यक्तित्व मे संबंध जानने का प्रयास किया गया है। इसी प्रकार लैंगिक असमानता स्तर मे भी संबध जानने का प्रयास इस शोध मे किया गया है। यद्यापि बालक एवं बालिकाओ का व्यक्तित्व उन्हे उनके वंशानुक्रम से प्राप्त होती है। परन्तु इस व्यक्तित्व का विकास पारिवारिक वातावरण मे ही होता है। क्या परिवार मे किया जाने वाला लैंगिक विभेद किशोर बालक–बालिका के व्यक्तित्व को प्रभावित करता है, अर्थात् उनके सोचने–समझने की शक्ति, कल्पना, निर्णय लेने की क्षमता लैंगिक विभेद से प्रभावित होती है। अर्थात् यह जानने हेतु इस विषय का चयन किया गया।

समस्या कथन –

"लैगिंक असमानता का व्यक्तित्व विकास पर प्रभाव।"

अध्ययन के उद्देश्य :–

1. उच्च माध्यमिक विद्यालयों मे अध्ययनरत् बालक एवं बालिकाओं की लिंग असमानता के मध्य तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. उच्च माध्यमिक विद्यालयों मे अध्ययनरत् बालक एवं बालिकाओं के व्यक्तित्व विकास का तुलनात्मक अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पनाएँ :–

1. उच्च माध्यमिक विद्यालयों मे अध्ययनरत् बालक एवं बालिकाओं की लिंग असमानता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. उच्च माध्यमिक विद्यालयों मे अध्ययनरत् बालक एवं बालिकाओं के व्यक्तित्व विकास में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

न्यादर्श :–

प्रस्तुत शोध में न्यादर्श के रूप में राजस्थान के श्रीगंगानगर जिले के विभिन्न उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् 400 किशोर विद्यार्थियों का चयन किया गया है।

शोध में प्रयुक्त उपकरण :–

"लैगिंक असमानता का व्यक्तित्व विकास पर प्रभाव" का अध्ययन के लिए स्वनिर्मित उपकरण का उपयोग किया गया है।

प्रदत्तों का विश्लेषण व विवेचन –

1. उच्च माध्यमिक विद्यालयों मे अध्ययनरत् बालक एवं बालिकाओं की लिंग असमानता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

सारणी संख्या – 1

संस्थान	संख्या	मध्यमान	प्रमाप विचलन	टी मान	सार्थकता का स्तर
बालक	200	114.56	8.029	1.842	स्वीकृत
बालिकाएं	200	117.02	9.521		

व्याख्या :-

उपर्युक्त तालिका सं. 1 में उच्च माध्यमिक विद्यालयों मे अध्ययनरत् बालक एवं बालिकाओं की लिंग असमानता स्तर के मध्यमानों, मानक–विचलनों एवं क्रान्तिक अनुपात मान को दर्शाया गया है। उच्च माध्यमिक विद्यालयों मे अध्ययनरत् बालक एवं बालिकाओं की लिंग असमानता स्तर के मध्यमान क्रमशः 114.56 एवं 117. 02 तथा मानक विचलन क्रमशः 8.029 एवं 9.521 गणना द्वारा प्राप्त किये गये हैं। इन दोनों के आधार पर गणना द्वारा क्रांतिक अनुपात मान 1.842 प्राप्त हुआ है। 0.01 सार्थकता स्तर का सारणी मान 2.59 दिया गया है जो कि गणना द्वारा प्राप्त क्रान्तिक अनुपात के मान से कम है। अतः निर्धारित परिकल्पना उच्च माध्यमिक विद्यालयों मे अध्ययनरत् बालक एवं बालिकाओं की लिंग असमानता में कोई सार्थक नहीं अन्तर है, स्वीकृत की जाती है। निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि उच्च माध्यमिक विद्यालयों मे अध्ययनरत् बालक एवं बालिकाओं की लिंग असमानता में कोई सार्थक नहीं अन्तर है।

2. उच्च माध्यमिक विद्यालयों मे अध्ययनरत् बालक एवं बालिकाओं के व्यक्तित्व विकास में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

सारणी संख्या – 2

संस्थान	संख्या	मध्यमान	प्रमाप विचलन	टी मान	सार्थकता का स्तर
बालक	200	188.14	9.0243	1.561	स्वीकृत
बालिकाएं	200	184.33	8.227		

परिकल्पना संख्या 2 के अनुसार उपर्युक्त तालिका सं. 2 में उच्च माध्यमिक विद्यालयों मे अध्ययनरत् बालक एवं बालिकाओं के व्यक्तित्व विकास के मध्यमानों, मानक–विचलनों एवं क्रान्तिक अनुपात मान को दर्शाया गया है। उच्च माध्यमिक विद्यालयों मे अध्ययनरत् बालक एवं बालिकाओं के व्यक्तित्व विकास के मध्यमान क्रमशः 188.14 एवं 184.33 तथा मानक विचलन क्रमशः 9.243 एवं 8.227 गणना द्वारा प्राप्त किये गये हैं। इन दोनों के आधार पर गणना द्वारा क्रांतिक अनुपात मान 1.561 प्राप्त हुआ है। 0.01 सार्थकता स्तर का सारणी मान 2.59 दिया गया है जो कि गणना द्वारा प्राप्त क्रान्तिक अनुपात के मान से कम है। अतः निर्धारित परिकल्पना उच्च माध्यमिक विद्यालयों मे अध्ययनरत् बालक एवं बालिकाओं के व्यक्तित्व विकास में कोई सार्थक नहीं अन्तर है, स्वीकृत की जाती है। निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि उच्च माध्यमिक विद्यालयों मे अध्ययनरत् बालक एवं बालिकाओं के व्यक्तित्व विकास में कोई सार्थक नहीं अन्तर है।

उपयोगिता :-

1. बालकों के लिये बालिकायें अपने कदम से कदम मिलाकर चलने वाला साथी समझना चाहिये। उन्हें खुद के बराबर रखना चाहिये।
2. परिवार में लैगिक असमानता का स्तर किशोर व अभिभावक के संबधो पर निर्भर होता है जहाँ एक ओर उचित मित्रवत सबंध किशोर की लैगिक असमानता में कमी लाते है वहीं दूसरी ओर कड़ा अनुशासन व बालक–बालिका में अन्तर लैगिक असमानता को बढ़ा देते है। प्रस्तुत शोध कार्य में शोधार्थी ने अभिभावकों

की लैंगिक असमानता सम्बन्धी अभिवृत्ति को किशोर बालक–बालिकाओं के व्यक्तित्व से जोड़ने का प्रयास किया है।

3. समाज में लड़कियो के महत्व को बढ़ाने के लिये पुरुषों महिलाओं और लड़कों सभी को सगंठित रुप मिलकर चलना होगा समाज की धारणा व सोच बदलेगी।

भावी शोध हेतु सुझाव :-

1. न्यादर्श के लिए बड़े न्यादर्श का चयन किया जा सकता है इसके लिए बालक–बालिकाओं की संख्या को बढ़ाया जा सकता है।
2. किशोर बालिकाओं की लैंगिक जागरुकता सम्बन्धी शोधकार्य भी अध्ययन का एक महत्वपूर्ण क्षेत्र हो सकता है। यह शोध कार्य प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों पर भी किया जा सकता है।

सन्दर्भ सूची :-

1. कुप्पू स्वामी– बाल व्यवहार एवं विकास, विकास पब्लिशिंग हाउस प्रा. लि. नई दिल्ली।
2. कपिल, एच. के. (2006), सांख्यिकी के मूल तत्व, आगरा : विनोद पुस्तक मंदिर।
3. सहाय, देवीना, 'आहार विज्ञान', न्यू एज इंटरनेशनल प्राइवेट लिमिटेड पब्लिशर्स, न्यू दिल्ली, 2019।
4. कृष्णलाल ''इमोशनल मैच्यूरिटी सेल्फ कोनफिडेन्स एण्ड एकेडमिक एचिवमेन्ट ऑफ एडोलसेन्स इन रिलेशन टू देयर जेन्डर एण्ड अरबन रूरल बैकराउण्ड'' AIJR Dec. 2015
5. डॉ. अरोड़ा रीता, सुदेश मारवाह (2005) ''शिक्षा मनो विज्ञान एवं सांख्यिकी'' शिक्षा प्रकाशन, जयपुर पृष्ठ संख्या (407–430)
6. डॉ. शर्मा, वी. एस. ''शिक्षा मनोविज्ञान'' साहित्य प्रकाशन आगरा (2004)
7. सुखिया, एस.पी. (1990) शैक्षिक अनुसंधान के मूल तत्व. आगराः विनोद पुस्तक मन्दिर।
8. सिंह अरूण कुमार एवं सिंह आशीष कुमार– व्यक्तित्व का मनोविज्ञान, प्रथम।
9. त्रिपाठी आर.बी. सिंह, आर.एन.– व्यक्तिगत का मनोविज्ञान गंगा सरन एण्ड गैंड संस, वाराणसी, 2001

संगम Impact Factor : 6.632
Website : www.ginajournal.com
ISSN : 2321-8037
विशेषज्ञ समीक्षित पत्रिका A Peer Reviewed International Refereed Journal
SANGAM
गीना देवी शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित साहित्य, शिक्षा, संस्कृति एवं शोध को समर्पित मासिक
Vol. 12, Issue 1-2
पृष्ठ : 106-112

मुसहर समुदाय की महिलाओं के स्वास्थ्य का समाजशास्त्रीय अध्ययन

डॉ आशा कुमारी
W/o – संजय कुमार सिंह
शांति भवन, पकड़ी मौलाबाग रोड, आरा–802301 (बिहार)

शोध सारांश :-

मुसहर समुदाय में आज भी परपरागत चिकित्सा पद्धति जीवित एवं सक्रीय है तथा व्यापक पैमाने ओर आज भी इसका उपयोग होता है। सरल समाज मे सामाजिक–सांस्कृतिक, आर्थिक एवं मनोवैज्ञानिक पक्षों का स्वदेशीय प्रक्रिया से गहरा सम्बन्ध है। यहाँ लोगों के आलौकिक ताकत–हानिकारक अथवा लाभदायक, में विश्वास का स्वास्थ्य और बीमारी के क्षेत्र में काफी हस्तक्षेप है। यह शोध आलेख प्राथमिक तथ्यों और द्वितीय तथ्यों पर आधारित है। अध्ययन का उपयोग मुसहर समुदाय की महिलाओं में स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता के बारे में जानना, इससे परिवार नियोजन एवं नये तकनिक से महिलाओं के स्वास्थ्य में हुए परिवर्तन के बारे में पता चलेगा। सरकार ने स्वास्थ्य के मोर्चे पर कमर कस ली है और हर नागरिक तक स्वास्थ्य सुविधाए पहुँचाने का बीठा उठाया है। स्वच्छ भारत मिशन, जल जीवन मिशन, उज्ज्वला, पोषण अभियान, मिशन इन्द्रधनुष जैसी योजनाओं के जरिये देश में बीमारियों का बोझ कम करने का प्रयास पूरे जोर शोर से किया जा रहा है। यह अध्ययन समाजशास्त्रीयों एवं विभिन्न सरकारों द्वारा बनाये जाने वाले योजनाओं में सहायक होगा।

कीवर्ड :- मुसहर समुदाय, स्वास्थ्य, महिला।

भूमिका :-

महिला अस्वस्थता अक्सर गरीबी, अज्ञानता जागरूकता का अभाव और चिकित्सीय सुविधा के अभाव में होता है। चूंकि महिलाओं के ही समाज तथा परिवार का आधार कहा जाता है। यदि महिलाओं ही अस्वस्थ है तो एक उज्जवल और निरोगी समाज की कल्पना ही नहीं जा सकती है। अतः महिला विकास हेतु यह अनिवार्य घटक है। आजादी के बाद से सरकार के समक्ष महिलाओ के स्वास्थ्य में सुधार एक महत्वपूर्ण चुनौती रहा है। वि ोशकर महिलाओं की जहां आज भी उचित चिकित्सा का आभाव पाया जाता है। यह एक सर्वविदित तथ्य है कि परिवार की धुरी में महिला होती है। उसकी स्वास्थ्य की स्थिति का सीधा प्रभाव परिवार के सदस्यों पर पड़ता है। यदि घर की महिला स्वास्थ्य है। उसके बच्चे भी स्वास्थ्य होंगे और परिवार के अन्य सदस्यों पर भी इसका सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार स्वास्थ्य केवल रोग अथवा दुर्बलता की

अनुपस्थिति को ही नहीं, बल्कि सम्पूर्ण शारीरिक, मानसिक तथा सामाजिक खुशहाली की स्थिति को कहते हैं। एक स्वास्थ्य महिला ही अपने परिवार का देखभाल व पोषण सम्बन्धी आवश्यकताओं की पूर्ति बेहतर ढंग से कर सकती है। यद्यपि इसका स्वास्थ्य किसी भी व्यक्ति के लिए आवश्यक जरूरत है क्योंकि एक स्वस्थ व्यक्ति न केवल शारिरिक व मानसिक रूप से वरन सामाजिक रूप से भी स्वयं को अच्छा महसूस करता है और जिम्मेदारियों का निर्वाहन करने में सक्षम होता है। फिर भी महिला स्वास्थ्य अपेक्षाकृत अधिक महत्वपूर्ण है, क्योंकि महिलाओं पर मां, पत्नी, बहन व बेटी के रूप में जीवन मे अनेक जिम्मेदारियों के निर्वाहन के दायित्व होता है। स्वास्थ महिला स्वस्थ सन्तान को जन्म देकर स्वस्थ व खुशहाल भावी पीढ़ी का निर्माण करती हैं। इसके साथ ही स्वस्थ महिला परिवार व राष्ट्र के लिए प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से अनेक महत्वपूर्ण कार्यों का उचित ट्रिक्स से निष्पादन कर समाज के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान देती है।

मुसहर समुदाय का परिचय :-

मुसहर, जिसका शाब्दिक अर्थ है चूहे खाने वाले या चूहे पकड़ने वाले, भारत में सबसे पिछड़े समुदायों में से एक हैं। बाल्मीकि रामायण[1] में लिखा है कि मुसहर जाति शबरी शबर जाति की थी, जो एक जंगली जाति है।" हट्टन[2] ने अपने अध्ययन में माना है कि मुसहर जाति के लोग वर्तमान में उड़ीसा के जंगलों में रह रही है।" राम शरण शर्मा[3] का कहना है कि विद्वानों के विभिन्न से स्पष्ट होता है कि समय के साथ अनेक जातियाँ (जनजातियाँ) 'शूद्र' समुदाय में शामिल होती गई।" मनुस्मृति में 'द्रविड़' जनजाति को 'क्षत्रिय' कहा गया जो कलांतर में अपने कर्मों के कारण शूद्रत्व' को प्राप्त हुए। इस तथ्य के अनुसार 'मुसहर' 'क्षत्रिय' के वंशज हैं। ब्लंट[4] के अनुसार मुसहर द्रविड़ जनजाति का एक अंग है। क्रुक[5] के अनुसार "मुसहर वनमानुष अर्थात् जंगल में रहने वाले आदमियों की उपजाति है।" सर हरबर्ट रिजले[6] ने लिखा है कि "मुसहर जाति छोटानागपुर के भुईंया जनजाति की हीं एक उपजाति है।"

मुसहर, यूं तो आदिवासी होते हैं और पड़ोसी राज्य झारखंड में अब भी वे आदिवासी में ही गिने जाते हैं, लेकिन बिहार में उन्हें अनुसूचित जाति का दर्जा मिला हुआ है। राज्य में अनुसूचित जाति की श्रेणी में कुल 22 जातियों को शामिल किया गया है और इनकी एकमुश्त आबादी 2.56 करोड़ है, जो सूबे की कुल आबादी का 19.65 फीसदी है। बिहार सरकार की तरफ से हालिया जारी जातियों की सामाजिक आर्थिक रिपोर्ट के मुताबिक, बिहार में मुसहरों की आबादी 40.35 लाख है, जो बिहार की कुल आबादी का 3.08 प्रतिशत है। 1 संख्या के हिसाब से देखें, तो ऊंची जाति के ब्राह्मण, राजपूत और शेख (मुस्लिम), पिछड़ा वर्ग के यादव व कुशवाहा तथा अनुसूचित जाति दुसाध (धारी, धरही भी शामिल) और चमार (इसमें मोची, रविदास, रोहिदास और चर्मकार शामिल) के बाद मुसहरों की आबादी सबसे ज्यादा है।

शोध -साहित्य का पुनरावलोकन :-

जिला स्तरीय घर–बार –प्रजनन एवं बाल स्वास्थ्य सर्वेक्षण–2 के रिपोर्ट के अनुसार भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में 80.8 प्रतिशत व्यक्तियों का शौचालय की व्यवस्था नहीं होने के कारण उन्हें घर से बाहर शौच के लिए जाना पड़ता है। यह स्थिति निम्न स्वास्थ्य का द्योतक है।

राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण–5 (2019–2021) के आंकड़ों का अवलोकन करने से स्पष्ट होता है कि

ग्रामीण क्षेत्रों में 59.1 प्रतिशत महिलाएँ रक्ताल्पता से पीड़ित हैं। भारत के विभिन्न राज्यों के ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य सम्बंधित समस्याओं में असमानताएं हैं।

अध्ययन का उद्देश्य :-

1. मुसहर समुदाय की महिलाओं के स्वास्थ्य स्वास्थ्य का अध्ययन करना।
2. माताओ के बच्चों के स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता का अध्ययन करना।

अध्ययन पद्धति :-

वर्तमान अध्ययन बिहार के भोजपुर जिला के मुसहर समुदाय की महिलाओं पर आधारित है। अध्ययन कार्य 50 मुसहर परिवारों पर आधारित है। प्राथमिक तथ्यों का चयन सद्देश्यपूर्ण निदर्शन प्रणाली से किया गया है। प्रस्तूत शोध साक्षात्कार–अनुसूची का उपयोग प्रमुख रूप से किया गया है। शोध कार्य के दौरान इंटरव्यू, समूह चर्चा, अर्ध सहभागी अवलोकन एवं व्यक्तिक अध्ययन प्रविधियों का प्रयोग किया गया है।

अवलोकन एवं विश्लेषण

सारणी संख्या-01

सेवेक्षित मुसहर परिवारों में लिंग के आधार पर विवरण

लिंग	संख्या	प्रतिशत
महिला	115	5066
पुरुष	112	4634
कुल योग	227	100

सारणी संख्या 1 के अनुसार सेवेक्षित मुसहर परिवारो के लिंग के आधार पर महिला एवं पुरुषों के आवृत्ति का विवरण किया गया जिसमें महिला 50.66 का प्रतिशत पुरुष 46.34 के अधिक पाया गया।

सारणी संख्या -02

सर्वेक्षित मुसहर परिवारों में कुल वार्षिक आय का विवरण

वार्षिक आय	संख्या	प्रतिशत
20 हजार से कम	30	60
20 हजार– पच्चीस हजार तक	09	18
25 हजार – तीस हजार	06	12
30 हजार – 35 हजार	06	12
35 हजार से अधिक	02	04
कुल योग	50	100

सारणी संख्या– 2 से स्पष्ट होता है कि मुसहर समुदाय के परिवारों में कुल वार्षिक आय जिसमें सबसे अधिक 20 हजार 60 प्रतिशत पाया गया तथा सबसे अधिक 35 हजार से अधिक 4 प्रतिशत पाया गया।

सारणी संख्या 3

गर्भधारण के दौरान मृत बच्चों की संख्या

मृत बच्चों की संख्या	संख्या	प्रतिशत
जन्म लेकर तुरन्त मृत	06	75
चिकित्सकीय गर्भपात	1	12.5
प्राकृतिक गर्भपात	01	12.5
कुल योग	08	100

सारणी संख्या 3 से स्पष्ट होता है कि मृत बच्चों की संख्या जिसमे जन्म लेकर तुरन्त मृत की संख्या 75 प्रतिशत तथा चिकित्सीय गर्भपात एवम प्राकृतिक गर्भपात दोनों 12. एवं 12.5 प्रतिशत पाए गये।

सारणी संख्या -04

सर्वेक्षित मुसहर महिलाओं में डिलीवरी का स्थान

स्थान	संख्या	प्रतिशत
अस्पताल	22	44
घर	28	56
कुल योग	50	100

सारणी संख्या 4 के आंकड़ो से स्पष्ट होता है कि 56 प्रतिशत महिलाओं ने घर मे तथा 44 प्रतिशत ने अस्पताल में डिलीवरी करवाई।

सारणी संख्या -05

शिशु पैदा होने के बाद वजन

बच्चे का वजन (कि. ग्रा.)	संख्या	प्रतिशत
2 से कम	09	18
2–3	31	62
3–4	10	20
4 से अधिक	00	00
कुल योग	50	100

सारणी संख्या 5 से स्पष्ट होता है कि सबसे अधिक 62 प्रतिशत शिशु का वजन 2 से 3 कि. गर. पाया गया तथा सबसे कम 18 प्रतिशत का वजन 2 से 3 पाया गया।

सारणी संख्या -6

मुसहर महिलाओं में ब्रेस्ट फिन्डिंग से सम्बंधित जानकारी

ब्रेस्ट फिडिंग की अवधि गहनता	संख्या	प्रतिशत
0–1	19	38
1–2	19	38
2–3	04	08
3–4	10	20
4–5	01	02
5–6	01	0
कुल योग	50	100

सारणी संख्या –06 के आंकड़ों से स्पष्ट होता है कि ब्रेस्ट फिडिंग से सम्बंधित जानकारी में सबसे अधिक 38 प्रतिशत की अवधि 1–2 गहनता में तथा सबसे कम 2 प्रतिशत 4–5 और 5–6 घण्टे में हैं।

सारणी संख्या -7

मुसहर महिलाओं में शिशु को पेय पदार्थ खिलाने से सम्बंधित जानकारी

पेय पदार्थ खिलाने की शुरुआत (माह)	तरल पदार्थ संख्या	प्रतिशत	ठोस पदार्थ संख्या	प्रतिशत
6 से कम	14	28	00	00
6–7	35	70	02	04
7–8	00	00	16	32
8–9	01	01	28	46
9 से अधिक	00	00	04	08
कुल योग	50	100	50	100

सारणी संख्या 7 के आंकड़ो से स्पष्ट होता है कि शिशु को तरल पदार्थ खिलाने में सबसे अधिक 6–7 माह 35 प्रतिशत तथा सबसे कम 8–9 माह 2 प्रतिशत है तथा ठोस पदार्थ खिलाने में सबसे अधिक 8–9 माह में 56 प्रतिशत और अबसे कम 6–7 माह में 4 प्रतिशत प्राप्त हुआ।

सारणी संख्या -8

मुसहर परिवार में निमोनिया के लक्षण सम्बंधित जानकारी

निमोनिया लक्षण की जानकारी	संख्या	प्रतिशत
हाँ	27	54
नहीं	23	47
कुल योग	50	100

सारणी संख्या 8 से स्पष्ट होता है कि निमोनिया के लक्षण की जानकारी 54 प्रतिशत मुसहर महिलाओं को थी तथा 6 प्रतिशत को नहीं थी।

सारणी संख्या –9

सर्वेक्षित ग्रामों में जन्म लेने वाले बच्चों का टीकाकरण

जानकारी	संख्या	प्रतिशत
हाँ	44	88
नहीं	06	12
कुल योग	50	100

सारणी संख्या– 9 के आंकड़ों से स्पष्ट होता है कि 88 प्रतिशत जन्मित शिशुओं के टीकाकरण हुआ था तथा 14 प्रतिशत का टीकाकरण नहीं हुआ था।

सारणी संख्या –10

सर्वेक्षित गर्भवती मुसहर महिलाओं की चिकित्सक परामर्श सम्बंधित जानकारी

परामर्श	संख्या	प्रतिशत
हाँ	32	64
नहीं	18	36
कुल योग	50	100

सारणी संख्या 10 के आंकड़ों से स्पष्ट होता है कि 64 प्रतिशत महिलाओं को चिकित्सीय परामर्श से सम्बंधित जानकारी थी तथा 36 प्रतिशत महिलाओं को इसकी जानकारी नहीं थी।

निष्कर्ष :–

मुसहर समुदाय में कम उम्र में विवाह करने की प्रथा आज भी व्याप्त है। यहाँ वैधानिक आयु 18 वर्ष से कम उम्र में ही लड़कियों की बड़ी संख्या में विवाह किया जाता है। अपरिपक्व अवस्था मे विवाह हो जाने, कम उम्र में यौन सम्बन्धों में रत हो जाने तथा जल्दी मातृत्व धारण कर लेने के परिणामस्वरूप लोग एक तो स्वयं रोगी हो जाते हैं, दुर्बल, रोगी व अल्पायु वाली सन्तानों को जन्म देती है। बाल विवाह हो जाने के कारण माताएँ अधिक सन्तानों को जन्म देती हैं और वह बच्चों का देखभाल में भी सक्षम नहीं हो पातीं। मुसहर समुदाय में आज भी अंध विश्वास और रूढ़िवादी मान्यताओं व जादू टोना पर विश्वास के महिलाएं अपने स्वास्थ्य एवं इलाज के लिए ज्यादातर ओझा–तांत्रिकों पास जाती हैं। राज्य सरकार और केंद्र सरकार द्वारा चलाई जा रही योजनाओं का लाभ उन तक नहीं पहुंच रहा है। इसके लिए समय समय पर मुसहर समुदाय का समाजशास्त्रीय अध्ययन कराया जाना चाहिए। अगर अध्ययन करते है तो समस्याओं का मूल्यांकन सही तरीके से होगा एवं उसी आधार पर योजनाएं बनाई जाएंगी। इस आधार पर माताओ एवं शिशुओं की अन्य स्वास्थ्य समस्याओं को देखकर नई–नई योजनाएं बानी जानी चाहिए। इससे पहले जो गाँव मुख्य मार्ग से अधिक दूरी पर स्थिति है जहां विशेष आवागमन की सुविधा नहीं हैं वहाँ स्वास्थ्य जांच हेतु सर्व सुविधायुक्त प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र की व्यवस्था होनी चाहिए।

सन्दर्भ सूची :-

1. भारती, आशाः "राम कथा के गौण नारी पात्र", इतिहास शोध संस्थान, नई दिल्ली, 1986, पृष्ठ–136।
2. हट्टन, जे. एच. बनारसीदास, 1983, पृष्ठ–26 "भारत में जाति–प्रथा", अनुवादक–मंगलनाथ सिंह, पब्लिसर्स–मोतीलाल।
3. शर्मा, रामशरणः "शूद्रों का प्राचीन इतिहास", पृष्ठ –247।
4. ब्लंट, इडवार्ड आरथुर हेनरी (इ ए एच) "द कास्ट सिस्टम ऑफ नार्थेन इंडिया", एस चांद. एण्ड कम्पनी, नई दिल्ली, 1969, पृष्ठ –288।
5. चांद. एण्ड कम्पनी, नई दिल्ली, 1969,
   ब्लंट, इडवार्ड आरथुर हेनरी (इ ए एच) "द कास्ट सिस्टम ऑफ नार्थेन इंडिया", एस. पृष्ठ – 212।
6. रिजले, सर हरबर्टः "द पीपुल ऑफ नार्थन इंडिया", ठक्कर स्पेनिंग एण्ड कं. कलकत्ता, 1908, पृष्ठ–38।
7. प्रसाद, अनिरुद्धः "बोलेन्ट्री इफेक्ट इन द डेवेलपमेंन्ट ऑफ मुसहर कम्यूनिटी इन बिहार", हरिजन आदिवासी स्टडी सेल, ए.एन. सिन्हा इन्स्टीट्यूट ऑफ सोसल स्टडीज, पटना, 1985।
8. National family helth survey & 5 (2019-2021) international institution for population sciences Mumbai.
9. देशाई, नीरा व उषा ठक्कर ''भारतीय समाज में महिलाएं'' राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, नई दिल्ली–148–149।
10. Kumar, Ranjit "Research methodology : A step by step Guide for Beginners (2014), Sage Publication, New Delhi.
11. Bryman, Alan "social research methods" Oxford university press, 5th edition (2015), New Delhi.
12. "The process of Urbanization" in Cousins, Albert, N. And Nagpaul, Hons (Eds.), Urban Man and Society : A Reader in Urban Sociology, Alfred A. Knoff, New York, 1970, pp. 101-102.
13. state.bihar.gov.in/health

मो. 9128316999

संगम Impact Factor : 6.632
Website : www.ginajournal.com
ISSN : 2321-8037
SANGAM
विशेषज्ञ समीक्षित पत्रिका A Peer Reviewed International Refereed Journal
Vol. 12, Issue 1-2
गीना देवी शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित साहित्य, शिक्षा, संस्कृति एवं शोध को समर्पित मासिक
पृष्ठ : 113-116

मृदुला गर्ग के उपन्यासों में वर्णित नारी संघर्ष

परमार अंजलीबा हरदेवसिंह
पीएच.डी. शोधछात्रा, गुजरात युनिवर्सिटी।

प्रस्तावना :-

मानव सभ्यता की विकास–यात्रा के समानांतर स्त्री का संघर्ष भी अपनी निरंतरता में आरम्भ से ही समाज में विद्यमान रहा है। देश–काल के साथ इस संघर्ष का केवल स्वरूप बदलता रहा है। हमारे समाज में स्त्री को कभी रीति–रिवाज के नाम पर, कभी पितृसत्तात्मक अधिकार के नाम पर, कभी पुरुष के अहम् के कारण, तो कभी शिक्षित होने एवं आत्मनिर्भर होने के कारण हमेशा शोषण का शिकार होना पड़ा है। इस शोषण और उसके विरुद्ध स्त्री के नितांत निजी संघर्षों की लंबी एवं करूण कहानी है। उसे न केवल बाह्य समाज बल्कि स्वयं अपने परिवार से और यहाँ तक कि खुद से भी निरंतर संघर्ष करना पड़ा है। इसी संघर्ष को सिमोन द बउआर ने अपनी पुस्तक 'द सेकंड सेक्स' में बताया है कि – "स्त्री पैदा नही होती, उसे बना दिया जाता है।"(1) यह कथन देश–विदेश की सभी स्त्रियों के संघर्ष को पूर्णतया बयाँ करता है।

कृष्णा सोबती, चित्रा मुद्गल, मंजुल भगत, उषा प्रियम्वदा, ममता कालिया आदि लेखिकाओं ने समाज में व्याप्त विभिन्न विद्रूपताओं, राजनैतिक–आर्थिक मुद्दों तथा स्त्री अस्मिता, पारिवारिक घुटन आदि को अपने कथा साहित्य का प्रमुख विषय बनाया। तमाम दूसरे विषयों के बावजूद इनके साहित्य में स्त्री मुक्ति का प्रश्न ही केंद्र में है। मृदुला गर्ग भी उन महिला रचनाकारों में से एक हैं, जिन्होंने अपने साहित्य में स्त्री मुक्ति के प्रश्न को साहस के साथ उजागर किया। वे 'फेमिनिज्म' का अर्थ दरअसल सोच की जकड़बंदी मुक्ति के रूप में लेती हैं। समाज की सड़ी–गली मान्यताओं, संस्कारों आदि से मुक्ति पा लेना ही उनके लिए स्त्री विमर्श है। मृदुला जी नारीवाद की परिभाषा देते हुए कहती हैं कि– "नारीवाद की परिभाषा बस इतनी है कि नारी को अधिकार है यह तय करने का कि वह क्या करना चाहती है? क्या नहीं? कोई मुखौटा नहीं कि स्त्रियों पर चस्पा कर दिया जाए।"(2)

'उसके हिस्से की धूप' उपन्यास में उनकी कथा नायिका की मान्यता– ''प्यार करना कला नहीं, जरूरत है'', मृदुला जी की प्रेम सम्बन्धी मौलिक और बोल्ड मान्यता को रेखांकित करती है। उपन्यास की पात्र मनीषा का यह कहना कि– "यूँ तो इंसान की न जाने कितनी जरूरतें होती हैं, लेकिन यह जरूरत ऐसी है, जिसमें कोई अन्य व्यक्ति भी सम्मिलित रहता है। बिना शोषण इसकी पूर्ति भी तभी हो सकती है जब दोनों की जरूरत एकहो। जब जरूरतें एक हों तो शरीर का मिलन अद्भुत अनुभव बन जाता हैं।"(3) उनके यहाँ प्रेम शुरू से अंत तक शरीर का विषय है, शरीर का अर्थात् अपनी जरूरतों का। मृदुला जी की दृष्टि में प्रेम का यथार्थ 'शरीर' है। उपन्यास में मनीषा प्रेम को पाने के क्रम में जितेन को छोड़ मधुकर की ओर आकर्षित होती है लेकिन उसे पूर्ण प्रेम की

प्राप्ति कहीं नहीं होती। ऐसा प्रेम जो उसे आत्मसंतुष्ट कर दे, एक अंतहीन तलाश बन कर रह जाता है। इस उपन्यास की मुख्य समस्या नारी के जीवन की रिक्तता है, जिससे मनीषा पूरे उपन्यास में जूझती नजर आती है। मृदुला जी का सबसे पसंदीदा विषय प्रेम है, परन्तु उन्होंने विवाहपूर्व प्रेम की अपेक्षा विवाहेत्तर प्रेम का चित्रण अपने उपन्यासों में कहीं अधिक किया है। यह वह प्रेम है जिसे समाज ने हमेशा नकारा है और शायद यही कारण रहा है कि उनके 'चित्तकोबरा' उपन्यास को भी विवादों के कठघरे में खड़ा होना पड़ा। हालांकि यह उपन्यास मनुष्य जीवन में प्रेम की सार्थकता सिद्ध करने में तथा उसके विविध वर्णी स्वरूप निर्धारण में बहुत ही अनूठा है तथापि अपने इस उपन्यास में मृदुला जी ने प्रेम का चित्रण जिस रूप में किया है वह कथित तौर पर थोड़ा बोल्ड है। शायद यही बोल्डनेस लोगों को पसंद नहीं आया जिस कारण इस उपन्यास को विवादों से जूझना पड़ा। इस उपन्यास में पुरुष की बराबरी करती स्त्री की देह गाथा और मनः गाथा दोनों का सम्यक चित्रण मिलता है। मृदुला गर्ग ने चित्तकोबरा उपन्यास में पारस्परिकता के विरुद्ध मोर्चा खड़ा करके स्त्री को अनेक तथाकथित मर्यादा बंधनों से मुक्ति दिलाई है। "इस उपन्यास में शीलता और अश्लीलता का प्रश्न उठाकर प्रायः उन समस्याओं से आँखे चुराने की कोशिश होती है, जिनके आधार पर स्त्री को कथित मर्यादा की सीख दी जाती है। यह एक लेखिका के साहस का प्रश्न माना जाना चाहिए कि उसने मजबूती से पारस्परिकता के विरूद्ध खड़े होकर नये समय में नई जीवन दृष्टि की माँग करने की चुनौती प्रस्तुत की है।"[4]

उनके एक अन्य उपन्यास "मैं और मैं" में भी औरत के शोषण की कहानी दिखाई गयी है। किस प्रकार अपने अहम की तुष्टि करने वाली एक लेखिका आर्थिक और नैतिक शोषण का शिकार होती है इसका मार्मिक चित्रण इस उपन्यास में किया गया है। यह उपन्यास एक उच्चवर्गीय लेखिका के अपराधबोध और एक निम्नवर्गीय लेखक के अपराधबोधके टकराहट की कहानी भी कहता है। इस उपन्यास में माधवी, संजय और कौशल तीन पात्र हैं। माधवी लेखिका है और कौशल भी। इस उपन्यास में वैचारिक धरातल पर दोनों रचनाकारों के अहम की टकराहट को दिखाया गया है, साथ ही कौशल द्वारा माधवी के रूप में ब्लैकमेल की गयी एक लेखिका का सूक्ष्म विश्लेषण भी किया गया है। इस उपन्यास में 'परिवार' जो कि स्त्री का सीमित क्षेत्र है, की हद को पार कर एक अलग कलात्मक प्रस्तुतिकरण किया गया है।

यहाँ एक सामान्य स्त्री के दुःख–दर्द की परिपाटी से हटकर एक लेखिका के जीवन संघर्ष की कथा को कथ्य का विषय बनाया गया है जो अपेक्षाकृत चिंतनशील भी है, और सजगभी। उसके आस–पास की दुनिया एक झूठ की दुनिया है– एक 'फेक वर्ल्ड' जिसमें रिश्तों की बुनियाद ही झूठ पर टिकी है। उपन्यास में एक जगह लेखिका कहती है कि– "कितना आसान है एक के बाद एक झूठ बोलते चले जाना और कितनी खूबसूरत, पारदर्शी और रंगबिरंगी है झूठ की दुनिया। उसके सामने सच क्या है, एक ठोस मटमैला खुरदुरा पत्थर, झूठ की दुनिया में उड़ान भरनेवाला, कल्पना के गुब्बारे में सुई चुभाकर पथरीली धरती पर क्यों उतरेगा?"[5] अर्थात् यह रंगीन फेक वर्ल्ड ही अब हमारे समय की सबसे बड़ी सच्चाई है और हमारी नियति भी। दरअसल यह उपन्यास पूँजीवादी व्यवस्था का आईना है, जिसमें मानवीय रिश्तों का बिम्ब और भी कुरूप और वीभत्स दिखाई देता है। यहाँ पूँजी मानवीय सम्बन्धों को निर्धारित भी करती है और उसका नियमन भी।

लेखिका का 'कठगुलाब' उपन्यास भी इसी तरह के स्त्री संघर्षों को दर्शाने वाला एक बहुचर्चित उपन्यास है। मृदुला जी का यह उपन्यास नारी दमन और शोषण को दिखाते हुए नारी के संघर्ष की गाथा कहता है। इसमें

नारी को प्रताड़ित करती आ रही आत्मघाती सामाजिक व्यवस्था से परिचित कराना लेखिका का प्रयोजन है। इस उपन्यास में नारी पर पुरुष द्वारा होने वाले आर्थिक, शारीरिक और बौद्धिक शोषण की प्रतिक्रिया स्वरूप आत्मनिर्भरता तथा पुरुषसत्ता के समानांतर स्वयं को सिद्ध करने के लिए की गयी नारी की जद्दोजहद की कथा है। इस उपन्यास में उन्होंने दिखाया है कि चाहे पूरब हो या पश्चिम, पुरुष की मानसिकता समान है। बस की भीड़–भाड़ में धँसी लड़की हो या सुनसान इलाके में पैदल चलती लड़की, पुरुष की लार टपकती नजरों से उसका बच पाना असंभव है। स्त्री पर हो रहे शोषण को दर्शाते हुए उपन्यास में लेखिका एक जगह पर नायिका नमिता द्वारा कहलवाती है कि – "कैसी अभागिने हैं हम दोनों, मेरी जिंदगी माँ ने चौपट की, तेरी पिता ने।"[6]

अपने अन्य समकालीनों की तरह मृदुला जी केवल स्त्री की आर्थिक, शारीरिक स्वतंत्रता और अधिकारों की बात ही नहीं करतीं अपितु स्त्री के राजनीतिक, संवैधानिक अधिकारों के लिए भी आवाज उठाती हैं। अपने 'वंशज' उपन्यास में उन्होंने स्त्री को उसके प्रदत्त संवैधानिक अधिकारों से भी वंचित कर दिये जाने के प्रश्न को बड़ी मजबूती से उठाया है। यह उपन्यास नायक सुधीर, उसकी पत्नी और बहन रेवा की कहानी है। इस उपन्यास में स्त्री को पैतृक संपत्ति में अधिकार देने की बात की गयी है। आज भी उसके अधिकारों की अवहेलना की जा रही है, जबकि आज हमारे संविधान में यह प्रारूप है कि पिता की सम्पत्ति में पुत्री का बराबर का अधिकार है। लेकिन समाज अभी उसे अपना नहीं पाया है। समाज आज भी पुत्री में सारी योग्यता होते हुए भी अपनी सम्पत्ति में अधिकार पुत्र को ही देता है, पुत्री को नहीं। इसी परिप्रेक्ष्य में डॉ. रमा नवले कहती हैं कि –"शुक्ल साहब जैसा अत्यंत न्यायप्रिय आदमी और सुधीर से अधिक रेवा को चाहने वाला लड़की को पैतृक सम्पत्ति में हिस्सा नहीं देता। तब कानून बनाने से क्या होता है, वंशज तो लड़का ही रहेगा, लड़की कभी नहीं, इस कटु सत्य की अभिव्यक्ति यह उपन्यास करता है।"[7]

मृदुला गर्ग का उपन्यास 'मिलजुल मन' उनके अब तक के सभी उपन्यासों से अलग ही तरह का उपन्यास है। यह एक आत्मकथात्मक उपन्यास है, यानि यह एक ऐसी आत्मकथा है जिसे उपन्यास का रूप दे दिया गया है। ऐसा संभवतः इसलिए किया गया है क्योंकि एक आत्मकथा लेखक से जिस ईमानदारी से साफगोई और विश्वसनीयता की मांग करती है उपन्यासों में किसी सीमा तक उससे बचने की गुन्जाइश बनी रहती है। यहाँ कथा की ओट बनी रहती है। यौवन की बीहड़ सच्चाइयों को उपन्यास की सिलवटों में छिपते–छिपाते आसानी से दिखाया जा सकता है। आत्मकथा सच का सामना करने के लिए होने वाले पोलिग्राफिक टेस्ट की तरह होती है। जिसका सामना करने का साहस हर लेखक में नहीं होता।

निष्कर्षतय हम कह सकते हैं कि मृदुला जी अपने उपन्यासों में समस्याओं को सिर्फ चित्रित ही नहीं करतीं वरन् उसका निदान भी बताती हैं। वे अपने पात्रों को स्थितियों से संघर्ष करते हुए भौतिकता के धरातल से उठाकर तार्किक दृष्टि के साथ अपने अस्तित्व और इच्छाओं के लिए निर्णय लेते हुए दिखाती हैं। उनकी सभी स्त्री पात्र अपने जीवन का निर्णय स्वयं लेती हैं। वे किसी और के सहारे के लिए प्रतीक्षारत नहीं रहतीं।

मूल शब्द :-

स्त्री विमर्श, परम्परागत दृष्टिकोण, फेमिनिज्म, अस्मितामूलक संघर्ष, प्रयोगधर्मा, बोल्डनेस, त्रिकोणात्मक प्रेम, अपराधबोध, आत्मकथात्मक।

सन्दर्भ :-

1. प्रभा खेतान, स्त्री उपेक्षिता, हिंदी पॉकेट बुक्स, 2008, नई दिल्ली – (भूमिका भाग से)
2. मृदुला गर्ग, मेरे साक्षात्कार, 2012, किताब घर प्रकाशन, दिल्ली – पृ. – 93
3. मृदुला गर्ग, उसके हिस्से की धूप, 2002, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली – पृ. – 44
4. डॉ. ज्योतिष जोगी, लेख बीते दो दशकों और हिंदी उपन्यास की यात्रा, नया मापदंड, अक्तूबर– दिसम्बर, 1999, पृ. 12
5. मृदुला गर्ग, मैं और मैं, 2001,राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, पृ. – 213
6. मृदुला गर्ग, मेरे साक्षात्कार, 2012, किताबघर प्रकाशन, दिल्ली, पृ. – 110
7. मृदुला गर्ग, मिलजुल मन, 2009, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, पृ. –53

घ – 279/2, सेक्टर–19, गांधीनगर।

मोबाइल 8905858008

ईमेल : anjv151993@gmail.com

संगम Impact Factor : 6.632
Website : www.ginajournal.com
ISSN : 2321-8037
विशेषज्ञ समीक्षित पत्रिका A Peer Reviewed International Refereed Journal
SANGAM
गीना देवी शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित साहित्य, शिक्षा, संस्कृति एवं शोध को समर्पित मासिक
Vol. 12, Issue 1-2
पृष्ठ : 117-120

मीडिया की भाषा का सामाजिक प्रदेय

रमन
शोधार्थी, हिंदी, महाराजा अग्रसेन हिमालयन गढ़वाल विश्वविद्यालय, कोटद्वार, उत्तराखण्ड।

मीडिया अर्थात् पत्रकारिता जिसे भारतीय लोकतंत्र का चौथा स्तंभ कहा गया है। किसी भी देश की उन्नति, अवनति और समृद्धि के पीछे पत्रकारिता का बहुत बड़ा योगदान होता है, किंतु आज के समय मे पत्रकारिता का अर्थ ही बदल गया है ये तब से कहा जा सकता है जब से सोशल मीडिया का प्रभाव बढा है क्योंकि अब सूचना को प्रसारित होने मे अगले दिन का इंतजार नहीं करना होता है, इसके माध्यम से कोई भी सूचना बहुत ही कम समय मे हर किसी के पास पहुंच जाती है (और जैसा कि मानव के स्वभाव मे है कि हमारी जिज्ञासा ही हमे नए नए कार्यो की ओर प्रेरित करती है हमसे नए आविष्कार करवाती है) चाहे वो हमारे आसपास की घटना हो या फिर दूर की हो, हम हर जानकारी को विस्तार से जानना चाहते हैं और सबसे पहले भी, चाहे वो झूठ ही क्यों न हो और आजकल ये कार्य बड़ा ही सरल हो गया है। अब बहुत ही कम समय मे सूचना का प्रसारण हो जाता है। संचार और सूचना प्रौद्योगिकी के विकास ने सूचना को प्रसार करने की तीव्रता में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है जिसके फलस्वरूप इस क्षेत्र मे परिवर्तनो के साथ एक जबदस्त क्रांति आई।

भारतीय संविधान मे प्रेस की स्वतंत्रता के लिए अलग से कोई प्रावधान नही है ये भी अनुच्छेद 19 (1) (ए) वाक् एंव अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के अंतर्गत ही रखा गया है इसके अंतर्गत लिखना, बोलना, चित्र, प्रिंट करना आता है, हालांकि इसमें कुछ प्रतिबंध रखे गए हैं, जो कि अनुच्छेद 19 (2) में आते हैं जो देश की अखण्डता और संप्रभूता के लिए है।

पत्रकारिता के विभाग :-

पहले पत्रकारिता के दो भाग होते थे किंतु संचार में क्रांति के बाद अब इसके तीन प्रकार कहना ही उचित होगा :-

- प्रिंट मीडिया।
- इलेक्टॉनिक मीडिया।
- सोशल मीडिया।

प्रिंट मीडिया :-

प्रिंट मीडिया अर्थात् समाचार पत्र इसका अपना एक महत्व है। यह समाज का, हमारे जीवन का एक अभिन्न अंग है, जो कहीं न कहीं हमारे इतिहास से जुड़ाव महसूस करवाता है। स्वतंत्रता की लड़ाई में इसका योगदान बहुत महत्वपूर्ण है, जिसको भूलाया नहीं जा सकता है। यह सबसे पुराना व विश्वासपात्र माध्यम है

जिसमे अफवाहों का मौका कम होता है। लेकिन जैसा कि कहा जाता है कि परिवर्तन प्रकृति का नियम है। पहले इनके कंधो पर समाज की जिम्मेदारी थी जो महसूस होती थी जो कि स्वतंत्रता आंदोलनो के समय से शुरु हुई थी किंतु आज के समय मे ऐसा लगता है मानो लाभ के लिए ही सब किया जाता हो और केवल व्यापार में बदल चुका है। आज भी हमारी पुरानी पीढी ऐसी है कि वो अपने दिन की शुरुआत समाचार पत्र के बिना नहीं करते हैं। इसमें समाचार पत्रों के अलावा पत्र पत्रिकाएं, पुस्तकें आदि आते हैं किंतु इस नए दौर में ऐसा प्रतीत होता है कि आने वाली पीढी को इसमे ज्यादा रुचि नहीं है, जिससे कदाचित् दोनों का ही भविष्य संदेह में है।

इलेक्ट्रॉनिक मीडिया :-

इलेक्ट्रॉनिक मीडिया का अपना एक महत्व है। सूचना संप्रेषित करने के साथ ही यह समय बिताने का एक अच्छा संसाधन माना जाता है, इसमे टेलीविजन, रेडियो, कम्प्यूटर, फैक्स आदि आते हैं। इंटरनेट की क्रांति के बाद से इसके दर्शक वर्ग में भी बहुत कमी देखी गई है। जिसके कुछ कारण तो स्पष्ट है कि बहुत सारे विज्ञापनों का दिखाया जाना, जिसमें बहुत सा समय बर्बाद होता है और इसके अलावा एक ही खबर को तोड़–मरोड़कर बहुत देर तक बारी–बारी से चलाना, जबकि आज के समय में सबसे ज्यादा कमी धैर्य की ही है। दर्शक कम समय में ज्यादा और बेहतर खबरों को जानना चाहते हैं जिस कारण वो टेलीविजन से हटकर सोशल मीडिया पर स्थानांतर हो गए हैं जहां वे अपनी पसन्द की खबरों को देखते व सुनते हैं और आजकल खबरों के प्रकार ही बदल गए हैं। लगता है कि जैसे वे सभी किसी जल्दी मे हैं मानो कोई महायुद्ध छिड़ा हो, भाषा भी इनकी अब सहज नहीं रह गई है। यहां तक की बहुत से चैनल ऐसे भी हैं जिन्हें देखकर कोई भी आसानी से समझ जाएगा कि ये किसी विशेष विचारधारा से संबंधित हैं। सामाचार अर्थात् समाज में जो भी घटित हो रहा है चाहे वह अच्छा है या फिर बुरा है, प्रेरणा देने वाला है या फिर डराने वाला, हर प्रकार की सूचना से जन सामान्य को अवगत कराना। किंतु कभी–कभी सब कुछ दिखाना और सबसे पहले दिखाने की लालसा में ये चैनल वह सब भी दिखाने का प्रयास करते हैं जो इन्हें नहीं दिखाना चाहिए। पहले ''मैं'' की होड़ इस हद तक इन पर सवार हो जाती है कि ये उनके अपने देश, अपने लोगों की सुरक्षा, गोपनीयता के लिए हानिकारक हो सकता है और ये एक जिम्मेदार नागरिक की भूमिका को भूल जाते हैं। इन पर विश्वास करना कठिन होता है या फिर ये पूर्ण रुप से विश्वास करने योग्य नही होता है।

सोशल मीडिया :-

इंटरनेट की क्रांति के बाद सोशल मीडिया का प्रभाव बहुत अधिक बढ गया है। इसके कारण बाकी सूचना साझा करने वाले प्लेटफॉर्म की लोकप्रियता घटी है जिसके फलस्वरुप अब मंत्रियो के द्वारा भी कोई भी सूचना सबसे पहले ट्विटर, फेसबुक, व्हाट्सएप, इंस्टाग्राम जैसे सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर ही साझा की जाती है। कई मुद्दे भी सुलझते हैं और इसके प्रभाव के बढने के साथ ही ये भी हुआ है कि प्रिंट मीडिया और इलेक्ट्रानिक मीडिया का प्रभाव जैसे स्वतः ही कम हो गया है। कोई भी अगले दिन का इंतजार नहीं करना चाहता है। हर कोई जल्दी मे है और उसी जल्दी का परिणाम है सोशल मीडिया का बढता हुआ प्रभूत्व। इसमें हम यूट्यूब के सहयोग को नजरअंदाज नही कर सकते हैं। आजकल तो हाल ये है कि प्रिंट मीडिया हो या इलेक्ट्रॉनिक मीडिया, सबके सब सोशल मीडिया पर स्थानांतरित हो गए हैं। वो भी अपने चैनल और अकाउंट सोशल मीडिया पर बना चुके हैं और वहां भी सूचना प्रेषित करते हैं। यहां समय की बाध्यता नहीं है आप जब तक चाहें यहां रह सकते

हैं यहां आपके पास सूचनाओं की कोई कमी नहीं है।

आजकल फेसबुक, ट्विटर और इनके जैसे अन्य सोशल मीडिया एप्लीकेशनस् की अभूतपूर्व वृद्धि लोकतंत्र के कामकाज में एक दोधारी तलवार साबित हो रही है। एक ओर इसने सूचना तक पहुंच का लोकतांत्रिकरण किया है, वहीं दूसरी ओर इसके कारण नई चुनौतियां भी सामने आई हैं जो सीधे हमारे लोकतंत्र और लोगो को प्रभावित करती है। जैसे कि विदित है हम विश्व की सबसे अधिक जनसंख्या रखने वाला देश बन चुके हैं तो लाजिमी है कि इंटरनेट के उपयोगकर्ता भी उसी अनुसार हैं अर्थात् इंटरनेट के उपयोग के मामले मे अभी हम दूसरे स्थान पर हैं इसलिए हर कोई इस तक अपनी पहुंच आसानी से बना लेते हैं।

सकारात्मक और नकारात्मक प्रभाव :-

कोई भी आविष्कार हो या फिर किसी नई वस्तु का प्रचलन बढ़ता हो, उसके सकारात्मक और नकारात्मक दोनों प्रभाव सामने आते हैं। किसी का प्रभाव देर से समझ आता है तो किसी का जल्दी सामने आ जाता है। उसी क्रम में मीडिया है विशेषतः सोशल मीडिया। यहां सूचना का प्रचार–प्रसार मिनटो में होता है चाहे वो सही हो अथवा गलत हो। कोई भी सूचना यहां हाथो–हाथ ली जाती है। बहुत बार तो ऐसा होता है खबर इतनी तेजी से फैलती है कि किसी का उसकी सत्यता की ओर ध्यान ही नही जाता है। अक्सर ऐसा चुनावी समय पर देखा जाता है, अफवाहें उडाई जाती हैं, झूठी खबरे फलाई जाती हैं।

सोशल मीडिया के कारण विभेद तो खत्म हुआ है। आजकल हर किसी की पहुंच आसान हो गई है। पत्रकारिता का आधार अब बदल चुका है इसमे अब कोई दोराय नहीं है कि पत्रकारिता और इंटरनेट एक दूसरे के बिना अधूरे से हैं। आज के समय में यह आम बात हो गई है कि यदि कहीं पर कोई दंगा फसाद होता है तो सबसे पहले इंटरनेट की सुविधा को बंद किया जाता है। ताकि झूठी खबरो को फैलने से रोका जाए। सोशल मीडिया की वजह से धोखाधड़ी के मामले भी सामने आते है और जिसका शिकार हर उम्र के लोग हो जाते है। संचार के माध्यम से देखा जाए तो सोशल मीडिया ने इसे बहुत सुगम बना दिया है। इसके माध्यम से व्यापार करना हो, किसी की सहायता करनी हो, कोई पेपर साझा करना हो यहां तक की कुछ ऐसी घटनाएँ भी सामने आईं हैं जहां लोगों की इसके माध्यम से शादियाँ भी हुई। जो भी हमारे जीवन मे महत्वपूर्ण हैं उनके सकारात्मक और नकारात्मक दोनो पहलू होते हैं। और यह हम पर निर्भर करता है कि हमें उसे अपने जीवन में कैसे रहने देना है।

निष्कर्ष :-

यह बात तो बिल्कुल सत्य है कि पिछले कुछ वर्षो में हमारे समाज में बहुत सारे क्रांतिकारी परिवर्तन हुए हैं बहुत कुछ नया हुआ है किंतु नए के आ जाने से पुरानो से किनारा नही किया जाता, सब कुछ जरुरी है ये हम सन् 2020 (कोरोना काल) में सीख गए हैं कि नए बदलावों को भी स्वीकार किया जाना चाहिए, क्योंकि यदि इंटरनेट नहीं होता तो उस कठिन काल में जो कुछ सुगमता से हो पाया वो नही हो पाता, कुछ जीवन तो बिना बीमारी के ही हार मान जाते। जो भी कमियाँ हैं उन्हें साथ मिलकर समझना होगा और दूर करना होगा। इस बात से झुठलाया नहीं जा सकता कि समाज को बनाने में मीडिया अर्थात् पत्रकारिता का बहुत बड़ा योगदान है लेकिन साथ ही ये भी समझना होगा कि इसका दुरुपयोग भी बढ रहा है कुछ एजेंसियां तो बिना सत्यता की पुष्टि किए सूचना को प्रसारित कर देती हैं और इसके पश्चात् फिर उस पर लीपा पोती करने लगती हैं। इसके

विषय में हमें विचार करने की आवश्यकता है जितने भी इस तरह के संस्थान हैं जो सूचना प्रसारित करते हैं उन्हें चाहिये कि वो सविंधान के दायरे में रहकर उसके अनुरुप कार्य करे। पत्रकारिता अर्थात् समाज को दर्पण दिखाना और बिना किसी का पक्ष लिए सच सबके सामने रखना किंतु अधिकतर समय वो किसी एक ही पक्ष की ओर खड़े नजर आते हैं। ठोस पत्रकारिता होनी चाहिये और हर एक पक्ष सामने रखा जाना चाहिए ना कि स्वयं निर्णायक की भूमिका मे खड़े हो जाएं।

संदर्भ :-

1. समाज और सोशल मीडिया, दृष्टि आईएएस।
2. सूचना प्रौद्योगिकी की अवधारणा, विष्णु गोयल।
3. सोशल मीडिया का बढ़ता वर्चस्व और समाज, डॉ० ब्रजलता शर्मा।
4. भारतीय समाज पर इंटरनेट का प्रभाव, अभिषेक मिश्र, जर्नलिस्ट रिसर्च जनरल।
5. राजभाषा भारती भाषा प्रौद्योगिकी का युग और हिन्दी का वर्चस्व, डॉ० पूरणचन्द टंडन।

सम्पर्क सूत्र–9582573295

Add- SKA metroVille, Flat no. 202, Aster-tower, sec-Eta-II Greater Noida-201310.

संगम Impact Factor : 6.632
Website : www.ginajournal.com
ISSN : 2321-8037
SANGAM
विशेषज्ञ समीक्षित पत्रिका A Peer Reviewed International Refereed Journal
Vol. 12, Issue 1-2
गीना देवी शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित साहित्य, शिक्षा, संस्कृति एवं शोध को समर्पित मासिक
पृष्ठ : 121-132

डॉ. रमेश पोखरियाल के काव्य में सांस्कृतिक चेतना : एक विश्लेषण

हरविंदर कौर, अनुसंधान अध्येता,
डॉ. अजयपाल सिंह, अध्यक्ष एक शोध निर्देशक
हिंदी विभाग, देश भगत विश्वविद्यालय, मंडी गोबिंदगढ़।

सार :-

डॉ. रमेश पोखरियाल, जिन्हें 'निशंक' के नाम से जाना जाता है, एक अद्भुत कवि और साहित्यकार हैं, जो अपनी कविताओं में सांस्कृतिक चेतना को सुजीवंत करते हैं। भारतीय संस्कृति का मूलाधार धर्म में स्थित है, जिसे वेदों ने आकार दिया है। सनातन धर्म, भारतीय परंपरा का सबसे प्राचीन धार्मिक सिद्धांत है। डॉ. रमेश पोखरियाल 'निशंक' के काव्य में इस भारतीय धार्मिकता को अद्वितीय रूप से उजागर किया गया है, जहां उनके काव्य में बाह्य और आंतरिक अर्थ के सुगम संघटक से लेकर दार्शनिक स्वरूप तक का समृद्ध अन्वेषण है। उनके काव्य में सांस्कृतिक चेतना की उपस्थिति धार्मिक तत्वों, दर्शन, सहिष्णुता, अनेकता में एकता, करुणा, और परिवर्तन की स्वीकृति, साथ ही सांस्कृतिक प्रतीक चिन्हों का प्रयोग करके व्यक्त होती है। इस प्रकार, निशंक जी ने अपने काव्य के माध्यम से सांस्कृतिक धाराओं को सुंदरता से बखूबी प्रस्तुत किया है।

मुख्य शब्द : सांस्कृतिक चेतना, धर्म, दर्शन, सहिश्णुता, करुणा आदि।

प्रस्तावना :-

संस्कृति शब्द स्वयं में व्यापक दृष्टिकोण रखता हे। इस एक शब्द से मानवजाति के विचार, संस्कार, भाषा, धर्म, रहन–सहन, खान–पान, कार्य–व्यवहार, अर्थ, राजनीति आदि का विशद बोध होता है। विश्व की प्राचीनतम संस्कृतियों में भारतीय संस्कृति का स्थान सर्वोपरि है। यद्यपि भारत रंग–बिरंगा उपवन है, जिसमें विविध वर्णी जाति व भाषायी फूल खिलते हैं किन्तु पूर्व से पश्चिम, उत्तर से दक्षिण तक यह देश एक ही संस्कृति को जीता है। डॉ रामधारी सिंह दिनकर का मत है कि– ''भारत की संस्कृति आरंभ से ही सामाजिक रही है। उत्तर–दक्षिण, पूर्व, पश्चिम, देश में जहाँ भी जो हिन्दू बसते हैं, उनकी संस्कृति एक है एवं भारत की प्रत्येक क्षेत्रीय विशेषता हमारी इसी सामाजिक संस्कृति की विशेषता है। तब हिन्दू एवं मुसलमान हैं, जो देखने में अब भी दो लगते हैं। किन्तु उनके बीच भी सांस्कृतिक एकता विद्यमान है, जो उनकी भिन्नता को कम करती है।''

संस्कृति का अर्थ एवं स्वरूप :-

किसी देश या राष्ट्र का प्राण उसकी संस्कृति है क्योंकि यदि उसकी कोई संस्कृति नहीं तो संसार में

उसका अस्तित्व ही क्या? यह अंग्रेजी शब्द कल्चर का हिन्दी अनुवाद है जो लेटिन भाषा के कल्चर शब्द से बना है और इसका प्रयोग कल्चर के लिए होता है। संस्कृति चित्तभूमि की खेती है। इसकी शाब्दिक व्याख्या दो प्रकार से की जाती है। प्रथम – संस्कृति शब्द की उत्पत्ति 'संस्कृत' से मानी जाती है, जिसका अर्थ है– 'शुद्धिकरण' या 'शुद्धिक्रिया'। समाजशास्त्रीय भाषा में शुद्धि क्रिया का तात्पर्य सामाजिकता से है।

द्वितीय– 'सम्' उपसर्गपूर्वक 'कृ' धातु से भूषण अर्थ में 'सुट' आगमपूर्वक क्तिन् प्रत्यय होने से संस्कृति शब्द सिद्ध होता है। इसका अर्थ है मानव का वह कार्य जो भूषण स्वरूप– अलंकार स्वरूप है। मनुष्य के द्वारा किये जाने वाले ऐसे कार्य जिससे लोग उसे अलंकृत और सुसज्जित समझें। उन कार्यों का नाम है संस्कृति। प्रकारान्तर से संस्कृति शब्द का शुद्ध अर्थ है 'धर्म'।

संस्कृति से आशय सीखे हुए व्यवहार की वह समग्रता है, जिसमें एक बच्चे का व्यक्तित्व पलता और पनपता है। यह मानव जीवन का वह पहलू है जिसके कारण एक ओर जहाँ विभिन्न मनुष्यों में समानताएँ दृष्टिगोचर होती हैं वहीं दूसरी ओर हर मानव समूह दूसरे से भिन्न दिखाई देता है। यह संस्कृति ही है, जो हमें समूह में बांधे रखती है और हमारी व्यक्तिगत विविधताओं को समाप्त करने का प्रयास करती है। संस्कृति एक जीवन शैली है। एक समूह की विशेषता है की वह मान्यता दृष्टिकोण तथा लोगों की सहभागिता एवं व्यवहारिकता व प्रतिमान का एक संग्रह है।

डॉ. रमेश पोखरियाल के काव्य में सांस्कृतिक चेतना :–

धर्म भारतीय संस्कृति का मूलाधार है जिसे वेदों ने आकार दिया है। सनातन धर्म भारतीय परम्परा का सर्वाधिक प्राचीन धर्म है। निशंक जी के काव्य में इनके बाह्य अर्थात् कर्मकांडी और आंतरिक अर्थात् दार्शनिक स्वरूप का समावेश हुआ है। निशंक जी के काव्य में सांस्कृतिक चेतना की उपस्थिति को निम्नवत परखा जा सकता है। धर्म, दर्शन, सहिष्णुता, अनेकता में एकता, करुणा, परिवर्तन की स्वीकारोक्ति, सांस्कृतिक प्रतीक चिन्हों का प्रयोग।

1. **धर्म :–** धर्म की व्याख्या और इसका स्वरूप अत्यन्त व्यापक है। महाभारत के अनुसार– 'धारयति इति धर्मः' – जो धारण किया जाय, वह धर्म है। धर्म के चार पैर बताये गये हैं– सत्य, तप, दया, दान। यह धर्म की आंतरिक व्यवस्था है। बाह्य व्यवस्था के अन्तर्गत कर्मकाण्डों का समावेश होता है। हिंदू दर्शन इन्हें धारण करता है और मान्यता प्रदान करता है। डॉ. रमेश का मानना है कि जिस प्रकार अन्य धर्मावलम्बी धर्म के नाम पर रक्तपात करते हैं, तलवार के बल पर धर्मांतरण कराते हैं, ऐसा कार्य हिंदू कभी नहीं करता। हिंदू ने सबको सदैव समान समझा है और शरण में आये हुए को शरण दी है–

मानवता का पाठ पढ़ाया, गीता का उपदेश दिया।
कोई बताये सारे जग में, हिंदू ने कब नर संहार किया?
इतिहास अमर है इस हिंदू का, चरित सजल उदार रहा।
आया जो भी शरण उसे दी, विमल गंग में बिंदु बहा।
सबको भाई समझा हमने, कब किसका अपमान किया।
कोई बताये सारे जग में, हिंदू ने कब नर संहार किया?

उपर्युक्त कविता में भारतीय संस्कृति का सौंदर्य स्पष्ट रूप से प्रतिबिम्बित होता है। स्वामी विवेकानन्द ने

11 सितम्बर 1893 को अमेरिका के शिकागो में आयोजित विश्व धर्म सम्मेलन में भारत का प्रतिनिधित्व करते हुए कहा था कि– ''साम्प्रदायिकता, कट्टरता और इसके भयानक वंशज हठधर्मिता लम्बे समय से पृथ्वी को अपने शिकंजों में जकड़े हुए है। इन्होंने पृथ्वी को हिंसा से भर दिया है। कितनी बार ही यह धरती खून से लाल हुई है। कितनी ही सभ्यताओं का विनाश हुआ है और न जाने कितने देश नश्ट हुए हैं। अगर ये भयानक राक्षस नहीं होते तो आज मानव समाज कहीं ज्यादा उन्नत होता, लेकिन अब उनका समय पूरा हो गया है।''

इसके पूर्व उन्होंने कहा था कि– ''मैं आपको सभी धर्मों की जननी की तरफ से धन्यवाद देता हूँ और सभी जाति, सम्प्रदाय के लाखों करोड़ों हिंदुओं की तरफ से भी आपका आभार व्यक्त करता हूँ। मेरा धन्यवाद कुछ उन वक्तताओं को भी, जिन्होंने इस मंच से यह कहा कि दुनियां में सहनशीलता का विचार सुदूर पूरब के देशों में फैला है। मुझे गर्व है कि मैं एक ऐसे धर्म से हूँ, जिसने दुनिया को सहनशीलता और सार्वभौमिकता स्वीकृति का पाठ पढ़ाया है। हम सिर्फ सार्वभौमिकता सहनशीलता में ही विश्वास नहीं रखते, बल्कि विश्वास के सभी धर्मों को सत्य के रूप में स्वीकार करते हैं।''

डॉ. रमेश पोखरियाल की प्रस्तुत कविता स्वामी विवेकानन्द के विचारों से पूर्णरूपेण प्रभावित है। वेदों, उपनिषदों एवं रामायण–महाभारत के सिद्धान्तों, रहस्यों तथा प्रसंगों को डॉ. रमेश ने अपने काव्य में पर्याप्त स्थान दिया है। गीता का विश्वव्यापी कर्म मंत्र जो श्रीकृष्ण ने अर्जुन को दिया था–

कर्मव्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।
मा कर्मफलेहेतुभूर्मा ते संगोऽस्त्वकर्मणि।।

हे अर्जुन! तू मात्र कर्म कर। कर्म के फल में तेरा कोई अधिकार नहीं है। यदि कर्म के फल की आसक्ति में तेरी आसक्ति होगी तो तू कर्मफल प्राप्ति का कारण मत बन। तेरा कर्म केवल कर्म करना है, फल प्राप्ति की अपेक्षा करना नहीं। इसलिए तू निष्काम कर्म करने में स्वयं को प्रवृत्त कर।

गीता के इसी सिद्धान्त से प्रभावित यह कविता :–

कभी स्वयं से पूछा है?
कि तुम यहाँ क्यों आये हो?
किस बात का रोना रोते हो?
क्यों चेहरा मुरझाये हो?
पल पल का करके उपयोग
मेहनत से काम करो दिन रात
सोना निष्क्रियता दर्शाता
जो लाती आलस अपने साथ
तुम्हें तो सक्रिय बनकर सारे
सोये हुए को जगाना है
बदल स्वयं तकदीर को अपनी
सबका भाग्य बनाना है।
आरोप लगाकर औरों पर

नहीं तुम हो रोने के लिए
दिन दुगनी उन्नति कर जाओ
कुछ पास नहीं खोने के लिए
नहीं किसी से राग द्वेष रख
न ही दुख से हिम्मत हार
हँसी खुशी हर लम्हा जी ले
लेकर सबका प्यार–दुलार।।

कर्म फल सिद्धान्त की ही भाँति संसार की नश्वरता का सिद्धान्त भी भारतीय संस्कृति की प्रमुख विशेषता है। इस सिद्धान्त के अनुसार संसार नाशवान है। सम्पूर्ण दृश्य जगत मिथ्या है। जो दृश्यमान है वह नष्ट हो जाने वाला है। शंकराचार्य का सूत्र है कि– 'ब्रह्मसत्येजगन्मिथ्या।' यद्यपि इस गूढ़ सूत्र की दार्शनिकों तथा विद्वानों ने सहस्त्रार्धिक बार व्याख्या की है। भक्ति काल के तो प्रायः प्रत्येक भक्त और संत कवि ने एक स्वर से इस तथ्य को दोहराया है कि यह संसार मिथ्या है, सत्य केवल ब्रह्म है जो जीव के भीतर ही है। शंकराचार्य के इस सूत्र को आधार बनाते हुए आगे चलकर द्वैतवाद, अद्वैतवाद, विशिष्टा द्वैतवाद, द्वैताद्वैतवाद आदि दार्शनिक सिद्धान्तों की स्थापना हुई। ये सिद्धान्त भारतीय संस्कृति की अमूल्य धरोहर हैं।

डॉ. निशंक ने धर्म के बाह्य रूप का चित्रण कम ही किया है। जो भी किया है, उसमें ''धारयति इति धर्मः" को प्रधानता दी गयी है। धर्म के इन चरणों की स्थापना के लिए यह परम आवश्यक है कि विजातीय तत्वों के प्रसार पर अंकुश लगाया जाए। इस कार्य को राम ने किया था और मर्यादा की स्थापना की थी। कवि उन्हीं के आदर्शों पर चलकर मानव का सम्मान करने की बात करता है :–

राम तुम्हारे पथ पर चलकर
हम ऐसा संधान करेंगे।
दानवता की वृत्ति मिटाकर
मानवे का सम्मान करेंगे
ममता समता बिलख रही है
सोया पौरुष पीड़ित नारी
सहज भाव आहें भरता है
मर्यादा का मर्दन जारी
अब न कभी हम पल भर को भी
निष्ठा का अपमान सहेंगे।।

प्रवृत्ति के आधार पर धर्म का वर्गीकरण विद्वानों ने किया है। इसके आधार पर मानव धर्म तो सर्वश्रेष्ठ धर्म है ही। धर्म के अन्य भेदों में– राजधर्म, परिवार धर्म, पितृधर्म, मातृधर्म, भ्रातधर्म, सेवक धर्म, राष्ट्र धर्म, राजधर्म, छात्रधर्म, क्षात्रधर्म, कवि धर्म – जितनी प्रवृत्तियाँ हो सकती हैं उतने धर्म और यहाँ धर्म से सीधा–सीधा तात्पर्य है– अपना कर्त्तव्य पालन। डॉ. निशंक ने इन धर्मों से मानव धर्म और राष्ट्रधर्म को सर्वोच्च माना है। राष्ट्र धर्म ही राष्ट्रीय चेतना है, राष्ट्रवाद है।

धर्म में जो भी अन्य भिन्नताएँ हैं या विद्यमान हैं, उनका वर्णन करने या व्यक्त करने में कवि की कोई रुचि नहीं है, न ही उसमें कोई उत्कृष्टता है। मानव की अस्तित्ववादी प्रवृत्ति को सुरक्षित रखने में कवि की रूचि है और उसके अस्तित्व को सुरक्षित करना ही कवि अपना धर्म, अपना कर्त्तव्य समझता है :–

''मानव कहीं मर मिट गया, शेष दिखती अस्थियाँ हैं।
आदमी की लाश है या राख बनती अस्थियाँ हैं।
हर जगह बारुद है बस, कहाँ है मैदान खाली।
बेगुनाह हर प्रातः भी अब बन रही है राम काली।।''

कवि का यह मानवतावादी चिंतन ही उसकी पूजा है और उसका धर्म है। कवि को मानव का सम्मान सर्वोपरि है और अभ्रिपेत भी :–

मानव का सम्मान न कर, तू किस धरती पर रहेगा।
घाव जो बन गये हृदय में उनको कौन भरेगा?

संस्कृति के स्वरूप को विकृत करने वाले कुछ विजातीय तत्त्व भी होते हैं। ये तत्त्व मानव धर्म को विकृत करने का प्रयास करते हैं। धर्म के नाम पर हिंसा करना, दंगे करवाना, भाई–भाई के मध्य शत्रुता उत्पन्न करना – ये कुछ ऐसे कारक हैं जो संस्कृति के उन्नायक नहीं हो सकते। इस प्रकार के कृत्य करने वालों को निशंक जी गिरे हुए लोग कहते हैं :–

''ये कितने गिरे हुए लोग हैं जिन्होंने अपने स्वार्थों के लिए।
वहाँ पर आग लगायी है जहाँ जीवन मिलता है, जीने के लिए।
वहाँ भी जहर घोल दिया जहाँ पानी की जगह।
अमृत मिलता है, पीने के लिए।।''

धर्म के नाम पर जहाँ ऐसा कृत्य किया जाता है, वह धर्म नहीं अपितु वह अधर्म या अधर्म की श्रेणी में परिगणित होता है। भारत का सांस्कृतिक वैभव प्राचीन समय में दूर–दूर तक विस्तारित था। विभिन्न प्रकार की मूर्तियाँ और कलाकृतियाँ आज भी विदेशों में फैली हैं। इन्हीं में भगवान बुद्ध की दो विशालकाय प्रतिमाएँ अफगानिस्तान की राजधानी काबुल से 130 किलोमीटर दूर बामियान नामक स्थान पर थीं। इस्लामिक आतंकवादी संगठन तालिबान ने इन प्रतिमाओं को, जो क्रमशः लगभग 58 मीटर और 37 मीटर थी। मार्च 2001 में बारुद से उड़ा दिया। विश्व को शांति और करुणा का संदेश देने वाले भगवान बुद्ध की प्रतिमाओं के साथ इतनी हिंसात्मक कार्यवाही करने वाले नराधर्मों को न तो मानव कहा जा सकता है और न ही इनका धर्म मानव धर्म है। समूचे विश्व का अनुरोध ठुकराकर इन नर पिशाचों ने धर्म के नाम पर इन कलाकृतियों को ढहा दिया। इस कृत्य को देखकर कवि की आत्मा चीत्कार कर उठी। कवि की लेखनी कराह उठी :–

''तथागत का अनाविल – अनाघात, कर जाता सब अत्याचारों को मात।
अद्वितीय कलाकृति के अंग भग कर, तांडव प्रचंड कर बन जाता है।
क्रूर स्वयं को बताता है शुर तोड़ता,
बुद्ध– प्रतिमाजलाता चरार–ए–शरीफ नष्ट कर मंदिर।
बुझाता संस्कृति के दीप, कुचल जीवन के राग, मिटाता बंधुत्व के भाव।

सब कुछ क्षत–विक्षत कर, छोड़ता अमिट घाव ही घाव।।''

भारतीय संस्कृति मात्र हिंदुओं की संस्कृति नहीं है, अपितु हिंदुस्तान की संस्कृति है। यह हिंदुओं के अतिरिक्त इस देश में रहने वाले बौद्ध, जैन, ईसाई, मुस्लिम सब की साझा संस्कृति है। इसीलिए मानवता के शत्रुओं द्वारा हिंदुओं के मंदिर और बामियान की बौद्ध प्रतिमाओं को तोड़ने पर जितना दुख होता है, उतना ही दुख उसे मुसलमानों की इबादतगाहों को तोड़ने पर होता है। कवि ने इसे उपर्युक्त उद्धरण में 'जलाता चरार–ए–शरीफ' द्वारा अभिव्यक्त किया है।

कवि ने अपनी कविता में जिस चरारे शरीफ का उल्लेख किया है, उसका संदर्भ जान लेना अति आवश्यक है। इस घटना का संबंध एक अन्य घटना से है। जम्मू कश्मीर में इस्लामी आतंकवाद अपने चरम पर था। कश्मीर में एक मस्जिद है– 'हजरत बल'। ऐसा माना जाता है कि इस ऐतिहासिक मस्जिद में हजरत मोहम्मद साहब का बाल रखा हुआ है। इस्लामी आतंकवादियों ने 15 अक्टूबर 1993 को इस मस्जिद पर अधिकार कर लिया। मस्जिद की पवित्रता भंग होने के भय से सरकार ने सैनिक कार्यवाही नहीं की और शांति–वार्ता करती रहीं। आतंकवादियों को सुरक्षित निकाल दिया गया और उनकी मांगे भी मान ली गयीं।

इस घटनाक्रम से आतंकवादियों के हौसले बढ़ गये। श्रीनगर से 28 किलोमटीर दूर चरारे शरीफ नामक अत्यन्त प्रसिद्ध एक दरगाह है जहाँ एक सूफी संत नूरानी की कब्र है। मार्च 1995 के प्रथम सप्ताह में इस्लामी आतंकवादियों के एक गुट ने इस पर कब्जा कर लिया। सेना ने दरगाह को घेर लिया, पर सरकार ने कार्यवाही करने की अनुमति नहीं दी। परंतु सेना का धैर्य टूट गया और कार्यवाही की। आतंकवादियों ने चरारे शरीफ को आग के हवाले कर दिया। कुछ आतंकवादी मारे गये कुछ भाग गये। सेना ने जली हुई दरगाह को अमानुषों के चंगुल से मुक्त कराया।

2. दर्शन :– दर्शन का सामान्य अर्थ तो देखना है परन्तु यह सामान्य अर्थ से हट कर विशेष अर्थ भी ध्वनित करता है। 'भारत–दर्शन' का तात्पर्य है– भारत को देखना और जब 'भारतीय दर्शन' की बात की जाती है तो अर्थ बदल जाता है। फिर यह शब्द युग्म भारत के अध्यात्म संबंधी अर्थ को ध्वनित करने लगता है। इस अध्यात्म में आत्मा–परमात्मा जीव, जगत, ब्रह्म, जन्म – मृत्यु, पुनर्जन्म, माया आदि के रहस्यों पर आधारित ज्ञान है, रहस्य है व उसे जानने की जिज्ञासा है। इन्हीं तत्वों पर आधारित अनेक मत तथा वाद चिंतकों के द्वारा प्रतिपादित किये गये – द्वैतवाद, अद्वैतवाद, द्वैताद्वैत, विशिष्टाद्वैत आदि। इन सबका मूल स्त्रोत या कहें कि भारतीय दर्शन का मूल स्त्रोत वेद और उपनिषद हैं। भारतीय मनीशियों के उर्वर मस्तिष्क से जिस कर्म, ज्ञान भक्तिमय त्रिपथगा का प्रवाह उद्भूत हुआ, उसने दूर–दूर के मानवों के आध्यात्मिक कल्मश को धोकर उन्हें पवित्र नित्य शुद्ध बुद्ध और सदा स्वच्छ बनाकर मानवता के विकास में योगदान दिया है। इसी पतितपावनी धारा को लोग दर्शन के नाम से पुकारते हैं। दर्शन शब्द के प्रयोग का आधार बौद्ध ग्रंथों में प्रयुक्त 'दिट्ठि' शब्द बताया गया है। अन्वेषकों का विचार है कि इस शब्द का वर्तमान अर्थ में सबसे पहला प्रयोग वैशेषिक दर्शन में हुआ है।

'दर्शन' शब्द पाणिनीय व्याकरणानुसार दृशिर्प्रेक्षणे धातु से ल्युट् प्रत्यय करने से निष्पन्न होता है। यह ल्युट प्रत्यय भाव (शुद्ध धात्वर्थ) करण एवं अधिकरण कारकों के अर्थ में होता है। अतः दर्शन शब्द का अर्थ दृष्टि या देखना या जिसके द्वारा देखा जाय या जिसमें देखा जाय होता है।

''भावार्थक प्रत्यय को मानकर केवल देखना, जो दृष्टि का पर्यायवाची होकर सिद्धान्त (दर्शन द्वारा

प्रतिपादित सिद्धान्त) का अर्थ देगा। कारणार्थक प्रत्यय को मानकर जिसके द्वारा देखा जाय – यह अर्थ देगा जो आपाततः प्रक्रिया या पद्धति के लिए प्रयोग में आएगा और प्रत्यय को अधिकारणार्थक मानने पर वह ग्रंथ विशेष के अर्थ में भी प्रयोग किया जाता है। इस प्रकार व्याकरण की व्युत्पत्ति के आधार पर दर्शन शब्द का अर्थ बहुत व्यापक है।''

परन्तु दर्शन का क्षेत्र इससे भी अधिक व्यापक है। भौतिक दर्शन, राजनीति दर्शन, समाज दर्शन, काव्य दर्शन जैसे शब्द युग्म जब प्रयुक्त होतें है तो यहाँ 'दर्शन' शब्द का अर्थ बदल जाता है। संबंधित संज्ञा में जुड़कर यह सिद्धान्त का बोध कराने लगता है। परन्तु सामान्यतः दर्शन शब्द आध्यात्मिक सिद्धान्तों के प्रतिपादन के संदर्भों में ही ग्राह्य है।

भारतीय दर्शन में षड्दर्शन अधिक प्रसिद्ध और प्राचीन हैं। ये दर्शन हैं– सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, मीमांसा और वेदान्त। इनके अतिरिक्त समय–समय पर जैन, बौद्ध, शंकर आदि पंथों व विभूतियों के अपने–अपने सिद्धान्तों का प्रादुर्भाव हुआ। इन सिद्धान्तों को भी दर्शन के अंर्तगत समाहित कर लिया गया।

डॉ. रमेश पोखरियाल के काव्य में प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से इन दर्शन – सिद्धान्तों को ग्राहय किया गया है। परन्तु अध्यात्म–रहस्य में इनका मन सर्वाधिक रमा है। भारतीय दर्शन में आत्मा को अत्यन्त महत्व प्रदान किया है। आत्मा में ही परमात्मा का निवास होता है। उसे खोजने कहीं अन्यत्र नहीं जाना है, क्योंकि वह मन के भीतर है :–

''बहुत देर तक देखा, तुझे दूर तक ढूंढा।
पृथ्वी और आकाश के, असीम विस्तार में।
समुद्र के अथाह जल में, और दिशाओं के अंत में।
हे चराचर! तुम न दिखे कंदराओं और।
पर्वतों की एकांत ऊँचाइयों में, हे परमात्मन्!
तुम तो मिले हो, मन की अनंत गहराइयों में।''

अव्यक्त को अपने भीतर अनुभूत करना यह निर्गुणवादी भारतीय दर्शन है। कबीर आदि निर्गुणी भक्त कवियों में भी यही प्रवृत्ति उपस्थित है। यह अनंत और अव्यक्त सत्ता इतनी व्यापक है कि इसकी उपस्थिति को न चाहते और न मानते हुए भी स्वीकार करना पड़ता है। कवि के यही भाव प्रस्तुत कविता में उभरकर आये हैं :–

''मैं तेरा अनुसरण करुँ, न करुँ
मैं तुझे मानूँ या न मानूँ
पर तू तो सदा हृदय में रहता है
तेरी धारा में सब बहते, तुझमें सुख सागर बहता है
तेरी सत्ता है अनन्त, तू सारे जग का सृष्टा है
तेरा ही जग तुझमें ही जग, तू ही जग का दृष्टा है।''

यही परम शांति प्रदायक सत्ता है, जिसके सम्मुख नतमस्तक होने से मनुष्य सुख का अनुभव कर सकता है :–

''जब–जब भी प्राणी ने निज को, घोर विपद में पाया

परेशान होकर के उसने, तुझको शीष नवाया
तेरी ही कृपा से बदली, हर मानव की काया
सुख का अनुभव करके सबने, मन भावन–भावन पाया।''

कवि को अपने पूर्वज कवियों की भाँति यह अचल विश्वास है कि भले ही जमाना बदल जाये, पर तेरी कृपा–कटाक्ष नहीं बदलना चाहिए। तेरी कृपा यदि बनी रहेगी तो दुःख भी कुछ नहीं बिगाड़ सकेंगे :–

तूफानों की भांति बड़े बड़े
मुझे गम नहीं
जमाने के बदलने का
मुझे शक्ति देने वाले
बस तू बदल न जाना
दुःख के तूफानों की परवाह नहीं
डर केवल इतना है मुझको कि तू कहीं स्वयं ही
तुफान बनकर यहीं आना।।

दर्शन में ईश्वरीय अथवा ब्रह्म सत्ता के साथ साथ जन्म–मरण का अटल सिद्धान्त भी जुड़ा हुआ है। अपने पूर्ववर्ती कवियों की भाँति डॉ. रमेश भी जीवन को क्षण भंगुर मानते हैं। मनुष्य अपने जीवन में जोड़ तोड़ करता है, अनेक वस्तुएँ एकत्र करता है, दंभ भरता है, परतु यह सब एक क्षण में ढह जाता है और मनुष्य मरते समय खाली हाथ जाता है।

3. सहिष्णुता :– सहिष्णुता, भारतीय संस्कृति की अनिवार्य विशेषता है। सहिष्णुता से तात्पर्य है – सहना, धैर्य की शक्ति, सहना। प्रायः क्रोध के आवेग में मनुष्य अपना धैर्य खो देता है फलतः उसका विवेक शून्य हो जाता है। विवेक वह अकरणीय भी कर बैठता है। इस अकरणीय से पश्चाताप के अतिरिक्त फिर और कुछ प्राप्त नहीं होगा।

भारत के ऋषि मुनि अत्यन्त सहिष्णु रहे हैं। इसी सहिष्णुता का पाठ उन्होंने अपनी संतानों– अपने शिष्यों को पढ़ाया और उन्हें प्रत्येक परिस्थिति का सामना करने में सक्षम बनाया। यही सहिष्णुता राजा, महाराजाओं ने भी धारण की।

परन्तु सहिष्णु होना कायर होना नहीं है। हमारे प्राचीन ग्रंथों में दो कथानक ऐसे प्राप्त होते है; जो सहिष्णुता और कायरता के सूक्ष्म अन्तर को स्पष्ट कर देते हैं। प्रथम, राम ने समुद्र से मार्ग चाहा, धैर्यपूर्वक तीन दिन प्रतीक्षा करते रहे। समुद्र ने इसे श्रीराम का कायराना स्वभाव समझने की भूल की। परन्तु जब श्रीराम ने चौथे दिन शर–संधान किया तो रावण को समझ में आ गया कि उससे मार्ग प्राप्ति हेतु विनय करना राम की सहिष्णुता थी, कायरपन नहीं था।

दूसरी घटना श्रीकृष्ण की शिशुपाल के सौ अपराध क्षमा करने से संबंध रखती है। शिशुपाल के सौ अपशब्दों को सहन करना, श्रीकृष्ण की सहिष्णुता थी, कायरता नहीं। वस्तुतः सहिष्णुता जहाँ समाप्त होती है, वहाँ से शौर्य प्रारम्भ होता है। इसी सहिष्णुता को कवियों ने पर्वत और गंगा के प्रतीकों द्वारा अभिव्यक्त किया है। डॉ. रमेश पोखरियाल ने भी सहिष्णुता को पर्वत के प्रतीक द्वारा प्रस्तुत किया है :–

''मैं इसलिए चुप नहीं कि मैं इतना शांत हूँ।
तुम नहीं जानते कि मैं कितना आक्रति हूँ।
मौन हूँ तो सिर्फ इसलिए कि कहीं।
मेरे शांति वन में अशांति न आये कहीं।
मन्द पवन, मलय समीर स्वयं तूफान बनकर न छाये।
और फिर मुझे हिमालय का अनुपम धैर्य नहीं खोना है।
विश्व शांति का ध्वज लिए यहाँ मेरा हर एक कोना है।''

4. अनेकता में एकता :- आर्यावर्त में शक आये, हूण आये, कुषाण आये, तुर्क आये, मुगल आये और अँग्रेज आये। इन तमाम विदेशियों ने भारत पर आक्रमण किया, भारत को विजित किया, परन्तु इसी देश की प्रकृति में रच–बस गये। आज न तो हम हूण की पहचान कर सकते हैं और न कुषाण की, न मुगल की और न तुर्क की। इन सबकी तो केवल एक भारतीय के रूप में और भारतीय संस्कृति की यह एक प्रमुख विशेषता है। डॉ. निशंक ने अपने काव्य में भारतीय संस्कृति के इस तत्व का प्रयोग दो प्रकार से किया है– अभिधा के द्वारा और लक्षणा के द्वारा।

अभिधात्मक प्रयोग :-

यहाँ न भाषा का झगड़ा हो, जति पाँति का भेद नहीं,
दूर–दूर तक रहे नहीं अब, ऊँच–नीच का भेद कहीं।
कहीं शीत है, गर्मी वर्षा, कहीं हिमालय हिम का पात
गढ़वाली – बंगाली ही क्या, बहुभाषाएँ अठ बहु जात।
गुजराती है उड़िया भी है, कहीं तमिल, कहीं मद्रासी
ये पंजाबी – कश्मीरी हैं, पर सब हैं भारतवासी।
खान–पान तो अलग–अलग हैं भिन्न वेश–भूषा है यहाँ
रहन–सहन तो अलग–अलग पर, भारत बोलो एक यहाँ।।
मंदिर–मस्जिद – गिरिजाघर, यहाँ सबका ही सम्मान है
एक हाथ में गीता रहती, छूजे हाथ कुरान है।
अनेकता में एकता विशेषता हमारी है,
वेश–भूषा भिन्न रही, मिनन खान–पान है,
जाति धर्म के त्यौहार, हर कदम पर हैं यहाँ,
यहाँ की विपुलता देख, अचंभित सारा जहाँ
भारत की संस्कृति तो कल्याणकारी है।

लक्षणा प्रयोग :-

इसके अंतर्गत कवि ने भारत को उपवन मानते हुए विविधवर्णी फूलों की पांरपरिक कल्पना की है :–

''एक है बगिया, पुष्प हैं सारे, रंग–बिरंगे प्यारे–प्यारे।
यह है भारत बागिया न्यारी, दिखती जिसमें दुनिया सारी।

न्यौछावर जीवन है प्यारे, एक है बगिया पुष्प हैं सारे।।''

5. **करूणा :–** किसी दुखी के दुख को देखकर जब मनुष्य दुखी होता है और द्रवित होता है तब इस अव्यक्त भाव को करुणा कहते हैं। करुण रस की निष्पत्ति का कारक यही भाव है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने अपने करुणा निबंध में करुणा के स्वरूप को स्पष्ट करते हुए लिखा है कि– ''दूसरों के दुख के परिज्ञान से जो दुःख होता है, वह करुणा, दया आदि नामों से पुकारा जाता है .....। करुणा की तीव्रता का सापेक्ष विधान जीवन निर्वाह की सुगमता और कार्य विभाग की पूर्णता के उद्देश्य से समझना चाहिए। मनुष्य की प्रकृति में शील और सात्विकता का आदि संस्थापक यही मनोविकार है।''

भारतीय संस्कृति में से यदि करुणा को निकाल दिया जाए तो शेष कुछ बचेगा नहीं। ईश्वर को करुणावतार कहा गया है। बुद्ध और महावीर को करुणावतार कहा गया है। संस्कृत के नाटककार भवभूति तो अपने उत्तरामचरित नाटकश् में एको रसः करुण, कहकर करुण रस के महत्व को प्रतिपादित करते हैं। मैथुनरत क्रोंच पक्षी–युग्म में से बहेलिए के बाण से जब एक मृत हो जाता है, तब यह दृश्य देखकर आदिकवि वाल्मीकि के मुख से जो कविता सहसा प्रस्फुटित हुई थी, वह करुणासिक्त ही थी।

डॉ. रमेश पोखरियाल ने करुणा की इस परंपरा को अपने काव्य में जीवित रखा है। इनका अब तक प्रकाशित एकमात्र खण्डकाव्य प्रतीक्षा तो करुणा प्रधान ही है। यद्यपि इसमें वीररस भी सहायक रस के रूप में उपस्थित है। एक ममतामयी माँ के वात्सल्य प्रेम की करुण कहानी है। इस खंडकाव्य में काव्य कृति का समापन छन्द :–

''यह ममता से व्यापृत, करुणा से है भरी कहानी।
अबला बन जाती सबला, दृश्पथ में लेकर पानी।।''

6. **परिवर्तन की स्वीकारोक्ति :–** भारतीय संस्कृति का मूल स्वरूप सदैव से अक्षुण्ण रहा है। किंतु कतिपय तत्व ऐसे हैं, जो परिवर्तित हुए हैं समय के साथ जैसे वर्णाश्रम धर्म, आश्रम व्यवस्था, शिक्षा प्रणाली एवं अन्य। डॉ. रमेश पोखरियाल ने इन परिवर्तनों को स्वीकार किया है और अपने काव्य में इन्हें स्थान नहीं दिया। कवि स्वयं नया इतिहास बनाने और नयेपन को अंगीकार करने का पक्षधर है :–

'''निशंक' चाहे दुर्मन से लड़ना पड़ेगा, अविरल ही चाहे जलना पड़ेगा।
पर तुम्हें लक्ष्य की ओर उन्मुक्त होकर, नया एक इतिहास गढ़ना पड़ेगा।।''

भारतीय संस्कृति में पुरुषार्थ – चतुष्ट्य का भी महत्वपूर्ण स्थान रहा है। यह पुरुषार्थ चतुष्फल के नाम से भी जाना जाता है। ये हैं अर्थ, धर्म, काम और मोक्ष। वर्तमान दौर में धर्म का स्वरूप बदल गया है। अर्थ और काम का प्राधान्य है तथा मोक्ष में किसी का विश्वास नहीं है।

काम से तात्पर्य केवल स्त्री–पुरुष के वैवाहिक संबंधों की मान्यता नहीं है अपितु इस शब्द का व्यापक अर्थ है। काम– अर्थात् कर्म और भारतीय संस्कृति काम को इसी व्यापक अर्थ में ग्रहण करती है। डॉ. रमेश पोखरियाल पुरुषार्थ को इसी काम के पर्याय और विस्तार के रूप में ग्रहण करते हैं :–

''तुम अकेले मैं अकेला सब अकेले हैं यहाँ।
पुरुषार्थ जिनके पास है, वे अकेले हैं कहाँ।
कर्म पर विश्वास करना है, सफलता लक्ष्य मेरा।

ओ अरे पुरुषार्थ केवल चाहता हूँ मेह तेरा।।''

7. संस्कृति प्रतीक चिन्हों का प्रयोग :- भारतीय संस्कृति में अनेक ऐसी वस्तुएँ हैं, जो भारतीय संस्कृति के गहन अर्थ को ध्वनित करती हैं। इनमें सूर्य, चन्द्र, हिमालय, गंगा, यमुना, सरस्वती, ब्रह्मपुत्र, गाय, गायत्री, वीणा, दीपक, कमल, मयूर, सिंह, कलश, स्वास्तिक आदि प्रमुख हैं। डॉ. रमेश ने इन प्रतीकों का पर्याप्त प्रयोग अपने काव्य में किया है।

सरस्वती देवी एवं उनकी वीणा को भारतीय संस्कृति में प्रमुख स्थान प्राप्त है। सरस्वती को विद्या और कला की अधिष्ठात्री देवी माना जाता है। प्राचीन काल में कविगण गणपति और सरस्वती की वन्दना के पश्चात् ही काव्य रचना में प्रवृत्त होते थे। गोस्वामी तुलसीदास ने तो सरस्वती की प्रथम और गणपति की वन्दना द्वितीय क्रम पर की है :–

वर्णानामर्थसंघानां रसानां छनदसामपि।
मंगलानां च कर्त्तारौ वन्देवाणी विनायकौ।।

आधुनिक काल में भी अनेक कवियों ने सरस्वती वन्दना रचीं। इनमें निराला की सरस्वती वन्दना – 'वर दे वीणा वादिनी वर दे' अत्यन्त लोकप्रिय है। डॉ. रमेश की सरस्वती वन्दना निराला की सरस्वती वन्दना से पर्याप्त साम्य रखती है। डॉ. रमेश की यह पाँच बंधों में निबद्ध पूरी कविता निम्नानुसार है। कविता को उन्होंने हे दिव्य शक्ति शीर्षक प्रदान किया है :–

''हे दिव्य शक्ति हे विश्ववंदिता! विश्वअर्चिता!
दिव्य शक्ति ! हे चिर निधान !
नवरस, गति दे नई प्रेरणा, जग–जीवन कर सदा महान।
जीवन–पथ में स्वार्थ सकल हैं, विकल विश्व को नव बल दे।
जीर्ण–शीर्ण व्याकुल जीवन में, मंत्र एक निच्छल भर दे।
कलहयुक्त इस जीवन में माँ प्रेम–प्रणय दे कर कल्याण नवरस,
गति दे नई प्रेरणा, जग–जीवन कर सदा महान।
भूल गया बंधुत्व, प्रेम जो उस कलुषित मानव मन को,
फिर से नूतन पथ पर ल जा शिवे सरस उसके तन को।
त्रस्त हुए इस जीवन में माँ! भर दे नवल चेतना, प्राण।
नवरस, गति दे नई प्रेरणा, जग–जीवन कर सदा महान।।''

निष्कर्ष :-

डॉ. रमेश पोखरियाल 'निशंक' के काव्य में सांस्कृतिक चेतना की उपस्थिति स्पष्ट रूप से धार्मिक तत्वों, दर्शन, सहिष्णुता, अनेकता में एकता, करुणा, और परिवर्तन की स्वीकृति के माध्यम से उजागर होती है। उनकी कविताएं सांस्कृतिक प्रतीक चिन्हों का सबसे उत्कृष्ट प्रयोग करती हैं, जो पाठकों को समृद्ध भारतीय विरासत का साथ जोड़ते हैं। निशंक जी की रचनाएं व्यक्ति को धार्मिकता, सांस्कृतिक समृद्धि, और मानवता के मूल्यों के प्रति समर्पित करती हैं, जिससे समाज में एक सकारात्मक परिवर्तन की संभावना सुझाई जाती है। इस रूप में, निशंक जी के काव्य से हमें एक ऊँचे स्तर की सांस्कृतिक चेतना और समृद्धि की अद्भुत झलक मिलती है।

उनके काव्य से निकलने वाला निष्कर्ष यह है कि निशंक जी ने अपने शब्दों के माध्यम से सांस्कृतिक विरासत को समर्थन और पुनर्निर्माण का सुंदर चित्रण किया है। उनकी कविताएं सांस्कृतिक चेतना, साहित्यिक अद्भुतता, और समाज सेवा के संदेशों से भरी होती हैं, जो आधुनिक भारतीय समाज को प्रेरित करती हैं। इस प्रकार, उनका काव्य सांस्कृतिक चेतना की उच्चता में एक नई ऊंचाई प्रदान करता है और समृद्धि की दिशा में हमारा मार्गदर्शन करता है।

संदर्भ सूची :-

1. डॉ. रामधारी सिंह दिनकर, ''संस्कृति के चार अध्याय'' लोक भारतीय प्रकाशन, 2011, पृष्ठ 14
2. आचार्य नरेन्द्र देव, ''साहित्य, शिक्षा एवं संस्कृति'' प्रभात प्रकाशन, 1988, पृष्ठ 133
3. कल्याण (संस्कार अंक 2006) गीता प्रेस गोरखपुर, पृष्ठ 69
4. वही, पृष्ठ 77
5. डॉ. रमेश पोखरियाल, ''समर्पण'', पृष्ठ 22
6. शिकागो धर्म सम्मेलन में दिया गया भाषण।
7. श्रीमद्भगवद्गीता, 2/47
8. डॉ. रमेश पोखरियाल, ''सृजन के बीज'' प्रभात प्रकाशन, 2016, पृष्ठ 12
9. डॉ. रमेश पोखरियाल, ''कोई मुश्किल नहीं'' विंसर प्रकाशन, 2005, पृष्ठ 113
10. डॉ. रमेश पोखरियाल, ''जीवन पथ में'' हिन्दी साहित्य प्रकाशन, 2009, पृष्ठ 60
11. डॉ. रमेश पोखरियाल, ''संघर्ष जारी है'' हिन्दी साहित्य प्रकाशन, 2009, पृष्ठ 83
12. डॉ. रमेश पोखरियाल, ''देश हम जलने न देंगे'' हिन्दी साहित्य प्रकाशन, 2009, पृष्ठ 28
13. डॉ. रमेश पोखरियाल, ''संघर्श जारी है'' हिन्दी साहित्य प्रकाशन, 2009, पृष्ठ 50
14. डॉ. नरेन्द्रदेव सिंह शास्त्री एवं डॉ. हरिदत्ता शास्त्री, ''भारत दर्शन का इतिहास'' साहित्य भण्डार, सुभाष बाजार मेरठ, संस्क0 तृतीय, 1977, पृष्ठ 1
15. वही, पृष्ठ 40
16. डॉ. रमेश पोखरियाल, ''कोई मुश्किल नहीं'' विंसर प्रकाशन, 2005 पृष्ठ 71
17. वही, पृष्ठ 72
18. वही, पृष्ठ 80
19. वही, पृष्ठ 99
20. डॉ. रमेश पोखरियाल, ''मातृभूमि के लिए'' हिन्दी साहित्य प्रकाशन, 2009, पृष्ठ 62
21. वही, पृष्ठ 140
22. वही, पृष्ठ 27
23. वही, पृष्ठ 42–43
24. डॉ. रमेश पोखरियाल, ''ए वतन तेरे लिए'' विंसर प्रकाशन, 2007, पृष्ठ 12
25. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, ''चिंतामणि (भाग 1)'' बोधी प्रकाशन, 2020
26. डॉ. रमेश पोखरियाल, ''देश हम जलने न देंगे'' हिन्दी साहित्य प्रकाशन, 2009, पृष्ठ 19
27. वही, पृष्ठ 55
28. रामचरित मानस, गोस्वामी तुलसीदास बालकाण्ड, मंगलाचरण।
29. डॉ. रमेश पोखरियाल, ''देश हम जलने न देंगे'' हिन्दी साहित्य प्रकाशन, 2009, पृष्ठ 39

kourharvinder727@gmail.com

संगम Impact Factor : 6.632
Website : www.ginajournal.com
ISSN : 2321-8037
विशेषज्ञ समीक्षित पत्रिका A Peer Reviewed International Refereed Journal
SANGAM
गीना देवी शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित साहित्य, शिक्षा, संस्कृति एवं शोध को समर्पित मासिक
Vol. 12, Issue 1-2
पृष्ठ : 133-137

मानवता की खुली आँख के सबसे सुन्दर सपने राम

वैभव सिंह
शोध छात्र, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय।
परास्नातक, हिन्दू महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय।
स्नातक, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय।

बीता हुआ समय भले ही इतिहास हो सकता है परन्तु काल तो कभी ना बीतने वाला समय है। यह अजस्र प्रवाह है। राम कथा भारतीय जनमानस में गहरे तक व्याप्त है। गाँव की चौपालों से लेकर संस्कृत के शास्त्रीय ग्रंथों तथा पुराणों तक राम रमे हैं। राम धीरज, मर्यादा तथा प्रजारंजन के शिखर पुरुष हैं। किसी भी सभ्य समाज को ऐसे ही व्यक्तित्व पसंद आते हैं जो हर प्रकार से लोक रंजक तथा प्रजारंजक हों। राम में ये सारे गुण विद्यमान हैं और वह आवश्यकता पड़ने पर योद्धा भी हैं।

'है राम के वजूद पे हिन्दोस्ताँ को नाज।
अहल–ए–नजर समझते हैं।
इस को इमाम–ए–हिन्द।' [1]

'सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्ताँ हमारा' गीत लिखने वाले इकबाल ने, जो शायर तो अच्छे थे और देशभक्त भी थे पर बाद में सांप्रदायिकता की आँधी से बच नहीं पाए, वो श्रीराम को भगवान नहीं मान सकते थे क्योंकि उनका धर्म इसकी इजाजत नहीं देता लेकिन उन्होनें श्रीराम के अस्तित्व को नकारा भी नहीं था। वो राम को हिंदुस्तानी तहजीब और संस्कृति का हिस्सा मानते थे।

श्रीराम भारत के आदर्श क्यों हैं, ये प्रश्न सबके मन में उठता होगा। इसके संबंध में कुछ बिन्दु क्रमवार प्रस्तुत हैं।

सिंहासन के लिये पिता और भाई की हत्या करने वाले राजा तो इतिहास में भरे पड़े हैं, लेकिन जिसके लिये प्रजा स्वयं मरने–मारने को खड़ी हो, जो प्रजा के लाडले हों, वो पिता के वचन का मान रखने के लिये सिंहासन को ठोकर मार दें, ये पुत्र का सर्वोत्तम आदर्श रूप ही तो है। पिता की दुविधा जानने के बाद राम वन गमन के लिए एक क्षण का समय नहीं लगाते जबकि उन्हें अपनी जन्मभूमि और जननी से अत्यंत प्रेम था। वाल्मीकि रामायण में एक स्थान पर राम लक्ष्मण से कहते हैं :–

'अपि स्वर्णमयी लंका न मे लक्ष्मण रोचते,
जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी।'[2]

अर्थात् हे लक्ष्मण! सोने की लंका भी मुझे अच्छी नहीं लगती है। माता और मातृभूमि स्वर्ग से भी बढ़ कर

हैं। इतने अथाह प्रेम के बाद भी पितृ आज्ञा पालन के लिए वो अयोध्या छोड़ देते हैं। ये पितृ प्रेम का एक आदर्श रूप है।

जिस समय में बहुपत्नी परंपरा थी और एक राजा के अंतःपुर में कई रानियाँ होती थी उस समय राम ने एक पत्नीव्रत रखा। आजीवन उसी पत्नी से प्रेम किया। पत्नी का हरण हुआ तब भी दूसरी शादी ना करके सिया को पाने के लिये लंका तक पर चढ़ाई कर दी। लंका में हनुमान सीता से राम का सन्देश कह रहे हैं :–

'कहेउ राम बियोग तव सीता, मो कहुँ सकल भए बिपरीता।
नव तरु किसलय मनहुँ कृसानू, कालनिसा सम निसि ससि भानू।
कुबलय बिपिन कुंत बन सरिसा, बारिद तपत तेल जनु बरिसा।
जे हित रहे करत तेइ पीरा, उरग स्वास सम त्रिबिध समीरा।
कहेहू तें कछु दुख घटि होई, काहि कहौं यह जान न कोई।
तत्व प्रेम कर मम अरु तोरा, जानत प्रिया एकु मनु मोरा।'[3]

अर्थात् राम कहते हैं हे सीते! तुम्हारे वियोग में मेरे लिए सभी पदार्थ प्रतिकूल हो गए हैं। वृक्षों के नए–नए कोमल पत्ते मानो अग्नि के समान, रात्रि कालरात्रि के समान, चंद्रमा सूर्य के समान। कमलों के वन भालों के वन के समान हो गए हैं। मेघ मानो खौलता हुआ तेल बरसाते हैं। जो हित करने वाले थे, वे ही अब पीड़ा देने लगे हैं। त्रिविध (शीतल, मंद, सुगंध) वायु साँप के श्वास के समान (जहरीली और गरम) हो गई है। मन का दुःख कह डालने से भी कुछ घट जाता है, पर कहूँ किससे। यह दुःख कोई जानता नहीं। हे प्रिये! मेरे और तेरे प्रेम का तत्त्व (रहस्य) एक मेरा मन ही जानता है। ये राम के पत्नी प्रेम का आदर्श रूप है जो इतिहास में दुर्लभ है।

राम ने क्षत्रिय कुल में जन्म लेकर, राजा होकर निषाद और केवट जैसे समय लोगों से मित्रता की। श्री राम का सबसे बड़ा गुण अपने दोस्तों के प्रति उनकी चिंता और प्यार था, चाहे वे उनके साथ हों या उनसे दूर हों। यद्यपि श्री राम अयोध्या में थे, फिर भी वे अपने बचपन के मित्र निषाद राज गुह को कभी नहीं भूले। श्री राम और निषाद राज दोनों अपने–अपने जीवन में व्यस्त थे, लेकिन एक–दूसरे को कभी नहीं भूले। काफी समय बाद मिलने के बाद भी श्री राम ने सम्राट के पुत्र होने का कोई अधिकार नहीं दिखाया। श्री राम और निषाद राज गुह की मित्रता यह सिद्ध करती है कि मित्र की देखभाल और स्नेह समय के साथ कभी खघ्त्म नहीं होता, बल्कि और मजबूत होता है। श्री राम गंगा नदी के तट पर अपने मित्र के आतिथ्य को बहुत गर्मजोशी और स्नेह के साथ स्वीकार करते हैं। वह निषाद राज द्वारा बनाए गए पत्तों के बिस्तर पर सोते हैं, उसके द्वारा खरीदे गए कंद–मूल खाते है और दुनिया को दिखातें हैं कि मित्र वह है जो समाज में अपना स्थान न आंकते हुए दूसरे के प्रेम को स्वीकार करता है। राम, निषाद राज को भी अपने महत्व का एहसास कराते हैं, और भरत की सहायता के रूप में अयोध्या की सीमाओं की रक्षा करने का कार्य सौंपते हैं। इससे निषाद राज पूरी तरह से राम के प्रेम में बंध जाता है और वह उसे अपने प्राणों से भी अधिक प्रिय मानकर अपना कार्य करता है। श्रीराम ने निषाद राज को कितना महत्व दिया, इसका पता तब चलता है जब चौदह वर्ष का वनवास पूरा करने के बाद वे भरत और अयोध्या वापस जाने से पहले भी श्रृंगवेरपुर में ही सबसे पहले पड़ाव डालते हैं। तुलसीदास जी लिखते हैं कि राम में समानता के आधार पर एक सहज स्नेह हैं। वह किसी भी भेदभाव से परे है।

'सहज सनेह बिबस रघुराई। पूँछी कुसल निकट बैठाई।'[4]

एक साधारण आदिवासी और एक सम्राट का बेटा यह साबित करता है कि जब मित्रता बिना किसी शर्त के की जाती है, तो वह हमेशा याद रखी जाने वाली सबसे स्थायी मित्रता हो सकती है।

राम ने आदिवासी माँ शबरी के घर जूठा खाना खाया और जातिवाद पर कुठाराघात किया। शबरी को नवधा भक्ति की प्रविधि प्रदान की।

नवधा भगति कहउं तोहि पाहीं, सावधान सुनु धरु मन माहीं।
प्रथम भगति संतन्ह कर संगा, दूसरि रति मम कथा प्रसंगा।

ये राम की मानवमात्र में समानता का आदर्श रूप है।

जिसके मित्र इंसान ही नहीं पक्षी और वानर भी हों, जिनके प्रेम परिसर में सबका स्थान हो। वो जटायु से मित्रता करते हैं। उसका अंतिम संस्कार एक मनुष्य की तरह करते हैं।

'कोमल चित अति दीनदयाला, कारन बिनु रघुनाथ कृपाला।
गीध अधम खग आमिष भोगी, गति दीन्ही जो जाचत जोगी।'[5]

अर्थात् रघुनाथ अत्यंत कोमल चित्त वाले, दीनदयालु और बिना ही करण कृपालु हैं। गीध (पक्षियों में भी) अधम पक्षी और मांसाहारी था, उसको भी वह दुर्लभ गति दी, जिसे योगीजन माँगते रहते हैं। ये राम के पर्यावरण प्रेम, चराचर और प्राणिमात्र प्रेम का आदर्श रूप है।

जिनकी शक्ति को सागर और सूर्य भी नमन करते हों, जिन्होंने कभी किसी निर्बल के खिलाफ शक्ति का प्रयोग नहीं किया, जिसे अपनी क्षमता और शक्तियों पर लेशमात्र का घमण्ड नहीं था, जो समुद्र को सुखा देने की शक्ति रखते हुए भी तीन दिन तक उसकी आराधना करें। विभीषण के परामर्श पर लक्ष्मण की असहमति के बावजूद वो समुद्र से प्रार्थना करने बैठ जाते हैं

'सखा कही तुम्ह नीति उपाई, करिअ दैव जौं होइ सहाई।
मंत्र न यह लछिमन मन भावा, राम बचन सुनि अति दुःख पावा।'[6]

अर्थात् हे सखा! तुमने अच्छा उपाय बताया है, यही किया जाए यदि दैव सहायक हों। यह सलाह लक्ष्मण के मन को अच्छी नहीं लगी। राम के वचन सुनकर तो उन्होंने बहुत ही दुःख पाया। इस घटना से राम की विनम्रता और भारतीय सभ्यता का आदर्श रूप परिलक्षित होता है।

राम ने अपने शत्रु रावण का वध करने के बाद अपने छोटे भाई लक्ष्मण को रावण के पास शिक्षा के लिए भेजा। वो शत्रुओं का भी सम्मान करते थे। उनकी शत्रुता सिर्फ बुराई से होती थी, किसी रावण नाम के प्राणी से नहीं। रावण द्वारा लक्ष्मण को शिक्षा का ये वर्णन राधेश्याम रामायण में वर्णित है। ये राम की मानवता का आदर्श रूप है।

राम ने अपने जीवन में कभी भी संघर्षों के मुँह नहीं मोड़ा। जीवन ने उन्हें जो भी दिया उसे सहर्ष स्वीकार किया। उनका वन–गमन, दंडक वन को राक्षसों से विहीन, वैज्ञानिक अनुसंधान हेतु ऋषियों और मनीषियों को अभय, ये उनके कर्मठता, जीवन सौन्दर्य और श्रम सौंदर्य की महत्ता का आदर्श रूप है।

दुनिया में 300 तरह की रामायण हैं। प्रकारांतर में सब लेखकों ने अपनी कहानियाँ लिखी हैं लेकिन एक बात जो सब रामायण में है वो राम का आदर्श रूप है। मराठी की भावार्थ रामायण हो, कम्ब की तमिल रामायण, कृत्तिवास की बांग्ला रामायण हो, अजुतच्छन की मलयालम रामायण या फिर ख्मेर रामायण, सब में राम के मर्यादा

पुरुषोत्तम की छवि को अक्षुण्ण है। उत्तर–पूर्व भारत में 16वीं शती में श्रीमंत शंकरदेव ने भी नव वैष्णव धर्म के माध्यम से राम का गुण बखाना। राम, श्रीमन्त शंकरदेव के रचनात्मक परिधि में भी आए। श्रीमन्त ने अपनी रचनाओं 'उत्तरकाण्ड' और 'राम विजय' में राम के विभिन्न रूपों का वर्णन सरसता और सरलता में करके उत्तर–पूर्व भारत के जनमानस पर एक अमिट हस्ताक्षर छोड़ दिया। श्रीमन्त इस मामलें में अपना एक विलक्षण स्थान रखते हैं। वो ब्रज यात्रा पर कृष्णकवियों से मिलते हैं, ब्रजभाषा सीखते हैं, कृष्णभक्त बनते हैं, असमिया भाषा से ब्रजभाषा का मेल करके एक नयी और लोकसंपृक्त भाषा 'ब्रजबुलि' का निर्माण करते हैं लेकिन वो राम के आदर्श को देखते हुए, उनमें व्याप्त लोकरंजन और लोकतंत्र को देखते हुए, उन पर लेखनी चलाने से परहेज नहीं करते। वह 'राम' पर लिखते हैं और सारगर्भित लिखते हैं। राम में व्याप्त हर उस मूल्य को उजागर करते हैं जिससे समाज को समरस बनाने में सहायता मिले। तुलसीदास जी रामचरितमानस में लिखते हैं :–

हरि अनंत हरि कथा अनंता, कहहि सुनहि बहु विधि सब संता।
रामचन्द्र के चरित सुहाए, कलप कोटि लगि जाहि ना गाये।[7]

अर्थात् हरि अनंत हैं, उनका कोई पार नहीं पा सकता और उनकी कथा भी अनंत है। सब संत लोग उसे बहुत प्रकार से कहते–सुनते हैं। रामचन्द्र के सुन्दर चरित्र करोड़ों कल्पों में भी गाए नहीं जा सकते।

मैसूर में जन्मे दक्षिण भारतीय कवि अत्तिपत्ते कृष्णास्वामी रामानुजन अपने एक निबंध 300 रामायण में लिखते हैं 'पिछले पच्चीस सौ वर्षों या उससे भी अधिक समय में दक्षिण और दक्षिण पूर्व एशिया में रामायणों की संख्या और उनके प्रभाव का दायरा आश्चर्यजनक है। उन भाषाओं की सूची जिनमें राम कथा पाई जाती है, किसी को भी चौंका देती है : अन्नामी, बाली, बंगाली, कम्बोडियन, चीनी, गुजराती, जावानीस, कन्नड़, कश्मीरी, खोतानी, लाओटियन, मलेशियाई, मराठी, उड़िया, प्राकृत, संस्कृत, संताली, सिंहली, तमिल, तेलुगु, थाई, तिब्बती– पश्चिमी भाषाओं का तो कहना ही क्या। सदियों से, इनमें से कुछ भाषाओं ने राम कहानी के एक से अधिक पाठों की मेजबानी की है। अकेले संस्कृत में विभिन्न कथा शैलियों (महाकाव्य, काव्य या अलंकृत काव्य रचनाएँ, पुराण या पुरानी पौराणिक कहानियाँ, आदि) से संबंधित लगभग पच्चीस या अधिक पाठ शामिल हैं। यदि हम शास्त्रीय और लोक दोनों परंपराओं में नाटकों, नृत्य–नाटकों और अन्य प्रदर्शनों को जोड़ दें, तो रामायणों की संख्या और भी बड़ी हो जाती है। इनमें दक्षिण और दक्षिण पूर्व एशियाई संस्कृतियों में मूर्तिकला और बेस–रिलीफ, मुखौटा नाटक, कठपुतली नाटक और छाया नाटक भी शामिल होने चाहिए।'[8]

रामायण के एक छात्र कामिल बुल्के (1950) ने तीन सौ पाठ गिनाए। आश्चर्य की बात है कि चौदहवीं शताब्दी से भी पहले, एक कन्नड़ कवि, कुमारव्यास ने महाभारत लिखने का फैसला किया था, क्योंकि उन्होंने पृथ्वी को संभालने वाले ब्रह्मांडीय नाग को रामायण कवियों के बोझ के नीचे कराहते हुए सुना था।

प्रभु श्रीराम भगवान होने के कारण नहीं बल्कि अपने आदर्श, त्याग, समर्पण, सरलता जैसे गुणों के कारण मर्यादा पुरुषोत्तम कहलाये थे। विष्णु पुराण में 'भगवान' शब्द का अर्थ निम्नलिखित बताया गया है।

'ऐश्वर्यस्य समग्रस्य धर्मस्य यशसश्रियः।
ज्ञान वैराग्ययोर्षण्णां भग इतीरणा।'[9]

विष्णुपुराण, षष्ठ अंश, अध्याय 5 श्लोक 74

अर्थात् सम्पूर्ण ऐश्वर्य, धर्म, यश, श्री, ज्ञान और वैराग्य इन छः गुणों का नाम 'भग' है। ये छः प्रकार के

गुण जिसके पास हैं उसे भगवान कहा जाता है। इस दृष्टि से श्रीराम को मनुष्य होते हुए भी भगवान माना जाता है। उनके इन गुणों ने ही उन्हें भगवान बना दिया। वो सिर्फ हिन्दुओं के लिये ही नहीं सभी इंसानों के लिये अनुकरणीय हैं। शायद इकबाल ने भी राम के जीवन से कुछ सीखा होगा इसीलिये उन्होनें रामजी को 'इमाम–ए–हिन्द' अर्थात् हिन्द का पथ–प्रदर्शक कहा था। जो भी अहल–ए–नजर हैं अर्थात् दूरदर्शी हैं, जिनकी नजर स्पष्ट और खुली हुई है उनको राम के व्यक्तित्व का महत्व पता है।

सन्दर्भ :-

1. इकबाल, अल्लामा : बाँग–ए–दरा, 1908
2. वाल्मीकि : रामायण, लंकाकांड।
3. तुलसीदास : रामचरितमानस, सुन्दरकांड।
4. तुलसीदास : रामचरितमानस, अयोध्याकाण्ड।
5. तुलसीदास : रामचरितमानस, अरण्यकाण्ड।
6. तुलसीदास : रामचरितमानस, सुन्दरकांड।
7. तुलसीदास : रामचरितमानस, बालकाण्ड।
8. रामानुजन, अत्तिपत्ते कृष्णास्वामी : तीन सौ रामायण, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2023
9. विष्णुपुराण, षष्ठ–अंश, अध्याय–5, श्लोक–74

संगम Impact Factor : 6.632
Website : www.ginajournal.com
ISSN : 2321-8037
SANGAM
विशेषज्ञ समीक्षित पत्रिका A Peer Reviewed International Refereed Journal
Vol. 12, Issue 1-2
गीना देवी शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित साहित्य, शिक्षा, संस्कृति एवं शोध को समर्पित मासिक
पृष्ठ : 138-141

आधुनिक भारत के निर्माता : राजाराम मोहनराय

डॉ. पूजा वरूण
सहायक आचार्य (राजनीति विज्ञान), स. ध. राजकीय महाविद्यालय, ब्यावर।

समष्टि व व्यक्ति, ईश्वर व मनुष्य, मानता व राष्ट्रीयता, समुदायवाद व व्यक्तिवाद के मध्य अनिवार्य तादात्मय राय के चिन्तन का केन्द्रीय तत्व है।" —विपिन चन्द्र पॉल

राजा राममोहन राय भारत को आधुनिक भारत बनाना चाहते थे, आज राजा राम मोहन राय को आधुनिक भारत के रचयिता के नाम से भी जाना और पहचाना जाता है। राजा राममोहन एक महान विद्वान और स्वतंत्र विचारक थे, वो समाज का कल्याण करना चाहते थे। आधुनिक भारत के निर्माता कहे जाने वाले महान समाज सुधारक राजा राममोहन राय ने न केवल सती प्रथा को समाप्त किया बल्कि उन्होंने लोगों के सोचने के तरीके को भी बदला।

बहुत ही कम लोग हुए हैं, जिन्होंने देश को आधुनिक बनाने के साथ–साथ महिलाओं के अधिकारों की भी बात की हो, इस दिशा में सबसे अधिक काम राजा राम मोहन राय ने किया था। इसी वजह से उनको आधुनिक भारत की नींव रखने वाले समाज सुधारक के लिए भी जाना जाता है। भारतीय नवोत्थान की धारा के क्रम में अनेक मनीषियों का अविर्भाव हुआ, उसमें राजा राममोहन राय का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है। उनका जन्म 22 मई, 1772 ई को बंगाल प्रांत के वर्द्धमान जिले में स्थित राधा नगर गांव के एक संपन्न, भू स्वामी, परंपरावादी परिवार में हुआ था। उनके पिता वैष्णव और उनकी माता शाक्त परिवार की थी फलतः उनका शैशव काल रूढ़िवादी, परंपरावादी व बहुदेववाद परिवेश में पल्लवित हुआ। आखिरकार उन्होंने ब्रिस्टल के समीप स्टाप्लेटन में 27 सितंबर 1833 को दुनिया को अलविदा कह दिया।

राजा राममोहन के व्यक्तित्व की मुख्य विशेषताएं :–

1. राजा राममोहन राय की मातृभाषा बंगाली होते हुए भी उन्हें अरबी, फारसी, संस्कृत, अंग्रेजी, यूनानी, फ्रेंच, लैटिन आदि अनेक भाषाओं का ज्ञान था।
2. **विशाल दृष्टिकोण** – राजा राममोहन राय अत्यंत विशाल दृष्टिकोण रखते थे जिससे उनका तुलनात्मक दृष्टिकोण बडा ही व्यापक हो गया था और वे विभिन्न पंथों की संकीर्णता से मुक्त हो गए थे।
3. **अध्ययन के प्रति विशेष आकर्षण** – विभिन्न भाषाओं के जानकार होने से उनमें अनेक ग्रन्थों को पढ़ने के प्रति एक आकर्षण उत्पन्न हो गया और उन्होंने अनेकों पाश्चात्य दार्शनिकों के ग्रन्थों का भी अध्ययन किया और उनका झुकाव मानवतावादी दर्शन की और हो गया।
4. **तुलनात्मक प्रवृत्ति** – राजा राममोहन राय का समस्त चिंतन तुलना पर विशेष रूप से आधारित था, उन्होंने

बौद्ध धर्म, इस्लाम धर्म सभी में समय–समय पर तुलनात्मक अध्ययन किया।

राजा राममोहन राय की रचनाएं :–

1. हिंदू उत्तराधिकार कानून के अनुसार स्त्रियों के प्राचीन अधिकारों पर आधुनिक अतिक्रमण से संबंधित टिप्पणियां, 1822
2. प्रेस पर नियंत्रण के विरुद्ध सर्वोच्च न्यायालय एवं सम्राट को याचिका, 1823
3. अंग्रेजी शिक्षा पर लॉर्ड एम्हर्स्ट के नाम एक पत्र, 1823
4. ईसाई जनता के नाम अपील, 1823
5. यूरोपवासियों के भारत में बसने के संबंध में विचार, 1831
6. भारत की न्यायिक एवं राजस्व प्रणाली पर प्रश्नोंत्तर, 1832
7. विशेष – ब्रह्म समाज 1828
   आत्मीय सभा 1814
   संवाद कौमुदी
   मिरात–उल–अखबार
   राजा की उपाधि मिली

बुद्धिवादी दृष्टिकोण :–

बुद्धिवादी दृष्टिकोण संभवतया है उनके चिंतन का सबसे प्रमुख तत्व है। उन्होंने तत्कालीन भारत के धार्मिक और सामाजिक जीवन तथा पाश्चात्य जीवन, दोनों के ही प्रति बुद्धिवादी दृष्टिकोण अपनाकर इस बात का प्रतिपादन किया की परंपराओं के नाम पर धार्मिक और सामाजिक जीवन में जो कुरीतियां प्रचलित हैं, अपने आप को जीवंत रखने के लिए उन्हें दूर किए जाने की आवश्यकता है, लेकिन पश्चिम में सब कुछ श्रेयस्कर नहीं है और पश्चिम के अंधानुकरण का प्रश्न नहीं उठता। उन्होंने अंधविश्वास, अविवेक और भाग्यवाद का तीव्र विरोध किया। अपने बुद्धिवादी दृष्टिकोण के आधार पर मैकेनिकोल के शब्दों में, "राजा ने जो ज्योति जलाई उसने भारतीय जीवन के अंधकार को नष्ट कर दिया।"

महान समाज सुधारक :–

राय ने अपने विचारों और सक्रिय आंदोलनों के द्वारा भारतीय समाज में नवजागरण का संदेश फूंक दिया। उन्होंने यह अनुभव किया कि भारतीय समाज की उन्नति तभी संभव है जबकि समाज में व्याप्त कुरीतियों, परंपराओं और अंधविश्वासों से जनता को मुक्ति दिलाई जा सके। राय ने भारतीयों में परंपरागत आत्मगौरव को पुनः जागृत करने तथा आधुनिक पश्चिमी विचारों को अपनाने पर समान रूप से बल दिया। इस प्रकार उन्होंने यह सुनिश्चित करने का प्रयत्न किया कि अपने प्राचीन दर्शन, गौरवमय और उत्कृष्ट संस्कृति के ज्ञान के द्वारा जहाँ भारतीयों में आत्मविश्वास का संचार हो, वही वे आधुनिक मूल्यों का अपने जीवन में समावेश कर अन्य देशों में रहने वाली जनता के समान स्तर पर आ सके।

पुनर्जागरण के प्रथम अधिवक्ता :–

राजा राममोहन राय के समय में भारतीय समाज सांस्कृतिक अघःपतन की अवस्था में पहुंच चुका था। धार्मिक और सामाजिक जीवन पूरी तरह दो धाराओं में विभक्त हो गया था। एक और ऐसे व्यक्ति थे जो

अंधविश्वासों, रूढ़ियों और धार्मिक संकीर्णताओं में गहरे डूबे हुए थे, समाज के लिए उपयोगी किसी नवीन विचार और व्यवहार को स्वीकार करने की बात सोचने में भी असमर्थ थे। दूसरी ओर भारतीयों का एक ऐसा वर्ग था जो पाश्चात्य सभ्यता और संस्कृति के प्रति भारी आकर्षण अनुभव कर रहा था। यह वर्ग पाश्चात्य जीवन और संस्कृति को श्रेयस्कर समझते हुए ईसाई धर्म की ओर आकर्षित हो रहा था। उन्हें अपना धर्म और अपनी संस्कृति अपने ही देश में हेय अनुभव होने लगी थी पतन की परकाष्ठा थी। यह ऐसी स्थिति में राजा राममोहन राय ने एक नए रास्ते की खोज की और उसे पर चलने का साहस का परिचय दिया। उन्होंने इस बात का प्रतिपादन किया कि अन्य धर्म और संस्कृतियों की तुलना में भारतीय धर्म संस्कृति निश्चित रूप से श्रेष्ठ है लेकिन इसके साथ ही भारतीय जीवन में व्याप्त कुरीतियों को दूर किया जाना आवश्यक है यह पुनर्जागरण का संदेश था और पुनर्जागरण के प्रथम अधिवक्ता राजा राममोहन राय ही थे। एनीबेसेन्ट लिखती है, "राजा राम मोहन राय एक अद्‌भुत शक्ति, लग्न और दृढ़ता थी।

धार्मिक उदारक :-

धर्म सुधार के क्षेत्र में मार्टिन लूथर ने जो कार्य यूरोप में किया था भारत में वही कार्य राजा राममोहन राय ने किया। तत्कालीन नरबलि, कन्या हत्या, धर्म के नाम पर सती प्रथा, मूर्ति पूजा और उससे उत्पन्न हिंसाएं, अराजकता की स्थिति से इस राष्ट्र को उबारने के लिए जो प्रयत्न राजा राममोहन राय ने किए वे उनकी महानता के परिचायक हैं। इसके लिए उन्होंने न केवल रचनात्मक कार्य किया अपितु क्रियात्मक दृष्टि से ब्रह्म समाज जैसे संगठन की भी स्थापना की जिसने सुधार आंदोलन में महत्ती भूमिका अदा की।

स्त्री स्वतंत्रता :-

राजा राममोहन राय स्त्रियों की स्वतंत्रता और समाज में उनके सम्मान पूर्ण और गरिमा पूर्ण स्थान को सुरक्षित करने के प्रबल पक्षधर थे। उन्होंने स्त्रियों के उत्थान और उन्हें शिक्षा, संपत्ति आदि के क्षेत्र में समानता का स्तर प्रदान करने के लिए जागरूक प्रयत्न किये। हिंदू समाज में सती प्रथा के विरोध में राय ने सर्वप्रथम आवाज उठाई। साथ ही पुरुषों के बहुविवाह का विरोध किया तथा विधवाओं के पुर्नविवाह का समर्थन करके राय ने भारत में स्त्रियों के उत्थान के लिए वैचारिक और सामाजिक दोनों स्तरों पर सक्रिय और सार्थक प्रयत्न किया उनके इन प्रयत्नों का भारतीय समाज पर व्यापक प्रभाव पड़ा तथा वे इनके लिए कानूनी प्रावधान कराने में भी समर्थ हुए।

इस प्रकार स्पष्ट है कि राजा राममोहन राय एक समाज सुधारक, धर्म सुधारक, राजनीतिक विचारक और शिक्षा शास्त्री थे, जिन्होंने देश की सभी समस्याओं पर न केवल चिंतन किया, अपितु उनके निदान के लिए रचनात्मक मार्ग का सूत्रपात किया। अपने इस कार्य में सभी महान व्यक्तियों की तरह राजा राममोहन राय को भी कठोर समालोचना का शिकार बनना पड़ा, लेकिन वे अपनी सुदृढ़ विचारधारा से कभी विचलित नहीं हुए उन्होंने मानवतावादी दर्शन की महता पर प्रकाश डालते हुए श्रीमती गांधी ने कहा कि "मौलिक मानवीय चिंतन करने की आदत हम डालें ताकि बुद्धि और करुणा का समन्वय हो सके जिसके राजा राममोहन राय जीवन्त उदाहरण थे।"

कविवर टैगोर ने अपने शब्दों में राजा राममोहन राय का मूल्यांकन करते हुए लिखा है कि "अपनी प्रबल प्रतिभा और अटल आत्मबल से उन्होंने तुरन्त पहचान लिया कि हमारी राष्ट्रत्मा को अपने विकास के लिए

सृजनात्मक पुरुषार्थ तुरंत हाथ में लेना चाहिए।" उस शताब्दी के वे महान पथ निर्माता है पग–पग पर जो भारी विघ्न हमारी विकास यात्रा में आते हैं उन विघ्नों को उन्होंने दूर किया और जगद्व्यापी मानव सहयोग के नवयुग की हमें शिक्षा दीक्षा दी।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. राजा राममोहन राय : विनोद तिवारी, मनोज पब्लिकेशन, प्रकाशित वर्ष : 2005 आईएसबीएन : 81–8133–596–1
2. K.C. Vyas (1957). 'The Social Renaissance in India' Vora & Co, Publishers Private ltd, Kalbadevi Road, Bombay 2, 1957'
3. Majumdar, J.K. (1953). Raja Rammohun Roy, The father of Modern India. Raja Rammohun Roy The Father of Modern India
4. Mukherji, Hiren (1975). Indian Renaissance and Raja Ram Mohan Roy. Poona.
5. भारतीय राजनीतिक चिंतक, मनोज कुमार बहरवाल, हिमांशु पब्लिकेशंस 2010
6. राजनीतिक दार्शनिकों की भारतीय परंपरा डॉ. आर. पी. जोशी, उमा जिंदल भाग्योदय प्रकाशन अजमेर 1993
7. प्रमुख भारतीय राजनीतिक विचारक डॉ. मधुकर श्याम चतुर्वेदी, कॉलेज बुक हाउस, जयपुर 2012
8. भारतीय राजनीतिक विचारक डॉ. पुखराज जैन, साहित्य भवन पब्लिकेशंस, आगरा 2010

Address- Street No. 1, New Govind Nagar, Ramganj, Ajmer Rajasthan 305001

Email – poojaaj633@gmail.com

Mob. No.- 7297003993

संगम Impact Factor : 6.632
Website : www.ginajournal.com
ISSN : 2321-8037
विशेषज्ञ समीक्षित पत्रिका A Peer Reviewed International Refereed Journal
SANGAM
गीना देवी शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित साहित्य, शिक्षा, संस्कृति एवं शोध को समर्पित मासिक
Vol. 12, Issue 1-2
पृष्ठ : 142-145

विवेक मिश्र के कहानी संग्रह 'पार उतरना धीरे से' में व्यक्त संवेदना के विविध आयाम

डॉ. राजेश राव

सहायक आचार्य, हिंदी–विभाग, दयाल सिंह कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय।

कहानी के लिए 2016 में रमाकांत स्मृति पुरस्कार पाने वाले विवेक मिश्र की कहानी लेखन की यात्रा कई मायनों में दिलचस्पी जगाती है। 'हनिया' कहानी से पाठकों का ध्यान खिंचने वाले विवेक मिश्र ने अपने आप को कथा–लेखन में वस्तु और संवेदना दोनों स्तरों पर दोहराया नहीं है बल्कि समय के साथ विस्तार किया है। अपने पहले संग्रह से लेकर आज तक की उनकी कथा लेखन की यात्रा अनवरत नई–नई खोजों की यात्रा है। अपने एक साक्षात्कार में बात करते हुए विवेक मिश्र लिखते हैं– "अक्सर इस तरह के सवाल पूछे जाते हैं कि जिनका फौरी तौर पर कोई जवाब मेरे पास नहीं होता। मसलन आप धार्मिक हैं? यदि नहीं तो कम्युनिस्ट हैं? यदि हाँ तो फिर हिंदुओं की आस्था का प्रश्न क्यों उठाते हैं? विवेक मिश्र अपनी कहानियों में इन तमाम प्रश्नों से टकराते हैं। इस टकराहट और वैचारिक द्वन्द्व का परिणाम उनके कहानी संग्रह 'पार उतरना धीरे से' में देखा जा सकता है। इस संग्रह में लेखक एक यात्रा करता है। यह वस्तु से लेकर आत्मिक घरातल की यात्रा है। दूसरे शब्दों में कहें तो स्थूल से सूक्ष्म की यात्रा है।

इस संग्रह की शीर्षक कहानी 'पार उतरना धीरे से' आंचलिक भावबोध समेटे एक ऐसे दंपत्ति रातना कमैती और वीरन महतो की कहानी है, जिनकी कोई संतान नहीं थी। संतान के लिए अपनी सखी मदीनी के कहने पर रातना तांत्रिक यज्ञ–अनुष्ठान में शामिल हो जाती है। पुत्र प्राप्ति के फलस्वरूप पशुबलि के लिए मन से कभी राजी नहीं हो पाती, परिणाम स्वरूप मानसिक प्रताड़ना की शिकार होती है। अहिंसा भाव को अपनाने और मानने वाली रात नाकमैती का मानसिक द्वंद्व इतना बढ़ जाता है कि पशु बलि देने के बाद पशु के धड़ के बजाय अपने तीन दिन के बच्चे को नदी में प्रवाहित कर देती है –"ई देखा, ई अब हां जियतआ, मरा नहीं है, हम सांची कहत हैं इ मरा नहीं है।[1]

'तनमछरी–मनमीर' कहानी सामंती वातावरण में स्त्री की बहुआयामी आकांक्षा को व्यक्त करती है। कहानी का एक सिराम कड़ोरी स्टेट के राजकुमार नाहर सिंह पर जाकर खुलता है, जहां वह विवाह जैसे जीवन के महत्त्वपूर्ण फैसले के लिए खुद न जाकर अपने नौकर बिसन को भेज देता है। उधर कन्या पक्ष बिसन को नाहर

सिंह समझकर खूब आदर सत्कार करता है। सुवासिनी और बिसन पहली बार मिलते हैं और एक–दूसरे को पसंद करने लगते हैं। यह पसंद धीरे–धीरे प्रेम में परिवर्तित हो जाती है। विवाह की रस्म के बाद विदाई के अवसर पर सुवासिनी को पता चलता है कि बिसन नाहर सिंह का नौकर है। और उसका विवाह बिसन से न होकर नाहर से हुआ है। इस सत्य की जानकारी होते ही वह मानसिक उथल–पुथल से गुजरने लगती है। लाख भुलाने की कोशिश के बावजूद उसकी आंखें बिसन को खोजती रहती है।

अब उसके सामने दो दुनिया है। एक सुख–सुविधाओं की, जिसका प्रतिनिधि नाहर सिंह है, लेकिन नाहर सिंह में सम्मान और प्रेम का अभाव है। दूसरी तरफ आत्मिक सुख और प्रेम की दुनिया है। इसी द्वंद्व में फंसी सुवासिनी के ऊपर नाहर सिंह का अत्याचार आग में घी का काम करता है। सुवासिनी आखिरकार समाज और लोगों की परवाह न करते हुए हवेली छोड़कर बिसन के साथ भाग जाती है "सुवासिनी और बिसन अब सुवासिनी और बिसन नहीं रह गए थे। दो ऐसे चेहरे..... कोई भी प्यार करने वाला अपना चेहरा देख सकता था"।[2]

'दोपहर' इस संग्रह की महत्त्वपूर्ण कहानी है। संस्मरणात्मक शैली में लिखी गई यह कहानी बेहद नजदीक के रिश्तों के बीच आर्थिक पक्ष के उतार–चढ़ाव के कारण संबंधों के बनने, रहने और बिगड़ने के कारणों की तलाश करती है। परिवेश और वातावरण की प्रधानता से युक्त इस कहानी में चरित्रों के बीच घटती घटनाओ ंके कारण हुए उलटफेर, मानसिक द्वंद्व से एक नई अर्थ–व्यंजना उत्पन्न होती है, जिससे कहानी में नया प्रभाव उत्पन्न होता है। दूसरी तरफ 'दोपहर' जहाँ सामान्य लोगों के लिए झुलसा देने वाली गरमी की प्रतीक है, वहीं बी आर भड़ेल के लिए सामाजिक और मानसिक प्रताड़ना उत्पन्न करती है। वे अपनी सामाजिक स्थिति का बयान कविताओं द्वारा व्यक्त करते–करते पागलपन की स्थिति में पहुँच जाते हैं – "मुझसे जाली कागजों पर दस्तगत करवा करके / झूठे गबन के केस में फंसा करके"।[3]

'खंडित प्रतिभाएं' चंबल के दो डाकू गिरोहों के बीच पिसते राघव नामक व्यक्ति पर केंद्रित है। यह डाकू गिरोहों की अपनी कार्य संस्कृति, अपराधऔर बदले की कहानी है, जिनके बीच में सभ्य और शहराती समाज के लोग पिस जाते हैं। लेकिन यह मात्र एक व्यक्ति के अपहरण की कहानी न होकर उस समूचे भौगोलिक क्षेत्र की कहानी है, जहां आज भी इस प्रकार की घटनाएं होती रहती हैं – "भय और अनिष्ट की आशांकाओं ने राघव की जुबान पर ताला डाल दिया"।[4]

'दीया' कहानी में बिलिया जैसी स्त्री चरित्र को नए प्रतीक और संदर्भ में प्रयोग किया गया है। बिलिया धर्म, आडंबर, अशिक्षा, गरीबी की मारी, शोषण की प्रतीक एक ऐसी स्त्री है, जिसका व्यापार एक वैश्विक चुनौती है। वह सतलौन से निकलकर पूरे देश की उन स्त्रियों की प्रतिनिधि चरित्र बन जाती है, जो अपनी मुक्ति के लिए तड़प रही है – "आज भी दिल्ली, मुंबई, चेन्नई, या कोलकाता के रेलवे स्टेशनों पर गाकर पैसे इकट्ठे करती, कोई भी सांवली–सी लड़की बिलिया हो सकती है"।[5]

'सपना', 'वसंत', 'दुर्गा' कहानियों कहानीकार की विविध विषयों पर पकड़ का पता देती है। ये कहानियां कोई बड़ा दावा नहीं करती और यही इनकी खूबी भी है। 'सपना' कहानी आम आदमी की उस छटपटाहट को

व्यक्त करती है, जहां वह जीने के लिए, भविष्य को खूबसूरत और आनंदमय बनाने की जितनी ही कोशिश करता है, उतना ही गहरे–काले अंधकारमय भविष्य की ओर बढ़ता चला जाता है – "अपने ही दोहरे सपने में मरने की खबर छुपाते हुए"।[6]

'वसंत' कहानी में लेखक एक ऐसे कल्पना लोक का निर्माण करना चाहता है, जहां दौहिक सुख की संतुष्टि से आगे मानसिक–आत्मिक सुख–शांति की वर्षा हो– "बूदें सूखी जमीन पर गिरकर किसी जादू की तरह गायब हो रही थीं"।[7]

मूर्ति विसर्जन को केंद्र में रखकर लिखी गई कहानी 'दुर्गा' है। प्रतिमा के बनने और विसर्जित होने में एक आस्थावान व्यक्ति किन–किन स्थितियों से गुजरता है, यह इस कहानी का मूल कथ्य है। इन परंपराओं से संवेदनशील मनुष्य को झटका तब लगता है, जब उसका सामना सच होता है।

'तितली' अंशू नाम की एक ऐसी लड़की की कहानी है, जिसको प्रेम का झांसा देकर, जिदंगी के हसीन ख्वाब दिखाकर, सजल नामक लड़का फांस लेता है। बाद में दो और व्यवसायी दोस्तों अभिनंदा और अनिल मोतवानी के साथ मिलकर अंशू का बलात्कार करता है। इस कहानी में 'तितली' उन रंग–बिरंगे ख्वाबों, बहुरंगी सपनों और मध्यवर्गीय आकांक्षाओं का प्रतीक है, जिसको नवउदारवादी समय में उपजी शक्तिशाली सत्ता व्यवस्था ने नष्ट कर दिया। इस भ्रष्ट सत्ता ने एक ऐसा वर्ग पैदा किया, जिसके अंदर स्वार्थ, छल, ढोंग और काइंयापन ठूंस–ठूंस कर भरा है। कहानी अपनी कलात्मकता में यह बताना चाहती है कि इस पूंजीवादी समय में कोई कमजोर व्यक्ति बहुरंगी सपने नहीं देख सकता है".....खुले आसमान में उड़ने के सपने देखा करती थी वह अब उसके मन में या उसके आस–पास, दूर–दूर तक कहीं नहीं थी।"[8]

'थर्टी मिनट्स' संग्रह की एक और महत्त्वपूर्ण कहानी है। कहानी का पात्र मुल्क, दिल्ली जैसे महानगर में कई जगह से धक्का खाते हुए कॉल सेंटर की नौकरी पर जम जाता है। जीवन के प्रति निराशा देखिए कि दफ्तर से आने के बाद अपने बंद कमरे में मौत का खेल खेलता है। वह प्रतिदिन साढ़े आठ बजे पिज्जा ऑर्डर देने के बाद, अपनी महिला सहकर्मी नीरू को मोबाइल से संदेश भेजकर, अपने घर पर आमंत्रित करता है। पिज्जा और नीरू का इंतजार किए बगैर फांसी का फंदा तैयार करता है। उसका निश्चय कि अगर नौ बजे तक पिज्जा नहीं आता है, तो वह फांसी पर झूल जाएगा। कहानी कहना चाहती है कि महानगरों ने जहां चकाचौंध भरी जिंदगी से बहुतों को आकर्षित किया, वहीं इसने जीवन में कुंठा, उदासी, अकेलापन, हताशा और कभी न खत्म होने वाले संघर्ष को पैदा किया– "मुल्क इस शहर में दिन–रात यहां–वहां भागते उन लाखों लोगों की भीड़ में एक ऐसा बनता–बिगड़ता चेहरा था जिसका अपना चेहरा होते हुए भी कोई चेहरा नहीं था"।[9]

निष्कर्ष रूप में कह सकते हैं कि विवेक मिश्र की कहानियां सर्जनात्मक दृष्टि से उल्लेखनीय हैं। वह अहसासों के कहानीकार हैं। आह, टीस और सपनों के कहानीकार हैं। सामाजिक रूप से असफल लेकिन नैतिक दृष्टि से सम्पन्न चरित्र का निर्माण करते हैं। इनकी कहानियों में सुकून तलाशता व्यक्ति मिलेगा। रोमानी अहसास को लिए हुए और उसी में खो जाने वाला, कुछ–कुछ नैतिक दृष्टि बोध लिए हुए जो हर कहीं अच्छा करना

चाहता है। इन कहानियों में गढ़े गए चरित्र अक्सर ही अपने से संघर्ष करते पाए जाते हैं। अकारण नहीं है कि इस संग्रह में बाहरी दुनिया के संघर्ष से ज्यादा अन्तर्मन का संघर्ष गहरे स्तर पर व्याप्त है।

संदर्भ :-

1. पार उतरना धीरे से, (कहानी संग्रह), विवेक मिश्र, सामयिक प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली –11002, संस्करण – 2015, ISBN : 978–81–7138–287–3, पृष्ठ 112
2. वही, पृष्ठ 40
3. वही, पृष्ठ 14
4. वही, पृष्ठ 42
5. वही, पृष्ठ 60
6. वही, पृष्ठ 100
7. वही, पृष्ठ 101
8. वही, पृष्ठ 85
9. वही, पृष्ठ 94

संगम Impact Factor : 6.632
Website : www.ginajournal.com
ISSN : 2321-8037
विशेषज्ञ समीक्षित पत्रिका A Peer Reviewed International Refereed Journal
SANGAM
गीना देवी शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित साहित्य, शिक्षा, संस्कृति एवं शोध को समर्पित मासिक
Vol. 12, Issue 1-2
पृष्ठ : 146-150

हिन्दी साहित्य में स्त्रियों का योगदान

रमन
शोधार्थी, हिन्दी विभाग, महाराजा अग्रसेन हिमालयन गढ़वाल विश्वविधालय, कोटद्वार, उत्तराखण्ड़।

कोई भी क्षेत्र हो स्त्री की पहुँच से ज्यादा समय तक दूर नहीं रहा है। स्त्रियों ने हर क्षेत्र मे पुरुषों के बराबर सहयोग किया है, उसी प्रकार ये साहित्य मे भी पीछे नही रही हैं। इसमे कुछ समय अवश्य लगा किंतु आज के समय में समाज में इनकी भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण हो गई है। हालांकि इनकी कलम ने तो थिरकना बहुत पहले ही शुरु कर दिया था किंतु उनकी दुनिया चारदीवारों तक ही सीमित रही। धीरे–धीरे समय बदला और इनके भीतर भी बाहर खुले आकाश में निकलकर खुलकर साँस लेने की हिम्मत हिलोरे लेने लगी। फिर उसी का परिणाम है कि आज साहित्य कितनी ही अमूल्य सौगातों से भरा हुआ है।

मुख्यतः हिन्दी साहित्य को चार भागों मे विभाजित किया गया है– आदिकाल, भक्तिकाल, रीतिकाल एवं आधुनिक काल।

आदिकाल :–

इसका समय सन् 1000 ई० के आसपास माना गया है। इस काल मे स्थिरता की कमी थी, आक्रमण होते रहते थे, सभी अपने अस्तित्व को बचाने में लगे हुए थे। यदि किसी स्त्री ने साहित्य मे कलम चलाई भी होगी तो जिस तरह की परिस्थितियां उस काल मे रहीं, कदाचित् उस कारण से वे कभी प्रकाश में आ ही नहीं पाई होंगी। कई पुस्तकें पढ़ने के बाद भी इस काल में किसी महिला साहित्यकार के विषय में कोई विशेष जानकारी नहीं मिलती है।

भक्तिकाल :–

14वीं शताब्दी से इस काल का आर्विभाव माना जाता है। भक्तिकाल में अपनी लेखनी से ईश्वर की सगुण व निर्गुण रुप मे आराधना की गई। इस काल में कई महिला साहित्यकार रहीं, जिनके नाम की गूंज आज भी वैसी ही है। इसमे सबसे प्रथम मीराबाई का नाम लिया जाता है। मीराबाई के अलावा सहजोबाई, दयाबाई एवं विष्णुकुंवर का नाम भी प्रमुख है।

मीराबाई :–

मीरा भक्तिकाल की प्रमुख कवयित्री रहीं हैं। मीरा का जन्म सन् 1498 ई० में राजस्थान मे हुआ था। इनकी माता वीर कुमारी व पिताजी रतन सिंह थे। ये महाराणा साँगा की पुत्रवधू व महाराणा कुमार भोजराज की पत्नी थी। विवाह के कुछ वर्षों के पश्चात् ही पति की मृत्यु हो गई। कहा जाता है कि उसके बाद इन्हें वैधव्य जीवन जीने के लिए बाध्य किया गया, किन्तु इन्होने इस बात का विरोध किया क्योंकि मीरा तो कृष्ण को अपना

पति मानती थी और जब ये नही मानी तो इन्हें विष भी दिया गया किन्तु इनके तो 'गिरधर गोपाल' थे इन्हें लोक–लाज की चिंता नहीं थी, जो इनकी रचनाओं मे भी देखने को मिलता है। ये कृष्ण भक्ति में लीन रही और साधु संतो के साथ भजन–कीर्तन करती थी। कृष्ण के पद गाया करती थी।

एक बहुत सुंदर पद देखिए :–

बसो मेरे नैनन में नंदलाल।
मोहनी मूरत, साँवरी सूरत, नैना बने बिसाल।
अधर सुधारस मुरली राजत, उर बैजंती माल।।
छुद्रघंटिका कटितट सोभित, नूपुर सबद रसाल।
मीरां प्रभु संतन सुखदाई भगत बछल गोपाल।।

इन्होंने अपना अंतिम समय द्वारिका में बिताया, जहां इनकी मृत्यु सन् 1546 ई० में हुई। इनकी रचनाएं विरह प्रमुख रही हैं। अपनी रचनाओं के माध्यम से ये अपने विरह की वेदना को कम करने का मार्ग खोजती रहीं हैं। मीरा मध्यकाल की नारी के जीवन का प्रतिबिंब हैं, उनकी विरह वेदना उनके काव्य का हिस्सा है। इनके काव्य में निर्गुण व सगुण दोनो शामिल हैं जिसमें ये कृष्ण के साथ राम के पदो को भी गाती हैं। इनकी प्रमुख रचनाएं राग–गोविन्द, गीत–गोविन्द की टीका, नरसी जी का मायरा, मीरा की गरवी, मलार–राग, नरसी की हुंडी आदि हैं।

सहजोबाई :–

सहजोबाई वैश्य कुल की एक संत कवयित्री थी। इनके संबंध में अधिक जानकारी नहीं मिलती है। किंतु इनकी कृति से प्रतीत होता है कि इनका समय सम्वत् 1800 ई० के आसपास रहा है। इनकी प्रमाणिक कृति 'सहजप्रकाश' है। जिसमे दोहे, चौपाई व कुण्डलियाँ लिखी हुई हैं। ये संत चरणदास जी की शिष्या थी। इन्होंनें गुरू को ईश्वर से प्रथम रखा।

जैसा कि निम्न दोहे में भी देखने को मिलता है :–

सहजोकारज जगत के, गुरू बिन पूरे नाहिं।
हरि तो गुरू बिन क्या मिलें, समझ देख मन माहि।।

दयाबाई :–

दयाबाई चरणदास जी की ही शिष्या थी और सहजोबाई की गुरू बहन थी। इनका प्रथम ग्रन्थ 'दयाबोध' है जो संवत् 1818 ई० में रचा गया था। इसके अलावा 'विनय–मालिका' भी इन्हीं का लिखा हुआ है निम्न दोहा इनके द्वारा रचा गया है–

बंदो श्री सुकदेवजी सब बिधि करो सहाय।
हरो सकल जग आपदा प्रेम–सुधा रस प्याय।।
जै जै परमानंद प्रभु परम पुरूष अभिराम।
अंतरजामी कृपानिधि दया'' करत परनाम।।

इनके अलावा विष्णुकुँवर, ताज, शेख भी भक्तिकाल की प्रमुख महिला रचनाकार रहीं हैं किंतु इनके विषय में अधिक जानकारी उपलब्ध नहीं है।

रीतिकाल :-

रीतिकाल का साहित्य अन्य भाषाओं के साहित्य से कहीं अधिक समृद्ध रहा है। जिसका समय सन् 1650 ई० से सन् 1850 ई० तक माना जाता है जिसके कुछ रचनाकार इस प्रकार हैं– चिंतामणि, मतिराम, भिखारीदास, राजा जसवंत सिंह, देव, कुलपति मिश्र, बिहारी, आदि अनगिनत नाम मिल जाएंगें किंतु इतने विस्तृत काल में कहीं किसी कवयित्री का नाम नहीं मिलता है। क्या यह मान लिया जाए कि किसी भी महिला ने उस समय लिखा ही नहीं। यह एक विचारणीय प्रश्न है। जब भक्तिकाल के समय मे महिलाओं ने लिखा और मीरा जैसी सशक्त कवयित्री को हम पढ़तें हैं तो यह मानना थोड़ा कठिन है कि किसी स्त्री की कलम उस काल में चली ही न हो। (वर्तमान समय में तो हम साक्षी भी हैं कि स्त्रियां जो भी करती हैं समाज में एक वर्ग विशेष अब भी ऐसा है जो उस पर प्रश्न चिंन्ह लगाने आ जाता है)

वैसे इस काल में नारी की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण रही है। यह बात अलग है कि उसने स्वयं नहीं लिखा किंतु लेखन का विषय अवश्य रही। रीतिकाल के कवियों ने स्त्री के सौन्दर्य को खूब लिखा, उनका श्रंगार और नख शिख वर्णन किया गया और जिससे यह प्रतीत होता है कि उन्होंनें मात्र भोग–विलास की वस्तु के सिवा स्त्री को इससे अधिक कुछ नहीं समझा और मानो वह इस संसार की कोई सजीव इकाई नहीं अपितु एक निर्जीव वस्तु हो। फिर भी एक–दो नाम (प्रताप कुंवरिबाई, कविरानी देवी) कहीं–कहीं देखने को मिलते हैं किंतु उनके विषय में कोई विशेष जानकारी नहीं मिलती है।

आधुनिक काल :-

आधुनिक काल जिसका समय सन् 1850 ई० से शुरू माना जाता है यह हिंदी साहित्य का चतुर्थ चरण है इसे भी कुछ उपभागों में बाँटा गया है। जैसे भारतेंदु युग, द्विवेदी युग, छायावाद, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, नयी कविता काल, साठोत्तरी युग आदि। इस प्रकार परिवर्तन के अनुसार सुविधा के लिए विभाजन करते गए। इस काल में महिला साहित्यकारों की स्थिति कुछ बेहतर हुई तो उसी क्रम में संख्या में भी बढ़ौतरी हुई। जिसके दूरगामी परिणाम देखने को मिले।

कुछ मुख्य महिलाएं जिन्होंनें आधुनिक काल की मशाल जलाई :-

राजेन्द्र बाला घोष (बंग महिला) – इनका जन्म सन् 1882 ई० में वाराणसी में हुआ था। इनके पिता रामप्रसन्न घोष एक प्रतिष्ठित बंगाली थे जो बंगाल से वाराणसी में आकर बसे थे। चूंकि इनकी माताजी की साहित्य में रूचि थी तो ये भी बचपन से साहित्य की ओर उन्मुख होने लगी। सन् 1904 ई० से सन् 1917 ई० के बीच इनकी रचनाएं विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित हुईं हैं। इनकी सबसे प्रमुख कहानी 'दुलाईवाली' है जो सन् 1907 ई० में प्रकाशित हुई थी, जिसे हिन्दी साहित्य की प्रथम कहानी भी माना गया है (हालांकि इसमें भी विद्वानों में मतभेद है)। उसके बाद इनकी कुछ ओर भी रचनाएं चर्चित रहीं जैसे–चन्द्रदेव से मेरी बातें (निबन्ध), भाई–बहन, हृदय–परीक्षा आदि। इन्होंने बांग्ला साहित्य का हिन्दी में अनुवाद भी किया, जोकि विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए।

महादेवी वर्मा – छायावाद के चार स्तम्भों में से एक महत्वपूर्ण स्तम्भ रही महादेवी वर्मा जी का जन्म सन् 1907 ई० में फर्रुखाबाद मे हुआ था। ये वेदना की कवयित्री रही हैं। इन्हें आधुनिक 'मीरा' के नाम से भी जाना जाता है ऐसा लगता है जैसे वेदना इनकी 'सखी' रही हो। इन्होंने लेखन, सम्पादन और अध्यापन भी किया। वे

प्रयाग महिला विद्यापीठ की प्रधानाचार्या भी रही उन्हें पशु–पक्षियों से बहुत प्रेम था जिसका पता उनकी रचनाएं सहजता से देती हैं। इन्होंनें मासिक पत्रिका 'चाँद' व 'साहित्यकार' का सम्पादन भी किया। उनकी रचनाओं में एक मध्यवर्गीय स्त्री की वेदना/जीवन व्यथा देखने को मिलती है। जिसमे जलकर भी वह जीवित है और अपने अधि ाकार, अपने अस्तित्व के लिए लगातार लड़ रही है।

महादेवी जी दुःख के विषय में कहती हैं– ''अपने दुःख के विषय में भी कह देना जान पडता है। सुख और दुःख के धूपछाँही रंग के डोरों से बने हुए जीवन में मुझे केवल दुःख ही गिनते रहना क्यों प्रिय है, यह बहुत लोगो के आश्चर्य का कारण है। इस क्यों का उत्तर दे सकना मेरे लिए किसी समस्या के सुलझा डालने से कम नहीं है। संसार साधारणतः जिसे दुःख और अभाव के नाम से जानता है, वह मेरे पास नहीं है। जीवन में मुझे बहुत दुलार, बहुत आदर और बहुत मात्रा में सब कुछ मिला है, उस पर पार्थिव दुःख की छाया नहीं पड़ी। कदाचित् वह उसी की प्रतिक्रिया है कि वेदना मुझे बहुत प्रिय लगने लगी'' यहां उन्होंनें वेदना को बहुत ही सरल शब्दों में कह दिया है।

इनके काव्य–संग्रह बहुत चर्चित रहें हैं– नीहार, रश्मि, नीरजा, सांध्यगीत (प्रथम चारों को मिलाकर एक संग्रह 'यामा' के नाम से प्रकाशित हुआ) एवं दीपशिखा। इसके अलावा रेखाचित्र– अतीत के चलचित्र, स्मृति की रेखाएं, अनेक संस्मरण और निबंध भी लिखें जिनकी प्रभावशाली छाप अमिट है और सदैव रहेगी।

सुभद्राकुमारी चौहान – हिन्दी की प्रसिद्ध कवयित्री रहीं हैं इनकी प्रसिद्ध कविता 'झाँसी की रानी' हिन्दी माध्यम के लगभग सभी विद्यार्थियों ने अपने स्कूल के समय पर जरुर पढ़ी होगी। ये स्वतंत्रता आंदोलनों में काफी सक्रिय रहीं और इसके लिए कईं बार जेल यात्राएं भी की। इनका जन्म वर्ष 1904 ई० में एक जमींदार परिवार में हुआ था। कविताएं लिखना व पढ़ना इन्होंने बचपन से ही शुरू कर दिया था। इनकी रचनाओं मे राष्ट्रीय भावना व वात्सलय भाव देखने को मिलता है। सुभद्रा जी को देखकर पता चलता है कि उस समय भी स्त्रियां इतनी सक्षम थी कि परिवार के साथ बाकी कर्तव्यों का भी निर्वाहन सहजता से कर सकती थी। इनके वात्सलय से भरी एक कविता की कुछ पंक्तियां जो सहजता से हृदय ले जाती है–

"मैं बचपन को बुला रही थी, बोल उठी बिटिया मेरी।
नन्दनवन सी फूल उठी, यह छोटी सी कुटिया मेरी।
'माँ ओ' कह कर बुला रही थी, मिट्टी खाकर आई थी।
कुछ मुँह में, कुछ लिये हाथ में मुझे खिलाने आई थी।।"

इनकी जीवनी 'मिला तेज से तेज' नाम से इनकी पुत्री सुधा चौहान द्वारा लिखी गई एवं महादेवी वर्मा उनकी बचपन की सखी रहीं हैं। इनकी प्रमुख रचनाएं बिखरे मोती, उन्मादिनी, सीधे–साधे चित्र (अंतिम कथा–संग्रह), मुकुल, त्रिधारा आदि हैं।

आधुनिक काल में तो अनेक सशक्त महिला साहित्यकार रहीं हैं जैसे– मन्नू भंडारी, कृष्णा सोबती, उषा प्रियवंदा, मृदुला गर्ग, अनामिका, ममता कालिया, नासिरा शर्मा आदि ओर भी ऐसे बहुत सारे उज्जवलित नाम हैं जिन्होंनें हिंदी साहित्य को एक नई रोशनी एवं दिशा दी है और यह उजियारा अब बढ़ता ही जाएगा।

निष्कर्ष :-

महिलाओं का अपना एक संसार होता है जो पुरूषों के संसार के समानान्तर चल रहा होता है जो

स्पर्शशील रहते हैं दोनों एक–दूसरे से विलग नही हैं और ना ही हो सकते हैं। वास्तविकता यही रही है कि महिलाओं के लेखन को हमेशा उपेक्षा की दृष्टि से देखा जाता रहा है। वर्ष 1984 ई० में सारिका पत्रिका में एक आलोचक ने लिखा भी था कि स्त्रियों की रचनाएं इसलिए छापी जाती हैं क्योंकि वे स्त्रियां हैं। इतनी आलोचनाओं और अवसाद को झेलने के पश्चात् भी स्त्रियां डिगी नहीं, एक नव ऊर्जा के साथ हमेशा खड़ी रहीं।

आरंभिक काल मे महिला साहित्यकारों के कुछ गिने–चुने नाम ही सामने आते हैं किंतु आज के समय में महिला साहित्यकारों की भरमार है लेकिन यह भी सत्य ही है कि यदि बंधनो को तोड़कर (पूर्व काल में) वे नाम आगे ना आए होते तो इस समय की डगर इतनी भी आसान ना होती।

सन्दर्भ सूची :-

1. हिन्दी साहित्य का सरल इतिहास, डॉ. विश्वनाथ त्रिपाठी।
2. भारत–दर्शन, हिन्दी साहित्यक पत्रिका।
3. हिन्दी साहित्य का इतिहास, डॉ. नगेन्द्र एवं डॉ. हरदयाल।
4. हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास, बच्चन सिंह, राधाकृष्ण प्रकाशन।
5. हिन्दी साहित्य की आधुनिक प्रवृतियाँ, डॉ. नामवर सिंह, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
6. हिन्दी साहित्य का इतिहास, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी।

पता– ग्राम–लोईया, दौराला, मेरठ

सम्पर्क सूत्र– 9582573295

संगम Impact Factor : 6.632
Website : www.ginajournal.com
ISSN : 2321-8037
SANGAM
विशेषज्ञ समीक्षित पत्रिका A Peer Reviewed International Refereed Journal
Vol. 12, Issue 1-2
गीना देवी शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित साहित्य, शिक्षा, संस्कृति एवं शोध को समर्पित मासिक
पृष्ठ : 151-155

Study of the various psychological variable of long race's athlete of Bikaner Region

Surender Kumar, Researcher
Dr. Surjeet Singh Kaswan, Supervisor
Tantia University, Sriganganagar, Rajasthan.

Introduction :-

Physical Education and Sports is a keen area which needs many kinds of training meansand methods to improve the overall performance of the sports person. A mission forperfection is often confronted with numerous difficulties. An athlete's contribution ofdetermination, commitment and long periods of training can lead to the accomplishmentof the most extreme execution. To improve the sports performance the athlete needs totake part in systematic training by the way of scientific method of training. Thereforeathletes or players need proper systematic training to improve their performance through different kinds of training.

Physical education and Sports, being an integral part of education, have alsoexperienced the impact of scientific advancements. Now the sports persons have beenable to give outstanding performance because of involvement of new, scientificallysubstantiated training methods and means of execution of sports exercises such assports techniques and tactics, improvement of sports gear and equipment, as well asothercomponents and conditions of the system of sports training.

Psychological Variable :-

Psychology is the science of activities of an individual in relation to theenvironment .Literally psychology means knowledge of the soul. Psyche means soul.Logo means science. The firm soul could not satisfactorily be explained.so psychology isdefined as the science of mind. Some psychologists analyzed the mind and said that themind could think. Feel and act these are the state or structures of mind.

Psychology as a behavioural science hasmade its contributions for improving sport performance .it has helped coaches to coachmore efficiently and athletes to perform motor proficiently. This psychological aspects onsports is gaining much attention among sports administers.

The most accepted definitions are that psychology is the science of behaviour andexperience.Behaviour induces all manifestations of life. As a pure science psychologyisconcerned primarily with systematic study of behaviour and other verification throughexperimentation.

The psychology can help the sports excellence by the sportsman. Role ofpsychology in selection,training Materials and rehabilitation would definitely help inachieving sports excellence.The emphasis has been laid on pointing out that psychology and sports coverage at the same point and excellent in sports can be optimally obtained bydeveloping appropriate strategies. Among the many psychological variables theresearcher has selected variables such as self-confidence, anxiety and aggression for thisstudy.

Methodology :-

Researcher has used survey method to get the information of the present circumstances.

Sample :-

For the study researcher has selected three hundred (N=300) boys and girls of schools and collegesathletes from Bikaner region in Rajasthan state and subject aged between 15 to 20 were selected as subjects for the study.

Data Collection :-

The data will be collected with various psychological standardize toolsfromathletes. The data will be collected from athletes who were study in schools and colleges. Researcher collects data from various schools and colleges of Bikaner region for raw score.

Tool :-

Self-confidence, Anxiety and Aggression's tools will be used for the purpose of the study. Here the researchers have used standardized tools, they are-

1. Self-confidence - Agnihotri Self Confidence Inventory (ASCI)
2. Anxiety - Rainer Marten's Sports Competition Anxiety Test Questionnaire
3. Aggression - Smith'sAggression Inventory

The researchers have used standardize toolsfor this study.

Objective :-

To study of the various psychological variable of long race's athlete of Bikaner Region.

Analysis of Data :-

Table showing thesignificant difference in the various psychological variable of long race's athlete of Bikaner Region -

Table – 1 (Psychological Variables)

Variables	N	Mean	S.D.
Self Confidence	300	26.45	5.41
Anxiety	300	24.13	5.09
Aggression	300	12.79	2.59

*Significant at 0.01& 0.05 levels

Table 1-Significant difference in the various psychological variable of long race's athlete of Bikaner Regions-

Description – In order to find out the significant difference in the various psychological variable of long race's athlete of Bikaner Regionindependent t-test was applied. To determine the significancedissimilarity among means score of Boys&Girlsathletes, the level of significance was set at (0.01& 0.05).

Table 1 shows that Mean and Standard Deviation score of athlete's are 26.45 and 5.41 respectively. Self Confidence variable's t-value of Boys & Girls was found of 0.83, to benot significant at 0.01 & 0.05 significant level.

Mean and Standard Deviation score of athlete's are 26.45 and 5.41 respectively. Anxiety variable's t-value of Boys & Girls was found of 0.47, to benot significant at 0.01 & 0.05 significant level.

Mean and Standard Deviation score of athlete's are 26.45 and 5.41 respectively. Aggression variable's t-value of Boys & Girls was found of 2.87, to be significant at 0.01 & 0.05 significant level.

Hence the null hypothesis is not rejected which means that "there is no significant difference in the psychological variable of long race's athlete of Bikaner region."

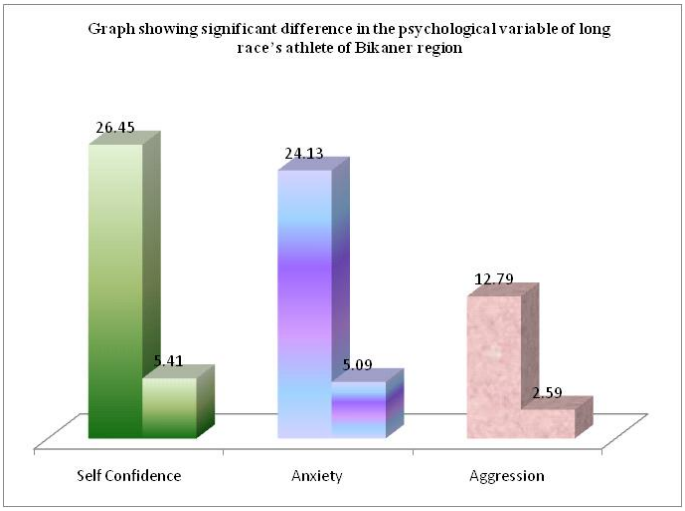

Result :-

There is no significant difference in the various psychological variable of long race's athlete of Bikaner Region.

Conclusion :-

The current research work was undertaken in various physical fitness variable & psychological variable of long race's athlete study in schools and colleges of Bikaner region of Rajasthan State. Therefore it now becomes essential at this stage of the research work to see whether the hypothesis were rejected or accepted on the basis of data analyzed.

References :-

1. Adhikari, A., &Sahu, D. P. (2016). Effect of yogic exercises on physiological variables among the adolescents. International Journal of Yogic, HumanMovement and Sports Sciences ,1(1), 62-64.
2. Alllen, A., & Grassy, C. (1979). A comparison of motor abilities and physical characteristics of collegiate soccer player by position of play. Dissertation Abstract International, 39(8),4805-A.
3. Arumugam, S. (2018). Sports Training and System of Coaching. First Edition, Shanlax publications ISBN 978-93-87871-68-7 pg-9.
4. Arumugam, S. (2004). Fundamental Drill in Soccer, A.P.P. Publications.
5. Campos, E. Z., Milioni, F., Zanuto, E. A. C., Almeida, P. B., Gobbi, R. B., Andrade, V. L. D., &Papoti, M. (2013). Effect of training loads on physiological parameters of soccer players. Motriz: Revista de EducaçãoFísica, 19(2), 487-493.
6. Castagna, C., Impellizzeri, F., Cecchini, E., Rampinini, E., & Alvarez, J. C. B. (2009). Effects of intermittent-endurance fitness on match performance in young male soccer players. The Journal of Strength & ConditioningResearch, 23(7), 1954-1959.
7. Chakrabarthi, Ghosh&Sahana's (1984). Human Physiology. India: The New bookstall, Calcutta.
8. Clarke, H. Harrison & David H. Clarke. (1976). Research Process in PhysicalEducation (2nd ed). Englewood Cliffs, New Jersey: Prentice – Hall, Inc.
9. Edward L.Fox& Donald K.Mathews, (1981). Physiological Basis of PhysicalEducatio7t and Athletics (Philadelphia ; CBS College publishing,), P.294.
10. Elumalai1,&Venkatachalapathy. K. (2017). Effect of yogic practices on inspiratory reserve volume and anxiety among middle aged men. StarInternational Journal, 5, 6(1), J2321-676X.
11. Fox, E.L., Bowers, R.W., & Foss, M.L. (1988). The Physiological Basis of PhysicalEducation and Athletics, 4th ed. Dubuque, IA: Brown.
12. Frederic. H. Martini., (2001). Fundamentals of Anatomy and physiology, NewJersey: Published by prentice-hall. PP 821-822.

13. George. R., &Colfer, (1981). Strength Training Terminology, Athletic Journal 61:26.
14. Impellizzeri, F. M., Marcora, S. M., Castagna, C., Reilly, T., Sassi, A., Iaia, F. M., &Rampinini, E. (2006). Physiological and performance effects of generic versus specific aerobic training in soccer players. Internationaljournal of sports medicine, 27(06), 483-492.
15. Little, T. (2009). Optimizing the use of soccer drills for physiologicaldevelopment. Strength & Conditioning Journal, 31(3), 67-74.
16. Ostojic, S. M., Stojanovic, M., Jukic, I., Pasalic, E., &Jourkesh, M. (2009). The effects of six weeks of training on physical fitness and performance in teenage and mature top-level soccer players. Biology of Sport, 26(4),379.p. 83.
17. Uppal, A.K. (1992). Physical Fitness. New Delhi: Friends Publications.
18. Warren, R., Johnson, &Buskirk, E.R. (1974).Science and Medicine of exercise anSport 2nd Ed. London: Harper and Row Publishers, p.276.
19. Wilmore, J. H., Costil, D.L., & Kenney, W. L. (2008), Physiology of Sport andExercise, Champaign, IL: Human Kinetics.

संगम Impact Factor : 6.632
Website : www.ginajournal.com
ISSN : 2321-8037
SANGAM
विशेषज्ञ समीक्षित पत्रिका A Peer Reviewed International Refereed Journal
Vol. 12, Issue 1-2
गीना देवी शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित साहित्य, शिक्षा, संस्कृति एवं शोध को समर्पित मासिक
पृष्ठ : 156-160

मेहरुन्निसा परवेज़ के कथा साहित्य में प्रकृति चित्रण

डॉ. कीर्ति बाजपेई, शोध निर्देशक
रजनी मरकाम, शोधार्थी
मातागुजरी महिला महाविद्यालय जबलपुर (म. प्र.)

प्रकृति और मनुष्य का संबंध अनादि काल से रहा है। प्रकृति के स्पंदन को देखकर ही मनुष्यों ने भी भावों का स्पंदन करना सीखा है। जिस प्रकार प्रकृति में परिवर्तन होते हैं, उसी प्रकार मनुष्य के हृदय में करुणा, प्रेम, कुतुहल, विस्मय आदि भाव जागृत होते हैं।

मेहरुन्निसा परवेज़ जी ने अपने कथा साहित्य को सजीव, सहज एवं यथार्थ बनाने के लिए प्रकृति के विविध रूप पशु–पक्षी, नदी–पर्वत, पेड़–पौधे, सूर्य–चंद्रमा आदि का वर्णन किया है। मेहरुन्निसा परवेज़ का प्रकृति से लगाव होने के कारण उनके साहित्य में प्रकृति का सजीव चित्रण देखने को मिलता है। उनकी अधिकतर कहानियाँ और उपन्यास आदिवासियों के जीवन पर आधारित हैं, जिनका सीधा संबंध प्रकृति से है।

इन्होंने बस्तर के संबंध में कहा कि बस्तर जिसे मैं कभी भूल नहीं पाई, जिंदगी का पहला पाठ यथार्थ का पहला शब्द मैंने यही गढ़ा था। ''बस्तर की माटी में खेलकर मेरे नन्हे पैर जवान हुए थे। बस्तर का वह भयानक जंगल आज भी मेरे मन में बसा है। जंगली फूलों की भीनी गंध आज भी मेरे मन में बसा है। जंगली फूलों की भीनी गंध आज भी थके दिमाग को तरोताजा करती है।''[1]

मेहरुन्निसा परवेज़ ने प्रकृति का चित्रण 'कानीबाट' कहानी में किया है, जिसमें जंगल के पगडण्डियों का वर्णन, नदी–पहाड़ों का वर्णन बहुत ही सुंदर ढंग से प्रस्तुत किया है। दुलेसा अपनी शादी की बात सुनकर गुस्सा होकर घर से भागकर जंगल की तरफ जाती है, जहां पर अंधेरा है। जंगल से अपने घर की तरफ देखती है तो ''जंगल में झींगुर बोलने लगा था और जुगनू अपने–अपने दिये लिए निकल पड़े थे।''[2] रामू दुलेसा को लेने आता है, उसका हाथ पकड़कर कहता है ''तू उस दिन कहती थी न की 'कानीबाट' जंगल में गुम हो जाती है। देख मैंने खोज लिया! 'कानीबाट' विशाल जंगल के सहारे ही चलती है, तेरे बच्चे को मैं अपना नाम दूंगा दुलेसा।''[3]

इस प्रकार इस कहानी के माध्यम से लेखिका ने अंधेरे में जुगनू का घूमना एवं जंगली रास्ते में पगडण्डियों का सुंदर चित्रण है। 'टोना' कहानी में पूर्णिमा की रात का चित्रण किया है। ''पूनों का चांद रात की नाक पर लगी लोंग में जड़े हीरे की तरह चमक रहा था।''[4] महुए की कच्ची शराब की गंध पूरे घर में महक रही थी। पीछे नाले के पास सियार बोलने लगे थे। चूल्हे के पास बने छोटे से मिट्टी के दबड़े में मुर्गियां ठण्ड से कुड़कुड़ा रही थी।

'देहरी की खातिर' कहानी में सावन महीना का चित्रण किया है। सावन का महीना था, चारों तरफ

गीला–गीला वातावरण था। जंगली घास, चिरौटी के जंगली पेड़, धरती फोड़ निकल आए थे, जिनकी गंध हवा में घुल–मिल गई थी। सड़क पर कीचड़ ही कीचड़ भरा रहता। इस प्रकार सावन के महीने में गांव का दृश्य एवं प्रकृति का वर्णन देखने को मिलता है। 'पत्थर वाली गली' कहानी में सूरज के निकलने पर लोगों के इकट्ठा होने का दृश्य दिखाया गया है। ''धूप का पहला टुकड़ा शाइस्ता की खुली छपरी पर गिरता था, इसलिए धूप को सेंक लेने सारा मोहल्ला कहीं न कहीं से यहाँ आ जुटता था। या जो कहें तो ज्यादा ठीक होगा कि जाड़े के दिन की शुरुआत शाइस्ता की छपरी से ही होती थी।''[5]

'जंगली हिरनी' कहानी में पगडण्डी का चित्रण देखते ही बनता है। ''सागौन के घने जंगल के बीच से एक छोटी सी पगडण्डी गांव की तरफ दूर तक ऐसी चली गई है, जैसे किसी नवयुवती के दो भागों में बँटे बालों के बीच की माँग। यह पहाड़ी रास्ता नाले में जाकर खत्म हो जाता है।''[6] 'सूकी बयड़ी' कहानी में खेतों में लगी गेहूँ की फसल का सुंदर वर्णन है– ''फागुन का महीना समाप्त हो चुका है और चैत लग चुका था। खेतों में गेहूँ की बालियों के लटकते लंबे–लंबे झुमके बड़े अच्छे लग रहे थे। गेहूँ के दाने में अभी भी थोड़ी कसर बाकी थी। उनमें कच्चा दूध भरा था। गेहूँ की महक सारे वातावरण में बसी थी। ठण्ड जा चुकी थी, पर उसका असर अभी भी पूरी तरह से वातावरण से उतरा नहीं था। ठण्ड का आभास मिल जाता था।''[7] खेतों से हटकर थोड़ी दूर पर एक ऊँचे टीले पर नीम, जामुन और पीपल के पेड़ों के बीच नीमड़ा का अपना कच्चा घर था। घर के पीछे जहाँ काँटों की बाड़ी समाप्त होती थी, वहीं से खेत शुरू हो गए थे। दूर तक खेत ही खेत दिखते थे। ढेर सारे खेतों की सरहद के किनारे बसे नीमड़ा का एक भी खेत नहीं था। 'जगार' कहानी में शरद ऋतु एवं अंधेरी रात का वर्णन किया गया है– ''बड़ी कड़ाके की ठण्ड पड़ रही थी। पानी बर्फ की तरह ठण्डा हो रहा था। लगातार वर्षा ने इस बरस सारी धरती को उलट–पुलट धर दिया था। कृष्णपक्ष की गहरी काली रात्रि अधिक भयानक थी। कच्ची धरती पर कुछ लोग बैठे अलाव का आनंद ले रहे थे। काली रात भयानक राक्षस सी सामने खड़ी थी। कुत्ते ठण्ड से परेशान अंधेरी रात से भयभीत भौंक–भौंक कर अपना भय दूर कर रहे थे। झींगुरों की झाँय–झाँय कान के पर्दों को नोचे खा रही थी। खेतों से आती गोदिहा की 'हुआ–हुआ' की मनहूस आवाज घरों में दुबके लोगों को भी कँपा रही थी।''[8]

'खामोशी की आवाज' कहानी में बसंत के आगमन का सुंदर चित्रण है– पतझर विदाई ले रहा था और बसंत का आगमन था। दोनों के मेल से भरे थे वह दिन। फरवरी का महीना, करवट लेती जंगल की खूबसूरती क्या आंखों के फोकस में कैद रह सकती है। आम में बौर इस कदर आया हुआ था कि सारी टहनियाँ बौर के भार से लदकर झुक आई थी, पत्ते छुप से गए थे। सड़क के दोनों ओर लगे आम के पेड़ और बौर की मादक गंध थके हुए दिमाग को जहन को हल्की–हल्की थपकियां दे रहे थे। किस कदर प्यारी और रोमांटिक हो गई थी शाम।[9]

'लाल गुलाब' कहानी में पेड़–पौधे गर्मी का मौसम एवं बारिश के कारण लोगों के जीवन अस्त–व्यस्त हैं, उसका वर्णन इस कहानी में देखने को मिलता है– ''यूकेलिप्टस की तेज मादक गंध ने उसे भीतर तक भिगो दिया। आँधी पानी ने यूकेलिप्टस के ऊँचे–ऊँचे पेड़ों को एकदम नंगा कर दिया था। पत्तियाँ चारों ओर बिखरी पड़ी थी। उनकी गंध हवा में समाई हुई थी। मोगरे के फूलों, जड़ी–बूटियों और पत्तियों की सौंधी महक भी उसमें शामिल थी। धूल भरी आँधी और तेज झंझावात के साथ पानी की बूँदें सरक कर धरती पर दौड़ी थी। गर्मी से

झुलसे लोगों ने पहली बार ठण्डक से चैन की साँस ली थी। तेज गर्म हवा के थपेड़ों के बाद तेज आंधड़ के साथ बूँदाबांदी हुई थी, जो बाद में तेज बारिश में बदल गई।''[10] ''भयभीत बगुले तथा पक्षी आकाश में चीखते भाग रहे थे। पक्षियों का कोलाहल तेज हो गया था। मौसम ठण्डा हो गया था। चारों ओर अभी भी पानी ही पानी दिख रहा था। बड़े–बड़े पेड़ अभी भी घुटने–घुटने पानी में डूबे खड़े थे। पानी अभी नहीं बरस रहा था, परंतु बाहर का सारा दृश्य पानी से सराबोर था।''[11] इस तरह से 'लाल गुलाब' कहानी में प्रकृति के सौंदर्य के साथ ही प्रकृति का भयानक रूप भी देखने को मिलता है, जो लोगों के जन–जीवन को प्रभावित करता है।

'समरांगण' उपन्यास में नर्मदा के प्राकृतिक सौंदर्य एवं मनोरम दृश्य का वर्णन देखते ही बनता है– ''नर्मदा के किनारे संगमरमर की विशाल चट्टानें। संगमरमर की भव्य चट्टानों के बीच से नर्मदा कल–कल करके बहती है। नर्मदा यहाँ सर्वाधिक गहराई लिए है। नर्मदा का आद्वितीय सौंदर्य अद्‌भुत दृश्य उपस्थित करता है। नर्मदा के तट एक–एक पत्थर शिव के रूप लिए हैं। इस कारण भी कहा जाता है कि कंकड़–कंकड़ में शिव विराजमान है। बंदरकूदनी, भूलभुलैया, धुआँधार, भेड़ाघाट यहाँ अपने अपूर्व सौंदर्य से आकर्षित करते हैं। चाँदनी रात में नौका–विहार का आनंद लूटने दूर–दूर से यात्री इकट्ठे होते थे। नर्मदा की ठण्डक यहाँ के वातावरण में बसी थी।''[12] इस उपन्यास में वर्षा ऋतु के आगमन होने के कारण भींगी सड़कें एवं सौंधी मिट्टी का भी वर्णन किया है। ''मौसम की पहली झड़ी थी, इस कारण पानी आड़ा टेढ़ा बरसा था। सड़क भीगी पड़ी थी। चारों ओर पत्ते ही पत्ते पड़े थे। कई जगह पेड़ उखड़े पड़े थे। आँधी ने बड़े–बड़े पेड़ों को औंधा कर दिया था। सौंधी मिट्टी की भीनी–भीनी गंध चारों ओर फैली थी।''[13] सूर्योदय एवं चंद्रमा के सौंदर्य का वर्णन बहुत ही सुंदर ढंग से प्रस्तुत किया गया है– ''सूर्योदय हो चुका था। सूर्य की चमकीली चादर धरती पर फैली थी। नर्मदा की पहाड़ियाँ चटक चंद्रमा की रोशनी में अद्‌भुत आकर्षक लगती। नर्मदा का जल इतना साफ–सुथरा दिखता की कोई भी उसमें अपना प्रतिबिंब निहार ले।''[14]

'अकेला पलाश' उपन्यास में खेत का बड़ा ही मनोहारी दृश्य देखने को मिलता है– ''आसपास खेत ही खेत थे। धान की फसल एकदम तैयार पककर खड़ी थी। पकी हुई धान की बालियाँ इतनी प्यारी गुच्छे वाली लग रही थी, दूर से ही वह लुभा रही थी, ललचा रही थी, जैसे कह रही हो, लो हमें काटो और ले चलो, हमें भोगो, पूर्ण यौवन थी धान की फसल।''[15] इसी तरह से इस उपन्यास में बगीचे का चित्रण है– ''बगीचे के किनारे मेड़ के दोनों ओर केले के बड़े–बड़े पेड़ थे, जिन पर ढेर सारे केले लदे थे। मटर का बहुत बड़ा बगीचा था। मटर के बीच–बीच में लाल भाजी के पौधे लगाए गए थे और किनारे–किनारे दूसरी सब्जियाँ लगी हुई थी।''[16]

इस उपन्यास में जंगल का वर्णन बहुत सुंदर ढंग से प्रस्तुत किया है– ''पत्ते झड़ चुके थे, जैसे पतझड़ ने सारे गहने एकाएक छीन लिए हों। पेड़ के पैरों के पास ढेर–ढेर पत्ते थे और टखनों–टखनों तक पत्तों से ढँके साल के लंबे पेड़ विचित्र से दिख रहे थे, क्योंकि साल के सारे वृक्ष अपने पत्ते झाड़ कर नंगे खड़े थे और नंगे हुए पेड़ों के कारण जंगल का आर–पार नजर आ रहा था और सूनी दोपहर में टिटहरी उस नंगे साल की हालत पर तरस खाकर दुहाई देती लगातार चिल्ला रही थी। निस्तब्ध सन्नाटे से भरी जंगल की दोपहर बहुत एकाकी पर अच्छी लग रही थी, बहुत भली लग रही थी।''[17] लेखिका ने पलाश के फूल का बहुत ही सुंदर वर्णन किया है– ''वहीं दूर से पलाश के लाल चटक दहकते फूल झाँक–झाँक कर अपनी ओर दूसरों का ध्यान आकर्षित कर रहे थे। पलाश भी कितना प्यारा और जानदार फूल है, एक अकेला पेड़ सारे वीराने को अपने सौंदर्य से भर देता

है। काली आँखों में खिला सौंदर्य जैसे किसी नव–यौवन की कजरारी आँखों में उतरे नशीले, शराबी, लाल–लाल खुमारी के डोरे हों।''[18]

मेहरुन्निसा परवेज़ ने पलाश के फूल के माध्यम से जीवन की सत्यता को उजागर किया है कि ''पलाश लाख सुंदर हो, सुंदर फूल हो, पर उसमें सुगंध नहीं है। उसे जूड़े में नहीं सजाया जा सकता, वह किसी गुलदस्ते की शोभा नहीं बन पाती। पलाश सिर्फ अपने डाल पर लगता है और उसी पर मुरझाकर धरती पर गिर जाता है। वह सिर्फ अपने लिए अपनी डाल तक ही सीमित रहता है। कितना कड़वा सत्य है, जिसे उसने आज जाना, अभी... इसी क्षण।[19] 'कोरजा' उपन्यास में खेतों का बड़ा सुंदर वर्णन मिलता है– ''जंगल, खेत और पहाड़ी की शुरुआत हो गई थी, सड़क के दोनों ओर तैयार खड़ी फसल का सिलसिला था। पकी खड़ी धान की फसल हवा में सर हिला–हिलाकर डोल रही थी। मेड़ के पास बनी नालियों में छोटे–छोटे जाल अड़ा दिए गए थे, खेत की मछलियां पकड़ने को।''[20]

''सरसों के पीले–पीले चटक, धुले फूलों से भरे खेत थे। लाल अम्बाडे के नुकीले फूलों से लदे खेत थे। अम्बाडे की झाड़ियों में पत्ते झड़ गए थे। फल ही फल लगे थे। कहीं–कहीं धान की फसल काट ली गई थी और अब छोटे–छोटे बच्चे हाथों में टोकने लिए खाली खेतों में धान की गिरी हुई बालें ढूँढ़ रहे थे।''[21] इस उपन्यास में आम के पेड़ों पर बौर आने का भी वर्णन किया है– ''नए–नए कँवले पत्ते से आम के पेड़ ढँक गए थे। बौर की सौंधी महक से आस–पास का वातावरण महक उठा था। सारी गंदगी पर जैसे प्रकृति ने इत्र का छिड़काव कर दिया हो।''[22]

मेहरुन्निसा परवेज़ आदिवासी क्षेत्रों में रही हैं। इसलिए उन्होंने प्रकृति को नजदीक से देखा है और प्रकृति के मनोरम दृश्य को अपने कथा साहित्य में बखूबी से उतारा है। प्रकृति और मनुष्य का संबंध जन्म से लेकर मृत्यु तक रहता है। प्रकृति से वह बहुत सी चीजों को ग्रहण करता है। आदिवासियों का पूरा जीवन प्रकृति के बीच गुजरता है। इस कारण लेखिका ने अपने कहानियों और उपन्यासों में प्रकृति और मनुष्य के अन्तर संबंध को खूबसूरती के साथ प्रस्तुत किया है।

संदर्भ सूची :-

1. मेहरुन्निसा परवेज़, मेरी बस्तर की कहानियाँ, वाक दरियागंज नई दिल्ली संस्करणः 2010, पृ. क्र. 07
2. वही, पृ. क्र. 26
3. वही, वही
4. वही, पृ. क्र. 30
5. मेहरुन्निसा परवेज़, मेरी बस्तर की कहानियाँ, वाक दरियागंज नई दिल्ली संस्करणः 2010, पृ. क्र. 191
6. वही, पृ. क्र. 227
7. मेहरुन्निसा परवेज़, समर, ग्रंथ अकादमी दरियागंज, नई दिल्ली संस्करणः 2018, पृ. क्र. 104
8. वहीं, पृ. क्र., 20–21
9. मेहरुन्निसा परवेज़, टहनियों पर धूप, वाणी प्रकाशन, पृ. क्र. 81
10. मेहरुन्निसा परवेज़, लाल गुलाब, प्रभात प्रकाशन नई दिल्ली, संस्करण 2008, पृ. क्र. 11

11. वही, पृ. क्र. 12
12. मेहरुन्निसा परवेज़, समरांगण, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2002, द्वितीय संस्करण 2006 पृ. क्र. 54
13. वही, पृ. क्र. 111
14. वही, पृ. क्र. 157
15. मेहरुन्निसा परवेज़, अकेला पलाश, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2007, पृ. क्र. 40
16. वही, पृ. क्र. 127
17. वही, पृ. क्र. 74
18. वही, पृ. क्र. 181
19. वही, पृ. क्र. 232
20. मेहरुन्निसा परवेज़, कोरजा, वाणी प्रकाशन संस्करण 1997, 2000 पृ. क्र. 151
21. वही, पृ. क्र. 182
22. वही।

rajnimarkam316@gmail.com

संगम Impact Factor : 6.632
Website : www.ginajournal.com
ISSN : 2321-8037
विशेषज्ञ समीक्षित पत्रिका A Peer Reviewed International Refereed Journal
SANGAM
गीना देवी शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित साहित्य, शिक्षा, संस्कृति एवं शोध को समर्पित मासिक
Vol. 12, Issue 1-2
पृष्ठ : 161-165

नागपुरी काव्यों में स्त्री विमर्श

संजय कुमार साहु
शोधार्थी, नागपुरी विभाग, डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय, राँची।

भारतवर्ष का अभिन्न हिस्सा झारखण्ड राज्य जिसे प्राचीन वैदिक काल से कई नामों से जाना जाता है–"पुण्ड, मुरूण्ड, किक्कट प्रदेश, कर्क खण्ड, कोकराह, खुखरा, छोटा नागपुर, हीरा नागपुर, वनप्रदेश"[1] आदि। इस राज्य में विभिन्न प्रकार की संस्कृति, भाषा, खाना–पान, वेश–भूषा आदि देखने को मिलता है। इस प्रदेश में प्रमुख रूप से नौ जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा है। जिनमें पाँच जनजातीय भाषा – 1. संताली, 2. कुडु.ख, 3. मुण्डारी, 4. खड़ीया, 5. हो, चार क्षेत्रीय (सदानी) भाषा – 1. नागपुरी, 2. कुरमाली, 3. पंचपरगनिया, 4. खोरठा है। यहाँ की आदिवासियों कि अपनी मातृभाषा है और मूलवासियों (सदान) की अपनी मातृभाषा है। इन दोनों जाति, आदिवासी और मूलवासी (सदान) को आपस में जोड़ने वाली नागपुरी भाषा झारखण्ड की एक प्रमुख जनसंपर्क भाषा है, इसे झारखण्ड में द्वितीय राजभाषा के रूप दर्जा प्राप्त है। इस भाषा का इतिहास नागवंशी राजाओं के साथ 2000 वर्ष से भी अधिक पुराना है। इसका लोक साहित्य काफी समृद्ध है, साथ ही शिष्ट साहित्य का विकास अपने चरम अवस्था में है।

नागपुरी (भारतीय) संस्कृति मानव जाति की एक ऐसी सम्पूर्ण संस्कृति है, जिसमें अभिजात्य एवं लोक संस्कार दोनों ही सम्मिलित है। यही कारण है कि भारतीय परिवेश में अनुस्थूल जीवन–मूल्यों में रूचि रखने वाले भारतीयों का पश्चिम की लोक और लोक संस्कृति विषयक अवधारणा और मर्यादा से आश्वस्त होने में हिचक होती है। हमारा भारतवर्ष इसलिए विश्व का सबसे महान देश माना जाता है क्योकि यहाँ वेद, उपनिषद, पुराण, रामायण, महाभारत, गीता, धर्म, दर्शन काव्य आदि मानव जाति की उत्कृष्ट उपलब्धियां मौजूद है। यह भारत ही नहीं अपितु विश्व मानस की भी अमूल्य धरोहर है। हमारे झारखण्ड प्रदेश के नागपुरी भाषी समाज की सभी अमूल्य संपदाओं का मूल उत्सव हमारी लोक–संस्कृति ही रही है। जिसकी अभिव्यक्ति हमारे लोकगीतों में होती है। उदाहरण के लिए गीत –

"अंगना में बर गछ, जितिया जनइम गेल।
जितिया के आयो के सेवा करी रे।
माय मोरा बुढ़िया, बहिन मोरा ससुराइर,
जितिया के रे भउजी सेवा करी।"[2]

अर्थात् घर के आंगन में बरगद तथा जितिया का पेड़ बढ़ रहे है। दोनों पेड़ पूजनीय है। हमारे घर में इसकी पूजा करने वाली भाभी के अलावा कोई नही है। क्योकि मेरी माँ बुढ़ी हो गई है तथा बहन ससुराल में

है।

लोक साहित्य हमारे जीवन में उत्साह को बढ़ाता है। घनघोर कष्ट, पीड़ाओं, अभावों और भेदभावों से भरी जिन्दगी के व्यवहार में जीवन को प्रसन्नता और प्रफुल्लता के साथ जीने का संकल्प लोकसाहित्य गीत कराते है, जो कभी व्रत कथाओं में सम्मिलित लोकगीतों के रूपों देखने को मिलता है। उदाहरण स्वरूप गीत –

"चलु दरसन जाब कतिखन, बन गेलैं तीनों झन।
आगे–आगे राम चन्दर, पाछे भइया लछमन।
बीचे सुन्दरी सीता झमे–झम, बन गेलै तीनों झन।"[3]

इस लोकगीत के माध्यम से स्त्री बिम्ब और सौन्दर्य स्पष्ट हुए हैं। यह झुमइर गीत है जिसमें स्त्रियाँ व्रत रखती है। सब सखी आंगन में बैठकर एक साथ इस गीत को गाती है और कहती है– हे सखी चलो भगवान राम, भाई लक्ष्मण और प्यारी तीनों वनवास के लिए वन जा रहे हैं, देखने चलो। जिसमें सिता बीच में सुकुमारी सुंदरी शोभा पा रही है।

नागपुरी भाषी क्षेत्र में स्त्री विमर्श के संदर्भ को कई रूपों में देख सकते है। हमारे नागपुरी समाज में स्त्रियों के प्रति जो प्रेम–भाव या दु:प्रतिभाव प्रदर्शित होते है, उसे हम अलग–अलग रूपों में देख सकते है–

1. **बाल विवाह** – नागपुरी भाषी क्षेत्र एक ग्रामीण क्षेत्र है। यहाँ शिक्षा का घोर अभाव है। शिक्षा के अभाव में यहाँ की जनता अपनी बेटी का विवाह छोटे उम्र में ही कर देते है। छोटे उम्र में विवाह के बाद पश्चात् किन–किन समस्याओं का सामना करना पड़ता यह जानकारी भी नहीं होती है इन लोगों को। गाँव में लोग बेटी को भार के रूप में समझते है, कितना जल्दी इनका विवाह करके ससुराल भेज दे और अपने बोझ को हल्का करें। इस बात पर जोर देते है। बाल विवाह को दूर कैसे करें इस संदर्भ को एक नागपुरी लोक गीत के माध्यम से देख सकते है। उदाहरण –

"मोके आयो ना बेचवे,
मोंय तो आयो छोटे आहों रे।
किनी देबे आयो रिंगी चिंगी सुपली,
धुरा में पछइर–पछइर खेलबुं।"[4]

इस लोकगीत में बाल विवाह को देखकर एक छोटी उम्र की बच्ची अपनी माँ से कहती है– माँ मुझे मत बेच देना अर्थात् कम उम्र विवाह मत कर देना। (नागपुरी भाषी क्षेत्र में तीलक का प्रथा नहीं है बल्कि लड़के वाले लड़कियों को खरीद कर ढाई आने अर्थात् पाँच ढेबुआ देकर खरीदते है) मेरी उम्र बहुत कम है। वह अपनी माँ से अपने खेलने के लिए सुपली खरीद देने की बात कहती है। उम्र कम होने के कारण अभी तो खलने–कुदने का समय है। इतनी कम उम्र विवाह मत कर दो। इस प्रकार नागपुरी काव्य साहित्य में अनेक गीत विद्यमान है।

2. **विवाह गीत** – नागपुरी लोक गीत में विवाह संस्कार के लोकगीत के सभी संस्कारों की अपेक्षा अधिक मिलती है। विवाह के सभी संस्कारों के अवसर पर स्त्रियाँ ही ये गीत गाती हैं। वैवाहिक कार्यक्रम सम्पन्न होने के 16 दिनों के पूर्व से ही युवतियाँ 'डमकच', 'झुमर' तथा 'लहसुवा' आदि गीत–नृत्य का कार्यक्रम चलाती हैं। वैवाहिक कार्यक्रमों के अवसर के विभिन्न संस्कारों के गीत दृष्टव्य है–

"घर में सोभलँय बाढ़ल बेटी हायरे,

कुटुम लागते बेटी उईठ गेलई हायरे।
घर मोरा सुन भेलयँ हाय रे,
घर मोरा सुन भेलँय हायरे।
बन में सोभलय एका हरिनया,
बंदुका लागते हरिन मईर गेलँय हायरे।
बन मोरा सुना भेलँय रे।"[5]

इस लोकगीत में यह कहा गया है कि बेटी घर की शोभा होती है, घर की शोभा बढ़ाती है लेकिन विवाह जोड़ा लगते ही बेटी घर से विदा लेती है और घर को हमेशा के लिए सुना–सुना कर जाती है। ठीक उसी प्रकार जंगल में हिरण, घर की बेटी जैसी शोभती है लेकिन कोई शिकारी के बंदूक से गोली लग जाने से वह मर जाती है और जंगल सुना–सुना हो जाता है।

नागपुरी लोक गीत में विवाह संस्कार में एक और गीत जो बेटी विदाई से समय गाया जाता है :–

"बाबा कान्दयँ सभा बइठी, आइयो कान्दँय कोठा बइठी।
पाँचों भइया कान्दयँ डड़ीया धरी,
अब बहिन छुटल, अब बहिन छुटलयँ रे.....
काका कान्दयँ सभा बइठी, काकी कान्दँय कोठा बइठी....
पाँचों भइया कान्दँय ड़डीया धरी,
अब बहिन छुटल, अब बहिन छुटलँय रे....."[6]

अर्थात् बेटी के घर से बिदा होने के समय पिताजी आंगन में लोगों के बीच भरे सभा में रोते हैं, माँ घर के बीच कमरे में जाकर रो रही होती है। घर के पाँच भाई अपने कमर को पकड़ कर रोते है। घर में बेटी की जो मान–सम्मान होती है वो बेटी के विदा होने समय ही पता चल पाता है। इस तरह के लोकगीत पत्थर रूपी हृदय को भी द्रवित कर देती है।

3. गुदना गुदवाते समय के नागपुरी लोकगीत–

"मोइर जाबे आयो गे माँय,
पाँयरी के तो खाला छोडबे
गोदनी कर गोदा के माँय लेले जाबे।"[7]

झारखण्ड में रूपया–पैसा का अभाव देखा जाता है। गरीब होने के कारण यहाँ के लोग सोना–चाँदी नहीं पहन पाते है। लेकिन अपनी शौक पूरा करने के लिए स्त्रियाँ अपने शरीर के अलग–अलग हिस्सों में गुदना गुदवाती है जो आजीवन के लिए सौदर्य का रूप धारण कर लेता है। गुदना गुदवाते के पहले सरसों–तेल से काजल बनाया जाता है। उस काजल को किसी स्त्री के दूध में घोला जाता है। गोदनी (मलारिन) पाँच सूइयों को एक साथ बाँध कर विभिन्न प्रकार के गहने के चित्र बनाती हैं। गोदनी जो गुदना गोदती है उसे 'साखा' कहा जाता है।

नागपुरी भाषी समाज में दुर्भाग्यवश अभी भी लड़कों के अनुपात में लड़कियों को शिक्षा के क्षेत्र में महत्व नहीं दिया जाता। अशिक्षित अथवा अर्धशिक्षित नारियों का मानसिक स्तर भी इस लायक नहीं होता कि वे अपनी

असुविधाओं को वाणी दे सके, उसका विरोध कर सके। विवाह हो जाने पर लड़कियों को पति के साथ एक नया परिवार मिल जाता है। इस परिवार की दशा एवं क्षमता पर ही उसका भविष्य निर्भर करता है। साधारणतः माता–पिता लड़की का विवाह करके ही अपनी जिम्मेवारी मुक्त हो जाते है। पर उनकी यह भावना लड़कियों के प्रति अन्यन्य कठोर सिद्ध होता है। विशेषतः उन लड़कियों के लिए जिन्हें ससुराल में रोटी एवं कपड़ा भी सहज ढंग से प्राप्त नहीं होता। लड़कियों की इस महत्वपूर्ण समस्या का मूल कारण पिता की सम्पति पर उनका अधिकार नहीं होना।

पाश्चात्य संस्कृति और वैज्ञानिक सभ्यता से देश में जो परिवर्तन हुए उनमें स्त्री विषयक दृष्टिकोण सबंधी परिवर्तन महत्वपूर्ण है। राम रतन भटनागर ने कहा है :– "वास्तव में बीसवीं शताब्दी नारी जागरण की शताब्दी रही है और नारी की मुक्ति में ही हमारे युग के महापुरूषों और साहित्यकारों ने मानव मुक्ति की कल्पना की है।"[8]

नागपुरी लोक साहित्य के अलावा समृद्ध होती नागपुरी शिष्ट साहित्य के कवितओं में भी स्त्री विमर्श से संबधित कई रचनाएं देखने को मिलती हैं। नागपुरी साहित्य आज के आधुनिक युग में कई कवियों के सार्थक प्रयास से नई–नई रचनाओं के माध्यम से अलग–अलग विधाओं में साहित्य को धार दिया जा रहा है। माँ और बच्चे के बीच को स्नेह को उदाहरण के माध्यम से देख सकते है–

"तोर गुंजगुंज करिया खोपा में
खोंसल खोंगसो चांदीक रूपिया
करिया केंस चिमटल चरइ किलिप
करम काठक ककइ कोराल केंस
मेंजुर बोकली बाजक पाँइखक कइलगा
तोर रूप दमके आयो उगल बेइर तइर
काने मंदिर मधे लवके तरपत....."[9]

उपयुक्त पंक्तियों के माध्यम से कवि एक माँ और बच्चे के बीच के स्नेह को दर्शाने का प्रयास किया है। किसी माँ के बेतरा (पीठ) में जब एक बच्चा रहता है तो माँ का काला–काला बाल बंधा हुआ और उसमें चाँदी का खोंगसो लगा हुआ जो बहुत सुन्दर दिखाई पड़ता है। माँ का सुन्दर बाल जो लकड़ी के कंघा से झाड़ा हुआ है और उसे सुन्दर ढंग से सजा कर बगुला के पंख से सजाया गया है, बहुत ही आकर्षक है। कान में पहने हुए आभूषण जो सूर्य की किरण पड़ने पर चमक उठता है। इस तरह के कई रूपों से स्त्री के सौंदर्य का वर्णन किया गया है।

आज इस आधुनिक युग में स्त्रियों को कई तरह से प्रताड़ित भी किया जा रहा है। इसका वर्णन हम एक नागपुरी कविता के उदाहरण से देख सकते है –

"जगत जननी
मायँ! जगत जननी
मोके जनम लेवे से ना रोक,
जे भी करलक तोके विवश
टकराय जा बइन के काली।

माँय! तोयँ हिस भोली,
कहिया तक सहबे अनकर बोली,
माँय! जगत जननी,
जनम लेवे दे, कहाय दे जगत जननी।"[10]

इस कविता में एक माँ को जगत जननी के रूप में माना गया है। जिस प्रकार माँ काली, माँ दुर्गा, पूरे जगत की जननी थी और अत्याचार के समय अपने रौद्र से रूप से अन्यायी के खिलाफ नरसंहार किये। उसी प्रकार आज के भी स्त्रियों को बताया जा रहा है कि जब संकट की स्थिति आ जाये तो वे माँ काली के भाँति पापियों का संहार कर जगत कर रक्षा करे।

संदर्भ ग्रंथ :-

1. झारखण्ड सार संग्रह, अरूण अग्रवाल, उड़ान प्रकाशन, रांची, पृ.सं – 14
2. संगम पत्रिका, किशोर कु. पाठी, पृ.सं – 44
3. नागपुरी सदानी साहित्य, फादर पी. शांति नवरंगी, पृ.सं – 139
4. नागपुरी लोक साहित्य, भुवनेश्वर अनुज, झारखण्ड झरोखा प्रकाशन, रांची, पृ.सं – 127
5. वही, पृ.सं – 123
6. नागपुरी के विवाह गीत, युगेश कुमार महतो, प्यारा केरकेट्टा प्रकाशन, पृ.सं – 107
7. नागपुरी लोक साहित्य, भुवनेश्वर अनुज, झारखण्ड झरोखा प्रकाशन, रांची, पृ.सं – 145
8. हिंदी मराठी नाटकों में नारी, जोशी, पृ.सं. –88
9. नागपुरी कवि और उनके काव्य, डॉ. वी.पी. केसरी, नागपुरी संस्थान प्रकाशन, रांची, पृ.सं – 549
10. वही, पृ.सं – 621

दूरभाष–7250242116
ईमेल आईडी– sanjayguddu777@gmail.com

संगम Impact Factor : 6.632
Website : www.ginajournal.com
ISSN : 2321-8037
विशेषज्ञ समीक्षित पत्रिका A Peer Reviewed International Refereed Journal
SANGAM
गीना देवी शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित साहित्य, शिक्षा, संस्कृति एवं शोध को समर्पित मासिक
Vol. 12, Issue 1-2
पृष्ठ : 166-168

रूपनारायण सोनकर के 'डंक' उपन्यास में चित्रित दलित समाज की समस्याएँ

पियाली रॉय
शोधार्थी, असम विश्वविद्यालय, सिलचर।

मनुष्य का जीवन समस्याओं से घिरा रहता है। मनुष्य अपने इन समस्याओं से जितना दूर भागना चाहता है, उतना ही वह उन समस्याओं के बीच फँसता चला जाता है। जिस प्रकार मनुष्य की प्रतिछाया हमेशा उसके साथ रहती है। उसी प्रकार समस्याएँ भी मनुष्य के साथ रहती है। ऐसा कहना असंगत नहीं होगा कि समस्या विहीन मनुष्य का जीवन निरर्थक है।

आज के युग को वैज्ञानिक युग कहा जाता है। लेकिन इस युग के समस्याओं को देखने के बाद इसे 'समस्याओं का युग' कहना असमीचीन नहीं होगा। मनुष्य विज्ञान की ओर आगे बढ़ रहा है, विज्ञान द्वारा सूक्ष्म से सूक्ष्म ज्ञान प्राप्त कर रहा है और नए– नए आविष्कारों के माध्यम से विकास एवं प्रगति का द्वार अपने लिए खोल रहा है। साथ ही वह अनेक समस्याओं से घिरता जा रहा है। मनुष्य की प्रवृत्ति हमेशा से ही आशावादी रही है। वह अपने पद, प्रतिष्ठा और भौतिक सुख–सुविधाओं को पाने की होड़ में प्रयासशील रहा है। प्रयासों के चलते मनुष्य के जीवन में बहुत सी बाधाएं, रूकावटें सामने आती है।

रूपनारायण सोनकर ने अपने उपन्यास 'डंक' में विदेशी समाज, भारतीय नागरी समाज, ग्रामीण समाज, आदिवासी समाज तथा दलित समाज की विभिन्न समस्याओं का सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक विवेचन किया है। समाज को वर्ण एवं वर्ग में बाँटा गया है। धर्म एवं समाज के अनुसार जिस वर्ग को जो काम मिला है, परम्परागत रूप से वह वही काम करता चला आया है। दलितों को भी उसी मान्यता के अनुसार अपनी पुश्तैनी व्यवसाय करनी पड़ती है। लेकिन डॉ. अम्बेडकर ने दलित अस्मिता के लिए चलाए गए आंदोलन की वजह से दलितों में शिक्षा का प्रचार–प्रसार बढ़ गया। दलित शिक्षित बने और अपने अधिकारों के प्रति जागरूक हुए। जिससे वे अपने परम्परागत व्यवसाय को त्यागने के लिए तैयार हो गए। आकाश अपनी माँ से कहता है–"अन्य दलित परिवारों के लोगों के पास भी न कोई खेती है और न कोई नौकरी है। वे लोग कैसे जीते हैं? वे लोग यह घिनौना कार्य नहीं करते हैं। हम लोग भी उन्हीं की तरह मेहनत मजदूरी करेंगे। मैं ट्यूशन पढ़ाऊंगा। मैं कम्प्यूटर चलाना जानता हूँ। कंप्युटर की ट्रेनिंग ली है। मैं घर का खर्च उठाऊंगा। पिताजी मजदूरी करेंगे। हम लोग सूअर, बकरी, भैंस, गाय पालकर गुजर बसर करेंगे। लेकिन ये कार्य नहीं करेंगे।"[1]

मनुष्यों ने अपने स्वार्थ एवं अधिकारों के लिए, अपने सुख सुविधाओं के अनुसार कायदे–कानून बनाए हैं।

जिसे धर्म का नाम दे दिया गया। वर्ग–विभाजन के अनुसार सभी अपने अपने कार्य करते गए। उसी को केन्द्र बनाकर दलितों को हेय मानकर उनकी अलग बस्तियाँ, अलग झरने बनाए गए। स्वाधीनता के बाद नए संविधान के अनुसार भारत में रहने वाले सभी लोगों को समान अधिकार प्राप्त हुआ। लेकिन आज स्वतंत्र भारत में भी दलितों को समाज से अलग माना जाता है। "तल्लापट्टी जहाँ राहत कैम्प चलाए जा रहे थे। सुनामी लहरों के बाद तबाह हुए लोगों को राहत कैंपों में रखा गया था। लेकिन वहाँ पर भी छूतो अछूतों को अलग–अलग कैंपों में टिकाया गया था। पहले राहत सामग्री सवर्णों को पहुंचायी जाती थी, बाद में दलितों को। कभी–कभी सारी सामग्री सवर्णों में बांट दी जाती थी। कई कई दिनों तक आफत के मारे दलितों के बच्चे, औरतें और बूढ़ों को भूखे रहना पड़ता था।"[2] इसके मूल में अस्पृश्यता है। अस्पृश्यता भारत में प्रचलित एक बीभत्स चीज है। "यह ऊँची जाति वालों के लिए झरना है। दूसरी तरफ का झरना नीची जातिवालों के लिए है। यदि तुम ऊँची जाति के हो तो इस झरने से पानी पियो और यदि नीची जाति के हो तो उस झरने में पानी पियो जहाँ नीची जाति की औरतें घड़ों में पानी भर रही है।"[3] भारत के गाँवों में ही ऐसै झरने पाये जाते है।

भारत में अंधविश्वास कुरीतियों इसके कारण बहुत सी जिंदगियां स्वाहा हो गई है। एक अंधविश्वास ये भी है कि वास्तु मजबूत करने के लिए बड़े बड़े भवनों तथा किलो का निर्माण करते समय उसकी नींव में किसी दलित की बलि दी जाती है। "हमारे देश के अन्दर जितने भी पुराने किले देखने को मिलते हैं उन सभी में असंख्य दलित जिन्दा गाढ़ दिये गये थे। उस समय के पण्डितों ने बताया था कि यदि जिन्दा मानव इन किलों की नींव में दफनाया जाता है तो किला सुदृढ़ बनेगा।"[4]

धर्म के नाम पर हमेशा से ही सवर्ण दलितों का शोषण किये गये। धर्मशास्त्रों को आधार बनाकर दलितों का जीवन बेहाल कर दिया गया। किसी भी प्रकार का कोई भी साधन पाने के लिए दलितों को सवर्णों पर आश्रित रहना पड़ता था। दलितों को बंधक बनाकर रखते थे। उनका जीवन भर शोषण करते थे। दलित परिवार के मुखिया ने बैंक से लोन पाने के लिए आवेदन किया। लेकिन सवर्ण श्री जीवन सिंह को चला और उन्होंने बैंक मैनेजर श्री सरवन को यह लोन पास न करने के लिए कहा। दलितों की दयनीय स्थिति कभी भी नहीं सुधर सकती। "उच्च जाति के सभी लोग कोई न कोई दलित जीवन भर के लिए बंधक बनाए रखते हैं। मैं आपको जो कहेंगे सेवा कर दूंगा लेकिन आप दलपत को बैंक लोन मत दें क्योंकि भेड़ पालन व्यवसाय से बहुत लाभ मिल जाता है। वह तुरंत हमारा कर्ज चुकाकर अपने बेटे जुगनू को छुड़ा लेगा।"[5] स्वार्थ सिद्धि के लिए कमजोर असहाय की बलि देनी ही पड़ती है।

स्त्रियों को लाचार समझकर उन पर अन्याय, अत्याचार किया जाता है। औद्योगिकीकरण के कारण नौकरी हेतु कुछ विवाहित नौजवान महानगरों में जाकर बसते हैं। लेकिन वे अपनी पत्नी को साथ लेकर नहीं जा पाते। तब कुछ परिवारों में पिता अपनी बेटी समान बहू का शारीरिक शोषण करता है। उसके साथ नाजायज या अनैतिक संबंध रखता है। यह सामाजिक रूप में काफी भयंकर समस्या है। "जिन परिवारों के लड़के सैकड़ों हजारों किलोमीटर दूर नौकरी करते हैं पत्नियों के साथ नहीं ले जा पाते हैं। ससुर उनकी पत्नियों के साथ नाजायज संबंध बड़ी सुगमता से स्थापित कर लेते हैं। नौकरीपेशा वाले की बाते छोड़ो किसान मजदूर व्यापारी भी यही कारनामा अपनी बहुओं के साथ दोहराते हैं।"[6] स्त्रियों का मानसिक एवं शारीरिक शोषण होता है।

पति के निधन के बाद पत्नी को पति की चिता में जिन्दा जला दिया जाता था। राजाराम मोहन राय आदि

समाज सुधारकों ने इस प्रथा के विरोध में बहुत बड़ा आन्दोलन चलाया। जिसके तहत इस समस्या को निर्मूल करने का प्रयास किया गया। परन्तु आज भी इस समस्या से हम पूर्ण रूप से मुक्त नहीं हो पाए।

भारत एक धार्मिक देश है। यहाँ के लोग धार्मिक प्रवृत्ति के होते हैं। वे धर्म के नाम पर कुछ भी करने के लिये तैयार हो जाते हैं। मंदिरों में रहने वाले पंडितों, पुरोहितों द्वारा बताई गई किसी भी बात पर विश्वास कर लेते हैं। लेकिन ये पंडित, पुरोहित धर्म के नाम पर स्त्रियों का बलात्कार करते हैं। "एक गांव संजीवन खैरा का एक गरीब सवर्ण परिवार का लड़का बीमार रहता था। वो अपने लड़के को सवस्थ देखना चाहता था। वह बहुत मालदार नहीं था। लेकिन वो और मालदार बनना चाहता था। उसने अपनी समृद्धि के लिए व लड़के के ठीक होने के लिए एक पुजारीध्तान्त्रिक की मदद ली। वो घर में अर्धरात्रि के बाद एक कमरे के अंदर उस बीमार लड़के की पत्नी को बुलाता है। आग जलाकर तमाम प्रकार के चित्र व मानव खोपड़ी रखकर तंत्र साधना करता है। दरवाजा बंद करके आग को रौशनी में मंत्र जाप करता था। परिवार के अन्य सदस्यों को वहाँ जाने की इजाजत नहीं थी। वह औरत को सम्मोहित कर देता था। रात भर उसके साथ बलात्कार करता था।"[7] यह धर्म के नाम पर स्त्रियों का शोषण करते हैं।

समाज और मानव का अटूट संबंध है। समाज है तो समस्याएं भी हैं। समस्याएँ मानव जीवन का एक अभिन्न अंग बन गया है। समस्या मानव जीवन में बाधाएं उत्पन्न करती है। लेकिन उन समस्याओं को निर्मूल करने पर मानव जीवन को विकास की ओर ले जाती है।

रूपनारायण सोनकर वर्तमान युग के एक सजग साहित्यकार हैं। उन्होंने अपने उपन्यास डंक में अनेकों समस्याओं का चित्रण किया है। उनमें से कुछ समस्याओं का निराकरण अपने साहित्य द्वारा ही किया है। उन्होंने कहा है शिक्षा के जरिए ही हम हर समस्या का समाधान निकाल सकते हैं। शिक्षा से ही हम अपने अधिकारों को जान सकते हैं। अपने देश में बने कानूनों के प्रति जागरूक हो सकते हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ :-

1. डंक, रूपनारायण सोनकर, पृ. 74
2. वही, पृ. 29
3. वही, पृ. 34
4. वही, पृ. 28
5. वही, पृ. 33
6. वही, पृ. 47
7. वही, पृ. 109

ईमेल– piyaliroy2808@gmail.com

मोबाइल– 8638549538

संगम Impact Factor : 6.632
Website : www.ginajournal.com
ISSN : 2321-8037
विशेषज्ञ समीक्षित पत्रिका A Peer Reviewed International Refereed Journal
SANGAM
गीना देवी शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित साहित्य, शिक्षा, संस्कृति एवं शोध को समर्पित मासिक
Vol. 12, Issue 1-2
पृष्ठ : 169-174

महिला आत्मकथाकारों का संघर्ष

प्रियंका पाठक
शोधार्थी–हिन्दी विभाग, बरकतुल्ला विश्वविद्यालय भोपाल।

शोध सारांश :-

आज महिलाओं को संघर्ष का पर्याय माना जा सकता हैं। जीवन से जुड़े प्रत्येक क्षेत्र में महिलाओं के संघर्ष की कहानी देखी जा सकती है। चाहे वह पारिवारिक स्तर हो अथवा सामाजिक स्तर। अपनी आत्मकथा के माध्यम से एक स्त्री अपने संघर्षो की कहानी एक–कर समाज के सामने लाती है। एक स्त्री के लिए आत्मकथा अर्थात उसकी वह अनकही कहानी जो सभी के सामने होते हुए भी किसी को पता नही होती। व्यक्तिगत स्तर से लेकर सामाजिक स्तर के सभी स्थानों पर एक महिला जाने कितनी समस्याओं से जूझ रही होती है। आत्मकथा में वह अपने जीवन में आए संघर्ष हर उस क्षणको विस्तार से कहती है जो समाज के समक्ष एक उदाहरण के रूप में प्रस्तुत हो सकें।

बीज शब्द – आत्मकथा, स्त्री जीवन, संघर्ष, शोषण, मानसिक विकृति, पुरूष वर्ग, पिंजरे की उड़ान, साहस, मानसिक पीड़ा, स्वतंत्रता।

आत्मकथा यानी अंदर बाहर झांकने की खिड़की।

आत्मकथा की परिभाषा को व्यक्त करते हुए मैत्रेयी पुष्पा अपनी आत्मकथा 'कस्तुरी कुंड़ल बसै' में लिखती है :– ''हर आत्मकथा एक उपन्यास है और हर उपन्यास एक आत्मकथा। दोनो के बीच सामान्य सूत्र फिक्शन है।'' कस्तुरी कुंडल बसे मैत्रेयी पुष्पा (कवर पेज)

आत्मकथा में संघर्ष की परिभाषा को व्यक्त करते हुये रमणिका गुप्ता की आत्मकथा 'हादसे' के 'आत्मकथा के अनेक पाठ' की भूमिका को राजेन्द्र यादव कुछ इस तरह से व्यक्त करते है– '' दुर्दम्य और दुर्धुर्ष! रमणिका गुप्ता की इस आत्मकथा को पढ़ते हुए दो ही शब्द बार–बार दिमाग में आते है। अगर इसे कोई दूसरा नाम दिया जा सकता है तो वह है अपराजेय संघर्ष–कथा।''

महिलाएँ अनेक क्षेत्रों में संघर्ष करती रही, कभी परिवार में कभी समाज में कभी राजनीति में कभी शिक्षा में, लेकिन आत्मकथा लेखन में 20वीं सदी के अंत में आत्मकथा लेखन पुरजोर तरीके से सामने आया। स्त्रियों को संघर्ष की जो आदत गर्भ में लग गई थी। उसे साहित्य की विधा आत्मकथा के माध्यम से समग्र समाज के सामने लाने में अब उनको संकोच नही हो रहा था। इसी दौर में कुछ प्रमुख महिला आत्मकथाकार उभर कर सामने आयी है। जैसे, मैत्रेयी पुष्पा रमणिका गुप्ता, कृष्णा अग्निहोत्री, चन्द्रकिरण सोनरेक्सा, मन्नू भंड़ारी आदि।

अपनी अनेक जरूरतों को पूरा करने के लिए स्त्री संघर्ष ही तो करती आई है। वह संघर्ष न केवल

सामाजिक राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक है। बल्कि अनेक और क्षेत्रों में वह संघर्ष करती रही है। अकेली रह रही स्त्री को भी भोग्या समझकर कुछ मानसिक विकृति वाले पुरूष स्त्रियों पर अपना अधिकार जमाना चाहते है लेकिन वह शायद यह भूल जाते है कि स्त्री कोई भोग की वस्तु नहीं है। कृष्णा अग्निहोत्री जी कहती है कि औरत किसे कहते है यह समझना पुरूष प्रधान देश के पुरूषों के लिए अति आवश्यक है :–

''जिसे हम आम औरत कहते है
वह देश की इज्जत है।
पर वह महसूस करने लगे है कि
उसके लिये उपन्यास कहानियॉ कोई नई
संभावना नहीं पैदा कर रहे।
उसे अपनी लड़ाई अपने तरीके से करनी है
उस आदमी के विरूद्व।''

एक स्त्री क्या चाहती है कि मुश्किल समय में कोई उसका हाथ थाम ले उसकी मदद के लिए आगे आए लेकिन कुछ मनचले इसी मदद को स्त्री से संबंध बनाकर करना चाहते है। उस भीड़ से अपने को बचाए रखना किसी युद्व से कम नहीं है।

''जो उसके जीवन की अर्थक्ति तोड़ता है जो केवल शब्दों से उसे संभालता है। मेरे इतिहास में संघर्ष के नतीजे है। इस इतिहास से भरे लेखन में कुछ रिश्ते है। मैं जानती हूॅ कि मेरे शव को सैंकडों हमदर्दी देंगे, पर मैं जब मर गई , तब मेरी पीठ पर पडे कोड़े व नाखूनी–पंजे का दर्द भी चला गया। पर उसका अहसास तो जीवन पर्यन्त मैंने भोगा हैं।''

आगे वह अपनी आत्मकथा में लिखती है कि, ''वास्तव में मेरा यही अनुभव है कि पुरूष स्त्री देह के आकर्षण या उसके लगाव के बिना मित्र रूप में किसी जरूरतमंद स्त्री का सहयोगी नहीं होता, न उसे मदद करने में पहल करता है।''

स्त्री के साथ हुए विश्वासघातों की संघर्ष भी कुछ कम नहीं है, चाहे व साहित्यकार हो चाहे एक आम स्त्री ही क्यो न हो संघर्ष करना तो जैसे वह किस्मत में लिखवा के लेके आई है। इसी संदर्भ में कृष्णा अग्निहोत्री जी कहती है कि उनके साथ भी जगह–जगह विश्वासघात हुए। समाज के द्वारा परिवार के द्वारा साहित्यिक सरकारों के द्वारा अपनी रचनाओं को प्रकाशित कराने के लिए भी उनको संघर्ष की लम्बी पंक्तियों में खड़ा रहना पड़ता है बावजूद इसके उनका नाम नहीं आता।

कृष्णा अग्निहोत्री एक सशक्त हस्ताक्षर के रूप में हमारे सामने आई है, आज डिजिटल का युग है छोटे–छोटे लोग दो–चार पंक्तियॉ लिखकर उसे सोशल मिड़िया जैसे फेसबुक, इंस्टाग्राम, ट्वीटर पर लिखकर पोस्ट कर देते है, और अपने आप को कवि या लेखक समझने लगते है, लेकिन एक दौर वह भी था जब इन्हीं रचनाओं को प्रकाशित कराने कि लिये लेखक लेखिकाओं को लम्बी कतार में खड़ा होना पड़ता था। कोई सम्पादक अगर किसी लेखक की रचना को छाप देता था तो कोई भरोसा नहीं कि आमुख लेखक का नाम भी सही रहे, नाम परिर्वतन कोई बड़ी बात नहीं थी। इन्हीं सब का शिकार हुई कृष्णा अग्निहोत्री ने वह आगे अपनी आत्मकथा में लिखती है कि :–

''टूटती भी तभी हूँ जब मुझे छपने में या मेरा नाम जानबूझकर हटाने में कोई अग्रणी होता है। तूलिका सम्मान मिला तो समाचार निष्पक्ष रूप से छपना चाहिए। पर इन्दौर की कुछ धनी महिला पत्रकार निर्मला मुराड़िया को निर्ममता तो देखे कि वे स्वंय के समाचार पत्र में स्वंय की फोटो छाप स्वंय के उस लेखक को हाइलाईट करती है जो उतना बड़ा है नहीं। जब देश की पत्रकारिता ही तटस्थ न रहे, पक्षपाती हो जायें, स्थानीय समाचार लेने वाले चाय–नाश्ते पर बिके, अपनों–अपनों का बोलबाला हो तो, जेनुइन और समसायिक लेखक को कौन छापेगा व उसे पढ़ने की आदत भी किसी को होगी इसलिए स्थानीय नीतियॉ दुख देती ही है। हाल ही में मुझे तीन सम्मान मिले परंतु स्थानीय पेपरों में समाचार नहीं छपा।''

स्त्रियो का संघर्ष भ्रुण से लेकर कब्र तक चलता रहता है। भारतीय संस्कृति में स्त्री को पुरूष को अर्द्धागिनी माना जाता है। लेकिन यह कितना चरितार्थ होता है। यह सर्वविदित है। अर्द्धांगिनी बन कर रह गई है। स्त्रियों के संघर्ष को कोई नहीं समझता है आजकल कुछ महिलाओं को अपनी इच्छा से परिधान पहनने, घूमने–फिरने की, खाने–पीने की आजादी मिल गई है। उसी में वह खुश है लेकिन क्या इतने में खुश हुआ जा सकता है। सही मायने में जो खुशी तब मिलेगी जब आप के घरवाले घर के सभी फैसलों में आपको शामिल करें। फैसलो में शामिल करना तो दूर यहॉ स्त्री को मरता देख पति को दया नहीं आती।

''कुऍ में धकेल पत्नी के तड़पने का वीडियो बनाता रहा पति। पति ने पत्नि को कुए में फेंक दिया। फिर रस्सी लटका दी, जिससे वह डूबे नहीं तडपती रहें। इसका 40 सेकेंड़ का विडियों बनाकर ससुराल भेज दिया।''

पिंजरे की मैना चंद्रकिरण सोनरैक्सा की आत्मकथा है। जिसमें उन्होंने अपनी पचहत्तर साल के लेखन काल का बड़ी आत्मीयता के साथ चित्रण किया है। 1931 ई. में ग्यारह वर्ष की किशोरावस्था में दलित लड़के के विषय में लिखी रचना 'अछूत' कलकत्ते के मासिक 'विजय' नाम की पत्रिका में प्रकाशित हुई। यह इनकी कथा–यात्रा का प्रथम सोपान था। आजादी के पूर्व स्त्रियों की स्वतंत्रता उनका दामपत्य जीवन एवं शिक्षा की व्यवस्था की क्या दशा थी इसका बहुत ही मार्मिक चित्रण लेखिका ने इस आत्मकथा में किया है। साथ ही अपने शंकालु पति क्रांतिचन्द सोनरेक्सा की अव्यहवारिकता, उग्रता, और कठोरता को बड़े साहस के साथ उकेरा है। पत्नी के लिए लेखन का अवकाश प्राप्त करने की चिन्ता पति ने कभी नहीं की। मातृ–पितृ विहीन चन्द्रकिरण के ब्याह की जिम्मेदारी। बडे भाई के कंधो पर थी। एक बार उनके मित्र मित्तल साहब ब्याह का एक प्रस्ताव लेकर आये। उन्होंने तीस–इकत्तीस की उम्र वाले कवि हरिवंश राय बच्चन का जिक्र किया जिनकी पहली पत्नी गुजर चुकी थी। भाई ने इस रिश्ते को अस्वीकार कर दिया। अपने दामपत्य जीवन का आंकलन करते हुये चन्द्रकिरण ने लिखा है– ''हमारे बीच कभी ऐसा तालमेल नहीं रहा जिसके परिणामस्वरूप जिन्दगी किन्हीं मायनों में शेक्सपियर त्रासदी बनकर रह गयी।''

ऐसी स्थिति में न केवल चंद्रकिरण सोनरेक्सा के जीवन में बल्कि हमारे समाज में रह रही प्रत्येक महिला के साथ यह स्थिति बनी रहती है। प्रत्येक महिला के जीवन में संघर्षो का पुल बना है। जिसको पार करना अब प्रत्येक महिला सीख चुकी है।

ममता कालिया ने 'पिंजरे की मैना' को एक ऐसी साहसी स्त्री की शक्ति गाथा कहा है– जिसमें पुरूष के काम क्रोध, मद, लोभ, मोह को अपने धैर्य और धृति से विदित किया। अगर पुरूष ने उसे पिंजरे में ड़ाला तो वह पिंजरे समेत उड़ना सीख गई। सामाजिक दृष्टि, स्पष्टवादिता और सत्यकथन के कारण यह आत्मकथा

मर्मस्पर्शी बन सकी।''

औरतों को अपने नाम के लिए भी अनेक संघर्ष करने पड़ते है। जब एक लड़की विवाह बंधन के उपरांत पीहर से ससुराल आती है। तो उसका स्वयं का नाम वजूद सब उससे छीन लिया जाता है उसका सरनेम तक उससे छीन लिया जाता है जिस नाम और सरनेम के साथ वह पली बढ़ी है। आधी उम्र के बाद पिता द्वारा दिया गया नाम और पहचान पति के नाम और सरनेम में परिर्वतित हो जाता है।

स्त्री के समर्पण को लोग उसकी कमजोरी बना लेते हैं। लेकिन उन्हीं कमजोरियों को वह अब अपनी शक्ति बना चुकी है। इसके लिये उसको बहुत संघर्ष करना पड़ा है।

अपनी आत्मकथा 'शिकंजे का दर्द' में सुशीला टाकभौरे जी लिखती है :–

''यदि मेरे जीवन में इतने आक्रोश के क्षण नहीं आते तो शायद मैं अपनी ऐसी रचनाएँ नही लिख पाती, यह आक्रोश मेर साथ हुई हिंसा का परिणाम था। मानसिक और शारीरिक पीड़ा पहुँचाकर मुझे इतना तड़पा दिया जाता कि मेरी भावनाओं का लावा फूट पड़ता।''

वह खुद तो सशक्त हुई महिला जाग्रति के कार्यक्रमों के माध्यम से उन महिलाओं को जाग्रत करती थी जो अपने अधिकार को जानती ही नहीं थी। उनको यह बताती थी कि आप को साहसी विद्रोही बनना होगा तभी आपको आपका अधिकार मिलेगा ,मागना नही छीनना होगा।

मध्यप्रदेश के भानपुरा गॉव में जन्मी मन्नू भंड़ारी अपनी आत्मकथा 'एक कहानी यह भी' में जीवन के उतार–चढ़ाव का भरपूर समावेश है मन्नू जी ने राजेन्द्र यादव से लेखन को आगे बढ़ाने के ही लिए विवाह किया था। लेकिन उनको क्या पता था कि पुरूष प्रधान देश में ये उनका भ्रम था। यह हालात न केवल मन्नु जी का बल्कि हमारे आपके समाज में आप के अगल–बगल भी देखने को मिल जाएँगे। बतौर एक लेखक अपनी लेखन के माध्यम से उसको कैनवास पर उकेर देता है। और एक आम इंसान अपने अंदर ही समेटे रहता है, घुटता रहता है। मन्नु जी आपकी आत्मकथा 'एक कहानी यह भी' में स्पष्टीकरण में लिखती है कि ''लेखन के कारण ही हमने विवाह किया था.....हम पति पत्नी बने थे। उस समय मुझे लगता था कि राजेन्द्र से विवाह करते ही लेखन के लिए तो जैसे राजमार्ग खुल जायेगा और उस समय यही मेरा एकमात्र काम था। उस समय कैसे में यह सब भूल गई कि शादी करते ही मेरे व्यक्तित्व के दो हिस्से हो जायेंगे लेखक और पत्नी । इसमें कोई संदेह नहीं कि मेरे लेखकीय व्यक्ति को राजेन्द्र ने जरूर प्रेरित और प्रोत्साहित किया इनके.....साथ मिलनेवाला साहित्यिक वातावरण, होने वाली गप्प, गोष्ठियॉ मेरे बहुत बड़े प्रेरणा–स्त्रोत भी रहें। लेकिन मेरे व्यक्तित्व का पत्नी रूप? इस पर राजेन्द्र निरन्तर जो और जैसे प्रहार करते रहे, इसका परिणाम तो मेरे लेखन ने ही भोगा।''

इन महिला आत्मकथाकारों की आत्मकथा के माध्यम से अनेक महिलाओं को बल मिला है अपनी बात को अपने समाज परिवार में रखने का हौसला मिला है। संघर्ष को महिलाएँ अपनी सहेली मान चुकी है। संघर्ष से डरती नहीं डटकर सामना करती है। इन्हीं संघर्षों से जूझती हुए महिलाएँ विभिन्न क्षेत्रों में अपना परचम लहरा रही है। हर असंभव से लगने वाले काम को संभव बनाना उनके लिये छोटी सी बात हो गई है। घर–परिवार बच्चे पति सबका ध्यान रखते हुए नौकरी करना आसान काम नही है लेकिन फिर भी वह घर परिवार का ध्यान रखते हुए भी प्रशासनिक जिम्मेदारी भी संभाल रही है।

सामंती परिवार में जन्मी रमणिका गुप्ता का परिवार सामंती तो था साथ ही आधुनिकता को भी अपनाने

वाला भी था। फिर भी लड़कियों को सिर ढककर चलना आवश्यक था लेकिन रमणिका जी ने इसका विरोध किया। जिस भी काम के लिए उनको मना किया जाता उसको वह अवश्य ही करती थी। एक दिन घूमने जाते वक्त मॉ ने उन्हें सिर ढ़ककर साथ चलने को कहा। वह नहीं मानी तो मां ने भी अल्टीमेटम दे दिया–''सर नही ढ़कना तो हमसे या तो बीस कदम आगे चलो या बीस कदम पीछे ताकि लोग न जाने कि तुम हमारे साथ हो।'' उस दिन से बीस कदम आगे चलना शुरू कर दिया। तभी से उन्हें विद्रोही का रूतबा मिल गया और हर समय उन्हें रोका जाने लगा। पर उन्होंने अपनी जिद नहीं छोड़ी। स्त्रियों की अपने प्रति मानसिकता कुछ अलग ही थी , इज्जत के डर से महिलाएँ अपने ऊपर कुछ अत्याचारों का विरोध नहीं कर पाती थी। ये सोच कर की कौन इन अत्याचारियों के मुँह लगे। और इसी से उनका मनोबल बढ़ता था। लेकिन इसका विरोध रमणिका जी प्रबल रूप में करती है। वह हर ऐसे अत्याचार का विरोध करती है। उन्होंने अपने स्त्री होने के यर्थाथ को स्वीकार करते हुये संघर्ष की। अपनी कमजोरियों को उन्होंने स्त्री की कमजोरी न मानकर मनुष्य मात्र की स्वाभाविक प्रवृत्तियों व कमजोरियों से जोड़ा। उनके संघर्ष और हाजिर जवाबी का एक उदाहरण यह है–

''एक दिन एक सज्जन दनदनाते हुये मेरे कमरे में आए फिर इधर–उधर ताक कर बड़े हितैषी बनकर धीमे से बोले–––'' सुना है आपके पति ने आपको तलाक दे दिया है।''

मैं भी मुस्कुराती हुई उसी लहजे में बोली– '' जी हॉ ! उन्होंने तलाक देते वक्त आप ही से शादी करने की राय दी थी क्या आप तैयार है?''

वह सज्जन ऐसे बिदके जैसे बिच्छू काटने पर बैल। वे यह कहते हुए उठ गये–''गजब की ढीट औरत है।''

'कस्तुरी कुंडल बसै' में कस्तुरी जो कि मैत्रेयी पुष्पा की मॉ है। स्वतंत्रता के पहले यह दुस्साहस करना आज के परिवेश की स्त्रियों के लिए एक सीख है। अब भी हमारे समाज में अनेक लड़कियॉ है जिनकी मर्जी जाने बिना एक गाय की तरह जिस खुंटे से बॉध दे वह बँध जाती है। लेकिन परिवार के लोगो से अपनी पसंद ना पसंद की बात नहीं करती। परन्तु कस्तुरी इसका दुस्साहस करती है–

'' मैं ब्याह नहीं करूंगी।''

सोलह वर्षीय लड़की ने धीमे से कहा था, जिसे मॉ ही सुन सके। कहॉ सोचा था कि उसकी यह बात ऑगन के बीच ऐसे गुंजेगी कि घर की दींवारे हिलने लगें।''

निष्कर्ष रूप में यह कह सकते है कि आज की महिला सशक्त हो गयी है अपनी बात को बताने के लिए आजाद है। एक समय ऐसा था कि उनको शिकंजे के अंदर रहना पड़ता था। लेकिन आज वह शिकंजे के दर्द के बाहर निकल गई है। इसके लिए उनको शिकंजे को तोड़ना पड़ा है।

संदर्भ :-

1. मैत्रेयी पुष्पा, कस्तुरी कुंडल बसै, राजकमल प्रा0लि0, 1–बी, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज नई दिल्ली–110002, 2002, कवर पेज।
2. रमणिका गुप्ता, हादसे, राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड़, जी–17 जगतपुरी दिल्ली –110051, 2005, आत्मकथा के अनेक पाठ पेज–7।
3. कृष्णा अग्निहोत्री, और....,और....., औरत, सामयिक बुक्स, 3320–21 जटवाड़ा, दरियागंज, एन.एस.मार्ग.

नई दिल्ली–110002–2010 पेज नं.–50
4. कृष्णा अग्निहोत्री, और....,और....., औरत, सामयिक बुक्स, 3320–21 जटवाड़ा, दरियागंज, एन.एस.मार्ग, नई दिल्ली–110002–2010 पेज नं.–50
5. कृष्णा अग्निहोत्री, और....,और....., औरत, सामयिक बुक्स, 3320–21 जटवाड़ा, दरियागंज, एन.एस.मार्ग, नई दिल्ली–110002–2010 पेज नं.–50
6. कृष्णा अग्निहोत्री, और....,और....., औरत, सामयिक बुक्स, 3320–21 जटवाड़ा, दरियागंज, एन.एस.मार्ग, नई दिल्ली–110002–2010 पेज नं.–119
7. दैनिक भास्कर, छिंदवाड़ा म0प्र0, गुरूवार, 7 सितंबर 2023, पेज 03
8. डॉ. रामचन्द्र तिवारी, हिन्दी का गघ–साहित्य, विश्वविद्यालय प्रकाशन, विशालाक्षी भवन, चौक, वाराणसी–221001 (उ.प्र.) भाारत 2022, पेज. 528
9. डॉ. रामचन्द्र तिवारी, हिन्दी का गघ–साहित्य, विश्वविद्यालय प्रकाशन, विशालाक्षी भवन, चौक, वाराणसी–221001 (उ.प्र.) भाारत 2022, पेज. 528
10. हंस पत्रिका, नवंबर 2009, पेज 38
11. मैत्रेयी पुष्पा, कस्तुरी कुंडल बसै, राजकमल प्रा0लि0, 1–बी, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज नई दिल्ली–110002, 2002, पेज नं.–10।
12. रमणिका गुप्ता, हादसे, राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड़, जी–17 जगतपुरी दिल्ली 110051, 2005 पेज–18
13. रमणिका गुप्ता, हादसे, राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड़, जी–17 जगतपुरी दिल्ली 110051, 2005 पेज–267
14. मैत्रेयी पुष्पा, कस्तुरी कुंडल बसै, राजकमल प्रा0लि0, 1–बी, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज नई दिल्ली–110002, 2002, पेज नं.–9

priyankapathak517@gmail.com
mob-9755533262

संगम Impact Factor : 6.632
Website : www.ginajournal.com
ISSN : 2321-8037
विशेषज्ञ समीक्षित पत्रिका A Peer Reviewed International Refereed Journal
SANGAM
गीना देवी शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित साहित्य, शिक्षा, संस्कृति एवं शोध को समर्पित मासिक
Vol. 12, Issue 1-2
पृष्ठ : 175-178

The Idea of India: Origin and Historical Formation

Prof. Pradip Jankar
Assistant Professor, University of Mumbai.

Abstract :-

Seventy-five years of Indian independence have been completed. The Amrit Mahotsav of Freedom was celebrated with great enthusiasm. India has a very old and rich social, political, and ideological background. Basically, the rise of India has become a fantasy. The importance of the constitution is unique in the entire concept of India and the principle of 'Unity in diversity' which exists in India is expected by the constitution. National independence movement, socio-political movement, progressive transformational movement, etc. various sources of the concept of India come to our eyes. Since the Constitution came into force on 26th January 1950 till date, the Constitution of India has served as a great guideline. Because its creation has been done considering the origin and historical structure of India. When doing an overview, it is essential to consider the history from several points of view. Historical events and future events are indirectly related.

Therefore, the place of theoretical concepts in India's future front is important. In the contemporary world, the only convenient route is to link the origins of the idea of India with history. And it is the need of the hour to make sincere efforts by every conscious historian to achieve the same goal of India concept.

Keywords : Independence, Unity, Vision, Fantasy, Freedom.

Introduction :-

The historical background of India is very long and old. At different levels like, social, political, cultural, etc. India has got a great tradition of history deepened from this. Beyond that, elements expected in India's vision began to be strongly felt. Due to the situation, there were fundamental changes in the original concept. In the case of India, it was based on several criteria considering the historical structure. At different stages of history, the unfolding new reality came to the fore.

Objectives :-

1) To study the social status and contribution of Indian history.
2) To study India's commitment to ethics.
3) To know the historical journey of creation of India.
4) To review the situation at the time of origin of India.
5) Practicing measures to empower the idea of India.

Methodology :-

1) Information about the idea of India was obtained through a questionnaire.
2) According to the discussion, meaningful information was obtained from the experts through informal chats by asking sub-questions and it has been used in the places where the information was needed.
3) Information was collected through meetings with colleges, universities, research centres and historians.
4) Reference texts were used.

Influence of Literature :-

In any upliftment, the contribution of materials is equally as important as the tools available. In the same way, while India was being formed, various literary works had an impact on the process. Due to the ideological influence of literature, many aspects of the concept of India came before us in different ways. Literature is a continuous process and if history is added to it, the qualitative effect will definitely be experienced.

Lack of Historical Awareness :-

One is not supposed to enjoy just reading fantasy. We see history changing every moment. That is, many angles of the original history come to the fore to suit the contemporary situation. Keeping in mind the events of history, it is necessary to bring harmony in the present behaviour; In which historical consciousness should be kept alive. Since India has a long history, each of those senses should be studied with respect; so that those senses get a coherent direction.

The Principle of 'Unity in Diversity' :-

Pandit Jawaharlal Nehru in his book 'Discovery of India' has mentioned the principle of 'Unity in Diversity' and that phrase is aptly applied to describe India as a whole. From the state of India's rise till today, a wide variety of events have taken place on the land of India. It has succeeded to some extent in planting the seed of the idea of India by taking many aspects together.

Do not Distort History :-

So far, many events that have happened in India have been sabotaged by different social elements

knowingly and unknowingly. Admitting the principle of India's concept, to perniciously support such actions may be anti-historical. Hence, it is necessary to implement positive actions along with progressive thinking in India's structural journey. While living contemporary life, even if history does not come directly into context, we should take care that history does not repeat itself.

Nationalism and History must be Combined :-

The history of nationalism is so old. But while studying history, one should be able to understand history from a nationalist point of view. It should be combined judiciously. The nationalist spirit was important in the concept of India from the very beginning. Even after that, its sanctity should be maintained. Times change, contexts change, similarly the reactionary ideology in the formation of India should also be destroyed.

Limitations of Study :-

It was impossible to meet all the people in the community and obtain information from them through questionnaires. Therefore, information was obtained by visiting the houses of people living in the nearby area. Therefore, it is safe to say that the inferences generated by this study cannot be directly applied to the idea of India, which will be the biggest limitation of this study.

Conclusion :-

India's vision faces many challenges. As historical transitions take place, the graph of challenges is going to change. The historiography of this concept of India is expected to be done from different perspectives such as political, religious, cultural, social; so that it may be convenient to take concrete actionable steps along with deep discussion to tackle the proposed challenges. India is governed according to the constitution. It is within that ethical framework that all history scholars have to work for the enrichment of the concept of India. As historical transitions take place, the only option is to accept them and be ready for new things.

References :-

1. Desai, A.R. (1948). Social Background of Indian Nationalism. Popular Book Depot.
2. Habib, Irfan. (1999). 'The Envisioning of a Nation: A Defence of the Idea of India', Social Scientist, Vol.27, No.9/10, pp.18-29.
3. Oommen, T.K. (1999). 'Conceptualising Nation and Nationality in South Asia', Indian Sociological Society, Vol. 48, No. 1/2, pp.1-18.
4. Oommen, T.K. (2003). 'Demystifying the Nation and Nationalism', India International Centre Quarterly, Vol.29, No.3/4, pp.259-274.
5. Sharma, Phool Kumar. (1967). 'Integration of Princely States and the Reorganization of States

in India', The Indian Journal of Political Science, Vol. 28, No. 4, pp. 236-241.
6. Thapar, Romila. (1990). From lineage to state: Social formations in the mid-first millennium B.C. in the Ganga Valley. Oxford University Press.
7. Wolpert, S. (1997). A New History of India. Oxford University Press.
8. Yadav, Yogendra. (2013). 'India is a State-Nation, Not a Nation-State', Forbes India. http://www.forbesindia.com/printcontent/35883
9. Chandra, Bipan (1979): Nationalism and Colonialism in Modern India. Orient Longman; New Delhi.
10. Desai, A.R. (1959): Social Background of Indian Nationalism, Bombay.
11. Majumdar, R.C. (1965): British Paramountcy and Indian Renaissance, Part I & II, Bhartiya Vidya Bhawan, Bombay.
12. Pavlov,' V.I. ed. (1978): Historical Premises for India's Transition to Capitalism, Moscow.
13. Allchin Bridget and Allchin, Raymond (1982). The Rise of Civilisation in India and Pakistan. Cambridge: Cambridge University Press.
14. Mishra, V. N. (1989). Stone Age India: An Ecological Perspective. Man and Environment, 14: 17-64.
15. Sankalia, H. D. (1974). Prehistory and Protohistory of India and Pakistan. Poona: Deccan College Postgraduate and Research Institute.
16. Tarachand, 1983. History of the Freedom Movement in India. Publication Division, New Delhi (Vols. II & III).
17. Sarkar. Sumit, 1983. Modern India 1885-1947, Macmillan, New Delhi.
18. Sarkar, Sumit, 1977. Swadeshi Movement in Bengal 1903-1908, Peoples' Publishing House, New Delhi.
19. Joshi, V.C. (ed.), 1973. Rammohun Roy and the Process of Modernisation in India, Vikas, Delhi.
20. Kenneth W. Jones: The New Cambridge History of India. III, I, Socio-Religious Reform Movements in British India.

Address : 7/708, Morya SRA CHS, Ganeshwadi, Behind Lakme Company,
Govandi East, Mumbai - 400088
Contact : 9987459573
Email : pradipjankar1998@gmail.com

संगम Impact Factor : 6.632
Website : www.ginajournal.com
ISSN : 2321-8037
विशेषज्ञ समीक्षित पत्रिका A Peer Reviewed International Refereed Journal
SANGAM
गीना देवी शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित साहित्य, शिक्षा, संस्कृति एवं शोध को समर्पित मासिक
Vol. 12, Issue 1-2
पृष्ठ : 179-183

अटल बिहारी वाजपेयी की कविता में राजनीतिक स्वर

रेणुका कस्तुरे (पोफली), शोधार्थी
हिन्दी साहित्य, बरकतउल्ला विश्वविद्यालय, भोपाल (म.प्र.)
डॉ. पुष्पा दुबे, शोध निर्देशक
विभागाध्यक्ष, हिन्दी, शासकीय गृहविज्ञान स्नातकोत्तर महाविद्यालय, नर्मदापुरम् (म.प्र.)

भारतीय राजनीति के अजातशत्रु अटल बिहारी वाजपेयी जी ने एक बार संसद में में कहा था – ''सरकारें आऐंगी–जाऐंगी, पार्टीयां बनेंगी–बिगड़ेंगी, मगर यह देश रहना चाहिए क्योंकि देश सर्वोपरि है। इस देश का लोकतंत्र अमर रहना चाहिए।''

अटल बिहारी वाजपेयी एक प्रतिष्ठित राष्ट्रीय नेता, प्रखर राजनीतिज्ञ, निःस्वार्थ सामाजिक कार्यकर्ता, सशक्त वक्ता, कवि, साहित्यकार, पत्रकार और बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी थे। अटल बिहारी वाजपेयी जी अपने छात्र जीवन के दौरान पहली बार राजनीति में तब आए, जब उन्होंने वर्ष 1942 में भारत छोड़ों आंदोलन में भाग लिया। वह राजनीति विज्ञान और विधि के छात्र थे। अटल जी हमेशा जीवन की चुनौतियों का आगे बढ़कर सामना किया करते थे। अपने राजनीतिक जीवन में कविताओं से लोगों का मन मोहने वाले अटल जी कविताएं मन–मस्तिष्क पर एक गहरी छाप छोड़ जाती हैं। ज़िक्र राजनीति का हो या कविताओं का, अटल बिहारी वाजपेयी का नाम दोनों ही क्षेत्रों में प्रथम स्थान पर आता है। एक राजनीतिज्ञ के लिए जितना व्यवहारिक होना आवश्यक है, एक कवि के लिए उतना ही भावनात्मक होना आवश्यक है। लेकिन अटल जी दोनों ही भूमिका पर एक विशिष्ट स्थान रखते हैं। सन् 1951 में ''भारतीय जन संघ'' में शामिल होने के बाद उन्होंने भारतीय राजनीति में एक नवीन चेतना जाग्रत कर दी। ''भारतीय जनता पार्टी'' को पहले ''जन संघ'' के नाम से जाना जाता था।

अटल जी भारतीय राजनीति में 5 दशकों तक सक्रिय रहे। वह लोकसभा में नौ बार और राज्य सभा में दो बार चुने गए जो कि अपने आप में ही बहुत बड़ा कीर्तिमान है। 1996 में अटल जी की सरकार केवल एकमत से गिर गई, इसके पश्चात् जो भाषण उन्होंने संसद में दिया वह यादगार बन गया।

उन्होंने कहा था कि ''यह कोई आकस्मिक चमत्कार नहीं है कि हमें इतने वोट मिले हैं। यह हमारी 40 वर्षों की मेहनत का परिणाम है। हम लोगों के बीच में गए और हमने मेहनत की, हमारी 365 दिन चलने वाली पार्टी है। यह चुनाव के समय में कुकुरमुत्ते की तरह पैदा होने वाली पार्टी नहीं है। अटल जी कहते हैं –

कर्तव्य की पुनीत पथ को,
हमने स्वेद से सींचा है।
कभी–कभी अपने अश्रु और

प्राणों का अर्घ्य भी दिया है।
किंतु अपनी ध्येय यात्रा में
हम कभी रूके नहीं हैं,
किसी चुनौती के सम्मुख
हम कभी झुके नहीं हैं।

सन् 1996 में बहुत कम समय के लिए प्रधानमंत्री बने थे। केवल 13 दिन के लिए, उसके पश्चात् 1998 में 13 महीने के लिए और फिर 2 अक्टूबर 1999 को उन्होंने लगातार तीसरी बार नई गठबंधन सरकार के प्रमुख के रूप में भारत के प्रधानमंत्री का पद ग्रहण किया था। भारत के प्रधानमंत्री, विदेश मंत्री, संसद की विभिन्न महत्वपूर्ण स्थायी समितियों के अध्यक्ष और विपक्ष के नेता के रूप में उन्होंने आजादी के बाद भारत की घरेलू और विदेश नीति को उचित आकार देने में एक सक्रिय भूमिका निभाई है। अटल जी की राजनीतिक छबि जन–जाहिर है। परमाणु परीक्षण जैसे साहसिक फैसले लेने वाले अटल जी, की कविताओं में भी उनके इन हौसलों को महसूस कर सकते हैं –

प्राणपण में करेंगे प्रतिकार, समर्पण की मांग अस्वीकार
दांव पर सब कुछ लगा है, रूक नहीं सकते,
टूट सकते हैं मगर हम, झुक नहीं सकते।

मुश्किलों का सामना कैसे किया जाए और उनसे कैसे निपटा जाए, इस पर अटल जी ने लिखा है–

बाधाएं आती हैं आऐं, घिरे प्रलय की घोर घटाएं
पांव के नीचे अंगारें, सर पर बरसे यदि ज्वालाएं,
जिन हाथों से हंसते–हंसते, आग लगाकर जलना होगा
कदम मिलाकर चलना होगा।

अटल बिहारी वाजपेयी ने प्रधानमंत्री के रूप में अपने कार्यकाल में उस अमृतकलश को खोजने की कोशिश की, जिसकी मदद से वह राष्ट्र को पुनर्निर्मित कर सके। वाजपेयी ने कहा था कि ''न सिर्फ भारतीय राजनीति बल्कि राष्ट्रीय जीवन का सबसे बड़ा अभिशाप है कि हम मिल–जुलकर काम नहीं कर सकते। चलो एकजुट होना सीखें। विभाजन की जगह समरसता पैदा करने की कोशिश करें ओर अपने स्वार्थ और अहंकार को किनारे रखना सीखें।''

अटल बिहारी वाजपेयी जब संसद में भाषण देते थे तो पूरा सदन उन्हें ध्यान लगाकर सुनता था। बोलते–बोलते बीच–बीच में दो वाक्य के मध्य लिया गया विराम भी सम्मोहक सा लगता था। संसद में श्रोता की भांति सभी उन्हें बस सुनना ही चाहते थे। उनकी वाणी में कितना सम्मोहन था या उन्हें सुनकर ही समझा जा सकता है। यह बात भी सहीं है कि जब कोई राजनेता कवि होता है तो वह सिर्फ कविता नहीं लिखता। वह एक देश के राजनैतिक इतिहास का एक हिस्सा भी होता है। ऐसे में उसकी कविता के साथ देश और दुनिया के इतिहास की झलक भी सामने आती ही है। अटल बिहारी वाजपेयी ने भी इमरजेंसी और भारत–पाकिस्तान संबंधों की पृष्ठभूमि में जो गीत या कविताएं लिखीं, वे इन मुद्दों से उपजने वाली त्रासदी और मानव मन के उद्वेलन को ठीक–ठीक अभिव्यक्त कर देती है। जैसे इमरजेंसी के वक्त उनकी लिखी इन कुंडलियों से सत्ता

पक्ष के मनमानेपन, तटस्थ लोगों की चुप्पी, तत्कालीन देश की दशा और जनता से उनकी प्रत्याशा के बारे में साफ अंदाजा लगाया जा सकता है।

दिल्ली के दरबार में कौरव का है जोर,
लोकतंत्र की द्रौपदी रोती नयन निचोर,
रोती नयन निचोर नहीं कोई रखवाला,
नए भीष्म द्रोणों ने मुख पर ताला डाला,
कह कैदी कविराय बजेगी रण की भेरी,
कोटि–कोटि जनता न रहेगी बनकर चेरी।

संयुक्त राज्य में उन्होंने अपने भाषण से विश्व पटल पर हिंदी का परचम लहराया। वे जब बोलते थे तो लगता था उनकी वाणी से भारत बोल रहा है। भारत कोई भूमि का टुकड़ा नहीं है, यह जीता जागता राष्ट्र पुरूष है, यह वंदन की भूमि है, यह अभिनंदन की भूमि है, इसकी नदी–नदी हमारे लिए गंगा है, इसका कंकड़–कंकड़ हमारे लिए शंकर है। हम जिऐंगे तो इस भारत के लिए, और मरेंगे तो इस भारत के लिए और मरने बाद भी गंगाजल में बहती हमारी अस्थियों को कोई कान लगाकर सूनेगा तो एक ही आवाज आएगी – ''भारत माता की जय''।

अटल जी अक्सर ऐसा महसूस करते थे कि राजनीति की व्यस्तताओं चलते उन्हें कविता लिखने का समय नहीं मिलता। एक सार्वजनिक कार्यक्रम में उन्होंने एक बार कहा था कि ''राजनीति के रेगिस्तान में ये कविता की धारा सुखदायी है। ''

अटल जी को नई कविताएं लिखने का समय नहीं मिल पाता था, लेकिन वे अपने भाषणों में कविताओं के अंश डालकर इसकी कमी पूरी करने की कोशिश करते थे –

क्या खोया, क्या पाया जग में,
मिलते ओर बिछड़ते मग में,
मुझे किसी से नहीं शिकायत,
यद्यपि छला गया पग–पग में
एक दृष्टि बीती पर डालें,
यादों की पोटली टटोलें।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने राजनीति में सही कदम उठाकर सुशासन के द्वारा समता लाने की बात को पुरजोर तरीके से उठाया। वे सदैव कार्यकर्ताओं को अपने ह्रदय में ममत्व पालने की सीख दने वाले पहले राजनेता थे। उनके मुंह से ही हमने पहली बार ''ममता के आधार पर ही समता लाई जा सकती है'' यह सुना था। अटल जी भारतीय राजनीति में उल्लेखनीय राजनेता हो सकते हैं, परंतु कवि के रूप में उनका व्यक्तित्व बहुत बड़ा है। अटल जी कवि ह्रदय के स्वभाव के साथ जीवन के सभी क्षेत्रों में क्रियाशील रहे हैं। आध्यात्मिकता इन्हें पारिवारिक संस्कार से प्राप्त हुआ गुण है और यही गुण इनके व्यक्तित्व की आधारशिला भी है, इसका परिचय –

सूर्य एक सत्य है,

जिसे झुठलाया नहीं जा सकता,
मगर ओज भी तो एक सच्चाई है,
यह बात अलग है कि ओस क्षणिक है।

अटल जी ने अपने राजनैतिक जीवन में कितने उतार–चढ़ाव देखे, लेकिन चरैवेति–चरैवेति अर्थात् (चलते रहो) चलते रहने का नाम ही जीवन है। हर स्थिति और परिस्थिति में आगे ही आगे बढ़ते चलने का नाम जीवन है। जीवन में निराश और हताश होकर लक्ष्य की प्राप्ति नहीं की जा सकती। इस उद्देश्य को सार्थक करते अटल बिहारी वाजपेयी ने कभी राजनीतिक जीवन में पलटकर नहीं देखा, इसलिए वह इस कविता में कहते हैं –

आदमी को चाहिए कि वह जूझे,
परिस्थितियों से लड़े,
एक स्वप्न टूटे तो दूसरा गढ़े।

अटल जी अधिकतर व्यंग्य टिप्पणी द्वारा अपने मन की बात बोल ही देते थे। आपातकाल के दिनों में तात्कालीन कांग्रेस अध्यक्ष देवकांत बरूआ ने कहा था – ''इंदिरा इज़ इंडिया'' इस पर चाटुकारिता करने के लिए कवि में ''चमचों का सरताज'' कहकर व्यंग्य किया और भारत माता की समानता के राजनीतिक कथन पर भी कटाक्ष किया –

कह कैदी कविराय स्वर्ग से जो महान है,
कौन भला इस भारत माता के समान है।

एक गंभीर और परिपक्व राजनेता के रूप में अटल जी की सूझ–बूझ एवं दूरदर्शिता की हमेशा चर्चा होती रही है। जहां देश के विदेशमंत्री रूप में उन्होंने हमेशा देश के पक्ष को बेहद तार्किक एवं मजबूती के साथ रखा, वहीं एक प्रधानमंत्री के रूप में उनकी चर्चा देश–विदेश में आम थी। किंतु लाहौर बस–यात्रा के दौरान एवं कारगिल युद्ध के विश्वासघात ने उनकी भावनाओं को बहुत ठेस पहुंचाई थी। वे हमेशा बातचीत करके हल निकालने के पक्षधर रहे, क्योंकि वे जानते थे कि युद्ध में चाहे जिसकी भी हार या जीत हो। अंततः पराजय मानवता की ही होती है। अटल जी लिखते हैं कि –

भारत–पाकिस्तान पड़ोसी, साथ–साथ रहना है,
प्यार करें या वार करें, दोनों को ही सहना हैं।
रूसी बन हो या अमरीकी, खून एक बहना है,
जो हम पर गुजरी, बच्चों के संग न होने देंगे,
जंग न होने देंगे।

अटल बिहारी वाजपेयी भारतीय राजनीति के युगपुरूष है। उनका कवित्व रूपी व्यक्तित्व वाला राजनेता देश को कभी नहीं मिलेगा।

अटल जी सत्ता के लिए कभी गिरे नहीं। उन्होंने जोड़–तोड़ की राजनीति नहीं की, हमेशा लोकतांत्रिक मूल्यों पर कार्य किया, हमेशा आदर्श चरित्र की राजनीति अटल जी का महत्वपूर्ण गुण था। अटल जी जैसा राजनेता न कोई था, ना होगा, उनका स्थान कभी कोई नहीं ले सकता।

काल के कपाल पर लिखता–मिटाता हूं,

गीत नया गाता हूं।
टूटे हुए तारों से फूटे बसंती स्वर,
पत्थर की छाती मे उग आया नव अंकुर,
झरे सब पीले पात....
गीत नया गाता हूं.....।।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. राष्ट्रीय एकता, 1961।
2. भारत की विदेश नीति : नए आयाम, 1977।
3. एक खुले समाज की गतिशीलता, 1977।
4. राजनीति की रपटीली राहें, 1997।
5. प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी के चुने हुए भाषण, 2000।

डॉ. पुष्पा दुबे, शोध निर्देशक, विभागाध्यक्ष, हिन्दी
शासकीय गृहविज्ञान स्नातकोत्तर महाविद्यालय, नर्मदापुरम् (म.प्र.)
रेणुका कस्तुरे (पोफली), शोधार्थी
ई–मेल – renukasture@gmail.com
मोबाइल नंबर – 8982365898

संगम Impact Factor : 6.632
Website : www.ginajournal.com
ISSN : 2321-8037
विशेषज्ञ समीक्षित पत्रिका A Peer Reviewed International Refereed Journal
SANGAM
गीना देवी शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित साहित्य, शिक्षा, संस्कृति एवं शोध को समर्पित मासिक
Vol. 12, Issue 1-2
पृष्ठ : 184-187

गगन गिल के काव्य में आर्थिक संवेदना के विविध आयाम

सुमन यादव, शोधार्थी,
राजेन्द्र सिंह, शोध निर्देशक
बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, रोहतक (हरियाणा)

सार :-

मानव–जीवन के प्रमुख अंगों में अर्थ आवश्यक एवं महत्वपूर्ण अंग है। किसी भी व्यक्ति, समाज और देश की उन्नति आर्थिक सम्पन्नता पर निर्भर करती है। दूसरे शब्दों में, अर्थव्यष्टि–समष्टि एवं राष्ट्र की रीढ़ है। भारत एक विकसनशील राष्ट्र है। अतएव इसकी अपनी आर्थिक समस्याएं हैं, जिन्हें दृष्टि में रखते हुए राही जी ने अपने साहित्य में आर्थिक बिंदुओं को स्पर्श किया है। देश में गरीबी, बेकारी, अशिक्षा, दहेज, वेश्यावृत्ति जैसी समस्याएं व्याप्त हैं। गगन गिल ने इन समस्याओं का विवेचन अपने साहित्य में किया है।

बीज शब्द :- अंतरजगत, जीवयष्टि, शोषणमुक्त, अक्षरहीनता, फफोल, विस्थापित।

संवेदना :-

संवेदना के बिना मनुष्य की सत्ता अधूरी है। साहित्यकार संवेदनशील साहित्य का निर्माण संवेदना के आधार पर ही करता है। साहित्यकार के अंतरजगत में कुछ नए और पुराने अनुभव होते हैं। साहित्यकार के मन में संवेदना इन्हीं अनुभवों को लेकर जागृत होती हैं। किसी वेदना या दुःख को देखकर स्वयं भी वैसा ही अनुभव करना ही संवेदना होती है। कवि या साहित्यकार अपनी संवेदना को साहित्य कृति में उभारने का प्रयास करता है। संवेदना साहित्य का प्राण होती है।

अनेक विद्वानों ने संवेदना को भिन्न–भिन्न दृष्टिकोणों से परिभाषित किया है। विश्वनाथ प्रसाद संवेदना को परिभाषित करते हुए लिखते हैं– " किसी वस्तु या घटना के असर से मन में उपजी भावनाओं एवं अनुभूतियों को संवेदना कहा जा सकता है।"[1]

अज्ञेय संवेदना के संदर्भ में लिखते हैं– "संवेदना वह तंत्र है जिसके सहारे जीवयष्टि अपने से इतर सब कुछ के साथ संबंध जोड़ती है, यह संबंध एकता का भी है और भिन्नता का भी, क्योंकि उसके सहारे जीवयष्टि अपने से इतर जगत् को पहचानती है, वहाँ उससे अपने को अलग भी करती है।"[2]

आर्थिक संवेदना :-

साहित्य के वृक्ष को अपने श्रमजल से सींचने वाली कवयित्री गगन गिल ने लोकजीवन की चेतना को जाग्रत करने हेतु निरन्तर प्रयास किया। उनका यह प्रयास सदैव मानव मात्र की सुखी, समृद्ध एवं शोषण मुक्त जीवन शैली के पक्ष में रहा। इसलिए ही गगन गिल ने समाज, राजनीति, धर्म, संस्कृति, राष्ट्र आदि विविध विषयों

को अपनी सम्वेदनाभिव्यक्ति का विषय बनाया। ऐसे में उनकी तीक्ष्ण दृष्टि से 'अर्थ' जैसा अतिमहत्त्वपूर्ण विषय कैसे अछूता रह सकता था? जबकि अर्थ तो मानव जीवन का वह अंग है; जिसके बिना उसके सुख–समृद्धिपूर्ण एवं शोषण मुक्त जीवन की कल्पना कर पाना भी असंभव है। अर्थाभाव के कारण ही समाज में गरीबी, शोषण, बेरोजगारी, संघर्ष की स्थिति उत्पन्न होती है। ऐसे में संवेदनशील हृदय सम्पन्न कवयित्री का आर्थिक सम्वेदना युक्त होना स्वाभाविक ही है। अतः मानव के कल्याणार्थ ही गगन गिल ने अपने काव्य में समकालीन परिवेश की आर्थिक विषमताओं के यथार्थ रूप का विविध बिम्बों के माध्यम से प्रस्तुतिकरण किया है। जिनका वर्णन निम्न प्रकार से किया जा सकता है–

आर्थिक विपन्नता :-

आर्थिक विपन्नता समाज द्वारा प्रदत्त मानव जीवन की वह अवस्था है जो अत्यन्त कुरूप है। यह समाज के राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक लेने के लिए मजबूर हैं, तो शहरों में अकुशल कामगार, दिहाड़ी पर काम करने वाले, फैक्ट्रियों में काम करने वाले, रेहड़ी लगाने वाले, भिखारी आर्थिक विपन्नता से जद्दोजहद कर रहे हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में अधिकतर वे लोग आर्थिक विपन्नता की स्थिति में जीवनयापन कर रहे हैं जो समाज की पिछड़ी जातियों से सम्बद्ध है। ग्रामीण हो या शहरी दोनों की ही आज पूँजी और कमाई कम है। इनमें से अधिकतर बेरोजगार और छोटे–मोटे रोजगार प्राप्त लोग हैं। जिन्हें गरीबी की संज्ञा प्रदान की गई है। डॉ तीर्थेश्वर सिंह के शब्दों 254 में–''भारतवर्ष में गरीबी उन्हें कहा जाता है जो आवश्यक भोजन की मात्रा को भी उपलब्ध नहीं कर पाते हैं। भारतवर्ष में गरीबी रेखा के नीचे वे लोग माने जाते हैं जो जीवन के न्यूनतम स्तर के साथ–साथ भोजन की मात्रा को भी अपनी कमाई से मुहैया नहीं कर पाते हैं। लेकिन विकासशील देशों में गरीबी की रेखा की नीचे वे लोग आते हैं जो लोग सामाजिक विषमताओं के कारण अपनी आर्थिक स्थिति से प्रत्येक सामाजिक कार्यों में भाग नहीं ले पाते हैं।''[3] आज भूख और अक्षरहीनता देश की सबसे बड़ी समस्या बनती जा रही है। लाखों लोग आर्थिक विपन्नता के कारण भूखे मरने की कगार पर है। गगन गिल ने अपनी कविताओं में व्याप्त आर्थिक विपन्नता को चित्रित किया है।

''फैलती रही भूख–प्यास बेरोक
अंतड़ियों में
ओढ़ाती रही चादर
दिल ने नहीं छोड़ा लहू साफ करना
याद रखा दिमाग ने
जिसे लगता रहा बैठ गया है
सीने में
फफोले की मानिन्द
दिल?
कौन था
तैरता रहा जो
लाश–सा

यथार्थ की
झील पर?[4]

आर्थिक शोषण :–

आधुनिक समय में देश के पूँजीपति, नौकरशाह, मन्त्रियों और राजनेताओं के हाथ में उत्पादन के साधनों का स्वामित्व आ जाने से यह वर्ग अपने स्वार्थों के वशीभूत मनमाने ढ़ंग से मजदूरों, कामगारों, किसानों का आर्थिक शोषण करने में लगा है। अपने लिए भौतिक सुविधाओं को एकत्र करना ही इनका उद्देश्य रह गया है। इसका सीधा प्रभाव देश के आर्थिक संतुलन पर पड़ता है जिसके परिणामस्वरूप आर्थिक असमानता बढती जा रही है। जिसके प्रभावस्वरूप मध्यम वर्ग असुरक्षा का अनुभव करता है। यह वर्ग स्वयं को निम्न वर्ग में जाने से बचाता हुआ उच्च वर्ग में शामिल होने का प्रयास करता रहता है। इसके लिए भले ही इसे भ्रष्टाचार, रिश्वतखोरी जैसे आपराधिक कार्य ही क्यों न करने पड़े यह करता है। गगन गिल ने अपनी कविता में आर्थिक शोषण को इस प्रकार चित्रित किया है–

''कैसे शब्द बनते हैं
मृत तितलियाँ
कितने महीने
कितने दिन
कितने घंटों की अनकही के बाद
कैसे निचोड़ता है एक कवि
अपना रक्त
अभाव के फफोले पर।''[5]

गगन गिल आर्थिक शोषण को समाज के लिए हानिकारक मानते हुए लिखती है कि आर्थिक शोषण आदमी को नारकीय जीवन जीने के लिए विवश कर देता है–

ये रहे उसके पंख
उतार दिये थे उसने
बहुत पहले ही
ये रहे पत्थर
जो अभी तक बँधे हैं ठूंठ उसके कन्धों से।''[6]

बेरोजगारी :–

भारत में जनसंख्या का एक बड़ा भाग इसी बेरोजगारी के दंश को झेल रहा है। गगन गिल ने अपनी कविता मे बढती बेराजगारी को चित्रित करते हुए यह कहने का प्रयास किया है कि –

''कि इन दिनों साँस में
टूटा हुआ है एक काँच
कि देवता गुजरते हैं बारी–बारी
हमारे भीतर

कोई प्राचीन दुख जिलाने
कि छिपी बैठी है हमारी आत्मा
इन दिनों माँस के भीतर
विस्थापित अस्थि की तरह
कि उड़ती थी जो चिड़ियाँ हमारे भीतर
थकना शुरू हो चुकी हैं।''[7]

निष्कर्ष :-

कहा जा सकता है कि वर्तमान अर्थव्यवस्था का स्वरूप सकारात्मक होने की बजाय नकारात्मक अधिक है। यही कारण है कि समस्याएँ सुलझने की बजाय उलझती जा रही है। क्योंकि आर्थिक समस्याएँ एक–दूसरे से अलग–थलग नहीं होती बल्कि एक–दूसरे में घनिष्ट रूप से गूँथी हुई होती है। अतः इनका समाधान भी समग्रता में करने की आवश्यकता है। आज मानव की विचार क्षमता स्वयं के लिए क्या कर सकता है के स्थान पर समाज के लिए कुछ कर गुजरने की होनी चाहिए। आज के भौतिकवादी युग में मानव के लिए यह आवश्यक हो जाता है कि वह यंत्र प्रधान न होकर श्रम प्रधान हो।

संदर्भ- सूची :-

1. विश्वनाथ प्रसाद, कला एवं साहित्य : प्रवृत्ति और परम्परा, पृ. 68
2. अज्ञेय, आधुनिक हिन्दी साहित्य, पृ. 17
3. डॉ. तीर्थेश्वर सिंह, समकालीन हिन्दी कविता की यथार्थवादी चेतना, पृ 42
4. गगन गिल, यह आकांक्षा समय नही, पृ0 50–51
5. गगन गिल, यह आकांक्षा समय नही, पृ0 64
6. गगन गिल, यह आकांक्षा समय नही, पृ0 68
7. गगन गिल, अंधेरे मे बुद्ध, पृ0 38

PRINTED MATTER/PRINTING BOOK CLAUSE 121 (A) P & T GUIDE

नाम	:	श्री हरविन्द्र कमल चौधरी
शिक्षा	:	एम.ए.
अभिरूचि	:	कविता, गजल, कहानियाँ तथा चित्रकला।
सम्प्रति	:	पूर्व मुख्य सम्पादक, सगंम, मासिक हिन्दी पत्रिका, पटियाला (पंजाब), भिवानी (हरियाणा)
गतिविधियां	:	1. आकाशवाणी तथा दूरदर्शन पर विभिन्न प्रसारण। 2. चित्रकला वन मैन शो का आयोजन तथा अनेक चित्रकला प्रर्दशनियों में सहभागिता।
सम्पर्क	:	म. न. 30- ई. पी.आर.टी.सी. कालोनी, माडल टाऊन, पटियाला (पंजाब) 147001

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक गीना देवी शोध संस्थान के लिए डॉ. नरेश सिहाग एडवोकेट ने मनभावन प्रिन्टर्ज, भिवानी से छपवाकर सम्पादकीय कार्यालय 6-एच 30, जवाहर नगर, श्रीगंगानगर, राजस्थान-335001 से वितरित की।

ISSN 2321:8037